अलेक्जैण्डर
सोलजिस्तीन
१९७० में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले
विश्व-प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार का बहुचर्चित उपन्यास
दूसरा भाग
कैंसर
वार्ड

कैन्सर वार्ड

१९७० में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले विश्व-प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार के बहुचर्चित उपन्यास का दूसरा भाग।

इस दुर्लभ किताब की
मूलप्रति आदरणीय कश्मीर
उप्पल सर जी ने उपलब्ध
करायी है ताकि हनी शर्मा
इसका PDF बनाकर इसे
सर्वसुलभ कर सकें और
सोवियत साहित्य के प्रेमी
इस अनमोल रचना का
रसपान कर सकें।

३२

कैन्सर वार्ड

दूसरा भाग

लेखक

अलेक्जैन्डर सोलनिस्तीन

अंग्रेजी रूपान्तर

निकोलस बेथेल और डेविड बर्ग

हिन्दी रूपान्तर

विजयश्री भारद्वाज

प्रकाशक

नेशनल एकाडमी

९, अन्सारी मार्केट, दरियागंज,

दिल्ली-११०००६

प्रकाशक :
प्रेमगोपाल मित्तल
नेशनल एकाडमी
६, अन्सारी मार्केट
दरियागंज, दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण : फरवरी १६७३

मूल्य : लाइब्रेरी संस्करण : आठ रुपए
पेपर बैक संस्करण : पाँच रुपए

मुद्रक :
वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस,
विश्वास नगर शाहदरा दिल्ली-३२

क्रम

१. वह नदी जो रेत में अन्तर्धान हो जाती है

३ मार्च, १९५६

प्रिय एलेना अलेक्जांद्रोवना और निकोलाई आइवानोविच,

मैं आपके सामने एक चित्र-पहेली पेश कर रहा हूं : यह क्या है और मैं कहां हूं? खिडकियों पर सींखचे लगे हैं (हां यह सच है कि सिर्फ पहली मंजिल पर ही, ताकि चोरों को रोका जा सके और ये एक कोने से फैल रही प्रकाश किरणों की तरह ज्यामिती के नमूने से बने हैं और बाहर का दृश्य देखने से रोकने के लिए इनमें चद्दरें भी नहीं लगी हैं।) कमरे पलंगों से भरे पड़े हैं और इन पर बिस्तर भी हैं और हर बिस्तर पर एक छोटा-सा आदमी पड़ा है, जो भय के आतंक से अपना हौसला खो बैठा है।

सुबह को एक डबल रोटी, चीनी और चाय मिलती है (यह नियम का उल्लंघन है, क्योंकि बाद में वे जलपान भी देते हैं)। पूरी सुबह लोग उदास और चुप रहते हैं। कोई भी किसी से नहीं बोलता, लेकिन शाम को निरंतर बातचीत चलती है और पूरे जोश से बहस होती है। यह बहस खिड़कियां खोलने और बन्द करने, कौन व्यक्ति सबसे अच्छे परिणाम की और कौन सबसे बुरे परिणाम की आशा कर सकता और समरकन्द की मस्जिद में कितनी इंटें लगी हैं, के बारे में चलती है।

दिन के समय वे आपको एक-एक करके बारी-बारी से अधिकारियों से बातचीत करने, 'जांच पड़ताल' और रिश्तेदारों से मुलाकात के लिए बुलाते हैं। हम शतरंज खेलते हैं और किताबें पढ़ते हैं। पार्सल प्राप्त करने की इजाजत है और जिन्हें ये पार्सल मिलते हैं, वे बड़ी सावधानी से इनकी हिफाजत और इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोगों को तो अतिरिक्त भोजन भी मिलता है और केवल शिकायत करने वालों को ही नहीं (मैं यह बात निश्चयपूर्वक कह सकता हूं, क्योंकि मुझे भी मिला है)।

कभी-कभी वे आते हैं और जगह की तलाशी लेते हैं। वे व्यक्तिगत सामान उठा ले जाते हैं, अतः हमें उसे छिपाना पड़ता है। हमें बाहर जाने और व्यायाम करने के अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना है। स्नान का समय एक बड़ी घटना होती है और भयंकर कष्टप्रद स्थिति भी। क्या हमाम गर्म होगा? क्या वहां पर्याप्त पानी है? नीचे पहनने के कैसे कपड़े मिलेंगे? सबसे हास्यास्पद

बात तो तब होती है जब वे किसी 'नए लड़के' को लाते हैं और वह बेहद बेवकूफी के सवाल पूछने लगता है। उसे इस बात का जरा भी आभास नहीं होता कि अब उसे किन बातों का सामना करना होगा…

तो क्या आप यह पहेली बूझ सकते हैं? आप जरूर कहेंगे कि मैं झूठ बोल रहा हूँ: "यदि यह कैदियों को आगे शिविरों में भेजने से पहले कुछ दिन रखने की जेल है तो बिस्तर क्यों हैं? और अगर यह रिमाण्ड जेल है तो रात के समय पूछताछ क्यों नहीं होती?"

मैं यह मान कर चल रहा हूं कि डाकखाने में हमारे 'संरक्षक' इस पत्र की अवश्य जांच करेंगे, तो मैं और अधिक समानताओं का उल्लेख नहीं करूंगा।

बस यही वह जीवन है, जो मैंने पिछले पांच सप्ताहों में केन्सर वार्ड में जिया है। ऐसे क्षण आते हैं जब लगता है कि मैं अपने अतीत के जीवन में फिर वापस पहुंच गया हूं। और इसका कोई अन्त नहीं है। सबसे अधिक हिम्मत इस बात से टूट जाती है कि यहां रहने की अवधि निर्धारित नहीं है, मैं यहां 'राज्य की इच्छा' पर हूं। (और तुम जानते ही हो कोमेदातुरा ने मुझे केवल तीन सप्ताह की अनुमति दी थी। तो यह कहा जा सकता है कि मैं अनुमति से अधिक यहां रह चुका हूँ और मेरे ऊपर भागने का प्रयास करने के आरोप पर मुकदमा चलाया जा सकता है।)

वे मुझे यहां से छुट्टी देने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहते वे कोई वायदा नहीं करते। उन्हें चिकित्सा सम्बन्धी जो निर्देश दिए गए हैं, उनके अनुरूप वे मरीज का सत ही निचोड़ डालते हैं और उसे उस समय तक नहीं जाने देते, जब तक उसका रक्त इस स्थिति में न पहुंच जाए कि वह अब और कोई भी दवा बर्दाश्त नहीं कर सकता।

तो ये परिणाम सामने हैं: वह अद्भुत सुधरी हुई अवस्था, जिसे आपने अपने पिछले पत्र में 'अस्थायी और काल्पनिक' बताया था। दो सप्ताह की चिकित्सा के बाद में इसी अवस्था में था और मैं इतने सहज और आनन्दपूर्ण तरीके से फिर जीवन की ओर वापस लौट रहा था, कि बस यह अवस्था समाप्त होगई और अब इसका कोई चिन्ह शेष नहीं रह गया है। न जाने क्यों मैंने उस समय अस्पताल से छुट्टी देने की बात पर जोर नहीं दिया। मेरी चिकित्सा का लाभदायक हिस्सा समाप्त हो गया है और हानिप्रद हिस्सा शुरू हो गया है।

अब उन्होंने एक्स किरणों के प्रहार से मेरा इलाज शुरू कर दिया है। हर रोज दो बैठक होती हैं। हर बैठक बीस मिनट चलती है और ३०० राड पर किरणें डाली जाती हैं। उशतेरेक से रवाना होते समय जो दर्द था, उसे मैं काफी पहले ही भूल चुका हूँ पर अब मैं जानता हूं कि मितली क्या होती

है। मेरे मित्रो आपको इस बात का आभास नहीं है कि एक्सकिरण से उत्पन्न मितली कितनी असह्य होती है (पर हो सकता है कि इन्जेक्शनों के कारण मितली आती हो — यहां सब कुछ गड्डमड्ड हो जाता है)। मितली छाती को ग्रस लेती है और घण्टों चलती रहती है। हां मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है। यह स्वत: सहज रूप से हुआ है। बड़ी दिल तोड़ डालने वाली स्थिति है। मैं सैर के लिए नहीं जा सकता। मैं बैठ नहीं सकता। बस केवल एक ही स्थिति में आराम मिलता है (मैं यह पत्र लिखते समय उसी स्थिति में हूँ और यही कारण है कि यह पत्र पैंसिल से लिखना पड़ रहा है और पंक्तियाँ भी अधिक सीधी नहीं हैं) : मेरे सिर के नीचे तकिया नहीं है। मैं पीठ के बल चित्त लेटा हूँ, टांगों को जरा ऊपर को उठाये हुए हूँ और सिर पलंग के सिरे से थोड़ा-सा नीचे की ओर लटक रहा है। जब वे अगली बैठक के लिए आपको बुलाते हैं और आप एक्स-रे की जबर्दस्त गंध से भरे उपकरण कक्ष में जाते हैं, तो बस यही भय लगता है कि कै करते-करते आपकी आंतें ही बाहर निकल आएंगी। ककड़ी और बंदगोभी के अचार से मितली में राहत मिलती है, पर ये अचार न तो अस्पताल में मिल पाते हैं और न ही चिकित्सा केन्द्र में और मरीजों को फाटक से बाहर जाने की इजाजत नहीं होती। 'आपके रिश्तेदार आपके लिए अचार ला सकते हैं,' वे कहते हैं। रिश्तेदार! हमारे तो सबके सब रिश्तेदार क्रासनोयारस्क तैगा में अपने चारों पांवों पर दौड़ लगा रहे हैं, जैसा कि सब जानते हैं।[1] एक गरीब कैदी भला कर भी क्या सकता है? मैं अपने बूट पहनता हूँ, औरतों वाला ड्रेसिंग गाउन अपने चारों ओर लपेटता हूँ और अपनी फौजी पेटी से उसे कस लेता हूं और चुपचाप उस स्थान पर पहुंच जाता हूं, जहाँ चिकित्सा केन्द्र की दीवार आधी टूटी हुई है। दीवार से निकलता हूं, सड़क पार करता हूं और बस पाँच मिनट में बाजार के बीच पहुंच जाता हूँ। मैं इस बात को अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक स्वस्थता समझता हूँ कि वह प्रत्येक बात का आदी हो गया है। मैं उस गम्भीरता से सौदेबाजी करता हुआ बाजार में घूमता रहता हूं जो केवल एक कैदी ही कर सकता है। (वे किसी पीले-सफेद रंग की मुर्गी की ओर देखकर कहते हैं : 'ठीक है, नानी, तुम इस तपेदिकग्रस्त मुर्गी के कितने पैसे चाहती हो?') पर मेरे पास कितने रूबल हैं? और मुझे ये कैसे प्राप्त होते हैं! मेरे दादा कहा करते थे, 'एक कोपेक एक रूबल को बचाएगा और एक रूबल तुम्हें चिन्ता से बचायेगा।' वे चतुर थे, मेरे दादा।

१— यह उस व्यंगपूर्ण ताने की ओर संकेत है, जिससे रूस के लोग भलीभाँति परिचित हैं और जो रूस के सुरक्षा पुलिस के अफसर उन कैदियों को देते हैं, जो उन्हें 'कामरेड' कहने की कोशिश करते हैं : 'तैगाका भेड़िया तुम्हारा कामरेड है।'

ककड़ी से ही कुछ राहत मिलती है। इलाज के शुरू में अचानक मुझे फिर भूख लगने लगी थी। लेकिन अब यह फिर खत्म हो गई है। एक्स-रे से चिकित्सा के दौरान भी मेरा वजन बढ़ रहा था लेकिन अब यह घटने लगा है।

मेरा सिर भारी रहता है और एक बार तो मुझे चक्कर आने का जबर्दस्त दौरा भी पड़ा था। इसके बावजूद यह सच है कि मेरी रसौली आधी गायब हो गई है। इसके किनारे इतने मुलायम पड़ गए हैं कि मैं स्वयं मुश्किल से ही इसे महसूस कर पाता हूँ। पर इस बीच मेरा रक्त ही नष्ट किया जा रहा है। वे लोग मुझे एक विशेष दवा दे रहे हैं, जिसके बारे में यह समझा जाता है कि वह सफेद रक्त कण बढ़ाती है (और सम्भवत: इसके साथ ही किसी अन्य वस्तु को नष्ट भी करती जाती है) और वे मुझे दूध के इन्जेक्शन भी लगाना चाहते हैं, ताकि 'श्वेत रक्त कणों की अभिवृद्धि को प्रेरित किया जा सके' (वे अपनी इसी विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग करते हैं)। शुद्ध बर्बरता। क्यों नहीं है क्या ? भला मुझे गाय के शुद्ध दूध का एक बड़ा गिलास पीने को क्यों नहीं देते, जैसा कि सामान्यतया होता है ? मैं उन्हें इन्जेक्शन नहीं लगाने दूंगा, चाहे कुछ भी क्यों न हो।

मानो यह काफी नहीं है, वे मुझे खून चढ़ाने की फिराक में भी हैं। मैं इसका भी विरोध कर रहा हूं। जानते हो मैं अब तक इससे क्यों बचा हूँ—मेरा रक्त वर्ग ए है, जो इन्हें यहां मुश्किल से ही प्राप्त होता है। (वैसे एक्स-रे चिकित्सा विभाग की डाक्टर से हमारी खींचतान होती है। वह बेहद सख्त औरत है। पिछली बार उसने मेरी छाती को जोर-जोर से दबाकर देखना शुरू किया और बोली कि मेरे ऊपर—'साइनेस्ट्रोल की कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही है।' इस कथन का यह अभिप्राय था कि मैं इन्जेक्शन लगवाने से किसी प्रकार बच निकलता हूं और इस तरह से उसे धोखा दे रहा हूं। स्वाभाविक है कि इस बात पर मैं क्रोधित हो उठा। (पर सच्चाई यही है कि मैं उसे धोखा दे रहा हूं।)

जिस डाक्टर की देख-रेख में मेरी चिकित्सा चल रही है, उसके साथ कड़ाई का व्यवहार करना बड़ा कठिन है। क्यों ? क्योंकि वह बेहद मृदु और भद्र है। (निकोलाई आइवानोविच, एक बार आपने मुझे इस कहावत का उद्भव समझाने का प्रयास किया था कि "मृदु शब्द तुम्हारी हड्डियां तोड़ सकते हैं।" कृपया एक बार मुझे फिर इस बारे में बताएं।) केवल इतना ही नहीं कि वह कभी भी अपना स्वर ऊंचा नहीं करती, बल्कि वह अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिए अपनी भवें भी ठीक से नहीं चढ़ा पाती। जब वह कोई ऐसी दवा आदि देती हैं, जो मैं नहीं चाहता तो वह अपनी नजर नीची कर लेती है और न जाने क्यों मैं उसके सामने झुक जाता हूं, जरा भी प्रतिवाद नहीं करता। बीमारी के कुछ ऐसे ब्यौरे भी हैं, जिन पर हम बात नहीं कर पाते।

वह अभी युवती ही है। उसकी उम्र मुझसे कम ही है। कुछ ऐसी चीजें हैं, जिनका उल्लेख वह उनके सही नामों से नहीं करती और न जाने क्यों मैं सही जवाब के लिए जोर नहीं दे पाता, मुझे बेहद उलझन महसूस होती है।

हां, वह सुन्दर और मित्रतापूर्ण व्यवहार करने वाली स्त्री है। मुझे अच्छी तरह से याद है कि उसने मुझे अपना परिचय एक विवाहित स्त्री कहकर ही दिया था पर बाद में मुझे पता चला कि वह विवाहित नहीं है। लगता है, वह अपने अविवाहित होने को अपमानजनक बात समझती है और यही कारण था कि उसने मुझसे झूठ बोला।

यह भी लगता है कि उसके मन में पुस्तक ज्ञान के प्रति स्कूली लड़कियों जैसी ही अटूट आस्था है। अन्य डाक्टरों की तरह वह भी अपने निश्चित तरीकों और चिकित्सा पद्धति में निर्विवाद रूप से विश्वास करती है और मैं उसके मन में किंचित मात्र भी सन्देह उत्पन्न नहीं कर पाता। मोटे तौर पर यह भी कहा जा सकता है कि कोई भी डाक्टर मेरे साथ इन तरीकों पर विचार करने की कृपा नहीं दिखाएगा। कोई भी मुझे अपना उचित साथी समझने को तैयार नहीं है। बस मेरे सामने डाक्टरों की बातचीत सुनने, अनुमान लगाने, कुछ ब्यौरों की स्वयं कल्पना करने और किसी प्रकार डाक्टरी किताबें प्राप्त करने के अलावा दूसरा रास्ता ही नहीं है। बस मैं इसी तरह सही स्थिति को भांपने का प्रयास करता हूं।

अभी भी मेरे लिए किसी निष्कर्ष पर पहुंच पाना कठिन हो रहा है। मुझे क्या करना चाहिए ? आचरण का कौन-सा सर्वोत्तम तरीका है ? उदाहरण के लिए, वे अक्सर मेरे गले की हड्डियों के नीचे जोर-जोर से दबाकर देखते हैं, लेकिन यह बात कहां तक सच है कि दूसरे दौर की रसौलियां इसी जगह पर मिलेंगी ? वे मेरे ऊपर हजारों यूनिट एक्स-रे की बौछार करते हैं ? क्या रसौली को फिर बढ़ने से रोकने के लिए ही यह किया जा रहा है, अथवा पांच गुनी या दस गुनी ताकत बनाने के लिए ही यह किया जा रहा है ? जैसे पुल बनाने के लिए किया जाता है। अथवा वे उन विवेकहीन और निरर्थक निर्देशों का पालन न करने की स्थिति में उन्हें अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ सकता है ? पर मैं इन निर्देशों की उपेक्षा कर सकता था। यदि ये लोग मुझे सच्चाई बता देते, तो मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं कि इस दुश्चक्र को तोड़ सकता था। पर वे मुझे बताते ही नहीं।

आखिर मुझे लम्बे जीवन की कामना नहीं है। मैं भविष्य के गर्भ में दूर तक क्यों झांकना चाहूं ? पहले मैं सन्तरियों के पहरे में रहा, फिर दर्द से त्रस्त और अब मैं थोड़े समय के लिए संतरियों के बिना, दर्द के बिना रहना चाहता हूं। मैं कुछ समय के लिए इन दोनों के बिना रहना चाहता हूं। बस यही मेरी महत्वाकांक्षा की सीमा है।

मैं लेनिनग्राद अथवा रियोद जेनीरो की मांग नहीं कर रहा हूं। मैं तो जंगलों में एक छोटी-सी जगह, मामूली से उश-तेरेक की मांग करता हूं। जल्दी ही गर्मी का मौसम आ जाएगा और इन गर्मियों में मैं तारों के नीचे कैम्पों में इस्तेमाल होने वाली एक खाट पर सोना चाहता हूं और रात को जागकर यह जानना चाहता हूं कि साइगनस और पेगासस तारों की स्थिति के अनुसार इस समय रात का क्या समय होगा। मैं बस एक गर्मी भर जीना चाहता हूं और तारों को देखना चाहता हूं। बन्दी शिविरों की सर्चलाइटों के बिना ही—इसके बाद मैं पूरी तरह से संतुष्ट और तृप्त हो जाऊंगा और फिर कभी जागने की इच्छा मेरे मन में नहीं रहेगी।

हां और एक चीज और है, निकोलाई आइवानोविच, मैं आपसे भी बात करना चाहता हूं (और बीटल तथा तोबिक से भी)। गर्मी की तेजी कम हो जाने के बाद और चू नदी को जाने वाले चढ़ाई वाले रास्ते पर आप से बातें करना चाहता हूं और फिर जहां पानी सबसे गहरा है, जहां यह आपके घुटनों से ऊपर पहुँच जाता है, मैं रेतीले तल पर बैठ जाऊंगा, मेरी टांगें नदी के प्रवाह में तैरती होंगी और मैं इसी तरह घंटों बैठा रहूंगा, ठीक दूसरे किनारे पर बैठे बगुले की तरह।

हमारी चू नदी किसी भी समुद्र, किसी भी झील अथवा अन्य किसी भी जल समूह तक नहीं पहुंच पाती। यह एक ऐसी नदी है, जो अपना जीवन रेत में ही समाप्त कर देती है। यह एक ऐसी नदी है, जो बहकर कहीं नहीं जाती, जो अपने सर्वोत्तम पानी और अपनी सर्वोत्तम शक्ति को अपने प्रवाह के मार्ग में ही अव्यवस्थित रूप से लुटाती चलती है।

मेरे मित्रो, क्या कैदियों के रूप में यह हमारे जीवन की एक बढ़िया तस्वीर नहीं है। हमें कोई भी लक्ष्य पूरा करने के लिए नहीं दिया गया है, हम इस अपमानजनक स्थिति में ही दम तोड़ देंगे, जबकि हमारे लिए जो वस्तु सर्वोत्तम रही है, वह नदी की एक ऐसी धारा भर है जो अभी तक सूखी नहीं है और हमारी एकमात्र स्मृति केवल दो छोटी-छोटी मुट्ठी भर पानी होगा, जो हम एक-दूसरे को देंगे। ठीक उसी प्रकार जैसे हमने मानवीय सम्बन्ध कायम किए, वार्तालाप किया और एक-दूसरे को सहायता दी।

एक नदी रेगिस्तान में अन्तर्धान हो जाती है। लेकिन डाक्टर लोग पानी की इस अन्तिम धारा से भी मुझे वंचित करना चाहते हैं। किसी अधिकार के बल पर (और यह बात उनके भेजे में नहीं घुसती कि इस अधिकार के औचित्य के बारे में सोचें) उन लोगों ने यह निश्चित किया है, मेरी सहमति के बिना और यह निर्णय मेरी ओर से लिया गया है। यह निर्णय है एक भयानक प्रकार की चिकित्सा का—हारमोन चिकित्सा का। यह अंगारे से लाल लोहे के एक टुकड़े से आपको दागने जैसी बात होती है। बस इससे एक बार दाग

दिये जाने के बाद आप जीवन पर्यन्त अपंग हो जाते हैं। लेकिन यह अस्पताल की दिनचर्या का एक मामूली-सा अंग है, यहाँ हर रोज यह होता रहता है।

इससे पहले भी मैंने जीवन के सर्वोच्च मूल्य के बारे में भी बहुत कुछ सोचा था और इधर मैं इस सम्बन्ध में और अधिक सोचता रहा हूं। कोई व्यक्ति जीवन के लिए कितना अधिक चुका सकता है और कितना आवश्यकता से अधिक होता है? यह ठीक वैसी ही बात है, जैसी वे लोग आजकल आपको स्कूलों में सिखाते हैं, "एक मनुष्य की सर्वाधिक मूल्यवान सम्पत्ति, उसका जीवन है।" यह उसे केवल एक बार प्राप्त होता है। इसका यह अर्थ होता है कि हम हर कीमत पर जीवन से चिपके रहें। लेकिन बन्दी शिविरों ने हममें से अनेक को यह सिद्ध करने में सहायता दी है कि अच्छे और असहाय लोगों से विश्वासघात अथवा उनका विनाश एक इतनी ऊंची कीमत है कि हमारा जीवन उसके समान मूल्यवान नहीं है। जहां तक तलवे चाटने और खुशामद करने का सम्बन्ध है, शिविर का मत इस प्रश्न पर विभाजित है। कुछ कहते थे कि यह एक ऐसी कीमत है, जिसे चुकाया जा सकता है और शायद ऐसा ही हो, लेकिन जरा इस कीमत को तो देखिए। क्या एक मनुष्य को अपने जीवन की रक्षा के लिए, उन सब बातों को दे डालना चाहिए, जो जीवन को रंगीन बनाती हैं, उसे मोहक और आकर्षक बनाती हैं? क्या कोई व्यक्ति केवल पाचन और श्वास क्रिया, स्नायु और मस्तिष्क की गतिविधि भर को ही स्वीकार कर सकता है और अन्य सब बातों का त्याग कर सकता है? क्या वह एक चलता फिरता नक्शा बन सकता है? क्या यह बहुत ऊंचा दाम नहीं है? क्या यह मनुष्य जीवन का उपहास नहीं है? क्या कोई व्यक्ति यह कीमत चुका सकता है? क्या उसे यह कीमत चुकानी चाहिए? सेना में सात वर्ष और फिर शिविर में सात वर्ष, दो-दो बार सात वर्ष, उस पौराणिक अथवा बाइबल में वर्णित संख्या का दुगना समय और फिर इसके बाद आपको यह अन्तर करने की क्षमता से वंचित कर दिया जाये कि पुरुष क्या है और स्त्री क्या है—क्या यह कीमत बेहद ऊंची, बेहद शोषण करने वाली नहीं है?

मैं एक मिनट भी नहीं हिचकिचाता, मैं बहुत समय पहले ही उनसे लड़ पड़ा होता और यहां से चल देता। लेकिन यह करने पर मैं उनके प्रमाण-पत्र से वंचित हो जाता। उस प्रमाणपत्र से जो एक महान् देवता बना हुआ है। कमांडेंट अथवा मुख्य सुरक्षा अधिकारी कल ही मुझे रेगिस्तान में ३०० किलोमीटर आगे भेजने का हुक्म दे सकता है। मैं उस समय तक इस बात को रोक सकता हूँ जब तक मेरे पास मेरा प्रमाण-पत्र है। मैं कह सकता हूँ, कि श्रीमन् मेहरबानी करके देखिए, मुझे निरन्तर डाक्टरी निगरानी और चिकित्सा की आवश्यकता है, श्रीमन्! धन्यवाद, श्रीमन्! एक पुराने कैदी को, अपना डाक्टरी प्रमाण-पत्र छोड़ देने की बात कहना कैसी बात है? यह कल्पनातीत

है, यह विचार से परे है।

तो एक बार फिर मुझे चालाक बनना होगा। नाटक रचना होगा, धोखा देना होगा और बहुत-सी चीजों को घसीटते रहना होगा और जीवन भर यही करते रहने के बाद आप इन बातों से ऊब जाते हैं। (प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि आवश्यकता से अधिक चालाकी व्यक्ति को थका देती है और वह गलती कर बैठने की स्थिति में आ जाता है। ओमस्क प्रयोगशाला के सहायक को मैंने वह पत्र भेजने की बात कहकर अपने सिर पर मुसीबतों का पहाड़ ही तोड़ डाला था। मैंने यह पत्र दे दिया था। उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया, इसे मेरे जीवनवृत्त के साथ जोड़ दिया और जब बहुत विलम्ब हो चुका तो मैंने यह अनुभव किया कि कार्यभारी डाक्टर ने मुझे किस प्रकार धोखा दिया। अब वह बड़े आत्मविश्वास से मुझे हारमोन चिकित्सा दे सकती है। यदि यह पत्र न होता तो सम्भवतः उसके मन में सन्देह बना रहता।)

जब मैं उशतेरेक वापस आऊंगा, तब अपनी रसौली का इलाज उस जड़ी से करूंगा, जो आइसिक-कुल से मैंने प्राप्त की थी, ताकि दूसरी छोटी रसौलियां पैदा न हो सकें। अपनी चिकित्सा तेज़ विष से करने में एक गरिमा का आभास मिलता है। विष यह स्वांग नहीं रचता कि वह हानिरहित औषधि है। वह आपको स्पष्ट शब्दों में कहता है, "मैं विष हूँ! सावधान! अन्यथा तुम परिणाम जानते ही हो! तो हम जानते हैं कि हमारे सामने क्या संभावना, क्या संकट मौजूद है।

आपके पिछले पत्र से मैं काफी प्रसन्न और उत्तेजित रहा (यह पर्याप्त तेजी से यहां पहुंचा; सिर्फ पांच दिन में। इससे पहले के सब पत्रों को ८ दिन लगे थे।) क्या यह सच है? क्या हमारे क्षेत्र में सचमुच भूगर्भ सर्वेक्षण चल रहा है? थियोडोलाइट के पीछे खड़े होकर कितनी खुशी मिलती है, एक वर्ष या लगभग इतने ही समय चाहे इससे अधिक समय के लिए नहीं भी, एक मनुष्य की तरह काम करके कितनी खुशी मिलती है। लेकिन क्या वे मुझे इस काम पर ले लेंगे? लेकिन सर्वेक्षण का काम मेरे निष्कासन की परिधि से बाहर के इलाके में भी होगा, क्यों होगा न? और इसके अलावा यह सब चीजें बिना किसी अपवाद के, अत्यन्त गोपनीय होती हैं और मैं सजायाफता आदमी हूँ।

अब मैं कभी भी वाटर लू ब्रिज अथवा ओपेन सिटी फिल्में नहीं देख पाऊंगा। ये फिल्में तुम्हें बहुत अच्छी लगी हैं। दूसरी बार ये फिल्में उशतेरेक नहीं आयेंगी और यहां सिनेमा जाने का यह अर्थ है कि मुझे अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद रात का समय गुजारने के लिए कोई स्थान ढूंढ निकालना होगा। मैं कहां ठहर सकता हूं? खैर हो सकता है कि मुझे उस समय तक अस्पताल से छुट्टी न मिले, जब तक मैं एक जानवर की तरह अपने चारों हाथ-पांव के बल घिसट कर चलने की स्थिति में न आ जाऊं।

आपने मुझे कुछ पैसा भेजने का प्रस्ताव किया है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। पहले मैं इससे इन्कार करना चाहता था। जीवन पर्यन्त मैंने ऋण से बचे रहने का प्रयास किया है और मैं इसमें सफल भी हुआ हूँ। लेकिन तभी मुझे याद आया कि विरासत में कुछ भी छोड़े बिना मैं नहीं मरूंगा। उशतेरेक की भेड़ की खाल का एक कोट है—और यह आखिर अपने आप में कुछ मायने रखता है और कम्बल के रूप में मैं दो मीटर लम्बे जिस काले कपड़े का इस्तेमाल करता हूँ आखिर वह भी तो है। कोमल पंखों से भरा एक तकिया भी है, मेलचुक से प्राप्त भेंट? और पैकिंग में काम आने वाली तीन पेटियां, जिन्हें जोड़ करमैंने पलंग बना लिया है। और भोजन पकाने के दो बर्तन। मेरा शिविर का कटोरा। और मेरी चम्मच। और हां मेरी बाल्टी भी तो है। अंगीठी के लिए अभी भी कुछ साक सौल[1] बचा है। एक कुल्हाड़ी भी। और अन्त में पैराफीन का लैम्प। भूल से ही मैं शायद अपनी वसीयत करना भूल गया।

यदि आप मुझे १५० रूबल भेज सकें (इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है) तो मैं अत्यन्त आभारी रहूँगा। मैं आपके आदेशानुसार कुछ परमैंगेनेट, सोडा और दालचीनी लाने की कोशिश करूंगा। यदि कोई और चीज भी मंगवानी हो तो लिखें। शायद आपको एक छोटी इस्तरी पसन्द आए? यदि ज़रूरत हो तो अवश्य लिखें, मैं यह लेता आऊंगा।

आपके मौसम सम्बन्धी विवरण से निकोलाई आइवानोविच, मुझे आभास मिल गया है कि घर पर अभी ठण्डक है, अभी तक बर्फ गला नहीं है। यहां बहुत ही अच्छी बसन्त ऋतु है। यह प्रायः समझ के बाहर का मौसम है। कुछ विचित्र और अभद्र सा भी।

यह बात तो हुई मौसम की। यदि आपको इन्ना स्त्रोम मिले तो उसे मेरी ओर से शुभ कामनाएं देना, उससे कहना कि मैं उसके बारे में सोचता हूँ···

या शायद यही बेहतर होगा कि आप कुछ न कहें···

मेरे भीतर इतनी अस्पष्ट बातें और भावनाएं उमड़ रही हैं कि मैं स्वयं भी नहीं जानता कि मैं क्या चाहता हूं, अथवा मुझे क्या चाहने का अधिकार है।

लेकिन जब मैं स्वयं को सांत्वना देने वाली अपनी एक कहावत को याद करता हूं कि "स्थिति इससे भी खराब रही है"। तो मैं सदा प्रसन्न हो उठता हूं। हम उन लोगों में नहीं हैं, जिन्हें शर्म से सिर झुकाने की आवश्यकता हो। हम किसी न किसी तरह आगे बढ़ते ही रहेंगे।

एलेना अलेक्सान्द्रोवना कहती हैं कि उन्होंने दो शामों को दस पत्र लिखे

---

१. एक रेगिस्तानी पेड़ जिसकी लकड़ी का इस्तेमाल ईन्धन के लिए किया जाता है (अनुवादक की टिप्पणी)।

थे। इससे मेरे मन में यह बात आई कि आप लोगों के मन में अन्य लोगों के प्रति जो सहानुभूतिपूर्ण और अच्छा भाव है, वह कितनी अद्भुत वस्तु है। आजकल ऐसा कौन है, जो दूर के दोस्तों को याद करता हो और एक के बाद एक शाम उनके लिए नष्ट करता रहता हो? यही कारण है कि आपको लम्बे पत्र लिखना कितना अच्छा लगता है, क्योंकि मैं जानता हूं कि आप ऊंची आवाज़ में उन्हें पढ़ेंगे और बार-बार उन्हें पढ़ेंगे और फिर एक-एक वाक्य पढ़ कर उनका उत्तर देंगे।

तो, मेरे मित्रो, मैं यही कामना करता हूं कि आप फलते-फूलते रहें। और आपका प्रकाश निरन्तर जगमगाता रहे।

आपका—
ओलेग

२. अच्छी तरह से क्यों न रहें ?

पांच मार्च का दिन एक प्रकार से धुंधलके वाला दिन था और बाहर अच्छी ठंडी फुहार पड़ रही थी, लेकिन वार्ड के भीतर यह दिन अनेक अचरज भरी घटनाओं वाला सिद्ध हुआ। पिछली शाम द्योमा ने आपरेशन पर सहमति देते हुए अपने हस्ताक्षर किए थे और इस कारण से वह सर्जिकल वार्ड में भेजा जा रहा था। उसी दिन वे दो नए रोगियों को भी इस वार्ड में लाए।

पहले नए रोगी ने द्योमा का बिस्तर सम्भाला। यह बिस्तर कोने में लगा था। वह लम्बा आदमी था, लेकिन उसकी पीठ भयंकर रूप से झुकी हुई थी। उसकी रीढ़ की हड्डी मुड़ गई थी और उसका चेहरा एक अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति की तरह जर्जर था। उसकी आखें बेहद सूजी हुई थीं। उसकी आंखों के नीचे का हिस्सा इतना खिचा हुआ था कि आंखों की शक्ल ही बदल गई थी। हर व्यक्ति की आंख अण्डाकार होती है, पर इस व्यक्ति की आंखें गोल घेरे बन चुकी थीं और प्रत्येक गोल घेरे में, सफेद भाग में अस्वास्थ्य के चिह्न स्वरूप गहरा लाल रंग दिखाई पड़ रहा था। उसकी आँखों के गोल घेरे चमकदार, भूरे और प्रकाश वितरित करने वाले बड़े-बड़े गोल घेरे दिखाई पड़ते थे, जिसका कारण निचली पलक की आकृति बिगड़ जाना था। इन बहुत बड़ी-बड़ी गोल आँखों से वह वृद्ध प्रत्येक व्यक्ति को असुखद ढंगसे घूर कर देख रहा था।

पिछले सप्ताह द्योमा की मन:स्थिति ठीक नहीं रही थी। इतना ही नहीं, उसे निरन्तर दर्द रहा था और उसकी टांग में तो इतना तेज दर्द होता था कि वह सो नहीं सकता था अथवा किसी भी काम में हिस्सा नहीं ले सकता था। वस्तुत: स्वयं को चिल्ला-चिल्ला कर रोने से रोक रखने के लिए और अपने आसपास के लोगों को चैन से सोने देने के लिये, उसे वस्तुत जबरदस्त प्रयास करना पड़ता था। इस प्रयास ने उसे इस सीमा तक पस्त कर दिया था कि अब वह अपनी टांग को एक मूल्यवान वस्तु नहीं समझ रहा था, बल्कि एक ऐसा अभिशप्त भार समझ रहा था, जिससे वह जितनी जल्दी हो सके छुट्टी पा जाये बेहतर। एक महीने पहले आपरेशन की बात उसे अपने जीवन का अन्त ही दिखाई पड़ती थी, लेकिन अब यह मुक्तिदायक बात लग रही थी इस प्रकार हमारे मानकों में परिवर्तन होता है।

द्योमा ने आपरेशन पर सहमति देने से पहले वार्ड के प्रत्येक व्यक्ति से सलाह की थी। आज भी, जबकि वह अपना सामान बांध रहा था और वार्ड के अन्य रोगियों से विदा ले रहा था वह वार्तालाप को बदलने की कोशिश करता और यह चाहता कि लोग उसे सांत्वना दें और इस बात का भरोसा दिलायें कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। अत: वादिम को वे बातें दुहरानी पड़ीं जो वह पहले कह चुका था : कि द्योमा बड़ा भाग्यशाली सिद्ध हुआ है, कि वह इतनी आसानी से बच निकला और यह भी कि वादिम उसका स्थान सहर्ष लेने को तैयार हैं।

पर द्योमा अभी भी आपत्तियां उठा रहा था 'लेकिन हड्डी—वे लोग एक आरी से उसे काट डालते हैं। वे लोग लकड़ी के लट्ठे की तरह उसे आरी से काटते हैं। वे लोग कहते हैं कि रोगी को बेहोश करने के लिए जो दवा दी जाती है, उसके बावजूद तुम यह अनुभव कर सकते हो कि तुम्हारी टांग काटी जा रही है।'

लेकिन वादिम किसी भी व्यक्ति को बहुत अधिक समय तक सांत्वना दे पाने की मन:स्थिति में नहीं था और न ही वह यह करना ही चाहता था। वह बोला, "सुनो तुम वह पहले व्यक्ति नहीं हो, जिसके साथ यह हुआ हो। दूसरे लोगों ने भी इसे बर्दाश्त किया है। तुम भी इसे बर्दाश्त करोगे।"

इस मामले में भी, अन्य मामलों की तरह ही, वह न्यायोचित और पक्षपातरहित बात कर रहा था। उसने स्वयं किसी सांत्वना की अपेक्षा नहीं की थी और यदि उसे सांत्वना दी भी जाती, तो वह उसे स्वीकार न करता। सांत्वना देने के प्रत्येक प्रयास में संकल्प की कमी, यहां तक कि धार्मिकता तक का आभास मिलता है।

वादिम अभी उतना ही गर्बीला संयत और विनम्र था, जितना अस्पताल में भरती होने के दिन था। केवल अन्तर यह था कि पर्वतारोहियों जैसी उसकी लाल चमड़ी अब पीली पड़ने लगी थी। यदाकदा दर्द से उसके ओंठ कांपने लगते, उसका माथा व्यग्रता और अचम्भे से चटकने लगता। लम्बे अरसे से वह यह कहता रहा था कि वह ८ महीने के भीतर मर जायेगा। पर उसकी घुड़सवारी, विमान से मास्को यात्रा और चेरेगोरोदतसेव से मुलाकात जारी रही। वह अपने मन में इस बात से आश्वस्त था कि वह किसी न किसी प्रकार इस संकट से निकल जाएगा। लेकिन अब वह यहां पहुँच चुका था। उसे यहां एक महीना गुजर चुका था—यह महीना उन ८ महीनों में से था जो उसके जीवन की शेष अवधि थे। और यह भी हो सकता है कि यह पहला महीना न हो, बल्कि तीसरा अथवा चौथा महीना हो और हर रोज चलना फिरना अधिक कष्टप्रद होता गया। अब वह यह कल्पना तक कर पाना कठिन समझता था कि घोड़े पर किस प्रकार सवार हो सकेगा और बाहर खेतों में जा सकेगा। दर्द उसकी

उस सन्धि तक में फैल चुका था। वह अपने साथ जो पुस्तकें लाया था, उनमें से तीन पुस्तकें वह पढ़ चुका था। लेकिन अब उसका यह विश्वास टूटता जा रहा था कि रेडियो सक्रिय पानी की सहायता से भू-गर्भ में छिपे खनिजों का पता लगाना ही उसके जीवन की एकमात्र आवश्यक वस्तु था। यही कारण था कि अब वह पहले की तुलना में कम एकाग्रता से पढ़ता, पुस्तकों पर कम प्रश्न चिह्न और विस्मय चिह्न लगाता।

वादिम यह समझता था कि जब वह अत्यधिक व्यस्त होता है, तभी उसके जीवन का सर्वोत्तम दौर होता है और उसे यह लगता था कि दिन में पर्याप्त घण्टे नहीं हैं। लेकिन अब वह यह देखता कि दिन पर्याप्त लम्बे होते हैं, यहां, तक कि बेहद लम्बे होते हैं क्योंकि पर्याप्त जीवन नहीं है। काम करने की उसकी अत्यधिक क्षमता अब कम होने लगी थी। अब शायद ही कभी वह बहुत सवेरे उठता और सुबह के शांत वातावरण में अपनी पुस्तकें पढ़ता। कभी-कभी वह चुपचाप बिस्तर पर पड़ा रहता, कम्बल अपने सिर के ऊपर खींच लेता और यह विचार उसके मन में घर करने लगता कि उसे प्रतिरोध छोड़ देना चाहिए और संघर्ष न करके अन्त को स्वीकार करना ज्यादा आसान होगा। उसने अपने चारों ओर के क्षुद्र वातावरण और मूर्खतापूर्ण वार्तालापों की भयावह निरर्थकता को अनुभव करना शुरू कर दिया था और उसके मन में यह भावना बड़े उद्वेग से उठने लगी थी कि वह पने सुसंस्रकृत आत्म-नियंत्रण के मुखौटे को नोच कर अलग फेंक दे और उस प्रकार गुर्राने लगे जिस प्रकार एक जंगली जानवर उस जाल की ओर देखकर गुर्राता है जिसमें वह फंसा होता है। "ठीक है, यह मूर्खतापूर्ण नाटक बन्द करो, मुझे इससे मुक्ति दिलाओ।"

वादिम की मां चार उच्चाधिकारियों से मिल चुकी थी, लेकिन उसे अभी तक रेडियो सक्रिय सोना प्राप्त करने में सफलता नहीं मिली थी। वह रूस से कुछ चागा[1] लाई थी और उसने यह व्यवस्था भी कर ली थी कि नर्स एक दिन छोड़कर इस दवा के जग लाकर देती रहे। इसके बाद वह मास्को वापस चली गई और उसने सोना प्राप्त करने के लिए और अधिकारियों से मिलना शुरू कर दिया। वह इस संभावना से समझौता करने को तैयार नहीं थी कि रेडियोसक्रिय सोने के मौजूद रहते उसके पुत्र की उस संधि में केन्सर की दूसरे क्रम की रसौलियां निकलनी शुरू हो जाएं।

द्योमा कोस्तोग्लोतोव के पास पहुंचा। उसकी इच्छा विदास्वरूप कोई बात सुनने अथवा कहने की थी। कोस्तोग्लोतोव अपने बिस्तर पर तिरछा पड़ा

---

१. बिर्च वृक्ष की फफूंद। अनेक लोगों का यह विश्वास है कि इससे केन्सर ठीक हो जाता है। (अनुवादक की टिप्पणी)

हुआ था। उसके पांव बिस्तर के ऊंचे पायते पर थे और उसका सिर गद्दे से बाहर बिस्तरों की दोनों कतारों के बीच लटक रहा था। उन दोनों ने एक दूसरे को उलटा देखा। ओलेग ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और विदा लेते हुए बड़े शान्त स्वर में कहा (अब वह जोर से बोलने में भी कष्ट अनुभव करता था। उसे अपने फैफड़ों के नीचे किसी वस्तु की गूंज सुनाई पड़ती थी) : "द्योमा घबराओ मत। लेव लियो निदोविच यहां मौजूद है। मैंने उसे देखा है, वह आनन फानन में इसे कटवा डालेगा।"

"वह यहां है?" द्योमा का चेहरा चमक उठा। "क्या उसे आपने स्वयं देखा है?"

"हां यह बात ठीक है।"

'ठीक है। यह कुछ बात हुई। यह सचमुच बहुत अच्छा हुआ।' वस्तुतः इस लम्बे सर्जन की मौजूदगी पर्याप्त होती थी। वह जैसे ही अपना ढीला-ढाला चोगा पहनकर अपनी बहुत लम्बी-लम्बी बाहें हिलाता हुआ अस्पताल के बरामदों में घूमता हुआ दिखाई पड़ता, तो मरीजों की हिम्मत बंध जाती। मानो उन्हें उसे देखकर यह लगता कि इस लम्बी-लम्बी टांगों वाले व्यक्ति की ही पूरे महीने से यहां कमी थी। यदि अधिकारीगण मरीजों के सामने सारे सर्जनों को पेश करते और मरीजों से अपनी इच्छानुसार चुनाव करने की बात कहते तो इस बात में सन्देह नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति लेव लियोनिदोविच का ही चुनाव करता। अस्पताल में वह जिस तरह घूमता रहता, उससे ऐसा लगता मानो वह बेहद ऊबा हुआ है। लेकिन उसकी इस मनःस्थिति और तरीके को वह इस बात का संकेत समझते कि उस दिन अस्पताल में आपरेशन का दिन नहीं होगा।

यद्यपि छोटे कद वाली, दुबली-पतली येवजेनिया उस्तीनोवना स्वयं बहुत अच्छी सर्जन थी और द्योमा के आपरेशन के लिए पर्याप्त कुशल भी, पर लेव लियोनिदोविच के लम्बे-लम्बे बनमानुष जैसे बालों से भरे हाथों के तले लेटने की एक दूसरी ही अनुभूति होती थी। इसका कारण यह था कि चाहे वह आपको बचा पाये अथवा नहीं पर इसका कारण यह नहीं होगा कि उसने कोई गलती की। और द्योमा इस बात से न जाने क्यों पूरी तरह आश्वस्त था।

रोगी और सर्जन के बीच की आत्मीयता अधिक समय तक कायम नहीं रहती। लेकिन यह आत्मीयता एक पुत्र और स्वयं उसके पिता की आत्मीयता से अधिक घनिष्ट होती है।

"वह अच्छा सर्जन है, क्यों?" सूजी हुई आंखों वाले नए रोगी ने बहुत मद्धिम आवाज में यह सवाल उठाया। अब यह रोगी उस बिस्तर पर था जो पहले द्योमा का था। वह ऐसी मनःस्थिति में दिखाई दे रहा था, मानो किसी

को देखकर आश्चर्य में पड़ गया हो। वह कांप रहा था। वार्ड के भीतर भा उसने अपने पायजामे के ऊपर भारी भरकम ड्रेसिंग गाउन पहन रखा था। यह वृद्ध अपने चारों ओर इस प्रकार देख रहा था मानो वह किसी मकान में अकेला हो और मध्य रात्रि में दरवाजे पर दस्तक होने से वह जाग गया हो और वह बिस्तर से बाहर तो निकल आया हो, लेकिन उसकी समझ में यह न आ रहा हो कि उसके समक्ष क्या खतरा पेश है।

"हूं हूं।" द्योमा ने विचित्र आवाज़ में उत्तर दिया। अब उसका चेहरा लगातार चमक रहा था। वह ऐसा दिखाई पड़ रहा था, मानो उसका आपरेशन आधे से अधिक हो चुका हो। "वह चैम्पियन है, वह लड़का! क्या तुम्हारा भी आपरेशन होगा? तुम्हें क्या हुआ है।"

"हां मेरा भी आपरेशन होगा" बस इस नए रोगी ने केवल यह उत्तर दिया। यह उत्तर ऐसा था मानो उसने द्योमा का पूरा सवाल सुना ही न हो। उसके चेहरे पर किसी भी रूप में वह राहत दिखाई नहीं पड़ रही थी, जिसे द्योमा प्रतिबिम्बित कर रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी, गोलमटोल और निरंतर घूरती रहती आंखों में कोई परिवर्तन नहीं था। ये आंखें या तो आवश्यकता से अधिक एकाग्रता से घूरती थीं अथवा ऐसी हो जाती थीं मानो कुछ भी न देख रही हों।

द्योमा चला गया। उन लोगों ने नए रोगी के लिए बिस्तर तैयार किया। नया रोगी बिस्तर पर बैठ गया और दीवार का सहारा लगा लिया। एक बार फिर उसकी बड़ी-बड़ी आंखें पूरी तरह मूक होकर घूर रही थीं। उस ने पलक तक नहीं झपकी बस वह वार्ड के किसी व्यक्ति परअपनी आंखें टिका देता और फिर ऐसा लगता जैसे वह निरंतर युगों से इसी प्रकार घूर रहा हो। इसके बाद वह अपना सिर घुमाता और फिर किसी दूसरे रोगी को घूरने लगता अथवा ऐसा लगता मानो वह उस रोगी के आरपार ही देख रहा हो वार्ड में जो आवाज़ें और चहल-पहल होती उसके प्रति वह कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दिखाता। वह चुप था, कोई सवाल नहीं पूछ रहा था और न ही किसी सवाल का उत्तर दे रहा था। एक घंटा गुजर गया और वार्ड के लोगों को केवल इतना ही पता चल सका कि वह फेरगाना से आया था। इसके बाद एक नर्स ने उसे आवाज़ लगाई और यह पता चला कि उसका नाम शुलुबिन था।

वह एक गिद्ध और उल्लू का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता था। वह वस्तुत: यही था। रूसानोव ने तुरन्त उन स्थिर, गोल-मटोल, और पूरी तरह गतिहीन आंखों को पहचान लिया। वार्डकोई सुखद स्थान नहीं था। तो बस कमी इस गिद्ध-उल्लू जैसे आदमी की ही थी। बड़ी उदासीनता से उसने अपनी आंखें रूसानोव पर गड़ा दीं और इतनी देर तक उसकी ओर घूरता रहा कि यह स्थिति असुखद बन गई। वह प्रत्येक व्यक्ति को इसी प्रकार देखता रहा, मानो

वार्ड में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति ने उसके साथ कोई बुराई की हो। अब वार्ड का जीवन पहले की तरह सामान्य और मुक्त रूप से नहीं चल पा रहा था।

इससे पहले दिन पावेल निकोलोएविच को बारहवां इन्जेक्शन दिया गया था। अब वह इन्हीं इन्जेक्शनों का आदी हो गया था और उन्माद की स्थिति में पहुंचे बिना ही ये इन्जेक्शन लगवा सकता था। लेकिन अभी भी उसे सिरदर्द बना रहता था और वह स्वयं को बहुत कमजोर अनुभव कर रहा था। लेकिन अब यह बात स्पष्ट हो गई थी कि उसकी मृत्यु का अब कोई भय नहीं रहा था। वस्तुतः यह पूरी घटना एक पारिवारिक पिकनिक से अधिक कुछ नहीं थी। उसकी आधी रसौली पहले ही गायब हो चुकी थी और रसौली का शेष हिस्सा, जो उसकी गर्दन पर जमा हुआ था मुलायम पड़ चुका था। यद्यपि अभी भी वह इसके कारण थकावट महसूस करता था, लेकिन पहले जैसी बुरी स्थिति नहीं थी अब उसका सिर पहले की तरह आजादी से घूम सकता था। बस कमजोरी शेष थी और आप कमजोरी का सामना कर सकते हैं। एक दृष्टि से कमजोरी में कुछ अच्छी बात भी होती है। आप लेटे-लेटे कुछ पढ़ते रह सकते है, ओगोन्योक और क्रोकोडिल[1] पढ़ते रह सकते हैं, टानिक लेते रह सकते हैं और खाने के लिऐ किसी ऐसी स्वादिष्ट चीज़ का चुनाव कर सकते हैं, जिसकी आपको इच्छा रही हो। बस कमी केवल इतनी थी कि वह कुछ ऐसे लोगों से बातचीत कर पाता जो उसके विचार के अनुरूप होते और उसे रेडियो सुनने की भी सुविधा होती। लेकिन कोई बात नहीं, घर पहुंचने पर उसे यह प्राप्त होगा। यदि दोन्तसोवा ने उसकी काख में बहुत जोर से अंगुलियां गड़ा-गड़ाकर न देखा होता, तो केवल कमजोरी की ही शिकायत होती। लेकिन दोन्तसोवा ने इतने जोर से अंगुलियां गढ़ाई थीं, मानो किसी लकड़ी से दबाया जा रहा हो। वह किसी चीज की तलाश कर रही थी और अस्पताल में एक महीना गुजार देने के बाद उसे मालूम था कि वह क्या तलाश कर रही थी···दूसरे दौर की कोई रसौली। वह उसे नीचे अपने कक्ष में बुलाती, उसे रोगियों की परीक्षा के लिए रखी गई मेज़ पर लिटाती और उसकी उस संधि की परीक्षा करती और फिर बहुत जोर से दबा-दबाकर देखती।

"क्या कहीं और भी रसौलियां निकलनी शुरू हो सकती हैं?" पावेल निकोलाएविच बहुत भयभीत होकर उससे पूछता और अपनी गर्दन की रसौली के ठीक होने लगने का उत्साह प्रायः समाप्त हो जाता।

"यही कारण है कि हम आपका इलाज कर रहे हैं, ताकि यह सब न हो।" दोन्तसोवा अपना सिर हिलाते हुए कहती। लेकिन हमें आपको अभी बहुत

---

1. ओगोन्योक : सोवियत संघ का एक सचित्र साप्ताहिक। क्रोकोडिल : सोवियत संघ की प्रमुख व्यंग्य और कार्टून पत्रिका। (अनुवादक की टिप्पणी)

इन्जेक्शन लगाने होंगे ।"

"कितने ?" रूसानोव भयभीत होकर पूछता ।

"देखेंगे ।" (डाक्टर लोग आपको कभी कोई बात स्पष्ट नहीं बताते)।

अभी तक उसे बारह इन्जेक्शन लग चुके थे, उन्हीं से वह इतना कमजोर हो चुका था । वे लोग उसके रक्त की स्थिति के बारे में पहले ही चिंतित थे और हो सकता है उसे और बारह इन्जेक्शन बर्दाश्त करने पड़ें । तो स्थिति यह थी कि किसी न किसी तरीके से रोग उसके ऊपर हावी हो रहा था । रसौली छोटी हो गई थी, लेकिन यह प्रसन्नता का कोई कारण नहीं था । पावेल निकोलोएविच अपने दिन बड़ी उदासी से बिता रहा था । वह अधिकांशतः पलंग पर लेटा रहता । प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि "हड्डी चूस"[1] तक पर्याप्त सीधा हो गया था । अब उसने दहाड़ना और गुर्राना बन्द कर दिया था और यह स्पष्ट था कि अब वह नाटक नहीं रच रहा था । रोग ने उसे भी पस्त कर दिया था । अब वह अधिकाधिक समय अपने बिस्तर के तकिए के नीचे अपना सिर लटका देता और घंटों तक उसी स्थिति में लेटा रहता और अपनी आंखों को भींचता रहता । पावेल निकोलोएविच सिर दर्द के लिए पाऊडर खाता रहता, अपने माथे पर गीली पट्टी रखता और रोशनी की चकाचौंध से बचने के लिए अपनी आखें ढंक लेता । और इस प्रकार से वे लोग घंटों तक लगातार इसी प्रकार बराबर लेटे रहते, बड़ी शान्ति से बिना किसी झगड़े के ।

उन लोगों ने सीढ़ियों के ऊपर के चौड़े हिस्से में आर-पार एक कपड़ा टांग रखा था । (वह छोटा-सा आदमी जो इस स्थान पर लेटा हुआ गुब्बारे से आक्सीजन लेता रहता था, वहां से हटा कर मुर्दा घर पहुंचाया जा चुका था) इस कपड़े पर एक संदेश लिखा था, सदा की तरह लाल रंग के कपड़े पर सफेद अक्षर अंकित थे : "रोगियों को एक-दूसरे की बीमारी के बारे में बातचीत नहीं करनी चाहिए ।"

वस्तुत: लाल रंग के कपड़े के इतने शानदार टुकड़े पर, जिसे इतने महत्वपूर्ण स्थान पर लटकाया गया हो, अक्तूबर क्रांति अथवा एक मई की वर्ष गांठ के मनाने के लिए कोई नारा लिखना अधिक उपयुक्त होता । लेकिन ये उन लोगों के नाम एक महत्वपूर्ण अपील थी, जो वहां रहते थे । पावेल निकोलोएविच ने अनेक बार इस मामले का उल्लेख किया था ताकि वह अन्य रोगियों को स्वयं अपने आपको और एक-दूसरों को चिन्ता में डालने से रोक सके ।

(सामान्यतया यह कहा जा सकता है कि यह बात अधिक चतुरतापूर्ण होती, अधिक सही होती कि रसौली के सब रोगियों को एक ही स्थान पर न

---

१. रूसानोव ने कास्तोग्लोतोव का यही नाम रखा था । (अनुवादक की टिप्पणी)

रखा जाता। बल्कि उन्हें सामान्य अस्पतालों में अलग-अलग रखा जाता। इस स्थिति में वे एक-दूसरे को भयभीत न कर पाते और इन लोगों से सच्चाई को छिपाया जा सकता था, जो अधिक मानवीय बात होती।)

वार्ड में लोग आते-जाते रहते थे। लेकिन कोई भी कभी भी खुश दिखाई नहीं पड़ता था। वे सब बेहद निरुत्साहित और थके हारे दिखाई पड़ते थे। केवल अहमदजान जो पहले ही अपनी बैसाखी छोड़ चुका था और उसे जल्दी ही अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली थी, मुस्कराहट के बतौर अपने सफेद दांत चमकाता था। लेकिन इस बात से उसके अलावा अन्य किसी के मन में खुशी का संचार नहीं होता था। सम्भवत: उसका एकमात्र प्रभाव यह होता था कि लोगों के मन में ईर्ष्या पैदा होती थी।

तभी अचानक, इन नये रोगियों के उदासीपूर्ण का आगमन के कोई दो घन्टे बाद, इस धुंधलका भरे और निरुत्साहित कर डालने वाले दिन, जब प्रत्येक व्यक्ति अपने बिस्तर पर पड़ा था, जबकि वर्षा से धुले खिड़की के शीशों से इतनी कम रोशनी भीतर आ पा रही थी कि बिजली जला देने को मन होता था और बहुत जल्दी शाम हो जाने की इच्छा मन में उठती थी—अचानक एक छोटे कद और बहुत सक्रिय दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति तेज़ी से स्वस्थ व्यक्तियों की तरह चलता हुआ वार्ड के भीतर आया। वह तेज़ी से उस नर्स से आगे बढ़ गया जो उसे वार्ड दिखाने आई थी। वस्तुत: उसने वार्ड में प्रवेश नहीं किया, बल्कि वह इतनी तीव्रता से इसके भीतर घुसा मानो वहां उसे सलामी देने के लिए किसी सलामी गारद की व्यवस्था की गई हो और गारद के लोग बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा करते हुए थक गए हों। जब उसने यह देखा कि कितने निरुत्साह से हर आदमी अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ है तो वह वार्ड के बीचों-बीच रुक गया। उसने सीटी तक बजाई। और फिर अत्यधिक उत्साह भरे स्वर में, जिसमें शिकायत भी शामिल थी, बड़ी प्रसन्नता से बोला, "अरे लड़को, तुम सब लोग क्या नशे के आदी हो? क्या तुम्हारे पांव जल गए हैं या कुछ ऐसा ही हो गया है?"

यद्यपि वहां मौजूद लोग स्वागत करने वाली सलामी गारद का अंग नहीं थे, फिर भी इस व्यक्ति ने एक अर्द्ध-सैनिक तरीके से सलामी देते हुए इन लोगों को सम्बोधित किया। "चाली, मैक्सिम पेत्रोविच। आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुइ। आराम से खड़े होइए।"

इस व्यक्ति के चेहरे पर कैन्सर से उत्पन्न होने वाली किसी भी शारीरिक कमी का कोई चिन्ह मौजूद नहीं था। उसकी मुस्कराहट अत्यधिक आत्म-विश्वास से भरी थी और कुछ रोगी उसकी ओर देख कर मुस्कराये भी। इस प्रकार मुस्कराने वालों में पावेल निकोलोएविच भी था। एक महीना वह इन निरर्थक लोगों के साथ बिता चुका था और अब ऐसा लग रहा था मानो अंतत:

उनके बीच एक असली आदमी आ गया है।

"ठीक है। तो···" उसने किसी से नहीं पूछा, लेकिन उसकी तेज़ आंखों ने तुरन्त अपना बिस्तर पहचान लिया और वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वहां जा पहुंचा। उसका बिस्तर पावेल निकोलाएविच के बराबर था। यह वही बिस्तर था जिस पर मुरसालीमोव पहले लेटा रहता था। यह 'नया रोगी' उस जगह जा खड़ा हुआ, जो पावेल निकोलाएविच और उसके बिस्तर के बीच थी। वह बिस्तर पर बैठ गया और इसे जोर-जोर से धचके देने लगा और पलंग की चूं-चूं की आवाज आने लगी।

"यह ६० प्रतिशत जर्जर हो चुका है।" उसने टिप्पणी की—"वरिष्ठ डाक्टर चूहे पकड़ने का काम नहीं करता। तुम यह भली-भांति देख सकते हो।"

उसने अपना सामान रखना शुरू किया। लेकिन वहां ऐसी कोई वस्तु नहीं थी, जिस पर वह अपना सामान रख सकता। उसके हाथों में कुछ नहीं था। उसकी एक जेब में एक रेजर था और दूसरी जेब में एक डिब्बी यह डिब्बी सिगरेट की नहीं थी बल्कि ताश की थी। ताश प्राय: बिल्कुल नया था। उसने ताश बाहर निकाला, अपनी अंगुलियों से पत्तों को फटकारा और अपनी चतुरतापूर्ण आंखें पावेल निकोलाएविच की ओर घुमा कर बोला, "क्या आप शौक फरमाते हैं ?"

"हां, कभी-कभी" पावेल निकोलाएविच ने बड़े दोस्ताना तरीके से स्वीकार किया।

"प्रीफेरेंस ?"[1]

"नहीं। मैं बैगर माई नेबर खेल को ही सबसे अधिक पसन्द करता हूँ।"

"वह कोई खेल नहीं है।" चाली बड़ी कड़ाई से बोला। ह्विस्ट के बारे में तुम्हारी क्या राय है ? या विन्ट ? या पोकर ?"

"नहीं ये तो नहीं।" रूसोनोव ने बड़ी उलझन से एक हाथ हिलाते हुए इन्कार किया। "मुझे यह खेल सीखने का मौका ही नहीं मिला।"

"हम लोग तुम्हें यहीं यह खेल सिखायेंगे और कौन-सी जगह खेल सीखने के लिए हो सकती है।" चाली ने बड़े उत्साह से कहा। "इसके बारे में लोग यह कहते हैं : यदि तुम नहीं जानते तो हम तुम्हें सिखायेंगे, यदि तुम नहीं खेलोगे तो हम तुम्हें खेलने के लिए बाध्य करेंगे।"

वह हंस रहा था। उसकी नाक उसके चेहरे के लिए आवश्यकता से अधिक बड़ी थी। यह एक बहुत बड़ी, मुलायम और लाल नाक थी। लेकिन इसी नाक के कारण उसके चेहरे पर सरलता, आकर्षण और स्पष्टवादिता का

---

१. कंट्रैक्ट ब्रिज का एक प्रकार। (अनुवादक की टिप्पणी)

भाव दिखाई पड़ता था।

"पोकर संसार का सर्वोत्तम खेल है।" उसने बड़े अधिकृत ढंग से कहा। "पोकर में तुम्हें बिना पत्ते देखे ही दाव लगाना पड़ता है।"

अब वह इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका था कि पावेल निकोलाएविच खेलने को तैयार है और अब वह और खिलाड़ियों की तलाश में था। लेकिन पास में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसे देखकर उसे आशा बँधती।

"मैं! मैं सीखूंगा" अहमदजान ने उसके पीछे से चिल्लाकर कहा।"

"बहुत अच्छा," चाली ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए उत्तर दिया। अब कोई ऐसी चीज़ ढूंढो, जिसे हम पलंगों के बीच मेज के रूप में रख सकें।" उसने एक बार फिर वार्ड में चारों ओर नजर घुमाई और शुलुबिन की स्थिर दृष्टि को देखा और फिर गुलाबी पगड़ी तथा झुकी हुई मूंछों वाले उजबेक पर उसकी नजर गई, जिसकी मूंछें ऐसी लगती थीं मानो चाँदी के धागों से बनी हों। इसी समय नेल्या बाल्टी और कपड़ा लेकर आई। उससे कहा गया था कि वह फर्श पर एक बार फिर पोंछा लगाये।

"अहा!" चाली तुरन्त उसकी सराहना करता हुआ बोला, "देखिए हमें यहां कैसी अच्छी लड़की मिल गई है। अरी तू पहले कहां थी। हम लोग साथ-साथ झूले पर झूलते। क्यों झूलते न?"

नेल्या ने अपने मोटे-मोटे होंठ बाहर की ओर निकाले। हंसने का उसका यही तरीका था। "नहीं अभी बहुत विलम्ब नहीं हुआ है, क्यों?" वह बोली, "बस बात सिर्फ इतनी है कि तुम बीमार हो, क्यों हो न? तुम किसी लड़की के क्या काम आओगे?"

"हर रोज़ एक नई औरत डाक्टर को दूर ही रखती है।" चाली ने तुरन्त मुंहतोड़ जवाब दिया। "अरे क्या तुम मुझ से डरती हो?"

"मैं तुम से क्यों डरूं? तुम तो आदमी भी नहीं हो।" नेल्या बोली और अपनी आंखें उसके ऊपर गड़ा दीं। "मैं तुम्हारे लिए खासा मर्द हूँ, इस बात की चिन्ता न करो।" चाली ने घोषणा की। "तो ठीक है। जल्दी करो। फर्श पर पोंछा लगाओ। हम मुआइना करेंगे।"

"तुम जितना चाहो देख सकते हो। इसका कोई दाम नहीं लगेगा।" नेल्या ने कहा। वह मजाक कर रही थी। उसने पहले पलंग के नीचे गीला पोंछा फेंका, नीचे झुकी और पोंछा लगाने लगी।

ऐसा लगता था जैसे यह आदमी बीमार ही नहीं है। ऊपर से बीमारी का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहा था। और उसकी शक्ल देखकर भीतर के किसी दर्द का भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। अथवा क्या ऐसी बात थी कि वह अत्यधिक प्रयास करके अपने ऊपर, दर्द के ऊपर नियंत्रण कर रहा है और एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है, जिसे वार्ड में पहले कभी नहीं

देखा गया था। लेकिन जो एक ऐसा उदाहरण था, जिसे एक सोवियत पुरुष को प्रस्तुत करना चाहिए था? पावेल निकोलाएविच ने बड़ी ईर्ष्या भरी नजरों से चाली को देखा।

"लेकिन… तुम्हें क्या बीमारी है?" उसने बड़े आहिस्ता से चाली से पूछा ताकि उसके अलावा कोई अन्य न सुन सके।

"मुझे?" चाली ने अपने आपको पूरी तरह हिलाते हुए कहा। "मुझे पोलिप हो गये हैं।"

कोई भी रोगी यह नहीं जानता था कि पोलिप रोग क्या था। यद्यपि अक्सर लोगों को पोलिप हो जाते हैं।

"क्या दर्द होता है?"

"जैसे ही दर्द शुरू हुआ, मैं यहां आ गया। आप इसे काटकर निकालना चाहते हैं। ठीक है काटिए। देर क्यों?"

"ये कहां है?" रूसानोव ने और अधिक सम्मान से उससे पूछा।

"मैं समझता हूँ मेरे पेट में हैं," चाली ने ऐसे जवाब दिया मानो किसी बहुत मामूली बात का उल्लेख कर रहा हो। वह मुस्कुराया तक।

"मैं समझता हूँ वे लोग मेरे खूबसूरत पेट को काट डालेंगे। वे इसका कम से कम तीन चौथाई भाग काट कर फेंक देंगे।"

उसने अपने हाथ के इशारे से पेट काटने का संकेत किया और आंख मारी।

"इसके बाद तुम क्या करोगे?" रूसानोव ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"कुछ भी नहीं। मुझे बस इसका आदी होना होगा। मुझे उस समय तक प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक यह वोदका समाने योग्य न बन जाये।"

'लेकिन आप में कितना अद्भुत आत्म-नियंत्रण है।"

"मेरे पड़ोसी सुनो।" चाली ने अपना सिर ऊपर नीचे हिलाया। बड़ी लाल नाक से सज्जित उसका चेहरा, सहृदयता की मूर्ति लग रहा था। उसकी आंखों में सादगी चमक रही थी। "यदि तुम टूट जाना नहीं चाहते, तो तुम्हें अपने आपको चिन्ता में, व्यग्रता में नहीं डालना चाहिए। दर्द की बात कम सोचो, दर्द कम होगा। मेरी यही सलाह है।"

तभी अहमदजान प्लाईवुड का एक तख्ता लेकर हाजिर हो गया। उन्होंने इसे रूसानोव और चाली के बिस्तरों के बीच लगा दिया। यह काफी मजबूत था।

"यह बात अधिक सभ्यतापूर्ण है," अहमदजान प्रसन्नता से बोला।

"रोशनी जला दो" चाली ने हुक्म दिया। उन्होंने रोशनी जला दी। कमरा चमकने लगा।

"ठीक है, लेकिन चौथा आदमी कहां है?"

पर चौथा आदमी मिल ही नहीं रहा था।

"कोई बात नहीं। यह खेल हमें समझाओ, रूसानोव बोला। अब वह काफी प्रसन्न दिखाई पड़ रहा था। वह टांगें नीचे लटकाये हुए एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह बैठा था। जब उसने अपनी गर्दन घुमाई तो उसे पहले की बनिस्बत कम दर्द हुआ। यह सच है कि वह लकड़ी का एक टुकड़ा भर था। पर उसने यह कल्पना की कि वह ताश खेलने की सुन्दर एक छोटी-सी मेज़ पर बैठा हुआ है और छत से तेज़ रोशनी का एक सुन्दर लैम्प लटक रहा है। ताश के पत्तों पर लाल और काले रंग बहुत अच्छे दिखाई पड़ रहे थे। ताश के पत्तों की पालिशदार सफेद सतह पर यह बहुत अच्छे और स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। शायद चाली का कहना सही था, शायद यदि आप अपनी बीमारी के प्रति वही दृष्टिकोण अपनायें जो चाली ने अपना रखा था तो बीमारी अपने आप समाप्त हो सकती है। निरुत्साहित क्यों हो? उदासी भरे विचारों से हर समय क्यों अक्रान्त रहा जाये?

"तो हमें और प्रतीक्षा करनी होगी?" अब अहमदजान अन्य लोगों की तरह ही व्यग्र था।

"यह देखिए।" चाली ने उतनी तेजी से ताश के पत्तों को काटना शुरू किया, जितनी तेजी से सिनेमा की फिल्म चलती है। अनावश्यक पत्तों को उसने एक ओर डाल दिया और शेष पत्तों का ढेर उसने उसके सामने लगा दिया।

"हम जिन पत्तों का इस्तेमाल करते हैं, वे इक्के से लेकर नहले तक होते हैं। अलग-अलग हाथ इस प्रकार हैं: चिड़ी, ईंट, पान और हुक्म।" उसने अहमदजान को ये पत्ते दिखाये। "तुम समझ गए न?"

"हां, श्रीमन् मैं समझ गया।" अहमदजान ने बड़े संतोष से उत्तर दिया।

मैक्सिम पेत्रोविच ने अपनी अंगुलियों में ताश की चुनी हुई गड्डी को फटकारा और फिर पत्ते काटने लगा तथा खेल के बारे में इन लोगों को बताने लगा। "प्रत्येक व्यक्ति को पांच पत्ते मिलते हैं। शेष पत्तों में से पत्ता खींचना पड़ता हैं। अब तुम्हें अलग-अलग हाथों का क्रम समझना चाहिए। ये जोड़ होते हैं: एक जोड़" वह जोड़ उन्हें दिखाता है, "···दो जोड़। और ये एक क्रम के पांच पत्ते हैं, जिन्हें सीक्वेंस कहा जाता है। इस प्रकार अथवा इस प्रकार यह क्रम हो सकता है। इसके बाद तीन-तीन का क्रम होता है और फिर सब पत्तों का···"

"चाली कौन हैं?" किसी ने दरवाज़े पर आकर आवाज लगाई।" जल्दी करो, तुम्हारी पत्नी आई हैं।"

"क्या वह कोई थैला भी अपने साथ लाई हैं···ठीक है लड़को थोड़ी देर

आराम करो।" वह बड़ी मुस्तैदी से दरवाज़े की ओर आगे बढ़ा।

वार्ड में बहुत शांति हो गई। बत्तियां इस तरह जल रही थीं, जैसे शाम हो गई हो। अहमदजान अपने बिस्तर पर चला गया। नेल्या बहुत तेज़ी से पोंछा लगाने में व्यस्त थी। अतः हर व्यक्ति को अपने पांव अपने बिस्तर के ऊपर रखने पड़े।

पावेल निकालोएविच लेट गया। वह शारीरिक रूप से ही यह अनुभव कर रहा था कि गिद्ध-उल्लू अपने कोने से उसकी ओर निरन्तर घूरे जा रहा है और वह उसकी दृष्टि का निरन्तर भर्त्सनापूर्ण दबाव अपने सिर के उस हिस्से पर अनुभव कर रहा है, जो उसकी तरफ है। इस दबाव से छुटकारा पाने के लिए उसने उससे पूछा, "कामरेड आपको क्या हुआ है ?"

लेकिन वह उदास वृद्ध पुरुष इस प्रश्न के उत्तर में कोई विनम्रतापूर्ण संकेत तक देने को तैयार नहीं था। वह इस प्रकार बैठा हुआ था मानो यह प्रश्न कभी पूछा ही नहीं गया था। उसकी बड़ी गोल-गोल आंखें, जो लाल और तम्बाकू के रंग जैसी थीं, पावेल निकोलाएविच के सिर को बेध कर एकदम पार निकल जायेंगी, ऐसा लग रहा था। उत्तर की प्रतीक्षा करने और उत्तर प्राप्त न होने के बाद पावेल निकोलाएविच ने ताश के चमकेदार पत्तों को काटना शुरू कर दिया और तभी उसे उस आदमी की खोखली आवाज़ सुनाई पड़ी। "वही।" वह बोला।

यह "वही" क्या था ? असभ्य कहीं का। इस बार पावेल निकोलाएविच ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह सीधा लेटा रहा और उसी स्थिति में पड़ा हुआ सोचता रहा।

चाली के आगमन और ताश के खेल ने उसका ध्यान बटा दिया था। लेकिन वस्तुतः उसे जिस चीज़ की प्रतीक्षा थी, वह अखबार थे। आज का दिन एक स्मरणीय दिन था।[1] यह भविष्य के लिए एक स्मरणीय दिन था। वह समाचार-पत्रों से बहुत से निष्कर्ष निकाल सकता था, क्योंकि आपके देश का भविष्य आखिरकार स्वयं आपका भविष्य होता है। क्या अखबार के सब पृष्ठों पर काला शोक सूचक हाशिया होगा ? अथवा केवल पहले पृष्ठ पर ही यह होगा ? क्या पूरे पृष्ठ का चित्र होगा अथवा केवल चौथाई पृष्ठ का ? संपादकीय का शीर्षक और उसकी शब्दावली क्या होगी ? फरवरी में जो बरखास्तगियां हुई थीं, उसके बाद यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। यदि पावेल निकोलाएविच अपने काम पर होता, तो वह किसी न किसी से इस समाचार का पता लगा सकता था। लेकिन यहां उसके पास अखबार के अलावा अन्य कुछ नहीं था।

नेल्या बहुत सरगर्मी दिखा रही थी और पलंगों के बीच पोंछा लगाने

---

१. ५ मार्च, १९५५ को स्तालिन की दूसरी बरसी थी। (अनुवादक की टिप्पणी)

में व्यस्त थी। पलंगों के बीच की जगह कहीं भी उसके लिये पर्याप्त नहीं थी फिर भी उसने काफी तेजी से काम पूरा किया। उसने बहुत जल्दी पोंछा लगा कर कालीन की पट्टी फिर बिछा दी।

तभी वादिम एक्सरे के कमरे से वापिस लौटते हुए वार्ड के भीतर कालीनकी इस पट्टी पर चलता हुआ आया। वह बड़ी सावधानी से अपनी रोग ग्रस्त टांग को मल रहा था और दर्द से उसके होंठ भिंचे हुए थे।

उसके पास अखबार था। पावेल निकोलाएविच ने उसे अपनी ओर इशारे से बुलाया। "वादिम इधर आओ, मेरे पास बैठो, वह बोला।"

वादिम हिचकिचाया, उसने एक मिनट सोचा। वापस मुड़ा और रूसानोव के पलंग के बीच की खाली जगह में जाकर खड़ा हो गया। अपनी पतलून के पायचे को हाथ से संभालते हुए बिस्तर पर बैठा, ताकि उसके घाव पर रगड़ न लगे।

यह स्पष्ट था कि वादिम पहले ही अखबार खोल चुका था, क्योंकि उसकी तह वैसी नहीं थी, जैसी ताज़ा अखबार की होती है। लेकिन जब वादिम अखबार थामे हुए चल रहा था, तभी पावेल निकोलाएविच ने यह देख लिया था कि अखबार के पृष्ठों के चारों तरफ काला हाशिया नहीं है और पहले कालम में कोई चित्र भी नहीं है। उसने अब और अधिक सतर्कता से देखा और बड़ी तेजी से पृष्ठ उलटने लगा। वह एक के बाद एक पृष्ठ उलटता गया, पर वह जितने भी पृष्ठ उलटता उसे कोई चित्र, कोई काला हाशिया अथवा कोई बड़ी सुर्खी देखने को नहीं मिलती। वस्तुतः ऐसा लग रहा था जैसे कोई लेख तक नहीं है।

"इसमें कुछ भी नहीं है? क्यों है क्या?" उसने वादिम से पूछा। वह भयभीत था और उसने जानबूझ कर यह नहीं कहा कि उसमें वस्तुतः क्या नहीं था।

वह वादिम को मुश्किल से ही जानता था। यद्यपि वह पार्टी का सदस्य था, पर अभी भी उसकी उम्र बहुत कम थी। वह कोई प्रमुख अफसर नहीं था। एक मामूली-सा विशेषज्ञ था और उसकी खोपड़ी में क्या छिपा है, इसका अनुमान लगा पाना असम्भव था। लेकिन एक अवसर पर उसने पावेल निकोलाएविच को आशा का बहुत अच्छा मसाला दिया था। उस दिन वार्ड के लोग निष्कासित जातियों के बारे में बातचीत कर रहे थे। वादिम ने भूगर्भ विज्ञान की अपनी पुस्तक से नजर उठाकर रूसानोव की ओर देखा, अपने कन्धों को झटका दिया और इतने आहिस्ता से बोला कि केवल रूसानोव ही सुन सकता था, "कोई न कोई कारण अवश्य रहा होगा। वे लोग हमारे देश में अकारण ही लोगों को निष्कासन में नहीं भेजेंगे।"

एक ऐसी सही बात कहकर वादिम ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह दृढ़ सिद्धान्तों वाला बुद्धिमान व्यक्ति है।

ऐसा लगता था, पावेल निकोलाएविच गलती पर नहीं था, उसे यह बताने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि उसका किस बात की ओर इशारा था। वादिम ने स्वयं अखबार को इस दृष्टि से देखा था। उसने वह विशेष लेख दिखाया, जो पावेल निकोलाएविच को अत्यधिक भावावेश के कारण दिखाई नहीं पड़ा था।

यह एक सामान्य लेख था, जिसे अन्य लेखों से अलग नहीं दर्शाया जा सकता था। इसमें कोई चित्र नहीं था। विज्ञान अकादमी के एक सदस्य का लिखा हुआ एक लेख था। यह लेख भी दूसरी वर्षगांठ अथवा समस्त देश के शोक संतप्त होने के बारे में नहीं था। इसमें यह भी नहीं कहा गया था कि वह जीवित है और सदा जीवित रहेगा।" इसमें केवल यह कहा गया था, "स्तालिन और कम्युनिस्ट निर्माण की कुछ समस्याएं।"[1]

बस क्या इतना ही था? केवल कुछ समस्याएं? केवल ऐसी कुछ समस्याएं? निर्माण की समस्याएं? निर्माण क्यों? हो सकता है कि उन लोगों ने जंगलों के उन रक्षात्मक हिस्सों के बारे में लिखा हो, जिन्हें कुछ क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए विशेष रूप से लगाया जाता है।[2] सैनिक विजयों का क्या हुआ? दार्शनिक प्रतिमा के बारे में आप क्या कहेंगे? विज्ञान की महानतम् प्रतिमा का क्या होगा? समस्त जनता का उसके प्रति प्रेम, उसका क्या हुआ?

अपनी भवें तरेरते हुए पावले निकोलाएविच ने बड़े कष्ट से अपने चश्मे के शीशों से झांक कर वादिम के सूजे हुए चेहरे की ओर देखा।

"यह कैसे हो सकता है? एह?..." उसने बड़ी सावधानी से जरा सी गर्दन घुमा कर अपने कन्धे के पीछे से कोस्तोग्लोतोव की ओर देखा, जो सोता हुआ दिखाई पड़ रहा था। उसकी आंखें बन्द थीं और उसका सिर सदा की तरह बिस्तर के नीचे लटक रहा था।

"दो महीने पहले, केवल दो महीने पहले ही न? तुम्हें याद है, उसकी ७५ वीं वर्ष गांठ? सब कुछ उसी प्रकार हुआ, जैसे हुआ करता था। एक विशाल तस्वीर और एक विशाल शीर्षक, "महान् उत्तराधिकारी।" क्या वह सही नहीं है? क्या वह सही नहीं है?"

यह खतरा नहीं था, नहीं यह खतरा नहीं था, जिसने उन लोगों के समक्ष भय उत्पन्न किया था। जो उसकी मृत्यु के बाद बच रहे थे।—बात थी कृतघ्नता की। इस कृतघ्नता ने रूसानोव को अन्य सब बातों से अधिक

---

१. यहां 'निर्माण' शब्द का प्रयोग उन अर्थों में किया गया है, जिन अर्थों में कम्युनिस्ट 'नए समाज का निर्माण' शब्दों का प्रयोग करते हैं।

२. प्रकृति के आमूल परिवर्तन की योजना का एक अंग। यह योजना स्तालिन की योजनाओं का एक अंग थी। अब इसे त्याग दिया गया है। (अनुवादक की टिप्पणी)।

कष्ट पहुंचाया था। मानो स्वयं उसकी महान् सेवाओं, उसके किसी भी आलोचना से मुक्त सेवाकाल के ऊपर थूका जा रहा हो, उसे पांवों तले कुचला जा रहा हो। यदि केवल २ वर्ष के बाद ही उस गरिमा को, जो अनन्त में प्रतिध्वनित हो रही थी दबाया और समाप्त किया जा रहा है, यदि सर्वाधिक प्रिय और सर्वाधिक बुद्धिमान को, जिसकी आपके समस्त वरिष्ठ अधिकारी और उनके भी वरिष्ठतम् अधिकारी आज्ञा पालन करते आए हों, केवल २४ महीनों में इस प्रकार समाप्त कर मौन के गर्त में धकेला जा सकता है, तो बाकी क्या बच जाता है? इस स्थिति में आप या कोई भी व्यक्ति अपने खोये हुए स्वास्थ्य को फिर कैसे प्राप्त कर सकता है?

"बात यह है," वादिम ने आहिस्ता से कहा, "सरकारी तौर पर हाल में एक आदेश जारी किया गया था, जिसमें कहा गया था कि केवल जन्म दिन ही मनाये जाएंगे। मृत्यु की वर्षगांठ नहीं। लेकिन यदि इस लेख को ध्यान में रख कर विचार करें...तो"

उसने बड़ी उदासी से अपना सिर हिलाना शुरू कर दिया।

स्वयं वह भी एक प्रकार से अपमानित अनुभव कर रहा था। विशेष कर अपने स्वर्गीय पिता के कारण। उसे याद था कि उसके पिता किस तरह स्तालिन से प्रेम करते थे। वे स्तालिन से उससे भी अधिक प्रेम करते थे, जितना वे स्वयं से करते थे (उसके पिता ने कभी कुछ भी अपने लिए प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया) वे स्तालिन को लेनिन से भी अधिक प्यार करते थे और संभवत: वे इतना प्यार अपनी पत्नी और पुत्रों से भी नहीं करते थे। वे अपने परिवार के बारे में शांतिपूर्वक अथवा मजाक में कोई बात कह सकते थे, लेकिन स्तालिन के बारे में—कभी नहीं। स्तालिन के नाम के उल्लेखमात्र से भावावेश से उनकी आवाज़ कांपने लगती थी। स्तालिन का एक चित्र उनके अध्ययन कक्ष में लगा था एक खाने के कमरे में और एक और चित्र बच्चों के कमरे में। बच्चों ने अपने बचपन से ही बढ़ते हुए सदा घनी भवों, घनी मूंछों, और दृढ़ तथा संयत चेहरे को ही अपने ऊपर लटकते हुए देखा था और उन्हें प्रकट रूप से यह चेहरा ऐसा लगता था, जिसमें न तो भय का संचार हो सकता है और न ही क्षुद्र प्रसन्नता का। लगता था, जैसे समस्त भावनाएं अत्यधिक काली चमकदार आंखों में ही केन्द्रित हो गई हों।

जब कभी स्तालिन कोई भाषण करते उसके पिता पहले उस पूरे भाषण को पढ़ जाते, उसके बाद भाषण के अंशों को लड़कों को जोर से पढ़कर सुनाते और यह समझाते कि इनमें निहित विचार कितने गहन हैं, कितनी कुशलता से इन्हें व्यक्त किया गया है और इनकी भाषा कितनी सुन्दर है। केवल बाद में ही, जब उसके पिता जीवित नहीं थे, और वादिम बड़ा हो चुका था, उसे लगा भाषणों की भाषा कुछ नीरस है। उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया था

कि विचार केन्द्रित नहीं हैं और इन्हें कहीं अधिक संक्षेप में कहा जा सकता था। और शब्दों की संख्या को देखते हुए यह आशा की जा सकती थी कि इन में और अधिक ठोस विचार होते। इस अनुसंधान के बावजूद वह कभी भी इस बात को अपनी जबान पर नहीं ला सकता था। वह जब कभी उस प्रशंसा के भाव को व्यक्त करता, जो उसके मन में बचपन से ही भरा गया था, तो वह स्वयं को एक कहीं अधिक पूर्ण व्यक्ति पाता।

आज भी उसकी स्मृति में उसकी मृत्यु के दिन का चित्र पूरी तरह स्पष्ट है। वे रो रहे थे—वृद्ध लोग, युवक लोग और बच्चे। लड़कियां सिसक सिसक कर रो रही थीं और युवक अपनी आंखें पोंछ रहे थे। इस व्यापक अश्रुपात को देखते हुए, आप यही सोचते कि किसी व्यक्ति की मृत्यु नहीं हुई है, बल्कि ब्रह्माण्ड में कोई दरार पड़ गई है। उसने अनुभव किया कि यदि इस दिन के बाद मानवता जीवित भी रह सकी, तो भी सदियों तक यह दिन वर्ष के सबसे शोकजनक दिन के रूप में मनुष्य की स्मृति में अंकित रहेगा।

और अब इसकी दूसरी वर्षगांठ पर वे लोग काला हाशिया छापने के लिए जरा सी स्याही भी खर्च करने को तैयार नहीं थे। उन लोगों के लिए सहृदयता और स्नेह के सीधे सादे शब्द ढूंढ निकाल पाना भी मुश्किल हो रहा था: 'दो वर्ष पहले नहीं रहे….' यह उस व्यक्ति का नाम था जिसे महान् युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले असंख्य सैनिकों ने अपने अन्तिम क्षणों में उच्चारित किया था।

लेकिन यह वादिम के लालन-पालन का ही प्रश्न नहीं था। वह उस स्थिति से आगे बढ़ सकता था। नहीं, सच यह था कि समस्त उचित मान्यताओं की यह मांग थी कि हम उस महान व्यक्ति का सम्मान करें जो अब नहीं रहा। वह अपने आप में जीवन्त अभिव्यक्ति था उसने सदा इस आत्मविश्वास को जन्म दिया कि आने वाला कल बीते हुए कल से विमुख नहीं होगा। उसने विज्ञान को गरिमापूर्ण स्थान दिया। वैज्ञानिकों को ऊपर उठाया और उन्हें वेतन और रहने की जगह जैसी मामूली बातों की चिन्ता से मुक्ति दिलाई। स्वयं विज्ञान को ऐसी किसी भी विपत्ति से बचने के लिए उसके स्थायित्व और स्थिरता की आवश्यकता थी, जो वैज्ञानिकों का ध्यान बंटा सकती थी, अथवा वैज्ञानिकों को उनके काम से अलग कर सकती थी, जो सर्वाधिक महत्व और उपयोग का था। अर्थात् समाज के ढाँचे के स्वरूप कम विकसित लोगों को शिक्षा देने अथवा मूर्ख लोगों को आश्वस्त करने जैसे मामूली विवादों से उन्हें मुक्त रखने के लिए भी उसकी आवश्यकता थी। वादिम बहुत दुखी भाव से अपने बिस्तर पर वापस लौट आया। वह अभी भी अपनी रोगग्रस्त टांग को सहला रहा था।

तभी चाली लौट आया। वह बेहद खुश था और चीजों से भरा एक थैला उसके हाथ में था। उसने इन चीजों को अपने बिस्तर के बराबर लगी

मेज के भीतर रख दिया यह मेज रूसानोव और उसके बिस्तर के बीच की जगह में नहीं बल्कि दूसरी ओर लगी थी और इस बात पर वह रूसानोव की ओर देख कर बड़ी धृष्टता से मुस्कुराया—"अन्तिम समय मेरे पास खाने के लिए कुछ होगा। न जाने उस समय कैसा लगेगा, जब मेरे भीतर आंतों के अलावा अन्य कुछ नहीं रह जाएगा?"

रूसानोव इससे अधिक प्रशंसा के भाव से चाली को नहीं देख सकता था। वह कैसा आशावादी है। कितना बढ़िया आदमी है।

"टमाटर का अचार है···" चाली ने अपना सामान खोलना शुरू किया। उसने एक टमाटर शीशी से बाहर निकाला, उसे मुंह में डाला और अपनी आंखें घुमाने लगा। "ओह सचमुच बहुत जायकेदार है!" वह बोला। "और हिरन के मांस का एक टुकड़ा, पूरी तरह रस से भरा और तला हुआ। सूखा हुआ नहीं।" उसने इसे छूकर देखा और फिर अपनी अंगुलियां चाटीं। "एक औरत के सुनहरे हाथों का चमत्कार।"

चुपचाप उसने शराब की आधे लीटर की एक बोतल अपने बिस्तर के बराबर लगी मेज के भीतर रखी। रूसानोव ने उसे देखा। यद्यपि चाली का शरीर एक प्रकार से मेज को छिपाये हुए था और कमरे के शेष लोग यह नहीं देख सकते थे कि वह क्या कर रहा है। उसने रूसानोव की ओर देख कर आंख मारी।

"तो तुम स्थानीय लड़के हो। क्यों हो न?" पावेल निकोलाएविच बोला।

"नहीं। मैं स्थानीय नहीं हूं। मैं कभी-कभी अपने व्यापार के सिलसिले में उसके पास से होकर गुजरता हूं।"

"लेकिन तुम्हारी पत्नी यहीं रहती हैं, क्यों रहती हैं न?" लेकिन इस समय तक चाली आगे बढ़ चुका था और खाली थैला वापस देने के लिए नीचे जा रहा था।

वह वापस लौटा। उसने पलंग के बराबर लगी मेज का दरवाजा खोला अपनी आंखों को घुमाया, एक नजर डाली, एक और टमाटर खाया और दरवाजा बन्द कर दिया। वह आनन्द से अपना सिर इधर-उधर घुमाता रहा।

"हां, हम किस लिए रुक गए थे? हमें शुरू करना चाहिए।"

इस समय तक अहमदजान एक चौथे खिलाड़ी की तलाश कर चुका था। यह एक युवक कज्ज़ाक था, जो सीढ़ियों पर रहता था। उसने अपना समय इस कज्ज़ाक को बिस्तर पर बैठ कर रूसी भाषा में यह कहानी सुनाने में बड़े उत्साहपूर्वक बिताया था कि 'हमारे रूसी लड़कों ने' किस प्रकार तुर्कों को हराया। (कल रात वह बराबर के खण्ड में गया था और वहां उसने

प्लेवेना पर कब्जा नाम की फिल्म देखी थी)[1]

अब ये दोनों आदमी आ पहुंचे और उन्होंने बिस्तरों के बीच में तख्ता फिर लगा दिया। चाली अब पहले से भी अधिक खुश था। उसने अपने बेहद तेज और चालाक हाथों से पत्ते बांटे और अपने मित्रों को कुछ उदाहरण देकर खेल समझाया।

"देखिए यह अब सब पत्तों का पूरा क्रम यानी फुल हाउस तैयार हो गया। यह तब होता है, जब आपके पास एक किस्म के तीन और दूसरी किस्म के दो सीक्वेंस होते हैं। क्यों तुम्हारी समझ में आ गया न चेचमेक[2] ?"

"मैं चेचमेक नहीं हूँ" अहमदजान बोला। उसने यह बातें सिर हिलाते हुए कहीं पर उसने इस पर नाराजगी प्रकट नहीं की। "मैं सेना में भरती होने से पहले चेचमेक था।"

"वह ठीक है, बहुत बढ़िया है, अब दूसरा खेल फ्लश का है। यह तब होता है, जब पांचों एकसे होते हैं। जब हमारे पास चार होते हैं। एक ही तरह के चार और बेमेल पत्ता पांचवें के रूप में रखा जाता है। इसके बाद स्ट्रेट फ्लश होता है। यह नहले से लेकर बादशाह तक एक ही तरह के पत्तों का सीधा क्रम होता है। यह देखो इस तरह···अथवा इस तरह···और इससे भी ऊंचा रॉयल स्ट्रेट फ्लश होता है···"

वस्तुत: ये सब बातें तुरन्त उनकी समझ में नहीं आई थीं, लेकिन मैक्सिम पेत्रोविच ने उन्हें वचन दिया था कि खेलने पर ये सब बातें साफ हो जायेंगी। प्रमुख बात यह थी कि वह इतने दोस्ताना ढंग से बात कर रहा था। वह इतने स्पष्ट और इतने निष्ठापूर्ण स्वर में बोल रहा था कि पावेल निकोलाएविच के मन में उसके प्रति बड़ी सहानुभूति पैदा हो गई थी। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि एक सार्वजनिक अस्पताल में उसकी मुलाकात एक ऐसे हंसमुख और दूसरों की मदद करने वाले व्यक्ति से होगी। यहां ये लोग बैठे हुए थे। मित्रतापूर्ण भाव रखने वाले लोगों की एक छोटी-सी टोली और यह सम्भव था कि घंटों तक और शायद हर रोज यह खेल जारी रहेगा। रोग की चिन्ता क्यों करें ? असुखद तथ्यों के बारे में क्यों सोचें ? मैक्सिम पेत्रोविच ठीक कहता था।

रूसानोव यह कहने ही जा रहा था कि जब तक वे लोग खेल को

---

१. सन् १८७७-७८ के रूस-तुर्की युद्ध में रूसियों ने प्लेवेना पर कब्जा किया था। इस घटना का व्यंग इस बात में निहित है कि अहमदजान और उसका साथी दोनों ही तुर्की जाति के हैं। और एक-दूसरे की बोली को समझ सकते हैं।

२. उज़्बेक जाति के लिए रूसियों द्वारा प्रयुक्त एक अपमानजनक शब्द।

(अनुवादक की टिप्पणी)

अच्छी तरह नहीं सीख जाते पैसा लगाकर खेल नहीं खेलेंगे कि दरवाज़े में अचानक कोई व्यक्ति दिखाई पड़ा। "आप लोगों में से चाली कौन है ?" उसने पूछा।

"मैं चाली हूं।"

"जल्दी चलो, तुम्हारी पत्नी आई है ?"

"अह, मूर्ख कुतिया।" मैक्सिम पेत्रोविच ने बिना किसी कटुता के थूकते हुए कहा। "मैंने उससे कहा था— शनिवार को मत आना, रविवार को आना। अब देखिए इसकी मुलाकात उस दूसरी से होने से बाल-बाल बची है, क्यों नहीं क्या ! अच्छा मित्रो आप लोगों को मुझे क्षमा करना होगा।"

इस प्रकार ताश के खेल में फिर बाधा पड़ गई। मैक्सिम पेत्रोविच चला गया और अहमदजान तथा कज्ज़ाक ने ताश उठा लिया और अपने पलंग पर जाकर अभ्यास करने लगे।

और एक बार फिर पावेल निकोलाएविच ने अपनी रसौली और ५ मार्च के बारे में सोचना शुरू कर दिया। एक बार फिर यह अनुभव करने लगा कि गिद्ध-उल्लू अपने कोने से उसकी ओर नापसन्दगी के भाव से घूर रहा है। वह पीछे की ओर मुड़ा और उसकी नजर 'हड्डीचूस' की खुली आंखों से जा टकराई। 'हड्डीचूस' सोया नहीं था।

कोस्तोग्लोतोव इस बीच पूरी तरह से जागा हुआ था। रूसानोव और वादिम अखबार छान रहे थे और एक-दूसरे से फुसफुसाहट के स्वर में बात कर रहे थे और उसने इस बातचीत का प्रत्येक शब्द सुना था। उसने जान-बूझकर अपनी आंखें नहीं खोली थीं। वह सुनना चाहता था कि लोग 'उसके' बारे में क्या कहते हैं। वादिम 'उसके' बारे में क्या कहता है उसे अखबार के लिए लड़ने, उसे खोलने और पढ़ने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि हर बात पहले ही स्पष्ट की जा चुकी थी।

और अधिक खटाखट हुई। उसका दिल खट-खट करके धड़क रहा था। उसका दिल लोहे के दरवाजे से टकरा रहा था, जिसका कभी न खुलना ही बेहतर था। लेकिन अब जो किसी कारण से मामूली-सी दरारें प्रकट करने लगा था। वह धीरे-धीरे हिलने भी लगा था और इसकी चूलों में जंग भी उभर आया था।

कोस्तोग्लोतोव के लिए उन बातों का मर्म पूरी तरह से समझ पाना असम्भव हो रहा था जो उसने बाहरी संसार के लोगों से सुनी थीं : कि इसी दिन दो वर्ष पहले वृद्ध लोगों ने आंसू बहाये थे, लड़कियां रोईं थी और ऐसा लगा था कि सारा संसार अनाथ हो गया है। उसे इसकी कल्पना कर पाना भी बड़ा भयंकर लग रहा था, क्योंकि उसे याद था कि यह दिन उन लोगों के लिए कैसा था। अचानक उन लोगों को रोजमर्रा के काम के लिए शिविर से

बाहर नहीं निकाला गया। बैरकों के ताले नहीं खोले गए और कैदियों को भीतर ही बन्द रखा गया। शिविर के मैदान के बाहर जो लाउडस्पीकर लगा था और जिसकी आवाज़ वे सदा सुनते रहते थे अब बन्द कर दिया गया था। कुल मिलाकर ऐसा लग रहा था कि अधिकारियों का सिर फिर गया है और उनके सामने कोई बहुत बड़ा संकट आ खड़ा हुआ है। और अधिकारियों के संकट का अर्थ था कैदियों के लिए खुशी। काम पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं, अपने बिस्तर पर लेटे रहो, सब पूरा राशन दरवाजे पर ही दिया गया। सबसे पहले ये लोग खूब जी भरकर सोये। और इसके बाद इन लोगों ने यह सोचना शुरू किया कि आखिर हुआ क्या है। और फिर कुछ समय तक अपनी गिटार और बन्दोर बजाते रहे और फिर एक दूसरे के पास जा-जा कर यह अनुमान लगाने की कोशिश करते रहे कि आखिर हुआ क्या है। आप कैदियों को चाहे किसी भी सुदूर स्थान पर डाल दें लेकिन किसी न किसी तरह सच्चाई उन तक अवश्य पहुंच जाती है। उन्हें ये खबरें रोटी काटने वाले कमरे अथवा पानी गर्म करने के कमरे अथवा रसोई-घर की मार्फत मिलती हैं। अतः खबर फैली और फैलती ही गई। आरम्भ में बहुत निर्णायक ढंग से खबर नहीं फैली। लोग कैदियों के सोने की जगहों के बीच में से गुजर रहे थे। बिस्तरों पर बैठ कर कह रहे थे, "अरे लड़को, लगता है आखिरकार बुड्ढे आदमखोर का खात्मा हो ही गया है···" "अरे तुमने क्या कहा ?···" "मैं कभी इस बात पर विश्वास नहीं करूंगा"—"पर अब समय आ गया है।" और इसके बाद हंसी का फव्वारा छूट निकला। अपनी गिटार लाओ, अपनी बलालाइका बजाओ। २४ घंटों तक अधिकारियों ने बैरक के खण्डों को नहीं खोला। लेकिन अगले दिन सुबह सायबेरिया में उस समय भी कड़ाके की ठण्ड थी पूरे शिविर को परेड के लिए पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया गया। मेजर, दोनों कैप्टेन और लैफ्टीनैंट सब लोग मौजूद थे। मेजर ने जो दुख से बड़ा गम्भीर बना हुआ था, यह घोषणा शुरू की, "अत्यधिक दुख से···मुझे यह सूचित करना पड़ रहा है···कि कल मास्को में···"

और वे सब दांत निकालने लगे। वे सब प्रायः प्रकट रूप से अपनी विजय का नगाड़ा पीटना चाहते थे। वे लोग जो जर्जर हो चुके थे, जिनके शरीर में केवल हड्डियां ही शेष रह गई थीं और जिनके शरीर का रंग काला पड़ गया था। सब कैदी यही कहना चाहते थे। जब इन लोगों ने मुस्कराना शुरू किया, तो मेजर ने उन्हें देखा। गुस्से से आपे से बाहर होकर उसने हुक्म दिया, "टोपियां उतारो।"

सैंकड़ों लोग आज्ञापालन से पहले हिचकिचाये। टोपियां उतारने से इनकार करना अभी भी कल्पना से बाहर की बात थी। लेकिन टोपियां उतारना अत्यधिक कष्टप्रद रूप से अपमानजनक था। एक आदमी ने इन लोगों को

रास्ता दिखाया। यह था शिविर का विदूषक, लोकप्रिय हंसोड़। उसने तेजी से अपनी टोपी उतारी। यह स्तालिन कट टोपी थी और नकली फर की बनी थी। उसने उस टोपी को ऊपर हवा में उछाला। वह आदेश का पालन कर चुका था।

सैंकड़ों कैदियों ने उसे देखा। उन्होंने भी अपनी टोपियां उतारकर हवा में उछालीं।

मेजर अवाक् रह गया।

और अब कोस्तोग्लोतोव यह देख रहा था, उसे यह पता चला था कि बुड्ढे लोगों ने आंसू बहाये थे, युवतियां रोई थीं और पूरा संसार मानो अनाथ हो गया था।···

चाली वापस लौट आया था। इस बार वह पहले से भी ज्यादा खुश था। इस बार भी उसके हाथ में खाने की चीजों से भरा थैला था। पर यह थैला इस बार दूसरा था। कोई हंसा, लेकिन खुलकर हंसने वालों में चाली सबसे आगे था "ठीक है?" वह बोला। "आप इन औरतों का कर भी क्या सकते हैं? यदि इससे उन्हें खुशी होती है, तो ठीक है? उन्हें संतोष क्यों न दिया जाये। इसमें हानि क्या है?"

चाहे रसोई की नौकरानी हो या लेडी मक।

"सब एक-सी होती हैं। सबको···चाहत होती है।"

वह बहुत जोर से हंसने लगा और इस हंसी में वे सब लोग, जिन्होंने इसकी बात सुनी थी, शामिल हुए। चाली ने हाथ हिलाकर आवश्यकता से अधिक हंसी को इधर-उधर तितर-बितर कर दिया। रूसानोव भी इस अच्छी ईमानदारी से भरी हंसी में शामिल हुआ। मैक्सिम पेत्रोविच ने जिस प्रकार यह बात कही थी, उससे यह बात बड़ी चतुरतापूर्ण लगी थी।

"तो तुम्हारी पत्नी···" वह कौन-सी पत्नी है। अहमद जान ने खुशी से विकल होते हुए पूछा।

"भाई मुझ से यह सवाल मत पूछो," मैक्सिम पेत्रोविच ने लम्बी सांस भरी। वह बिस्तर के बराबर लगी छोटी-सी मेजनुमा अलमारी के भीतर खाने की चीजें रख रहा था। "हमारे यहां कानून में संशोधन करना जरूरी है। मुसलमानों की व्यवस्था कहीं अधिक मानवीय दिखाई पड़ती है। पिछले अगस्त के महीने से वे लोग फिर गर्भपात की अनुमति देने लगे हैं, इससे जीवन अधिक सरल हो जायेगा। एक औरत अपने आप अलग-थलग क्यों रहे? किसी न किसी को उसके पास अवश्य आना चाहिए। चाहे वह वर्ष में एक या दो बार ही क्यों न आ पाये। यह उन लोगों के लिए भी बड़ी लाभदायक बात है जो अपने काम से इधर-उधर यात्रा करते रहते हैं। हर शहर में एक कमरा होना भी बड़ी अच्छी बात होती है, जहां आपको खाने के लिये अच्छा भोजन मिल

सके ।"

एक बार फिर, किसी चीज की गहरे रंग की एक बोतल दिखाई पड़ी और खाने की चीजों से भरी अलमारी में गायब हो गई । चाली ने इस छोटी-सी अलमारी का दरवाजा बन्द कर दिया और खाली थैला लेकर वापस लौट गया । स्पष्ट था कि वह इस थैले की ओर बहुत ध्यान देने को तैयार नहीं था । वह जल्दी ही वापस लौट आया । वह पलंगों के बीच के रास्ते में रुका, जहां एक समय येफ़ेम खड़ा रहता था, उसने रूसानोव की ओर देखा और अपनी गर्दन के पीछे के घुंघराले बालों को सहलाने लगा । (उसके बाल बड़े बेतरतीब थे उनका रंग फ्लैक्स नामक घास और भूसे के मिले-जुले रंग जैसा था) "पड़ौसी, थोड़ा बहुत खाने के बारे में क्या राय है ?"

पावेल निकोलाएविच सहानुभूतिपूर्वक मुस्कराया । दोपहर का खाना आने में कुछ देर हो गई थी और मैक्सिम पेत्रोविच ने हंस-हंसकर खाने की जो चीजें दिखाई थीं, उसके बाद वह अस्पताल का मामूली खाना खाना भी नहीं चाहता था । मैक्सिम पेत्रोविच में कुछ ऐसा था, उसमें मांस खाने वाले व्यक्ति जैसी कोई आकर्षक बात थी और जिस तरह उसके मोटे-मोटे होंठ मुस्कराते थे उनमें भी कोई ऐसा आकर्षण था कि वह इनकार न कर सका । इन बातों से मन में वह भाव जगता था कि इस व्यक्ति के साथ बैठ कर भोजन करना चाहिए ।

"ठीक है" रूसानोव ने उसे अपनी मेज पर आने का निमंत्रण दिया । "मेरे पास भी यहां कुछ चीजें मौजूद हैं···"

"गिलास कहां से आयेंगे ?" चाली आगे झुका और उसके फुरतीले हाथों ने अचार आदि की शीशियां और खाने की चीजों के बन्डल रूसानोव की मेज पर पहुंचा दिए ।

"लेकिन यहां इजाजत नहीं है कि···" पावेल निकोलाएविच ने अपना सिर हिलाते हुए कहा । "हमारे इस रोग में इस बात की सख्त मनाही है ।"

पिछले एक महीने भर वार्ड में किसी ने यह सोचने का साहस तक नहीं किया था लेकिन चाली के लिये यह करना स्वाभाविक और अनिवार्य दिखाई पड़ रहा था ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" वह अब रूसानोव के बिस्तर के बराबर की खाली जगह पार कर चुका था और उसके सामने घुटने से घुटना सटाकर बैठा हुआ था ।

"पावेल निकोलाएविच ।"

"पाशा !" चाली ने रूसानोव के कन्धे पर मित्रतापूर्ण हाथ रखते हुए कहा । "तुम्हें डाक्टरों की बात नहीं सुननी चाहिये । वे तुम्हें ठीक तो करेंगे पर कब्र तक भी अवश्य पहुंचा देंगे । हम आखिर अच्छी तरह जीना चाहते हैं,

शान से जीना चाहते हैं।"

अपनी बड़ी, लाल नाक और मोटे रस भरे होठों सहित चाली का कलाविहीन चेहरा मित्रता और दृढ़ आस्था से जगमगा उठा।

उस दिन शनिवार था और अस्पताल में चिकित्सा का सब काम सोमवार तक के लिये स्थगित कर दिया गया था। सुरमई होती जा रही खिड़कियों पर वर्षा पड़ रही थी और इस वर्षा ने रूसानोव को अपने मित्रों और परिवार से अलग कर दिया था। अखबार में शोक प्रदर्शन करने वाला कोई चित्र नहीं था और रूसानोव की आत्मा के भीतर एक गहरा विक्षोभ उमड़ रहा था। बिजली के तेज बल्ब चमक रहे थे, जिन्हें लम्बी बहुत लम्बी शाम शुरू होने से बहुत पहले ही जला दिया गया था। अब वह इस अच्छे आदमी के साथ बैठ सकता था, थोड़ी शराब पी सकता था, थोड़ा बहुत खा सकता था और फिर कुछ देर पोकर खेल सकता था। (पोकर ! पावेल निकोलाए-विच के मित्रों के लिए यह गप्पें लगाने के लिये कैसा जबर्दस्त समाचार होगा !)

चालाक चाली ने अब तक अपनी बोतल तकिए के नीचे तक पहुंचा दी थी। एक अंगुली से उसने बोतल का ढक्कन खोला और दोनों के लिए आधा-आधा गिलास शराब ले ली और बोतल को अपने घुटनों के बीच दबा लिया। उन दोनों ने गिलास हाथों में थामे और फिर उन्हें आपस में टकराया।

अब एक सच्चे रूसी की तरह पावेल निकोलाएविच अपने पहले के भय, शराब के बारे में विचार और इससे दूर रहने की कसमों पर घृणा जाहिर कर रहा था। बस अब वह केवल यही चाहता था कि उदासीनता को अपनी आत्मा से बाहर निकाल फेंके और कुछ उत्साह, कुछ आनन्द का अनुभव करे।

"हमारा समय मजे में गुजरेगा ! हमारा समय मजे में गुजरेगा, पाशा।" चाली ने उसको बार-बार आश्वस्त करते हुए कहा। उसका बूढ़ा चेहरा कठोरता, यहां तक कि भयानकता से भर गया था। "यदि दूसरे चाहें तो शिकायत कर सकते हैं। तुम और मैं अच्छी तरह समय गुजारेंगे !"

बस इसी विचार के सम्मान में उन्होंने अपना जाम पिया।

पिछले एक महीने में रूसानोव बहुत कमजोर हो गया था। उसने बहुत हल्की शराब के अलावा अन्य कुछ नहीं पिया था। अतः यह तेज़ शराब पीते ही उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ने लगी। एक-एक मिनट गुजरने पर शराब की गर्मी उसके शरीर में और अधिक व्याप्त होती गई और इस बात से आश्वस्त कर दिया कि सिर झुकाने की कोई आवश्यकता नहीं है, उसका कोई उपयोग नहीं है, एक कैन्सर वार्ड में भी लोग एक अच्छा जीवन बिता सकते हैं और कैन्सर वार्ड छोड़कर अपने घर जा सकते हैं।

"आपको जो पोलिप निकल आये हैं क्या उनमें बहुत दर्द होता है ?"

उसने पूछा।

"हां, कुछ। लेकिन मैं घबराता नहीं ! पाशा, वोदका से यह और खराब नहीं होगा, तुम्हें यह बात समझनी होगी। वोदका तो हर बीमारी का इलाज है। मैं आपरेशन से पहले थोड़ी तेज़ शराब ज़रूर पीऊंगा। तुम्हारी क्या राय है। यहां मेरे पास एक छोटी-सी बोतल में वह शराब है। तेज शराब ही क्यों ? क्योंकि यह तुरन्त शरीर में घुलमिल जाती है। इससे पेट में अतिरिक्त पानी बचा नहीं रहता। जब सर्जन मेरा पेट चीर डालेगा, तो उसे भीतर कुछ भी नहीं मिलेगा। यह एकदम साफ होगा और मैं नशे में धुत्त ! तुम मोर्चे पर लड़े हो, क्यों लड़े हो न ! तुम जानते ही हो वहां कैसे होता है। हमले से पहले आपको वोदका दी जाती है। क्या तुम घायल हुए थे ?"

"नहीं !"

"यह बदकिस्मती ही रही। मैं तो दो बार घायल हुआ। देखो, यहां और यहां भी···" दोनों गिलासों में सौ-सौ ग्राम शराब और पहुँच गई थी।

"हमें और अधिक नहीं पीनी चाहिए।" थोड़ा-सा प्रतिरोध करते हुए पावेल निकोलाएविच बोला, "यह खतरनाक है।"

"अरे इतना क्या खतरनाक है ? किस बात ने तुम्हारे दिमाग में यह विचार बैठाया है कि यह खतरनाक है ? कुछ टमाटर खाओ। मजेदार टमाटर !"

और वस्तुतः क्या अन्तर था—एक सौ अथवा दो सौ ग्राम—जब एक बार शुरू ही किया तो क्या अन्तर पड़ता था ?दो सौ अथवा दो सो पचास ग्राम। इससे क्या अन्तर पड़ता था। जब यह स्थिति हो कि वह महापुरुष मर चुका है और इन लोगों ने उसकी उपेक्षा करने का निश्चय कर लिया है ? पावेल निकोलाएविच ने नेता की स्मृति में एक और गिलास अपने हलक से नीचे उडेंल लिया। उसने शराब पी मानो वह शर्त बदकर शराब पी रहा हो और उसके ओंठ उदासी से मुड़ने लगे। इस पर उसने छोटे-छोटे टमाटर अपने ओंठों के बीच भर लिए। दोनों आदमी आगे झुके। उनके माथे एक-दूसरे से प्रायः टकरा रहे थे और वह मैक्सिम पेत्रोविच की बातें सहानुभूति से सुन रहा था।

"हां, खूबसूरत और लाल !" मैक्सिम ने घोषणा की। "यहां ये एक रूबल में एक किलो मिलते हैं। लेकिन इन्हें करागन्दा ले जाओ और आपको एक किलो के ३० रूबल मिलेंगे। ग्राहक लोग उन्हें आपके हाथों से छीन लेते हैं, पर इन्हें ले जाने की इजाजत नहीं है। मालगाड़ियों में इन्हें स्वीकार नहीं किया जाता। लेकिन वे लोग स्वीकार क्यों नहीं करते ? तुम मुझे बताओ, इन्हें ले जाने की इजाज़त क्यों नहीं है ?

मैक्सिम पेत्रोविच बहुत उत्तेजित था, उसकी आंखें विस्फारित थीं। "इसमें क्या कोई तुक है ?" उसकी आंखें कह रही थीं। अस्तित्व की कोई तुक।

एक छोटा-सा आदमी पुराना कोट पहने स्टेशन मास्टर के दफ्तर में आता है। "तुम जीवित रहना चाहते हो नहीं क्या बड़े बाबू ?" स्टेशन मास्टर टेलीफोन उठाता है वह सोचता है कि ये लोग उसकी हत्या करने आये हैं लेकिन यह आदमी ३०० रूबल के नोट मेज पर पटक देता है। "आप मुझे यह करने क्यों नहीं देते।" वह पूछता है। "यह सब करने की अनुमति क्यों नहीं है ? तुम अच्छी तरह जीवित रहना चाहते हो···मैं भी जीवित रहना चाहता हूं। उनसे कहो कि माल के डिब्बे में मेरी टोकरी रख लें।" अन्ततः जीवन की विजय होगी पाशा। रेलगाड़ी चल पड़ती है। वे लोग इसे 'यात्री गाड़ी' कहते हैं और यह टमाटरों से भरी है। टमाटर ! टमाटरों से भरी टोकरियां सीटों के ऊपर और सीटों के नीचे टोकरियां ही टोकरियां हैं। गार्ड को अपना हिस्सा मिलता है। टिकट क्लैक्टर को अपना हिस्सा मिलता है। जब हम रेल की सीमाएं पार करते हैं, तो नए टिकट क्लैक्टर आते हैं, बस उन्हें भी उनका हिस्सा मिलता है।

रूसानोव का सिर चकराने लगा था। उसके भीतर बहुत गर्मी थी और अब वह यह अनुभव कर रहा था कि वह अपनी बीमारी से अधिक शक्तिशाली है। मैक्सिम कुछ ऐसी बातें कह रहा था, जिनका सामंजस्य नहीं बैठ रहा था। इन बातों का उसके विचार क्रम से मेल नहीं बैठ रहा था। ये बातें बिल्कुल विपरीत थीं।

"यह नियमों के विरुद्ध है।" पावेल निकोलाएविच ने आपत्ति उठाई। "तुम यह किस लिए करते हो ? यह सही नहीं है···"

"सही नहीं है ?" चाली बहुत आश्चर्यचकित था। "तो यह दूसरा अचार लो और कुछ केवियर शराब। करागन्दा में एक शिलालेख है—पत्थर के भीतर पत्थर से लिखा गया है : "कोयला रोटी है।" उद्योग के लिए रोटी, इसका अर्थ है। लेकिन जब लोगों के लिए टमाटरों की बात आती है तो टमाटर ही नहीं होते और उस समय तक टमाटर नहीं होंगे जब तक व्यापारी लोग इन्हें नहीं लायेंगे। लोग २५ रूबल में एक किलो लेने को तैयार हैं और इसके साथ आपको धन्यवाद भी देते हैं। कम से कम इस तरीके से उन्हें कुछ टमाटर तो मिल जाते हैं अन्यथा उन्हें कुछ नहीं मिलता। करागन्दा के ये लोग सचमुच कम अक्ल हैं। तुम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। ये लोग सन्तरियों और हट्टे-कट्टे आदमियों की टुकड़ियां जमा करते हैं और इन लोगों को सेब लाने के लिए, मालगाड़ी भर कर सेब लाने के लिए भेजने के बजाय, ये लोग हर सड़क के नाके पर उन लोगों को पकड़ने के लिए इन्हें तैनात करते हैं, जो करागन्दा में सेब लाने की कोशिश करते हैं। ये लोग वहां पहरे पर "तैनात खड़े रहते हैं, बेवकूफ कहीं के।"

"और···तुम यह करते हो···तुम यह करते हो, क्या तुम यह करते

हो ?" पावेल निकोलाएविच बहुत दुखी था।

"मैं क्यों ? पाशा में टोकरियां लेकर इधर-उधर नहीं घूमता। मेरे पास ब्रीफ केस है और मेरा सूटकेस भी। रेलगाड़ी के टिकट हमेशा बिक चुके होते हैं। मैं कभी भी काँच की खिड़की पर दस्तक नहीं देता। पर मैं हमेशा रेलगाड़ी में सवार हो सकता हूं। मैं हर स्टेशन पर यह जानता हूं कि किस से मिलना चाहिए। किस प्रकार सही चाय तैयार करने वाले आदमी को अथवा सामान रखने वाले आदमी को तलाश किया जा सकता है। पाशा यह याद रखो, जीवन की सदा विजय होती है।"

"लेकिन तुम करते क्या हो ? तुम्हारा काम क्या है ?"

"मैं, मेरा ? मैं एक टैक्नीशियन हूँ, पाशा ! यद्यपि मैंने टैक्नीकल स्कूल की शिक्षा पूरी नहीं की। मैं इसके अलावा थोड़ा-बहुत बिचौलिए का काम भी कर लेता हूं। मैं यह काम इसलिए करता हूँ कि मेरी जेब में सदा कुछ बचा रहे और जब वे लोग उचित पैसा देना बन्द कर देते हैं, मैं काम छोड़ देता हूं और कहीं और चला जाता हूँ। देखो ?"

पावेल निकोलाएविच अब यह अनुभव करने लगा था कि स्थिति वैसी नहीं है, जैसी होनी चाहिए थी। यह उचित नहीं है। वस्तुत: यह बात गलत है। लेकिन मैक्सिम कितना अच्छा, कितना हंसमुख आदमी है। उससे मेल-मिलाप बड़ा अच्छा लगता था। वह पूरे एक महीने में पहला ऐसा आदमी था, जिससे मेल-मिलाप किया जा सकता था। वह उसकी भावनाओं को चोट नहीं पहुंचा सकता था।

"लेकिन जो तुम कर रहे हो, क्या वह सही है ?" पावेल निकोलाएविच ने जोर देते हुए कहा।

"यह बिलकुल सही है। यह बहुत अच्छा है ?" मैक्सिम ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा। "अब यह जायकेदार हिरन का मांस लो। हम तुम्हारा माल अभी एक मिनट में लेंगे। पाशा, बात यह है कि हम लोग केवल एक बार ही जन्म लेते हैं, तो अच्छी तरह से क्यों न जिएं। हम केवल अच्छी तरह से ही जीवित रहना चाहते हैं।"

पावेल निकोलाएविच के सामने इस बात से सहमत होने के अलावा और कोई चारा नहीं था। मैक्सिम का कहना बिलकुल ठीक था—हमारा जन्म केवल एक बार होता है तो अच्छी तरह क्यों न जिएं। बस केवल इतनी सी ही तो बात है...।

"मैक्सिम तुम जानते हो, लोग इस बात को पसन्द नहीं करते, इसे सही नहीं मानते..." उसने स्मरण दिलाते हुए बड़ी भद्रता से कहा।

"ठीक है, पाशा" उसने भी पहले की तरह ही बड़े ही मित्रतापूर्ण भाव से कहा और उसका कन्धा कसकर पकड़ कर बोला, "यह इस बात पर निर्भर

करता है कि आप किस प्रकार, किस दृष्टि से इस बात पर विचार करते हैं। यह यहां एक बात है तो दूसरी जगह दूसरी बात।"

"आंख में एक तिनका पड़ जाने से।
हर कोई चिल्लाता है।
लेकिन लहंगे में एक गज़ समा जाने पर भी,
किसी औरत को चोट नहीं पहुंचती।"

चाली हंसी से लोटपोट हो रहा था और रूसानोव के घुटने पर निरन्तर हाथ मार रहा था। रूसानोव भी स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख सका। वह भी जोर-जोर से हंसने लगा। "अरे सचमुच तुम्हें कुछ बड़ी मजेदार कविताएं आती हैं। मैक्सिम तुम जानते हो तुम क्या हो। तुम एक कवि हो।"

"और तुम क्या हो? तुम्हारा क्या काम है?" उसके नए मित्र ने प्रश्न उठाया।

अब तक वे प्रायः एक-दूसरे को गले लगाने की स्थिति में पहुँच चुके थे। लेकिन इसी क्षण अनचाहे ही पावेल निकोलाएविच कुछ गम्भीर और गरिमामय बन गया। अपने पद के कारण उसके ऊपर कुछ दायित्व थे।

"मैं, मैं कर्मचारी विभाग में हूं।"

वह विनम्र होने की कोशिश कर रहा था। वस्तुतः वह इससे कहीं ऊंचे पद पर था।

"यह नियुक्ति कहां है?"

पावेल निकोलाएविच ने उसे बताया।

"सुनो," मैक्सिम ने बड़ी खुशी से कहा, "मैं एक अच्छे आदमी को जानता हूं, जिसके लिए हमें कुछ करना चाहिए। किसी काम की व्यवस्था करनी चाहिए। जहां तक इसे भर्ती कराने की फीस का सवाल है, वह सदा की तरह पहुंच जायेगी। बस तुम उसकी चिन्ता न करना।"

"तुम्हारा क्या अभिप्राय है। तुम यह बात कैसे सोच सकते हो?" पावेल निकोलाएविच ने स्वयं को अपमानित अनुभव करते हुए कहा।

"अरे इसमें सोचने की क्या बात है?" चाली ने आश्चर्य से कहा। और एक बार फिर जीवन के अर्थ के अनुसंधान का प्रयास उसकी आंखों में फिर झलकता हुआ दिखाई पड़ा। बस इस बार वह शराब के कारण थोड़ा-सा अस्पष्ट हो गया था। "यदि कर्मचारी विभाग के लड़के भर्ती की फीस न लें, तो तुम्हारी राय में वे किस चीज पर जीवित रहेंगे। वे किस प्रकार अपने बच्चों का लालन-पालन करेंगे! तुम्हारे कितने बच्चे हैं?"

"क्या तुमने अखबार पढ़ लिया है?" उनके सिर के उपर से एक खोखली और अप्रिय आवाज़ सुनाई पड़ी।

गिद्द-उल्लू स्वयं को अपने कोने से घसीटता हुआ यहां तक आ पहुंचा।

था। उसकी आंखें बड़ी कठोर और सूजी हुई थीं, और ड्रेसिंग गाउन सामने से पूरी तरह खुला हुआ था।

अब यह बात सामने आई थी पावेल निकोलाएविच अखबार पर बैठा हुआ था। अखबार बुरी तरह तुड़-मुड़ गया था।

"क्यों नहीं, अवश्य लीजिए," चाली तुरन्त बोला और उसने रूसानोव के नीचे से अखबार खींच लिया। "पाशा जरा उधर हटो। लीजिए पिताजी, यह अखबार लीजिए। मुझे अन्य किसी बात के बारे में कोई जानकारी नहीं है, लेकिन हमें यह अखबार देने में कोई आपत्ति नहीं होगी, क्यों होगी क्या पाशा?"

अत्यधिक उदासी से शुलुबिन ने अखबार लिया और वह आगे बढ़ने को हुआ, लेकिन कोस्तोग्लोतोव ने उसे रोक लिया। वह शुलुबिन की तरफ उसी प्रकार घूरने लगा, जिस प्रकार शुलुबिन उन सबकी ओर, चुपचाप और निरन्तर घूरता रहा था। उसने बड़े गौर से शुलुबिन को देखा और अब विशेष रूप से और नजदीक से उसे देखा।

यह आदमी कौन हो सकता है? और इसका चेहरा कितना असाधारण है? वह एक ऐसा अभिनेता दिखाई पड़ रहा था, जो अपने अभिनय से पस्त हो चुका हो और जिसने अभी-अभी अपना मेकअप पोंछ डाला हो। कोस्तोग्लोतोव ने शिविरों में कैदियों को भेजने से पहले की जेलों में पहचान बढ़ाने का एक तरीका सीखा था। यह ऐसा स्थान लेता था, जहां एक मिनट की मुलाकात के बाद ही आप जो चाहे प्रश्न पूछ सकते थे। उसी प्रकार नीचे सिर लटकाये हुए उसने शुलुबिन से पूछा "हे पिताजी, आप क्या काम करते थे अह?"

शुलुबिन की आंखें ही नहीं, बल्कि उसका पूरा सिर कोस्तोग्लोतोव को देखने के लिए मुड़ा। कुछ क्षणों तक वह पलक झपके बिना ही देखता रहा और इस बीच अपनी गर्दन को विचित्र रूप से गोलाकार घुमाता रहा, मानो उसका कालर बहुत तंग हो। लेकिन उसका कालर उसे कष्ट नहीं दे रहा था। रात को पहनने का उसका कमीज काफीढीला ढाला था। इस बार उसने प्रश्न की उपेक्षा नहीं की। "मैं पुस्तकालयाध्यक्ष था", उसने तेजी से उत्तर दिया।

"कहां?" कोस्तोग्लोतोव ने दूसरा प्रश्न तुरन्त चिपका दिया।

"एक कृषि तकनीकी कालेज में।"

किसी अज्ञात कारण से उसके निरन्तर घूरने की आदत के कारण अथवा उसके उल्लू जैसे मौन के कारण रूसानोव के मन में यह भाव जगा था कि किसी न किसी प्रकार उसे अपमानित करे, उसे बताये कि आखिर वह क्या है। अथवा सम्भवत: उसके भीतर वोदका बोल रही थी। उसकी आवाज तेज और अधिक विवेकहीन थी, जब उसने यह कहा, "तुम पार्टी के सदस्य नहीं हो, हो क्या?" गिद्ध-उल्लू ने रूसानोव की ओर अपनी तम्बाकू जैसी गहरे रंग की

आंखें घुमाईं। उसने अपनी पलकें झपकीं, मानो वह इस प्रश्न पर विश्वास ही न कर पा रहा हो उसने फिर अपनी पलकें झपकीं और फिर अचानक अपनी चोंच खोली : "बात इसके विपरीत है।"

और वह लम्बे डग भरता हुआ कमरा पार कर गया।

उसके चलने का तरीका अत्यधिक अस्वाभाविक था। कोई न कोई वस्तु उसे कहीं गहरा कष्ट पहुंचा रही थी। वह लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा। उसके ड्रेसिंग गाउन के पल्ले पूरी तरह खुले हुए थे। वह बड़े भद्दे ढंग से आगे की ओर झुका हुआ था। उसे देखकर ऐसा लगता था, मानो किसी बहुत बड़े पक्षी के पंख बेतरतीब काट दिए गए हों, ताकि वह फिर उड़ न सके।

३. खून चढ़ाने की व्यवस्था

कोस्तोग्लोतोव बगीचे की एक बेंच के नीचे पड़े एक पत्थर पर धूप में बैठा हुआ था। उसने अपने बूट पहन रखे थे और उसकी टाँगें बड़े तकलीफदेह ढंग से मुड़ी हुई थीं और घुटने जमीन से जरा से ऊपर थे। उसकी बांहें जमीन तक निर्जीव-सी लटक रही थीं। उसका नंगा सिर आगे को झुका हुआ था। वह वहां बैठकर धूप सेक रहा था। उसका हल्का सुरमई रंग का ड्रेसिंग गाउन खुला हुआ था। वह सुरमई रंग के पत्थर की तरह ही स्थिर बैठा हुआ था और उसकी हड्डियाँ दिखाई पड़ रही थीं। काले घने बालों वाला उसका सिर बहुत गर्म हो चुका था। वहाँ स्थिर बैठे-बैठे तेज़ धूप उसकी पीठ को जलाये डाल रही थी। इसी स्थिति में बैठे-बैठे वह मार्च की गर्मी को अपने शरीर के भीतर सोख रहा था। वह केवल कुछ कर भी नहीं रहा था बल्कि कुछ सोच भी नहीं रहा था। वह इसी प्रकार बिना कुछ किए, बिना कुछ सोचे लम्बे अरसे तक बैठा रहता था और सूर्य के ताप से वे वस्तुएं प्राप्त करने की कोशिश करता था जो उसे उससे पहले रोटी और शोरबे में प्राप्त नहीं हुई थीं।

दूर से उसके सांस लेते समय उसके कन्धों के ऊपर उठने और नीचे गिरने को देखा जा सकता था। लेकिन वह एक ओर गिरा नहीं। किसी न किसी प्रकार वह अपने आपको इस स्थिति में थामे हुए था।

एक मोटी ताजी अरदली अस्पताल की नीचे की मंजिल से उधर आई। वह एक लम्बी-चौड़ी औरत थी, जिसने एक बार उसे अस्पताल के छूत रोकने के नियमों का उल्लंघन करने के कारण बरामदे से खदेड़ा था। उसे सूरजमुखी के बीज खाने की आदत थी। अब जबकि वह बाहर बगीचे में निकल आई थी तो सूरजमुखी के कुछ बीज खा लेने का मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहती थी। वह उसके पास आई और एक मछुआरे की अच्छे स्वभाव वाली औरत की आवाज में बोली, "अरे चाचा! अरे चाचा क्या मेरी आवाज सुन रहे हो?" कोस्तोग्लोतोव ने अपना सिर ऊपर उठाया और सूरज की ओर देखते हुए अपने चेहरे और आंखों को सिकोड़ा। उसकी आधी बन्द आंखों के कारण उस मोटी अरदली की आकृति विचित्र-सी दिखाई पड़ रही थी।

"ड्रेसिंग रूम में जाओ, डाक्टर तुम्हें बुला रही है।"

वह इतने समय से वहां बैठा हुआ था कि स्वयं एक और गरम पत्थर बन

गया था। वह किसी भी हालत में वहां से हिलना या चले जाना नहीं चाहता था। उसके मन में एक ऐसे व्यक्ति का भाव जगा जिसे कोई ऐसा काम करने के लिए भेजा जा रहा हो। "कौन सी डाक्टर ?" वह गुर्राया।

"वह जो तुम्हें बुला रही है, वह जिसने कहा है कि तुम्हें वहां आना है।" अरदली ने अपनी आवाज़ तेज करते हुए कहा। "मेरा यह काम नहीं है कि बाहर आऊं और तुम लोगों को बगीचे से बुलाऊं। चलो भीतर जाओ।"

"लेकिन मुझे तो किसी भी चीज़ की मरहमपट्टी की जरूरत नहीं है। वे मुझे नहीं बुला रहे होंगे।" कोस्तोग्लोतोव ने भीतर जाने से इन्कार करते हुए कहा।

"तुम्हें ही बुलाया जा रहा है!" अरदली अपने मुंह में बीच-बीच में सूरजमुखी के बीज भरती जा रही थी। "मैं तुम्हें पहचानने में जरा भी गलती नहीं कर सकती। तुम्हारे जैसे लम्बी नाक वाले बगुले को। तुम्हारे जैसा दूसरा कोई भी व्यक्ति नहीं है प्रियतम!"

कोस्तोग्लोतोव ने लम्बी सांस भरी। अपनी टांगों को सीधा किया और उन पर खड़ा होने लगा। वह कराह रहा था और स्वयं को अपने हाथों से ही सहारा दे रहा था।

अरदली ने उसकी ओर नाराजगी से देखा। "चलो, चलो, चलो—तुम्हें अपनी ताकत बचानी चाहिए थी। तुम्हें बिस्तर में लेटे रहना चाहिए था।"

"ओह," कोस्तोग्लोतोव ने आह भरी। "घटने से पहले हम हर बात को नहीं जानते क्यों जानते हैं क्या?" और वह स्वयं को घसीटता हुआ बगीचे के रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। इस समय उसने अपनी पेटी नहीं बांध रखी थी उसमें कोई भी फौजी तौर तरीका दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसकी पीठ बुरी तरह झुकी हुई थी।

वह मरहमपट्टी के कमरे की ओर आगे बढ़ता गया। किसी नई असुखद बात की आशा करते हुए और उससे संघर्ष करने के लिए स्वयं को तैयार करते हुए यद्यपि वह यह नहीं जानता था कि यह क्या हो सकता है।

मरहमपट्टी के कमरे में उसकी प्रतीक्षा इल्या राफेर्स लोवना कर रही है, जिसने पिछले दस दिन से वेरा कोर्निलएवना का स्थान संभाला था। वह मोटी-ताजी युवती थी। उसके गाल सेब से भी ज्यादा लाल थे। उसके गालों की लाली उसके उत्तम स्वास्थ्य की परिचायक थी। यह पहला मौका था जब वह उसे देख रहा था।

"तुम्हारा नाम क्या है?" वह दरवाजे में ही था कि उसने सीधा सवाल पूछा।

अब कोस्तोग्लोतोव की आंखें धूप से चौंधियाई हुई नहीं थीं। लेकिन

वह अभी भी उन्हें आधी भींचे हुए था और पहले की तरह ही नाराज दिखाई पड़ रहा था। वह यह पता लगाने के लिए बड़ा उत्सुक था कि आखिर हो क्या रहा है। वह स्थिति का अनुमान लगाना चाहता था। लेकिन वह प्रश्नों का उत्तर देने की जल्दी में नहीं था। कभी-कभी आदमी को अपना नाम छिपाना पड़ता है अथवा उसके बारे में झूठ बोलना पड़ता है। अभी तक उसे यह मालूम नहीं था कि इनमें से क्या रास्ता सही था।

"ठीक है? तुम्हारा नाम क्या है?" गोल-गोल बांहों वाली डाक्टर ने फिर पूछा।

"कोस्तोग्लोतोव," उसने बड़ी अनिच्छा से स्वीकारोक्ति की।

"तुम कहां थे? जल्दी से अपने कपड़े उतारो। यहां इस मेज पर लेट जाओ।"

बस तभी कोस्तोग्लोतोव को कुछ याद आ गया। उसने सब कुछ देख और समझ लिया। उसे खून चढ़ाने का इन्तजाम हो रहा था। वह भूल गया था कि मरहमपट्टी के कमरे में खून चढ़ाने का काम होता था। पहले तो वह अपने पहले के सिद्धांतों पर डटा रहना चाहता था : वह किसी दूसरे का खून नहीं चाहता था और वह अपना खून देने को भी तैयार नहीं था। दूसरी बात यह थी कि वह छोटी-सी धृष्ट औरत जिस की शक्ल से यह लगता था कि जैसे उसने रक्तदान करने वालों का खून जी भर कर पी रखा हो और उसे देख कर उसके मन में जरा भी विश्वास पैदा नहीं हो रहा था। वेरा चली गई थी। एक बार फिर एक नई डाक्टर आई थी जिसकी आदतें भिन्न थीं और जो नई गलतियां करने जा रही थी। इस प्रकार डाक्टरों को बदलने का क्या मतलब है? कुछ भी यहां स्थायी नहीं है?

चुपचाप और नाराजगी से उसने अपना ड्रेसिंग गाउन उतारा। उसे मालूम नहीं था कि ड्रेसिंग गाउन कहां टांगे—नर्स ने उसे बताया कि गाउन कहां टांगा जा सकता है—और इस बीच लगातार वह यही सोचे जा रहा था कि किस प्रकार वह खून चढ़वाने से बच सकता है। उसने निर्धारित स्थान पर अपना ड्रेसिंग गाउन टांग दिया। उसने अपनी जाकेट उतारी और उसे भी टाँग दिया। उसने अपने बूट एक कोने में खिसका दिए। वह नंगे पांव ही लिनोलियम के साफ फर्श पर चलता हुआ ऊंची गद्देदार मेज पर जा लेटा। अभी तक वह ऐसा कोई बहाना खोज निकालने में कामयाब नहीं हुआ था जिसके आधार पर खून चढ़वाने से इन्कार कर सके। लेकिन वह जानता था कि वह जल्दी ही ऐसा कोई बहाना खोज निकालेगा।

खून चढ़ाने का उपकरण, रबर की ट्यूब और कांच की नलियाँ जिन में से एक में पानी भरा हुआ था, इस्पात के एक चमकदार स्टैंड पर मेज के ऊपर लगे हुए थे। इसी स्टैंड पर विभिन्न आकारों के कई छल्ले भी लगे हुए

थे। ये छल्ले विभिन्न आकार की बोतलों के लिये थे : आधा लिटर चौथाई लिटर और एक लिटर का आठवां भाग। अन्तिम छल्ले में बोतल लगी थी। गहरा कत्थई रंग का खून आंशिक रूप से लेबल से ढंका था जिस पर रक्त वर्ग लिखा हुआ था। इसके अलावा रक्त देने वाले का नाम और वह तारीख भी अंकित थी जिसको यह रक्त लिया गया था।

कोस्तोग्लोतोव की यह आदत थी कि वह उन चीजों को भी देखता रहता था जिन्हें देखने की उससे अपेक्षा नहीं की जाती थी। अतः टेबल पर लेटने के लिए जब वह ऊपर चढ़ा तो उसने यह पढ़ लिया कि लेबल पर क्या लिखा है। अपना सिर तकिये पर रखने के बजाय वह बोला—"ओह—ओह! २८ फरवरी! पुराना खून। इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते।"

"यह कहने वाले तुम कौन हो?" डाक्टर ने अतिरिक्त क्रोध से कहा। "पुराना खून, नया खून, तुम्हें खून को सुरक्षित रखने के बारे में क्या जानकारी है? खून को एक महीने से अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।"

उसका क्रोध उसके चेहरे से साफ दिखाई पड़ रहा था। उसका गुलाबी चेहरा अब गहरे लाल रंग में बदल गया था। उसकी बांहें जो कोहनियों तक नंगी थीं, गोल और गुलाब के रंग की थीं। लेकिन उसकी त्वचा छोटे-छोटे चकत्तों से भरी पड़ी थी। इसका कारण सर्दी नहीं था। यह स्थायी थे।

न जाने इसका कारण क्या था, पर अन्ततः इन्हीं चकत्तों ने कोस्तोग्लोतोव को अन्ततः इस बात से आश्वस्त किया कि उसे खून चढ़वाने के लिए तैयार नहीं होना चाहिए।

"अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाओ।" डाक्टर ने हुक्म दिया, "अपनी बांह नीची करो और इसे वहीं ढीला छोड़ दो।"

खून चढ़ाने के काम का यह उसका दूसरा वर्ष था। और उसे यह स्मरण नहीं आता था कि क्या कोई एक भी ऐसा रोगी था जिसे इस सम्बन्ध में कोई संदेह न हुआ हो। सब रोगी इस प्रकार आचरण करते थे मानो उन का रक्त शुद्धतम सामन्ती रक्त है और वे इस बात से भयभीत हैं कि किसी दूसरे का रक्त चढ़वा कर स्वयं उनका अपना रक्त ही गन्दा न हो जाए। वे सब अनिवार्यतः तिरछी नजर से खून की ओर देखते और यह दावा करते कि इस का रंग सही नहीं है अथवा यह सही रक्त वर्ग का नहीं है अथवा यह आवश्यकता से अधिक गर्म या ठण्डा है अथवा यह जम गया है। अन्यथा वे यह सीधा सवाल उठाते, "आप मुझे यह बुरा खून क्यों चढ़ा रही हैं?" यह खराब क्यों होगा? क्योंकि उसके ऊपर लिखा है—"इसे मत छुइए"। "हां इसका कारण यह है कि इसे किसी दूसरे व्यक्ति के लिए रखा गया था लेकिन अब उसे इसकी आवश्यकता नहीं है।" इसके बाद जब रोगी नस में सूई लगाने

भी देता तब भी लगातार अपने आप से कुछ कहता रहता, "इसका यह मतलब है कि यह उचित स्तर का नहीं है।" केवल कड़ाई और दृढ़ता से ही इन मूर्खतापूर्ण सन्देहों को समाप्त किया जा सकता था। इसके अलावा वह सदा बहुत जल्दी में भी होती थी क्योंकि विभिन्न स्थानों पर उसे खून चढ़ाने का निर्धारित कार्य पूरा करना होता था।

कोस्तोग्लोतोव इससे पहले ही अस्पताल में खून चढ़ाने के बाद उत्पन्न सूजन देख चुका था। वे लोग इसे हेमाटोमस कहते थे—इसका कारण यह होता था कि किसी नस को दो बार बेधा जाता अथवा सूई की नोक गलत जगह पर लगती। उसने लोगों को खून चढ़वाने के बाद बुरी तरह कांपते हुए और ज्वरग्रस्त भी देखा था क्योंकि खून बहुत जल्दी चढ़ा दिया गया था और उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था कि वह अपने आपको उन व्यग्र, गुलाबी, फूली हुई और चकत्तेदार बांहों के भरोसे छोड़ दे। उसका अपना कमजोर, रोगग्रस्त खून, जिसे एक्स किरणों ने बर्बाद कर दिया था, किसी और के ताजा खून से उसके लिए अभी भी कहीं अधिक मूल्यवान था। जल्दी अथवा देर से स्वयं उसका रक्त बेहतर हालत में आ जाएगा और यदि बुरे खून के कारण उन्हें चिकित्सा रोकनी पड़े तो और भी बेहतर है।

"नहीं," वह बोला और उसने बड़ी नाराजी और दृढता से अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाने अथवा अपनी बांह को ढीला छोड़ने से इन्कार कर दिया। "तुम्हारा खून पुराना है और इसके अलावा आज मेरी तबीयत भी अच्छी नहीं है।"

वैसे वह यह अच्छी तरह जानता था कि एक साथ दो बहाने पेश नहीं करने चाहिएं। एक समय एक ही बहाना पेश करना सही होता है। लेकिन ये दोनों बहाने एक साथ ही निकल आए।

"हम अभी रक्तचाप मापते हैं।" डाक्टर बोली और उसके स्वर में जरा भी हिचकिचाहट नहीं थी। नर्स ने तुरन्त डाक्टर के हाथों में रक्तचाप नापने का उपकरण थमा दिया।

डाक्टर पूरी तरह नई थीं लेकिन नर्स इसी अस्पताल की थी। वह मरहम-पट्टी के कमरे में काम करती थी। ओलेग का उससे पहले कोई वास्ता नहीं पड़ा था। वह एक लड़की ही थी लेकिन वह काफी लम्बी थी, उसका रंग कुछ सांवला था और उसकी आंखें जापानियों जैसी थीं। उसके बाल उसके सिर के ऊपर इतने जटिल तरीके से बंधे थे कि कोई भी टोपी अथवा स्कार्फ उसे ढक नहीं सकता था। उसके बालों के इस गुम्बद के प्रत्येक मोड़ और घुमाव को असंख्य पट्टियों से बड़े सब्र के साथ बांधा गया था। बालों को इस प्रकार बांधने के लिए वह निश्चय ही कम से कम १५ मिनट पहल ड्यूटी पर आई होगी।

इन बातों का ओलेग के लिए कोई खास उपयोग नहीं था फिर भी वह

इस नर्स का सफेद मुकट देखता रहा और यह कल्पना करने की कोशिश करता रहा कि पट्टियों के नीचे उसके बाल कैसे दिखाई पड़ते हैं। यहां हर बात डाक्टर पर निर्भर करती थी और उसके सामने यह स्थिति थी कि विलम्ब करने के स्थान पर वह डाक्टर से अपनी रक्षा करे, आपत्तियां उठाए और बात चीत से ही किसी प्रकार खून चढ़वाने से बच निकले। लेकिन इसके बावजूद वह जापानियों जैसी आंखों वाली लड़की को इस प्रकार देख-देख कर अपने तर्कों को ही भूला जा रहा था। हर जवान लड़की की तरह वह भी एक सीमा तक एक पहेली थी और इसका कारण केवल यह था कि वह जवान लड़की थी। प्रत्येक कदम के साथ वह इस बात को व्यक्त करती थी और उसकी प्रत्येक भंगिमा से उसके सिर की मामूली से मामूली हरकत से यह बात स्पष्ट होती थी।)

इस बीच उन्होंने कोस्तोग्लोतोव की बांह पर एक बहुत लम्बे सांप जैसी रबड़ लपेट दी थी ताकि बांह को अच्छी तरह से दबाया जा सके और यह ठीक ठीक पता चल सके कि उसका रक्तचाप कितना है…

उसने एक और आपत्ति उठाने के लिए अपना मुंह खोला लेकिन तभी दरवाजे से किसी ने डाक्टर को अपना टेलीफोन सुनने के लिए बुलाया। वह कुछ बोली और चली गई। नर्स ने काली नलियों को फिर डिब्बे में रखना शुरू कर दिया। ओलेग मेज पर लेटा रहा।

"यह डाक्टर कहां से आती है ?" उसने पूछा।

इस लड़की की आवाज का लहजा उस पहेली का अंग था जो उसमें समाई हुई थी। वह यह जानती थी और जब वह बोली तब ऐसा लगा मानो वह बड़े ध्यान से स्वयं अपनी आवाज़ सुन रही हो। "खून चढ़ाने वाले केन्द्र से" वह बोली।

"वह यह पुराना खून क्यों लाई है ?" ओलेग ने पूछा। वह एक लड़की भर थी लेकिन ओलेग अपने अनुमान को कसौटी पर कसना चाहता था।

"यह पुराना नहीं है।" लड़की ने बड़े आहिस्ता से अपना सिर घुमाया और सफेद मुकट को कमरे के इस छोर से दूसरे छोर तक ले गई।

यह छोटी लड़की इस बात से आश्वस्त थी कि वह ऐसी प्रत्येक बात जानती है जो उसे जाननी चाहिए।

और हो सकता है कि वह जानती ही हो।

सूरज अब इमारत की उस ओर आ गया था जिधर मरहम पट्टी का कमरा था। धूप खिड़कियों से सीधी भीतर नहीं आ रही थी। लेकिन दो शीशे बहुत चमक रहे थे और छत के हिस्से पर किसी चमकदार वस्तु से परावर्तित हो कर प्रकाश पड़ रहा था। यह प्रकाश तेज और स्वच्छ था तथा इसका बिम्ब स्थिर भी था

कमरे में अकेला होना बड़ा अच्छा लग रहा था।

ओलेग की नजर से परे एक दरवाजा खुला। कोई भीतर आया, एक और औरत।

वह आहिस्ता आहिस्ता भीतर आई। उसके जूते मुश्किल से ही आवाज कर रहे थे। उसकी छोटी-छोटी एड़ियां अपनी पहचान नहीं बता रही थीं।

और ओलेग ने अनुमान लगाया।

अन्य कोई भी इस प्रकार नहीं चलता। कमरे में उसे उसी की कमी खल रही थी। वह वही होगी अन्य कोई नहीं।

वेरा!

"हां", यह वही थी। वह उसकी आंखों के सामने आ गई। वह इस तरह स्वाभाविक रूप से आकर उसकी आंखों के सामने खड़ी हो गई मानो मुश्किल से ही कुछ क्षण पहले वह वहां से गई हो।

"आप कहाँ गई थीं, वेरा कोर्निलएवना?" ओलेग मुस्करा रहा था।

वह जोर से नहीं बोला। उसने बहुत शांति से और खुशी से सवाल पूछा और वह उठ कर बैठा भी नहीं। यद्यपि उन्होंने उसे मेज से कसा नहीं था।

कमरा शांत, अधिक प्रकाशमय और आरामदेह हो गया—पूरी तरह से पूर्ण हो गया।

वेरा को भी सवाल पूछने थे। "क्या तुम बगावत कर रहे हो।" वह भी मुस्करा रही थी।

लेकिन प्रतिरोध करने की उसकी योजना पहले ही कमजोर हो गई थी वह बहुत खुश था। मेज पर लेटे हुए। उसे इस मेज से इतनी आसानी से नहीं उठाया जा सकेगा। उसने जवाब दिया, "मैं? नहीं मैं तो विद्रोहों का अपना क्रम समाप्त कर चुका हूं···आप कहां गई थीं? एक सप्ताह से अधिक का समय हो गया है।"

वह धीरे-धीरे बड़ी स्पष्टता से बोली। मानो किसी व्यक्ति को अब असामान्य अथवा नए शब्द लिखवा रही हो जो विशेष रूप से मन्द बुद्धि का हो। वह उसके पास आकर खड़ी हो गई और बोली, "मैं यात्रा पर गई हुई थी और ओंकोलोजीकल केन्द्र स्थापित कर रही थी। स्वास्थ्य सम्बन्धी विचार में कैन्सर से लड़ने के प्रयास में लगी थी।"

"कहीं दूर के जंगलों में?"

"हाँ।"

"और अब तुम्हारी यात्रा समाप्त हो गई है?"

"फिलहाल। लेकिन तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुम अच्छा अनुभव नहीं कर रहे हो?"

इन आंखों में क्या था? जल्दबाजी से रहित एकाग्रता। आशंका अथवा भय का पहला अस्पष्ट संकेत। एक डाक्टर की आंखें।

लेकिन इसके अलावा ये आंखें हल्के भूरे रंग की आंखें थीं। ये आंखें काफी के उस गिलास की तरह थीं, जिसमें दो अंगुली भर दूध मिला दिया गया हो। वैसे कई वर्ष पहले ओलेग ने काफी पी थी। मित्रतापूर्ण—ये आंखें ऐसी ही थीं। एक बहुत पुराने दोस्त की आंखें।

"ओह नहीं। यह कुछ नहीं है। शायद धूप की वजह से ऐसा हुआ है। मैं बहुत देर से बैठा हुआ था। मैं करीब-करीब सो ही गया था।"

"तुम धूप में क्यों बैठे। क्या अब तक यहां अस्पताल में तुम्हें यह जानकारी नहीं मिल पाई है कि रसौलियों को धूप लगाने की पाबन्दी है?"

"मैं समझता था कि केवल गर्म पानी की थैली से सेकने की ही मनाही है।"

"धूप की तो और अधिक कड़ाई से मनाही है"

"तुम्हारा यह अर्थ है कि मुझे काला सागर के तट पर जाने की इजाजत नहीं होगी?"

उसने सिर हिलाया।

"कैसा जीवन है। इस स्थिति में तो यही बेहतर होगा कि मेरे निष्कासन के स्थान को बदल कर नोरीलस्क[1] कर दिया जाये..." उसने अपने कन्धे ऊपर की ओर उठाये और फिर उन्हें नीचे की ओर छोड़ दिया। यह बात उसके अधिकार और शक्ति के बाहर थी। इतना ही नहीं यह उसकी कल्पना के भी बाहर थी। "आपने गैरवफादारी क्यों की?"

"यह क्या है?"

"हमारे करार से। आपने यह वचन दिया था कि आप स्वयं मुझे खून चढ़ायेंगी। मुझे किसी विद्यार्थी के हवाले नहीं कर देंगी।"

"वह विद्यार्थी नहीं है बल्कि इसके विपरीत वह एक विशेषज्ञ है। उसके यहां होने पर हमें खून चढ़ाने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन अब वह चली गई है।"

"आपका क्या अभिप्रायः है, चली गई है।"

"उसे बुलाया गया था।"

यह भी कैसा चक्कर है। एक ऐसा चक्कर जो दूसरे चक्करों से उसकी रक्षा नहीं करता।

"तो आप खून चढ़ायेंगी?"

"हां, मैं चढ़ाऊंगी। लेकिन पुराने खून की ये सब बातें क्या हैं?" उसने खून की बोतल की ओर देखते हुए अपना सिर हिलाया।

"यह पुराना नहीं है। लेकिन यह तुम्हारे लिए भी नहीं है। हम तुम्हें

---

1. सोवियत संघ का धुर उत्तर का एक बड़ा शहर। (अनुवादक की टिप्पणी)।

२५० ग्राम खून चढ़ायेंगे। यहां बोतल मौजूद है।" वेरा कोर्निलएवना दूसरी मेज से यह बोतल उठा लाई और उसे इसे दिखाया। "इसे पढ़ो, अपने आप इसकी जांच कर लो।"

"आप जानती हैं, वेरा कोर्निलएवना, यह एक दुखपूर्ण और अभिशप्त जीवन है, जिसे मैं जी रहा हूँ। किसी भी बात पर विश्वास न करो। हर चीज़ की जांच करो। क्या आप यह नहीं समझती कि उस समय मैं बहुत अधिक प्रसन्न और सुखी होता जब मुझे किसी चीज़ को स्वयं नहीं जांचना पड़ता।"

उसने यह बात बहुत ही दर्दभरी और कमजोर आवाज़ से कही। ठीक उस तरह जैसे कोई मरता हुआ व्यक्ति कहता है। लेकिन उसकी सतर्क आंखें यह देखने से नहीं रुक सकीं कि यह खून सही किस्म का है या नहीं। इन आंखों ने ये शब्द पढ़े, "वर्ग 'ए'; यारोस्लावतसेवा, आइरीना, ५ मार्च।"

"आहा ५ मार्च। यह ठीक होगा!" ओलेग खुश हो गया। "यह हमें जरूर फायदा पहुंचायेगा।"

"तो तुम भी यह अनुभव करते हो कि इससे तुम्हें लाभ मिलता है। आखिरकार तुमने यह बात समझी और इससे पहले तुम इतनी बहस कर रहे थे।" उसकी समझ में नहीं आया कि उसका क्या अभिप्राय था। खैर कुछ भी हो।

उसने अपनी आस्तीन कोहनियों से ऊपर तक चढ़ा ली और अपनी बांह को अपने शरीर के बराबर एकदम ढीला छोड़ दिया।

यह सच था कि ओलेग जैसे एक आदमी के लिए जिसे स्थायी रूप से संदेह करने और सतर्क रहने की आवश्यकता थी संसार में सबसे बड़ा सुख किसी पर भरोसा करना था, अपने आपको इस भरोसे से किसी को सौंप देना था। और वह उस औरत पर भरोसा करता था, किसी अच्छे स्वभाव वाली असंसारी सी औरत पर। वह जानता था कि वह बहुत हल्के कदमों से सोच समझ कर चलेगी। अपने हर काम के बारे में सोचेगी और वह मामूली से मामूली गलती भी नहीं करेगी।

और इस प्रकार वह वहां लेटा रहा और उसे लगा कि मानो वह आराम करने के लिए लेटा हुआ हो।

छत पर धूप का एक बहुत बड़ा धब्बा, कमजोर-सा था और ऐसा लग रहा था मानो वह किसी जाली से छन कर आया हो और गैर हमवार दायरा बना रहा हो। किस चीज पर सूर्य के प्रकाश के परावर्तित होने से धूप का यह धब्बा बन रहा है उसे मालूम नहीं था। वह क्या है जो उसके सुख को और बढ़ा रहा है और इस साफ-सुथरे और शान्त कमरे की सुन्दरता में वृद्धि कर रहा है।

वेरा कोर्निलएवना ने एक सूई डाल कर उसकी नस से चुपचाप थोड़ा-

सा खून निकाला। उसने सेंटीफ्यूज चला दिया और खून को चार हिस्सों में विभाजित किया।

"चार ही क्यों ?" उसने प्रश्न उठाया क्योंकि अपने समस्त जीवन भर वह जहां कहीं गया उसकी आदत सदा सवाल पूछने की रही। वस्तुत: इस क्षण वह यह अनुभव कर रहा था कि वह यह जानने के लिए भी चिंतित नहीं है।

"एक हिस्सा खून का मेल बैठाने के लिए है और तीन वर्ग की सटीकता के लिए वितरण केन्द्र की जांच के लिए हैं। यह सावधानी के लिए किया जाता है।"

"यदि खून सही रक्त वर्ग का है तो इसके मेल खाने की बात को क्यों जांचा जाए ?"

"यह इसलिए किया जाता है कि कहीं रोगी के सीरम की रक्तदान करने वाले व्यक्ति के खून के सम्पर्क में आने पर गांठें तो नहीं बन जातीं। यह शायद ही कभी होता है लेकिन होता तो है ही।"

"हूँ समझ गया। लेकिन इसे आप इस तरह घुमा क्यों रही हैं ?"

"लाल रक्त कणों को पीछे धकेलने के लिए। क्यों क्या तुम्हारे लिए सब कुछ जानना जरूरी है ?"

सचमुच उसे हर बात जानना जरूरी नहीं था। ओलेग ने छत के ऊपर हिल रहे धूप के धब्बे को देखा। आप संसार में सब कुछ नहीं जान सकते। चाहे कुछ भी हो तुम एक मूर्ख ही मरोगे।

सफेद मुकट वाली नर्स ने ५ मार्च की खून की बोतल को स्टैंड पर उलटा टांग दिया। इसके बाद उसने एक छोटा-सा तकिया उसकी कुहनी के नीचे रखा। उसने लाल रबर की नली को उसकी बांह पर कुहनी से ऊपर कसकर बांधा और इसे घुमा-घुमाकर कसने लगी। उसकी जापानी आंखें यह आंक रही थीं कि किस सीमा तक वह कस सकती है।

यह बड़ा विचित्र था कि उसे इस लड़की में एक पहेली दिखाई पड़ी थी उसमें कोई पहेली नहीं थी वह अन्य किसी भी लड़की की तरह एक लड़की थी।

अब वेरा गैंगार्त इन्जेक्शन की सिरिंज लेकर उसके पास आई। यह सामान्य सिरिंज थी और इसमें रंगहीन तरल भरा हुआ था। लेकिन सूई असाधारण थी। यह सूई न होकर एक छोटी नली थी। यह त्रिकोणाकार नोक वाली एक नली थी। किसी नली में अपने आप में कोई बुराई नहीं होती। विशेषकर उस समय तक जब तक कोई उस नली को आपके शरीर के भीतर घोंपने न जा रहा हो।

"तुम्हारी नस स्पष्ट दिखाई पड़ती है," वेरा कोर्निलएवना ने कहना शुरू किया। नस की ओर देखते हुए उसकी एक भौं ऊपर उठी और इसके बाद बहुत ध्यान से उसने चमड़ी के भीतर इतनी सावधानी से वह भयावह सूई

घुमाई कि वह इसे महसूस ही न करे और बस उसके बाद कुछ करने की जरूरत नहीं थी।

पर ऐसी बहुत-सी चीजें थीं जो उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। उन्होंने उसकी कुहनी के ऊपर रबर की नली को इतना कसकर क्यों बांधा था। इन्जैक्शन की पिचकारी में पानी जैसा वह तरल क्या था? वह यह सवाल पूछ सकता था। लेकिन उसने यह सोचा कि वह स्वयं अपने आप भी इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सकता है। सम्भवतः नस में हवा को घुसने से रोकने के लिए और खून को पिचकारी में चढ़ाने से रोकने के लिए यह किया गया हो।

इस बीच सूई उसकी नस में ही लगी रही। रबर की नली के दबाव को ढीला कर दिया गया और फिर उसे हटा लिया गया। इन्जैक्शन की पिचकारी को बहुत कुशलता से हटाया गया और नर्स ने खून चढ़ाने के उपकरण की नोक को एक छोटे-से प्याले के ऊपर ले जाकर खून की पहली कुछ बूंदें गिराईं। अब गैंगार्त इस सिरे को सूई से जोड़ रही थी। इन्जैक्शन की पिचकारी से नहीं। उसने इसे पकड़े रखा और इसके साथ-साथ ऊपर लगा पेंच भी धीरे खोलती रही।

उपकरण के चौड़े कांच के पाइप के भीतर धीरे-धीरे अनेक पारदर्शी बुलबुले उस पारदर्शी तरल से उठने लगे।

उसके मन में प्रश्न उठते रहे, बुलबुलों की तरह ही एक के बाद एक। इतनी मोटी सूई क्यों? उन्होंने कुछ रक्त क्यों गिराया? इन बुलबुलों का क्या अर्थ होता है। एक मूर्ख एक सौ बुद्धिमान लोगों को उत्तर देने में व्यस्त रखने के लिए पर्याप्त प्रश्न पूछ सकता है।

यदि उसे प्रश्न पूछने ही हैं तो वह किसी अन्य बात के बारे में प्रश्न पूछेगा।

इस कमरे में हर चीज बड़ी खुशनुमा लग रही थी विशेषकर छत का वह हिस्सा जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित था।

सूई को काफी लम्बे अरसे तक लगा रहना था। बोतल में रक्त का स्तर मुश्किल से ही घटा होगा। वस्तुतः उसमें कोई कमी नहीं हुई थी।

"क्या आपको मेरी आवश्यकता है, वेरा कोर्निलएवना?" नर्स ने पूछा, उस जापानी लड़की ने पूछा। वह बड़े सम्मानपूर्वक बोल रही थी, अभी भी स्वयं अपनी आवाज़ सुन रही थी।

"नहीं, मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है," गैंगार्त ने बहुत शांति से जवाब दिया।

"मैं कुछ समय के लिए बाहर जाऊंगी···क्या मैं आधा घंटा ले सकती हूं?"

"हां, जहां तक मेरा सवाल है, मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

सफेद मुकट वाली लड़की प्रायः भागती हुई बाहर निकल गई। अब वह केवल दो ही कमरे में रह गए थे।

धीरे-धीरे बुलबुले उठते रहे। इसके बाद वेरा कोर्निलएवना ने पेंच छुआ और बुलबुले उठने बन्द हो गए। एक भी बुलबुला नहीं रहा।

"आपने इसे बन्द कर दिया है?"

"हां।"

"लेकिन क्यों?"

"तुम्हें सदा सब कुछ जानना होता है, क्यों?" वह उसकी ओर देखकर मुस्कराई। इस बार उसकी मुस्कराहट उसका उत्साह बढ़ा रही थी।

मरहमपट्टी के कमरे में बड़ी शांति थी। इसकी दीवारें बड़ी पुरानी थीं और दरवाजे मजबूत थे। यहां फुसफुसाहट से थोड़े से ऊंचे स्वर में बोला जा सकता था। बस बिना किसी प्रयास के सांस लेने की तरह बात की जा सकती थी। और उसे बोलने का यही तरीका पसन्द था।

हां मैं जानता हूं। मेरे साथ व्यवहार मुश्किल होता है। मैं हमेशा उससे अधिक जानना चाहता जितना जानने की मुझे इजाजत है।

"यह अच्छी बात है कि तुम अभी भी···" उसने कहा। उसके होंठ उन समस्त शब्दों से पूरी तरह जुड़े हुए दिखाई पड़ते थे जो वह बोलती थी। उसके होंठों की जरा-सी हरकत, दाहिने अथवा बायें कोने की जरा-सी थरथराहट, होंठों को मिलाकर थोड़ा-सा आगे की ओर करना अथवा उन्हें मामूली-सा भीचना, प्रत्येक विचार को बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता था। इन विचारों को आलोकित करता था।

"पहले २५ घन सेंटीमीटर के बाद हमें कुछ देर के लिये रुकना होता है और यह देखना होता है कि रोगी कैसा अनुभव कर रहा है।" वह अभी भी एक हाथ से, केवल एक हाथ से सूई का पिछला हिस्सा थामे हुई थी। उसने अपनी मुस्कराहट को कुछ और अधिक विस्तृत किया। वह उसे और प्रश्न उठाने का आमन्त्रण-सा देती हुई और प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई खड़ी रही। और बोली "तुम्हें कैसा लग रहा है?"

"इस क्षण बहुत अच्छा।"

"क्या यह कहना स्थिति को बहुत सशक्त तरीके से स्पष्ट करना नहीं है?"

"नहीं, मैं सचमुच बहुत अच्छा अनुभव कर रहा हूं। मैं···अच्छे-से बहुत बेहतर अनुभव कर रहा हूं।"

"तुम्हें कंपकंपी तो नहीं आ रही है। मुंह बदजायका तो नहीं है। ऐसी कोई बात तो नहीं है?"

"नहीं।"

बोतल, सूई और खून चढ़ाने की प्रक्रिया एक ऐसा काम बन गई थी, जो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो उनसे भिन्न था, समान चिन्ता में उन्हें एकाकार कर रही थी। यह चिन्ता किसी ऐसे व्यक्ति के लिये थी, जिसकी वह एक साथ मिलकर चिकित्सा कर रहे हों और उसे स्वस्थ बनाने के प्रयास में लगे हों।

"और इस वर्तमान क्षण के अलावा?"

"इस वर्तमान क्षण के अलावा?" वहां होना अपने आप में अद्भुत था। हर क्षण एक-दूसरे की आंखों में देखना एक ऐसे समय जब उन्हें यह करने का पूरा अधिकार था, जब उन्हें दूसरी ओर देखने की आवश्यकता नहीं थी। "हूँ, सामान्यतया मैं बेहद बुरा अनुभव करता हूँ।"

"बेहद बुरा! क्यों?"

उसने यह बात अत्यधिक सहानुभूति और चिन्ता से पूछी, एक मित्र की तरह। लेकिन…उसके ऊपर यह प्रहार होना ही चाहिए था और ओलेग सोचता था कि यह प्रहार करने का यही उचित समय है। उसकी आंखें चाहे कितनी ही चमकदार और हल्की भूरी क्यों न हों वह बच नहीं सकेगी।

"मेरा मनोबल बेहद बुरी हालत में इसलिए है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं जीवन के लिए एक बहुत ऊंची कीमत चुका रहा हूँ और यहां तक कि तुम भी—हां तुम भी—उस प्रक्रिया में शामिल हो और मुझे धोखा दे रही हो।"

"मैं?"

जब आंखें एक दूसरी आंखों में अनन्त समय तक घूरती हैं तब उनमें पूरी तरह से एक नया गुण आ जाता है। आपको तब ऐसी चीजें दिखाई पड़ती हैं, जो मामूली ढंग से देखते हुए दिखाई नहीं पड़तीं इस स्थिति में ऐसा लगता है मानो आंखों ने अपना सुरक्षात्मक रंगीन आवरण खो दिया हो। समस्त सत्य निःशब्द रह करपूरी तरह उजागर हो जाता है। उसे बांधकर नहीं रखा जा सकता।

"तुम मुझे इतने उत्साह और दृढ़ता से यह आश्वासन कैसे दे सकती थीं कि इनजेक्शन ज़रूरी हैं और मेरी समझ में उनकी बात नहीं आएगी। इसमें समझने को क्या है। यह हारमोन चिकित्सा है। इसमें समझने को क्या है?" सचमुच यह उचित नहीं था। उन का फीके रंग की आंखों को, असहाय आंखों को इस प्रकार अचानक आश्चर्य में डाल देना उचित नहीं था। लेकिन यह सवाल पूछने का सचमुच यही एकमात्र तरीका था। उसकी आंखों में कोई चीज उछली वह प्रायः पूरी तरह हिल गई थी।

और डाक्टर गैंगार्त (नहीं कोई डाक्टर नहीं गैंगार्त नहीं थी वह वेरा थी) और डाक्टर गैंगार्त ने अपनी आंखें दूसरी ओर घुमा लीं।

ठीक उसी तरह जैसे वे लोग युद्ध क्षेत्र से किसी कम्पनी को उसके पूरी तरह ध्वस्त होने से पहले पीछे हटा लेते हैं।

उसने बोतल की ओर देखा। लेकिन जब रक्त के प्रवाह को रोक दिया गया था तो वहां देखने को क्या था ? उसने बुलबुलों की ओर देखा। लेकिन बुलबुले भी नहीं उठ रहे थे।

इसके बाद उसने पेंच घुमा दिया। बुलबले उठने लगे। अब फिर खून चढ़ाना शुरू करने का समय तो हो ही गया था।

उसकी अंगुलियां रबर की उस नली को थपथपाने लगीं जो खून चढ़ाने के उपकरण से सूई तक गई हुई थी। यह ऐसा काम था मानो उसकी अंगुलियां नली के भीतर की समस्त रुकावटों को दूर करने में सहायता दे रही हों। उसने नोक के पास कुछ और रूई रखी ताकि नली मुड़े नहीं। उसने देखा कि वेरा ने चिपकाने वाला कुछ प्लास्टर भी ले रखा है। उसने प्लास्टर का एक टुकड़ा लिया और इसे उसकी बांह पर चिपका दिया। इसके बाद वह अपनी अंगुलियों से, उसी हाथ की अंगुलियों से रबर की नली को सहलाने लगी। ये अंगुलियां हवा में एक हुक की तरह उठी हुई थीं। इसके बाद नली अपनी सही स्थिति में आ गई।

अब वेरा को इसे पकड़े रखने की जरूरत नहीं थी और न ही उसके पास खड़े होने की, न ही उसकी आंखों में देखने की।

बुलबुलों के प्रवाह को नियमित करने के लिये जब वह पेंच को सही स्थानपर बैठा रही थी तो उसका चेहरा कठोर और गम्भीर था। "यह ठीक है।" वह बोली, "बस इसी तरह चुपचाप लेटे रहो।"

और वह बाहर निकल गई।

वह पूरी तरह से अलग नहीं चली गई थी। वह केवल उस स्थान से हट गई थी जो ओलेग की आंखों के सामने था। ओलेग को बिना हिले-डुले लेटे रहना था। इसका यह अर्थ था कि उसकी नजर के सामने केवल उपकरण का स्टैंड, गहरे कत्थई रंग की खून की बोतल, चमकदार बुलबुले, धूप से प्रकाशित खिड़कियों के सिरे, बिजली के लैम्प के ग्लोव के कांच पर छः शीशे वाली खिड़कियों के प्रतिबिम्ब और पूरी छत जिसके ऊपर धूप का एक धब्बा निरन्तर हिल रहा था।

अब वहां वेरा नहीं थी।

ऐसा लगता था कि उसका प्रश्न बेकार गया, वह उस वस्तु की तरह गिरकर चूर-चूर हो गया, जिसे असावधानी और भद्दे ढंग से एक हाथ से दूसरे हाथ में दिया जा रहा हो।

और वेरा ने उसे उठाया भी नहीं।

अब केवल ओलेग को ही इस प्रश्न पर माथा-पच्ची करते रहना था।

छत की ओर देखते हुए उसने धीरे-धीरे ऊंची आवाज़ में सोचना शुरू किया : "यदि मेरा जीवन पूरी तरह समाप्त हो गया है। यदि मैं अपने मन की समस्त गहराइयों में यह अनुभव करता हूं कि मैं सदा, निरन्तर एक कैदी ही रहूंगा सदा के लिए "दण्डित" यदि भाग्य में मेरे लिए कुछ भी बेहतर नहीं बदा है, यदि मेरे भीतर एकमात्र चेतना यही है कि मुझे जानबूझकर और कृत्रिम तरीकों से मारा जा रहा है—तो ऐसे जीवन को बचाने की चिन्ता क्यों करूं ?"

वेरा ने सब कुछ सुना। लेकिन वह उसकी नजर से दूर थी। सम्भवतः इस प्रकार बेहतर था। इस प्रकार बोलना अधिक सरल था।

"पहले स्वयं मेरा जीवन मुझसे छीन लिया गया और अब मुझे इस अधिकार से भी वंचित किया जा रहा है···कि मैं स्वयं को जीवित रखूं। अथवा नहीं। मैं एक भयंकरतम अपंग होऊंगा। मेरा किसी के लिए क्या उपयोग होगा ? सब आदमियों की दया अथवा दान का लक्ष्य···"

वेरा ने कुछ नहीं कहा।

छत पर धूप का धब्बा समय-समय पर, बीच-बीच में हिलता हुआ दिखाई पड़ता था और लगता था कि किनारों पर यह छोटा होता जा रहा है। ऐसा लगता था मानो इसमें क्रोध का संचार हो रहा हो। मानो वह भी सोच रहा हो लेकिन उसकी समझ में बात न आ रही हो और इसके बाद वह फिर स्थिर हो जाता, गतिहीन हो जाता।

खुशनुमा पारदर्शी बुलबुले निरन्तर उठ रहे थे। बोतल में रक्त का स्तर गिर रहा था। लगभग चौथाई खून उसके भीतर पहुंच चुका था। यह एक औरत का खून था। यह खून "यारोस्लावतसेवा, आइरीना" का था। क्या वह एक लड़की थी ? एक वृद्ध औरत, एक विद्यार्थी ? अथवा बाजारू औरत ?

"हां, दान···"

उसकी नजर के सामने से हट जाने के बाद वेरा ने उससे बहस शुरू नहीं की। इसके बजाय वह अचानक उस स्थान से सामने निकल आई जहां वह खड़ी हुई थी। "नहीं, यह सही नहीं है। मैं समझती हूँ कि तुम्हें इन बातों पर वास्तव में विश्वास नहीं है। मैं जानती हूं तुम्हें विश्वास नहीं है। जरा गौर से सोचो यह तुम्हारे विचार नहीं हैं, तुमने इन विचारों को कहीं और से उधार लिया है। क्यों नहीं क्या ?"

वह उससे कहीं अधिक शक्ति और प्रभाव से बोल रही थी जितना इससे पहले कभी नहीं बोली थी। उसका स्वर आहत था, उससे भी कहीं अधिक जितनी कि ओलेग ने कभी कल्पना नहीं की थी।

अचानक वह रुक गई और मौन हो गई।

"तो तुम मुझ से किस बात पर विश्वास करने की आशा करती हो ?" ओलेग ने उसकी पूरी बात बाहर निकालने के लिये सतर्कता से कहा।

ओह, कैसा मौन ! आप कांच के ग्लोव के भीतर लगे छोटे-छोटे बिजली के बल्बों तक की आवाज सुन सकते थे। इनसे निरन्तर तेज होती हुई आवाज़ आ रही थी।

उसके लिये बोलना बड़ा कठिन था। उसकी आवाज ध्वस्त हो गई थी। वह स्वयं को गर्त से निकालने का प्रयास कर रही थी। लेकिन यह बात उसकी शक्ति से बाहर थी।

"ऐसे लोग होने ही चाहिएं, जो भिन्न तरीके से सोचते हैं। हो सकता है बहुत थोड़े से, हो सकता है केवल मुट्ठी भर, लेकिन फिर भी भिन्न तरीके से सोचने वाले ! यदि हर आदमी आप की तरह सोचे तो हम किस के सहारे जी सकते हैं ? हम फिर किस वस्तु के लिए जियेंगे ? उस स्थिति में क्या हम जियेंगे भी ?"

वह स्वयं को गर्त से बाहर निकाल चुकी थी। अन्तिम शब्द एक नए किस्म की उदासी को लेकर बाहर आए। ऐसा लग रहा था मानो वेरा के प्रतिवाद ने उसे हिला दिया था और उस मामूली से मामूली शक्ति से जो उस के पास थी उसने ओलेग को हिला दिया था और उसके भारी शरीर को उस स्थान पर पहुंचा दिया था, जहां केवल मुक्ति सम्भव थी।

सूरजमुखी के पौधे के तने से बनी हुई गुलेल से जिस प्रकार कोई लड़का बड़ी निर्भयता से पत्थर फेंकता है अथवा युद्ध के अन्तिम वर्ष में इस्तेमाल में लाई गई लम्बी नली वाली तोपों से फैंका गया एक गोला तेज आवाज करता हुआ हवा को चीर कर आगे बढ़ता हुआ गोला—ओलेग व्यग्र हो उठा और एक उन्मादपूर्ण वृत्त में चक्कर लगाने लगा। उसने स्वयं को उन समस्त वस्तुओं से काटकर अलग कर लिया, जो उसने याद की थीं, स्वयं को उन समस्त वस्तुओं से पूरी तरह अलग थलग कर लिया, जो उसने अन्य लोगों से उधार ली थीं। वह अपने जीवन के मरुस्थल, एक के बाद एक मरुस्थल को पार करता हुआ वहां पहुंचा, जो उसका पुरातन अतीत था।

यह उसके बचपन का देश था, वह तुरन्त इसे नहीं पहचान पाया लेकिन जिस क्षण उसकी चौंधियाई हुई अभी भी धूमिल आँखों ने उसे पहचाना तो वह शरम से भर उठा। उसे याद आया कि वह उस समय भी इन बातों पर इस प्रकार विश्वास करता था जब वह एक लड़का ही था और उसे इस बात की शरम थी कि वेरा को उसके लिए इस बात का अनुसंधान करना पड़ा जबकि स्वयं उसे यह बात वेरा को बतानी चाहिए थी।

इसके अलावा उसे किसी अन्य बात का भी स्मरण आ रहा था, एक और बात उसकी स्मृति में वापस लौट रही थी। यह उस अवसर के लिए

सर्वांगपूर्ण बात थी। बस केवल उसे इसे अपने मस्तिष्क में लाना भर था। इसके बाद उसे यह पूरी स्पष्टता से याद आई!

उसने बिजली की तेजी से यह स्मरण किया लेकिन जब उसने बोलना शुरू किया तो वह बहुत धीरे-धीरे, तर्कसम्मत तरीके से बोला और उसने एक एक बात को अलग-अलग उठाया: "सन् १९२० के बाद के वर्षों में डाक्टर फ्रीडलैंड नामक एक विशेषज्ञ ने कुछ पुस्तकें लिखी थीं। इन पुस्तकों को बेहद कामयाबी मिली। उन दिनों लोग दूसरों की आंखें खोलना अच्छी बात समझते थे। युवकों की आंखें और पूरे राष्ट्र की आंखें। यह ऐसे विषयों के बारे में डाक्टरी जानकारी थी, जिनका उल्लेख तक नहीं किया जाता था। और बहुत ही सम्भव है कि इनकी जरूरत थी। इनकी जानकारी देना वंचनापूर्ण मौन से बेहतर ही था। एक पुस्तक की, जिसका नाम था 'बन्द दरवाजों के पीछे' और एक और किताब थी 'प्रेम की यातनाएं'। शायद तुमने ये किताबें नहीं पढ़ीं होंगी? मेरे मन में यह विचार आया कि शायद डाक्टर होने के नाते।..."

बोतल में एक बुलबुला अभी भी आवाज कर रहा था। उसकी नजर से दूर वेरा की सांस लेने की आवाज भी शायद सुनी जा सकती थी।

"मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने बहुत कम उम्र में यह पुस्तकें पढ़ीं।" वह बोला। "उस समय मैं शायद बारह वर्ष का था। हां, जाहिर है कि मैं इस बात का पता अपने बड़ों को नहीं चलने दे सकता था। इन पुस्तकों को पढ़कर मेरे ऊपर भयानक प्रभाव पड़ा। लेकिन इसमें खालीपन भी था। मेरे भीतर यह भावना जगी कि अब मैं और अधिक नहीं जीना चाहता..."

अचानक उसने उसके प्रश्न का उत्तर दिया, "मैंने भी इन पुस्तकों को पढ़ा है," वेगा ने बिना किसी भावावेश के कहा।

"तुमने ये पुस्तकें पढ़ीं हैं, तुमने पढ़ीं हैं? तुमने भी?" ओलेग ने बड़ी प्रसन्नता से कहा। उसने "तुमने भी?" शब्द ही कहे। मानो वह अभी भी यह अनुभव कर रहा हो कि शायद वही पहला व्यक्ति है जिसने इन शब्दों का उच्चारण किया हो। "ऐसा तर्कसंगत, सम्बद्ध, और अकाट्य भौतिकतावाद और इसका परिणाम था...जीवन की क्या तुक है? प्रत्येक वस्तु को ठीक-ठीक प्रतिशत के रूप में प्रकट किया गया था। किस प्रकार कुछ स्त्रियां कभी भी कुछ भी अनुभव नहीं करतीं, कितनी स्त्रियां परमानन्द का अनुभव करती हैं। वे किस्से कि औरतें किस प्रकार...अपने मनचाहे की तलाश में एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में पहुंचती रहती थीं.." जैसे-जैसे उसे और अधिक बातें याद आती रहीं अचानक उसने अपना सांस रोक लिया मानो उसके ऊपर किसी ने वार कर दिया हो अथवा स्वयं उसने अपने आपको चोट पहुंचा ली हो... "...ऐसी निर्मम निश्चितता कि विवाह में मनोविज्ञान गौण महत्त्व का है। लेखक यह बात सिद्ध करता है कि शरीर ही, शरीर की क्षमता ही एक-दूसरे से मेल न

बैठ पाने का एकमात्र कारण है। लेकिन तुम्हें ये बातें याद होंगी, क्यों हैं न? तुमने ये पुस्तकें कब पढ़ीं?"

उसने उत्तर नहीं दिया।

उसे वेगा से इस प्रकार सवाल नहीं पूछने चाहिएं थे। शायद उसने बहुत भद्दे और आवश्यकता से अधिक स्पष्ट ढंग से ये बातें कहीं थीं। उसे स्त्रियों से बात करने का कोई अनुभव नहीं था।

छत पर धूप का हल्का धब्बा अचानक तरंगित होने लगा। न जाने कहां से सफेद धब्बों का एक समूह चमकता हुआ दिखाई देने लगा। ये धब्बे इधर उधर चल रहे थे। ओलेग तेजी से उठती हुई और अन्तर्धान होती हुई लहरों को देखता रहा। अन्त में उसने यह अनुभव किया कि छत के ऊपर यह रहस्यात्मक आकाश गंगा वर्षा के पानी से भरे किसी गढ्डे का प्रतिबिम्ब है। बगीचे की बाड़ के पास के किसी गड्ढे में भरे पानी का प्रतिबिम्ब है जो अभी तक सूखा नहीं है। यह एक मामूली से पानी भरे गड्ढे का प्रतिबिम्ब है और अब थोड़ी हवा चलने लगी है और इस हवा ने इन तरंगों को जन्म दिया है।

वेगा चुप थी।

"कृपया मुझे क्षमा कर दें" ओलेग ने याचना की। उसे वेगा से क्षमा मांगना बड़ा अच्छा, प्रायः प्रसन्नतादायक लगा। "मैं समझता हूं मैंने यह बातें सही ढंग से नहीं कहीं…" उसने वेगा की दिशा में अपना सिर घुमाने की चेष्टा की पर वह अभी भी उसे नहीं देख पा रहा था…"आप समझती ही हैं कि इस प्रकार का दृष्टिकोण पृथ्वी पर प्रत्येक मानवीय वस्तु को नष्टकर डालता है। यदि आप इसके समक्ष झुक जाते हैं, यदि आप स्वीकार कर लेते हैं, और उन बातों को भी जो उसकी अनिवार्यता परिणति हैं…"

अब वह अपनी भूतपूर्व आस्था के समक्ष बड़े प्रसन्न भाव से घुटने टेक रहा था। वह उसे फुसलाने की कोशिश कर रहा था।

वेरा वापस लौट आई। वह फिर मंच पर वापस आ गई। और उसके चेहरे पर ऐसी कोई उदासी अथवा कठोरता नहीं थी, जो उसे उसकी आवाज में लगी थी। वहां सदा की तरह मित्रतापूर्ण मुस्कराहट थी। "मैं यह भी नहीं चाहती कि तुम इसे स्वीकार करो।" वह बोली "मुझे इस बात का विश्वास था कि तुम्हें यह मत मान्य नहीं था।"

वह चमक रही थी। वह वस्तुतः चमक रही थी।

हां, वह उसके बचपन की वही छोटी लड़की थी, उसके स्कूल की दोस्त। उसने उसे पहले ही क्यों नहीं पहचान लिया था?

उसके मन में उससे कोई बहुत सीधी सादी और मित्रतापूर्ण बात कहने का भाव जगा। उसके मन में आया कि वह कुछ ऐसा कहे, "आओ इस बात पर हाथ मिलायें।" और इसके बाद वह उसका हाथ अपने हाथ में ले लेगा

ग्रौर—"भगवान जानता है कि उससे बात करना कितना ग्रद्भुत है !"

पर उसका दाहिना हाथ सूई के तले था।

काश ! वह उसे केवल वेगा कह सकता ग्रथवा वेरा ही।

लेकिन यह सम्भव नहीं था।

बोतल में खून का स्तर ग्राधे से कम हो चुका था। एक समय यह खून किसी दूसरे के शरीर में प्रवाहित था। एक ऐसे शरीर में जिसका ग्रपना व्यक्तित्व है, ग्रपने विचार हैं ग्रौर ग्रब यह उसके शरीर में प्रवेश कर रहा था, लाल-कथई रंग की स्वास्थ्यधारा के रूप में। निश्चय ही यह रक्त ग्रपनी कुछ विशेषताएं भी ग्रपने साथ ला रहा होगा।

ग्रोलेग ने वेगा को इधर उधर व्यस्तता से काम करते हुए देखा। उसने उसकी कुहनी के नीचे रखे छोटे तकिए को सीधा किया ग्रौर नली के सिरे पर लगी रुई को भी। उसने ग्रपनी ग्रंगुलियों से रबर की नली को थपथपाया ग्रौर स्टैंड के उस ऊपरी हिस्से को ग्रौर ऊपर उठाने लगी जिस पर बोतल लगी थी।

वह हाथ मिलाने से भी ग्रधिक कुछ उस हाथ के साथ करना चाहता था वह उसका चुम्बन लेना चाहता था। यद्यपि यह उस प्रत्येक बात के विपरीत होता जो उसने कही थी।

४. वेगा

अस्पताल से रवाना होते समय, वह त्यौहार के दिन जैसी खुश थी। वह किसी गीत की धुन गुनगुना रही थी। उसका मुंह बन्द था और इस कारण से गीत की धुन को केवल वही सुन सकती थी। उसने बसन्त ऋतु के लायक एक हल्का सलेटी रंग का कोट पहन रखा था। लेकिन जूतों के ऊपर गालोश नहीं पहन रखे थे, क्योंकि सड़कें प्राय: पूरी तरह सूखी थीं। वह स्वयं को बहुत हल्का अनुभव कर रही थी और उसके मन में तेजी से उछल-उछल कर चलने की इच्छा जग रही थी। हर चीज बेहद हल्की लग रही थी, विशेषकर अपनी टांगें चलना इतना आसान लग रहा था और होता भी यही है—जब कोई युवती ऐसा अनुभव करती है, तो वह पूरे शहर को ही पैदल पार कर सकती है।

शाम के समय भी दिन की तरह ही धूप थी। ऐसा लगता था मानो बसन्त ऋतु है, यद्यपि सर्दी पड़ने लगी थी। भीड़ से खचाखच भरी बस में चढ़ना मूर्खता होती। उसे लगा कि पैदल चलना कहीं अधिक बेहतर होगा।

तो वह पैदल ही आगे बढ़ गई।

जब नगर में खुमानी के पेड़ों पर फूल आते हैं, उससे अधिक सुन्दर समय दूसरा नहीं होता। अचानक उसने अनुभव किया कि उसे खुमानी का कोई फूला हुआ पेड़ अवश्य देखना चाहिए। बसन्त ऋतु आने से पहले उसे फूलों से लदा खुमानी का पेड़ अवश्य देखना चाहिए। चाहे एक ही सही। यह उसके सौभाग्य के लिए होगा, चाहे वह इस पेड़ को दूर से ही देख सके अथवा यह पेड़ किसी बाड़ अथवा मिट्टी की दीवार के पीछे ही क्यों न हो। खुमानी के फूलों के विलक्षण गुलाबीपन के कारण आप दूर से उन्हें पहचान सकते हैं।

पर अभी खुमानी के पेड़ फूलने का समय नहीं आया था।

सदा ऐसा लगता कि वेगा बड़ी जल्दबाजी में है। लेकिन जब कभी वह किसी बस में सवार होने में कामयाब हो जाती, तो वह सीट के टूटे हुए स्प्रिंगों पर यथासम्भव आराम से बैठ जाती अथवा छत के डंडे से लटकते हुए स्ट्रैप को पकड़ कर झूलती रहती और अपने बारे में सोचती रहती। "मैं कुछ नहीं करना चाहती।"

इस सबके बावजूद वह जानती थी कि उसे शाम के घंटे किसी न किसी प्रकार बिताने होंगे और फिर अगले दिन सुबह किसी ऐसी ही बस में अपने काम

पर वापस लौटना होगा।

लेकिन आज वह बिना किसी जल्दबाजी के पैदल चली जा रही थी और वह हर काम करना चाहती थी। ऐसा हर काम जो करने को शेष था। अचानक ऐसी बहुत-सी बातें याद आईं, जिन्हें करने की आवश्यकता थी : घर पर, दुकानों में अथवा लाइब्रेरी में या सम्भवत: सिलाई का काम अथवा कोई और ऐसा ही सुखद काम। इन चीजों के बारे में कोई भी प्रतिबन्ध, कोई भी पाबन्दी नहीं थी। ये बस कुछ ऐसे काम थे, जिनसे वह किसी कारण से बचती रही थी। लेकिन अब तुरन्त उन सब कामों को कर डालने की इच्छा उसके मन में जग रही थी। दूसरी ओर वह जल्दी से जल्दी घर भी नहीं पहुंचना चाहती थी अथवा इनमें से किसी एक काम को तुरन्त कर डालना भी नहीं चाहती थी। इसके बजाय वह धीरे-धीरे चलती रही और सूखी पटरी पर उसका एक-एक कदम उसे सुख दे रहा था। वह दुकानों के सामने से गुजरी, जो अभी तक बन्द नहीं हुई थीं, लेकिन खाने की चीजें अथवा अपनी जरूरत की और चीजें खरीदने के लिए वह किसी और दुकान के भीतर नहीं गई। वह तीन पोस्टरों के सामने से गुजरी, पर उसने एक भी पोस्टर नहीं पढ़ा। यद्यपि अपनी वर्तमान मनः स्थिति में वह इन पोस्टरों को पढ़ना चाहती थी।

और इस प्रकार वह चलती गई, चलती गई। यह उसे अत्यन्त अच्छा लग रहा था। यह एक ऐसी बात थी जो उसे सुख पहुँचा रही थी।

और बीच-बीच में वह मुस्कुराती भी थी।

उसके मन में यह इच्छा थी कि वह खुमानी का कोई फूला हुआ पेड़ देखे। पर अभी तक खुमानी के एक भी पेड़ पर फूल नहीं आए थे। अभी इसका मौसम भी नहीं आया था।

कल छुट्टी थी। लेकिन वह बहुत ही निरुत्साहित अनुभव कर रही थी और उसे लगता था कि उससे नफरत की जा रही है। आज काम का सामान्य दिन था और वह इतनी उन्मुक्त और सुखद मन:स्थिति में थी।

उसके मन में छुट्टियों जैसा भाव इसलिए जगा था, क्योंकि वह सोच रही थी, अनुभव कर रही थी कि वह सही है। अचानक आपके प्रभावशाली तर्क जिन्हें इस कारण व्यक्त नहीं किया जाता, क्योंकि सर्वत्र उनकी मजाक उड़ाई जाती है, उन्हें ठुकरा दिया जाता है। लेकिन उस पूरे समय आप एक भयंकर खाई के ऊपर उन्हें एक पतले से धागे के रूप में पकड़े हुए लटकते रहते हैं। पर तभी यह पता चलता है कि यह पतला धागा नहीं, बल्कि इस्पात के तारों की मजबूत रस्सी है और इस विश्वसनीयता को एक संसारी मामलों में चतुर, सन्देह और अपनी मनमानी करने वाला व्यक्ति स्वीकार करता है, जो स्वयं पूरे आत्म-विश्वास और भरोसे से इसे पकड़कर लटक जाने को तैयार है।

वे लोग इस प्रकार चले जा रहे थे मानो मोटे तार के ऊपर चलने वाले

डिब्बे में बैठे हों और यह डिब्बा मानवीय ज्ञान की एक काल्पनिक खाई के ऊपर से चला जा रहा हो और उनका एक दूसरे पर विश्वास हो।

इस कल्पना से वह पूरी तरह अभिभूत हो उठी।

अब उसे यह विश्वास हुआ कि वह सामान्य है पागल नहीं। लेकिन यह जानना भर पर्याप्त नहीं है। वह यह सुनना चाहती थी कि वह सामान्य है पागल नहीं और अब वह यह बात सुन चुकी थी। और सुना भी किस आदमी से! बस वह यही चाहती थी कि इसके लिये उसका 'धन्यवाद' करे। यह बात सोचने और स्वयं अपने जीवन के अन्तरालों के माध्यम से उसे इस बात का स्मरण दिलाने के लिए धन्यवाद दे।

वह इस धन्यवाद का अधिकारी था। लेकिन इस बीच यह उसका कर्तव्य था कि उससे बहाने करे। उस हारमोन चिकित्सा के लिये बहाने करने होंगे। उसने फ्रीडलैंड की मान्यताओं को ठुकरा दिया था। लेकिन वह हारमोन चिकित्सा को भी इसी तरह ठुकराता है। इसमें तर्कसंगत विरोधाभास है। पर आप एक डाक्टर से तर्कसंगत बातों की अपेक्षा कर सकते हैं, एक रोगी से नहीं।

चाहे इस बात में विरोधाभास हो अथवा नहीं, पर उसे ओलेग को इस चिकित्सा को स्वीकार करने के लिए तैयार करना होगा। वह उसे उसके हाल पर नहीं छोड़ सकती। उसे रसौली को समर्पित नहीं कर सकती। अब उसका इस रोगी से अधिक से अधिक भावनात्मक सम्बन्ध होता जा रहा था। यह एक ऐसा रोगी था, जिसे राजी करने और हठधर्मिता दोनों में उसे उस समय तक परास्त करना था जब तक वह पूरी तरह से चंगा नहीं हो जाता। लेकिन ऐसे उद्दण्ड और कठोर विचारों वाले व्यक्ति को आश्वस्त करने के लिए घंटों का समय बिताने में बहुत अधिक विश्वास की आवश्यकता थी।

जब ओलेग ने हारमोन चिकित्सा के सम्बन्ध में उसके ऊपर प्रहार किया था तो अचानक उसे यह स्मरण हो आया था कि उनके अस्पताल में भी इस चिकित्सा पद्धति को सामान्य और देश व्यापी निर्देश के अनुसार शुरू किया गया था, जो अनेक प्रकार की रसौलियों के लिए अच्छी चिकित्सा मानी जाती थी। लेकिन एक क्षण के लिए भी उसे किसी ऐसे वैज्ञानिक लेख का स्मरण नहीं आया, जिसमें यह बताया गया हो कि कैन्सर की चिकित्सा के लिए इस प्रकार हारमोनो का इस्तेमाल किया जा सकता है। हो सकता है इस सम्बन्ध में एक से अधिक लेख हों, विदेशों में प्रकाशित लेख भी हों। उसे आश्वस्त करने के लिए अब उसे ये सब लेख पढ़ने होंगे। सामान्यतया उसे बहुत अधिक लेख पढ़ने का समय नहीं मिलता था। लेकिन अब उसके पास हर चीज के लिए समय होगा। वह निश्चय ही अब ये लेख पढ़ेगी।

एक बार कोस्तोग्लोतोव ने यह तर्क पेश किया था कि उसकी समझ में यह बात नहीं आती कि जड़ी-बूटियों से इलाज करने वाला उसका हकीम किस

प्रकार वेगा से घटिया डाक्टर है। उसने वेगा से कहा था कि चिकित्सा में उसे गणित जैसी कोई सूक्ष्मता दिखाई नहीं पड़ती। इस बात पर वह नाराज़ हुई थी। लेकिन बाद में उसे लगा था कि वह आंशिक रूप से सही था। जब वे लोग कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए एक्स-किरणों का इस्तेमाल करते थे तो क्या उन्हें इस बात का ज्ञान था कि रोगग्रस्त कोशिकाओं के साथ-साथ स्वस्थ कोशिकाओं का कितना प्रतिशत समाप्त हो जाता है? क्या यह तरीका उस हकीम के तरीके से अधिक निश्चित था, जो तराज़ू का इस्तेमाल किये बिना ही मुट्ठी भर सूखी हुई जड़ी ले लेता है? अथवा एक दूसरा उदाहरण दिया जा सकता है—प्रत्येक व्यक्ति बड़े पैमाने पर पेंसीलीन दे रहा है, क्योंकि पेंसीलीन से अच्छे परिणाम निकलते हैं। लेकिन चिकित्सा संसार में किस व्यक्ति को यह समझाने में सफलता मिली है कि पेंसीलीन इस प्रकार सफल क्यों है? ये ऐसे क्षेत्र थे जिनके बारे में कोई ज्ञान नहीं था। बस चिकित्सा सम्बन्धी पत्रिकाओं का ही अनुसरण किया जा सकता था, उन्हें पढ़ा जा सकता था और उन पर विचार किया जा सकता था।

लेकिन अब उसे ये सब काम करने के लिए समय मिलेगा।

और अब—यह बड़े अचरज की बात थी कि उसने यह अनुभव नहीं किया था कि कितनी तेजी से पैदल चलती हुई वह अपने ब्लाक के बाहर वाले दालान में पहुँच गई थी। उसने कुछ डग और भरे लम्बे-चौड़े बरामदे में पहुंच गई, जिसे वहां रहने वाले लोग सम्मिलित रूप से इस्तेमाल करते थे। बरामदे की रेलिंगों पर कालीन और पांवपोश पड़े हुए थे। वह गड्ढेदार सीमेंट के फर्श को पार कर गई और उसका उत्साह कम नहीं हुआ था। उसने अपने सामूहिक फ्लैट का दरवाजा खोला। पैंडिंग जगह-जगह से उखड़ा हुआ था। इसके बाद वह एक छोटे से गलियारे के भीतर गई, जहां अंधेरा था। वह सब बत्तियां नहीं जला सकती थी, क्योंकि इनका सम्बन्ध दूसरे मीटरों से था।

उसने एक और येल चाबी का इस्तेमाल कर अपने कमरे का दरवाजा खोला। यह कमरा देख कर, जो ईसाई पादरिनों के किसी मठ की कोठरी जैसा था, उसका उत्साह नहीं टूटा। चोरों से बचाव के लिए खिड़की पर सींखचे लगे थे। पूरे शहर के निचली मंजिल के फ्लैटों में इसी प्रकार सींखचे लगे थे। इस समय तक कमरे में गोधूली का वातावरण छा चुका था। सुबह को छोड़ कर वहां कभी भी सूर्य का तेज़ प्रकाश नहीं आता था। वेरा दरवाजे में ही रुक गई और उसने अपना कोट उतारे बिना ही कमरे में चारों ओर बड़े आश्चर्य से देखा मानो उसे यहां हर चीज़ बिल्कुल नई लग रही हो। ऐसे कमरे में जीवन बहुत अच्छा और सुखद हो सकता है। बस केवल इतना भर करने की आवश्यकता थी कि तुरन्त मेजपोश बदल दिया जाये। थोड़ी बहुत धूल झाड़ दी जाये और दीवार पर तस्वीरों को दूसरे ढंग से टांग दिया जाए। इन तस्वीरों में एक थी—एक

चांदनी रात के समय पेत्रो पावलोवस्क किले की तस्वीर । दूसरी तस्वीर क्रीमिया के काले साइप्रस वृक्षों की थी ।

लेकिन पहले उसने अपना कोट उतारा। एक एप्रन बांधा और रसोई में चली गई । उसे कुछ अस्पष्ट-सी याद थी कि उसे अपना काम रसोई से शुरू करना है । ओह हां', उसे प्राइमस स्टोव जलाना होगा और अपने लिए कुछ खाना पकाना होगा ।

लेकिन उसकी पड़ोसी के बेटे ने, जो लम्बा-तड़ंगा लड़का था और जिसने पढ़ाई छोड़ दी थी, रसोई घर में अपनी मोटर साइकिल इस तरह अड़ा रखी थी मानो कोई रोक लगा दी गई हो । उसने यहां इस मोटर साइकिल के पुरजे-पुरजे अलग कर रखे थे । पुरजों को खोल-खोल कर रसोई के फर्श पर रखते हुए वह सीटी बजाता जा रहा था और इन पुरजों पर तेल लगा रहा था । इस कमरे को छिपते हुए सूर्य का लाभ मिल रहा था और अभी भी वहां पर्याप्त रोशनी थी । मोटर साइकिल की रुकावट के बावजूद अब वहां थोड़ी-सी जगह बची थी, जिससे वह किसी प्रकार निकल कर अपनी मेज पर जा सकती थी । लेकिन अचानक वेरा ने अनुभव किया कि उसे रसोई के भीतर की चीजों की चिन्ता करने की जरूरत नहीं । वह अपने कमरे में अकेले रहना चाहती थी ।

वह भूखी भी नहीं थी । उसे जरा भी भूख नहीं थी । तो वह फिर अपने कमरे में वापस लौट गई और बड़े संतोष से कमरे को भीतर से बन्द कर लिया । आज फिर इस कमरे से बाहर जाने की कोई जरूरत नहीं थी । एक डिब्बे में कुछ चाकलेट रखी थीं । वह चाकलेट खा सकती थी । वह अपनी दराजों वाली मेज के सामने बैठ गई । यह मेज उसे अपनी मां से मिली थी और उसने उस दराज को खींच कर बाहर निकाला जिसमें उसके और मेजपोश रखे थे ।

लेकिन नहीं पहले धूल झाड़नी चाहिए ।

और यह करने से पहले उसे कुछ सादे कपड़े पहन लेने चाहिएं ।

वेरा को प्रत्येक नई गतिविधि में आनन्द आ रहा था । ऐसा लग रहा था कि किसी नृत्य के बीच लय को बदल दिया गया हो । प्रत्येक नया काम नई बात उसे आनन्द दे रही थी, क्योंकि स्मृति का सम्बन्ध इन्हीं बातों से था ।

या शायद उसे किले और साइप्रस वृक्षों के चित्र फिर से टांगने चाहिएं । इसका अर्थ हथौड़ी और कुछ कीलों की आवश्यकता होगी और किसी पुरुष का काम करने से अधिक असुखद बात दूसरी नहीं है । ये तस्वीरें जैसी टंगी हैं, कुछ समय वैसी ही टंगी रहने दो ।

तो उसने झाड़न फटकारा और पूरे कमरे में धूल झाड़ती हुई घूमने लगी और इसके साथ ही वह किसी गीत की धुन भी गुनगुनाती जा रही थी ।

अचानक उसकी नजर एक रंगीन पोस्टकार्ड पर पड़ी, जो उसे एक दिन

पहले मिला था। यह पोस्ट कार्ड इत्र की एक चौड़ी शीशी के सहारे खड़ा था। इस पोस्टकार्ड पर लाल गुलाबों, हरे रिबनों और नीले रंग में आठ का अंक चित्रित था। पिछली ओर टाइपराइटर से बधाई संदेश लिखा था। वह जिस मजदूर संघ की सदस्या थी, उसकी समिति ने अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री दिवस[1] के अवसर पर अपनी शुभ कामनाएं भेजी थीं।

एकांकी व्यक्ति के लिए राष्ट्रीय छुट्टियों को गुजारना बड़ा मुश्किल होता है और स्त्रियों की छुट्टी—उन एकांकी स्त्रियों की छुट्टी जिनकी उम्र तेजी से बढ़ रही हो प्रायः असह्य हो जाती है। वे लोग विधवा हों अथवा अविवाहित शराब पीने, गीत गाने और यह नाटक रचने के लिए एक जगह एकत्र होती हैं कि वे कितनी प्रसन्न हैं, कितनी सुखी हैं। कल रात ऐसी ही औरतों की एक भीड़ बाहर अहाते में एक ऐसा ही आयोजन मनाने के लिए एकत्र थी। इन लोगों में एक पति भी था। और जब औरतें नशे में धुत्त हो गईं, तो उसका चुम्बन लेने के लिए पंक्तिबद्ध खड़ी हो गईं।

उसके मजदूर संघ की समिति, उसके काम में सफलता और निजी जीवन में सुख की कामनाएं कर रही थी और उनका मजाक का कोई इरादा नहीं था।

कैसा निजी जीवन?

उसने पोस्टकार्ड को चार टुकड़ों में फाड़ डाला और रद्दी कागज़ों की टोकरी में फेंक दिया।

वह धूल झाड़ती रही—पहले इत्र की कुछ शीशियां, फिर कांच की एक छोटी-सी अलमारी, जिस पर कीमिया के विभिन्न दृश्य चित्रित थे, फिर रेडियो के बराबर रखे ग्रामोफोन रिकार्डों का डिब्बा, फिर बिजली से चलने वाला रिकार्ड प्लेयर, जो तीखे किनारों वाले प्लास्टिक के डिब्बे में रखा था।

अब वह अपने पास का जो चाहे रिकार्ड सुन सकती थी। अब ये रिकार्ड पीड़ा नहीं दे रहे थे। वह एक असह्य धुन को भी बर्दाश्त कर सकती थी: "तो अब मैं अकेली हूं पहले की तरह अकेली···" लेकिन उसे दूसरे ही रिकार्ड की तलाश थी। उसने रेकार्ड रखा, रेकार्ड प्लेयर का बटन दबाया और उस गहरी हत्थेदार कुर्सी पर बैठ गई, जो उसे अपनी मां से मिली थी और अपनी मोजेदार टांगों को नीचे सिकोड़ लिया। उसने झाड़न को अभी भी अपने एक हाथ में थाम रखा था। वह उसके हाथ से लटकता हुआ फर्श छू रहा था।

कमरे में प्रकाश धूमिल हो चुका था। रेडियो का हरा डायल स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

यह दि स्लीपिंग ब्यूटी से लिया गया था। पहले एडाजियो बजा और

---

१. ८ मार्च को सोवियत संघ में अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री दिवस मनाया जाता है।

इसके बाद 'परियों का प्रवेश' हुआ।

वेरा इसे सुनती रही, लेकिन केवल अपने लिए नहीं। वह यह कल्पना करने का प्रयास कर रही थी कि यह एडाजियो उस अभिशप्त व्यक्ति को कैसा लगा होगा, जिसने कभी भी यह नहीं जाना था कि मानवीय सुख क्या है और जो इस धुन को गीतिनाट्यशाला की खिड़की के बाहर खड़ी से, वर्षा के पानी में शराबोर अपने रोग की पीड़ा के कारण पूरी तरह अलग-थलग रहकर इसे सुन रहा था।

उसने इस रिकार्ड को एक बार फिर बजाने के लिए रख दिया।

और तीसरी बार भी उसे बजाया।

उसने बातचीत शुरू कर दी, पर ज़ोर से नहीं। वह अपनी कल्पना में उससे बातें कर रही थी, मानो वह वहीं उसके पास बैठा हो। उस गोल मेज़ के उस पार कमरे के हल्के हरे प्रकाश में। वह वे सब बातें कह रही थी, जो उसे कहनी चाहिएं थीं और वह उसकी बातें भी सुन रही थी। वह उसकी प्रत्येक बात सुनने के लिए पूरी तरह सतर्क थी। उसे देखना बड़ा कठिन था। वह जिस प्रकार तुड़मुड़ रहा था और अपनी बेचैनी व्यक्त कर रहा था, वह बड़ा विचित्र था पर उसे लग रहा था कि वह इन बातों की अभ्यस्त है।

वह उस बातचीत को समाप्त कर रही थी, जो आज हुई थी उसे वे बातें बता रही थी जो नहीं कही जा सकती थीं, क्योंकि उनका रिश्ता ही ऐसा था। लेकिन अब ये बातें कही जा सकती थीं। वह पुरुषों और स्त्रियों के बारे में अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन कर रही थी। हैमिंग्वे के महामानव ऐसे प्राणी थे, जो स्वयं को मानवीय स्तर तक ऊंचा उठाने में भी सफल नहीं हुए थे। हेमिंग्वे हल्का तैराक था। (निश्चय ही ओलेग उसे यह करारा जवाब देगा कि उसने कभी भी हेमिंग्वे को नहीं पढ़ा। वह शायद इस बात को शेखी बघारते हुए भी कहे : ऐसी कोई चीज़ सेना में नहीं पढ़ी जा सकती, शिविर में भी नहीं)। लेकिन यह एक ऐसी बात नहीं थी, जो एक स्त्री पुरुष से चाहती है। उसे देखभाल, कोमलता और सुरक्षा की भावना की आवश्यकता होती है, उसके साथ होते समय उसे अपने भीतर इस भावना की आवश्यकता होती है कि वह उसकी ढाल है उसका साया है। (और यह ओलेग था, अधिकारों से वंचित पुरुष, जिसे एक नागरिक के रूप में हर महत्वपूर्ण बात से वंचित कर दिया गया था और जो किसी कारण से वेरा को संरक्षण की, सुरक्षा की यह भावना प्रदान करता था।)

स्त्रियों को कैसा होना चाहिए इस सम्बन्ध में विचार और भी उलझे हुए थे। लोगों का विचार था कि सर्वाधिक स्त्रियोचित कारमेन थी। इनका विचार था कि सर्वाधिक स्त्रियोचित गुणों से सम्पन्न वह स्त्री होती है, जो सुख की तलाश में सबसे अधिक सक्रिय होती है, लेकिन इस किस्म की औरतें नकली

औरतें होती हैं, इस किस्म की औरत औरत के कपड़ों में एक आदमी होती है।

यह एक ऐसा मुद्दा था जिसके बारे में और अधिक समझाने की, और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। ऐसा लग रहा था कि वह अचम्भे में आ गया था, वह इस विचार का सामना करने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन अब वह इसके बारे में सोच रहा था।

इस बीच उसने फिर वही रेकार्ड रेकार्डप्लेयर पर रख दिया।

अब तक काफी अन्धेरा हो चुका था और वह धूल झाड़ने का काम भूल चुकी थी। रेडियो के डायल की हरी रोशनी और गहरी होती जा रही थी और इसका प्रकाश पूरे कमरे में निरन्तर अधिकाधिक फैलता जा रहा था।

उसकी इच्छा बत्ती जलाने की नहीं थी। संसार में किसी भी वस्तु की नहीं थी। बस वह एक नजर देखना भर चाहती थी।

अर्द्ध-अंधकार में उसका हाथ विश्वास के साथ आगे बढ़ा और दीवार पर टंगे हुए एक चित्र के पास पहुंच गया। उसने बड़े प्यार से इस चित्र को उठा लिया और रेडियो के डायल के समीप ले गई। यदि रेडियो के डायल का हरा, तारों जैसा प्रकाश न भी होता, यदि यह प्रकाश बुझ भी जाता, फिर भी वेगा इस चित्र की एक-एक रेखा देख सकती थी : एक युवक का स्वच्छ मुख, वे निर्मल, भेदय, अनुभवहीन आंखें; साफ सफेद कमीज से लटकती हुई टाई, उसके जीवन की पहली टाई। यह उसका पहला सूट भी था। फिर भी उसने उसके कालर को बर्बाद करने के प्रति हिचकिचाहट नहीं दिखाई थी, क्योंकि इसके ऊपर एक कठोर-सा छोटा बिल्ला लगा था। एक सफेद दायरे के भीतर किसी आदमी की काली आकृति दिखाई पड़ रही थी। मढ़ा हुआ फोटो छह सेंटीमीटर चौड़ा और दस सेंटीमीटर लम्बा था, अतः बिल्ला बहुत छोटा लग रहा था। लेकिन दिन के समय कोई भी व्यक्ति यह देख सकता था कि (उसकी स्मृति इतनी स्पष्ट थी कि वह उसे इस समय भी देख सकती थी) यह लेनिन की आकृति है।

लड़का मुस्करा रहा था। लगता था कि कह रहा हो, "मुझे केवल इसी बिल्ले की जरूरत है।"

यह वही लड़का था जिसने उसे 'वेगा' नाम दिया था।

यह लता जीवन में एक बार फूलती है और इसके बाद मुरझा जाती है।

इस प्रकार वेगा गैंगार्त ने प्रेम किया था। वह बहुत कम उम्र थी, वह स्कूल में ही पढ़ती थी।

लेकिन वह युद्ध में मारा गया।

इसके बाद युद्ध ने चाहे कुछ भी रूप धारण क्यों न किया हो—न्यायपूर्ण, वीरतापूर्ण, देशभक्तिपूर्ण अथवा पवित्रतापूर्ण—वेरा गैंगार्त के लिए, यह सदा

के लिए अन्तिम युद्ध था, जिसमें स्वयं वह और वह पुरुष भी, जिससे वह प्यार करती थी मारे गये थे।

जब यह हुआ था उसके मन में स्वयं भी युद्ध में मारे जाने की कितनी तीव्र लालसा जगी थी। उसने तुरन्त मेडिकल कालेज छोड़ दिया था। वह मोर्चे पर जाना चाहती थी, लेकिन वे उसे मोर्चे पर ले जाने को तैयार नहीं थे, क्योंकि वह जर्मन जाति की थी।

युद्ध की पहली गर्मियों में वे लोग दो या तीन महीने तक साथ-साथ रहे थे। यह स्पष्ट था कि वह जल्दी ही सेना में चला जायेगा। आज, एक पीढ़ी बाद, यह स्पष्टीकरण देना असम्भव होगा कि इन लोगों ने विवाह क्यों नहीं कर लिया था। ये लोग किस प्रकार ये महीने बर्बाद कर सकते थे, चाहे ये विवाहित भी नहीं थे। ये महीने ऐसे थे, जो उन्हें अन्तिम बार मिल रहे थे। एक ऐसे समय में निश्चय ही कोई बाधा नहीं हो सकती थी, जब प्रत्येक चीज चटख रही थी, प्रत्येक ध्वस्त होकर गिर रही थी।

लेकिन यह हुआ।

यह एक ऐसी चीज थी, जिसका औचित्य वह किसी के भी समक्ष सिद्ध नहीं कर सकती थी। स्वयं अपने समक्ष भी नहीं।

"वेगा! मेरी वेगा!" उसने मोर्चे से उसे पुकारा था। "मैं ऐसी हालत में नहीं मर सकता कि तुम्हें अपना बनाये बिना ही छोड़ जाऊं। यदि मुझे केवल तीन दिन की भी छुट्टी मिल पाती अथवा घायल होने पर अस्पताल में ही तीन दिन का वक्त मिल जाता, तो हम विवाह कर सकते थे। क्यों नहीं क्या? क्यों नहीं क्या?"

"ऐसे विचारों से अपना दिल मत तोड़ो। मैं तुम्हारे अलावा अन्य किसी की नहीं हो सकती। मैं तुम्हारी हूं।"

इसी प्रकार उसने लिखा था, विश्वास के साथ। लेकिन उस समय वह जीवित था।

वह घायल नहीं हुआ। वह किसी अस्पताल में भरती नहीं हो सका और न ही उसे छुट्टी मिली। बस वह युद्ध में मारा गया।

वह मर चुका था। लेकिन उसका तारा जगमगा रहा था, वह निरन्तर प्रज्ज्वलित था।

लेकिन इसका प्रकाश व्यर्थ जा रहा था।

यह एक ऐसा तारा नहीं था, जो समाप्त हो जाने के बाद भी प्रकाश देता रहता है। यह एक ऐसा तारा था, जो जगमगाता है, जो अपने समस्त प्रकाश सहित जगमगाता है। लेकिन कोई भी उस प्रकाश को नहीं देखता, किसी को भी उस प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती।

वे उसे भरती करने को तैयार नहीं थे, उसे भी युद्ध में मारे जाने का

अवसर देने को तैयार नहीं थे। उसके सामने केवल एक ही विकल्प था, जीवित रहने का, मैडिकल कालेज में वापस लौट जाने का। वह वहां अपनी टोली की मानीटर बन गई।[1] वह फसल की कटाई के लिए, स्वच्छता अभियान के लिए अथवा रविवार को काम के लिए सबसे पहले अपनी सेवायें अर्पित करती। इसके अलावा करने को था भी क्या?

उसने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। डा० ओरेश चेनकोव, जिसके अधीन उसने काम किया था, उसके काम से बहुत संतुष्ट थे। डा० ओरेश चेनकोव ने ही डा० दोन्तसोवा से उसे लेने की सिफारिश की थी। अब उसके लिए केवल एक ही चीज का महत्व था—उसके रोगी और उनकी चिकित्सा। बस, इसी में उसकी मुक्ति निहित थी।

पर यदि आप फ्रीडलैंड के स्तर पर सोचें तो हर चीज अर्थहीन, पागलपन से भरी, और पूरी तरह से एकरस हो जाती है। किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश के स्थान पर जो जीवित हो एक मृत व्यक्ति को याद रखना कैसा विचित्र है।

पर यह सम्भव नहीं था। आखिरकार ऊतकों के नियम, हारमोनो के नियम और युवावस्था के नियम निर्विवाद थे।

यह सम्भव नहीं था। लेकिन वेगा यह जानती थी कि इनमें से कोई भी नियम उस पर लागू नहीं होता। जहां तक उसका सम्बन्ध था ये नियम समाप्त हो चुके थे।

यह बात नहीं थी कि वह अपने वचन के कारण स्वयं को सदा सर्वदा के लिए प्रतिबद्ध अनुभव करती थी, "मैं सदा तुम्हारी ही रहूंगी।" यह एक ऐसी बात थी कि एक ऐसा व्यक्ति जिसके आप बहुत अधिक समीप रहे हों कभी भी पूरी तरह नहीं मरता। वह आज भी मौजूद था, थोड़ा देख सकता था, थोड़ा सुन सकता था। वस्तुतः वह मौजूद था, उसका अस्तित्व कायम था। असहाय और मूक रहकर वह आपको अपने साथ विश्वासघात करते हुए देखेगा।

तो कोशिकाओं के विकास, प्रतिक्रिया अथवा रसस्राव के नियमों का क्या महत्व है? यदि ऐसा कोई दूसरा आदमी नहीं है तो इनका क्या महत्व है क्या औचित्य है? और ऐसा दूसरा आदमी नहीं है। तो इसका कोशिकाओं से क्या सम्बन्ध है अथवा कोशिकाओं की प्रतिक्रिया से क्या सम्बन्ध है?

---

१. सोवियत कालेजों में विद्यार्थियों को अध्ययन और सामाजिक गतिविधियों के लिए टोलियों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक टोली का मानीटर होता है। मानीटर के कार्यों में यह भा शामिल होता है कि वह "सेवा कार्यों" के लिए अपनी टोली के सदस्यों को तैयार करे। जैसे फसल की कटाई में सामूहिक खेतों के किसानों को मदद देना अथवा इमारतों आदि के निर्माण में लगे मजदूरों को रविवार के दिन अतिरिक्त काम में मदद पहुंचाना। (अनुवादक की टिप्पणी)

बस बात इतनी थी कि हम वर्षों के गुजरने के साथ-साथ सुस्त होते जाते हैं। हम थक जाते हैं, हम दुख अथवा वफादारी की समस्त सच्ची प्रतिभा से वंचित हो जाते हैं। हम समय के समक्ष घुटने टेक देते हैं। फिर भी हम हर रोज खाना निगलते हैं और अपनी अंगुलियां चाटते हैं। इस मामले में हम वही रहते हैं, बदलते नहीं। यदि हमें दो दिन तक भोजन नहीं मिलता तो हमारा मस्तिष्क विकृत हो जाता है, हम दीवार के ऊपर चढ़ना शुरू कर देते हैं।

हमने बहुत अच्छी उन्नति की है, हम लोगों ने, हम मनुष्यों ने। वेगा बदली नहीं थी, लेकिन वह कुचल गई थी। उसकी मां की भी मृत्यु हो गई थी। वह अपनी मां के साथ रहा करती थी। बस वे दोनों। उसकी मां की मृत्यु हो गई थी क्योंकि वह भी कुचल गई थी। उसका पुत्र, वेगा का बड़ा भाई, इंजीनियर था। सन् १९४० के बाद के वर्षों में उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। कुछ वर्ष तक उसकी चिट्ठियां आती रहीं। कुछ वर्ष तक ये लोग उसे बुरयात-मंगोलिया में किसी स्थान पर पार्सल भेजते रहे। फिर एक दिन डाकघर से उन्हें एक विचित्र सूचना मिली और उन्होंने मां को उसका पार्सल लौटा दिया। इस पार्सल पर मोहरों की भरमार थी और लिखावट को काट दिया गया था। वह इस पार्सल को एक ताबूत की तरह लेकर घर वापस लौट आई। जब वह पैदा हुआ था तो इस पार्सल के बक्स में अच्छी तरह आ सकता था।

इसने वेरा की मां को कुचल दिया और इतना ही नहीं इसके कुछ ही समय बाद उसकी बहू ने दूसरी शादी कर ली। यह बात मां की समझ के बाहर थी। वह वेरा को समझती थी। वेरा की बात उसकी समझ में आती थी।

तो वेरा बिलकुल अकेली रह रही थी।

वैसे एकदम अकेला नहीं कहा जा सकता क्योंकि वही एकमात्र ऐसी स्त्री नहीं थी। वह करोड़ों के बीच एकाकी थी। देश में एकाकी स्त्रियों की संख्या बहुत बड़ी थी। इस स्थिति में उन औरतों की गिनती करने को मन होता है जिन्हें आप जानते हों। संख्या किन की बड़ी थी वे जो अकेली हैं अथवा वे जो विवाहित हैं? ये सब एकाकी औरतें वेगा की ही उम्र की थीं। इन सबकी पैदायश उसी दशक में हुई थी। ये औरतें प्रायः उसी उम्र की थीं, जिस उम्र के आदमी युद्ध में मारे गये थे।

युद्ध पुरुषों के लिए मेहरबान सिद्ध हुआ क्योंकि वह उन्हें अपने साथ ले गया। लेकिन वह औरतों को अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक कष्ट भोगने के लिए छोड़ गया।

जो कंवारे युद्ध के ध्वंसावशेषों से स्वयं को बचाकर किसी प्रकार ला सके उन्होंने अपनी हमउम्र औरतों को अपनी पत्नी के रूप में नहीं चुना बल्कि उन्होंने कहीं कम उम्र लड़कियों को चुना। जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो इससे भी कुछ वर्ष छोटी थीं वे पूरी एक पीढ़ी छोटी थीं वे बच्चियां ही

थीं। युद्ध उनके ऊपर से एक टैंक की तरह नहीं गुजरा था।

तो ये औरतें मौजूद थीं। लाखों औरतें। किसी ने भी इनकी सेना नहीं बनाई। ये संसार में कुछ भी उपलब्ध करने के लिए नहीं आई थीं। ये वह बंजर भूमि थीं जिसे इतिहास पीछे छोड़ गया हो।

इनमें से जो स्त्रियां जीवन को उसी रूप में स्वीकार करने को तैयार थीं जिस रूप में वह उनके सामने था। वे समाप्त नहीं हुईं।

सामान्य शांतिपूर्ण जीवन के लम्बे वर्ष गुजरते गये। वेरा एक ऐसे व्यक्ति की तरह रहती और काम करती रही जिसने एक स्थायी मुखौटा पहन रखा हो ऐसा लगता था मानो उसका सिर किसी शत्रुतापूर्ण रबर से कस कर मढ़ दिया गया हो। यह मुखौटा उसे पागल किये डाल रहा था। इसने उसे कमजोर बना दिया था। अतः उसने इसे नोंच कर फैंक दिया।

इसके बाद उसे लगा कि उसका जीवन अधिक मानवीय हो गया है। उसने स्वयं को कुछ अधिक हेलमेल के लिए तैयार किया। वह सावधानी से अच्छे वस्त्र पहनने लगी और लोगों से मुलाकात करने से भी बचना बन्द कर दिया।

वफादार रहने से बहुत संतोष मिलता है संभवतः यह सबसे बड़ा संतोष है। चाहे कोई भी आपकी वफादारी के बारे में न जानता हो, चाहे कोई भी इसे महत्व न देता हो।

काश यह कुछ प्रभाव उत्पन्न कर सकता लेकिन यदि इसका कोई प्रभाव नहीं होता तो भी क्या, यदि किसी को भी इसकी आवश्यकता नहीं है तो भी क्या? मुखौटे की आंखें चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों आपको उनमें से बहुत कम दिखाई पड़ता है और जो दिखाई भी पड़ता है वह बहुत साफ नहीं। अब मुखौटे के चश्मे के बिना वह और अधिक स्पष्ट रूप से देख सकेगी।

लेकिन उसे अधिक स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ रहा था। वह अनुभवहीन थी और उसने स्वयं को बहुत बुरी तरह से चोट पहुंचाई थी। वह सतर्क नहीं रह सकी थी और उसने गलत कदम उठा लिए थे कम समय की अनुपयुक्त घनिष्ठता उसके जीवन में कोई प्रकाश या राहत नहीं ला सकी। इससे वह अपवित्र और अपमानित हुई। इसने उसकी पूर्णता को ध्वस्त कर दिया और उसके सामंजस्य को नष्ट कर डाला।

अब तक भुला पाना असम्भव था। पूरी तरह से मिटा देने की तो बात ही नहीं उठती थी।

जीवन जैसा है उसे उसी रूप में लिया जाए यह दृष्टिकोण उसके स्वभाव के अनुरूप नहीं था। जो व्यक्ति जितना अधिक भंगुर होता है उसे उतने ही अधिक दर्जनों और सैंकड़ों संयोगों की आवश्यकता होती है ताकि वह किसी अन्य के समीप आ सके। प्रत्येक नई घटना इस समीपता को बहुत

मामूली-सा ही बढ़ा सकती है। जबकि एक मात्र गलती एक क्षरण में सब कुछ नष्ट कर सकती है। जहाँ तक वेगा का सम्बन्ध था यह गलती सदा बहुत आरम्भ में ही सामने आ जाती थी, बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ने लगती थी। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था जो उसे यह सलाह दे सके कि उसे क्या करना चाहिए अथवा किस प्रकार रहना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति का अपने जीवन में अपना अलग रास्ता होता है।

उसे यह बार-बार सलाह दी गई कि किसी बच्चे को गोद ले ले। उस ने इस बारे में विस्तार से अनेक स्त्रियों से बातचीत की। उन स्त्रियों ने उसे राजी करने का प्रयास किया। यह विचार उसे पसन्द आने लगा और वह बाल गृहों के चक्कर भी लगाने लगी।

लेकिन अन्त में उसने यह विचार त्याग दिया। वह इस प्रकार किसी बच्चे से प्यार करना शुरू नहीं कर सकती। दुख के कारण अथवा इस वजह से कि उसने बच्चे से प्यार करने का निश्चय किया है प्यार करना शुरू नहीं कर सकती और इससे भी बड़ा खतरा यह था कि वह उसे प्यार करना बन्द कर दे और यह भी खतरा था कि यह बच्चा बड़ा होकर बिल्कुल अजनबी लगने लगे।

काश उसकी एक पुत्री होती, उसकी अपनी पुत्री। (एक पुत्री क्योंकि वह उसे ठीक अपनी ही तरह पाल पोस कर बड़ा कर सकती थी। वह एक लड़के को इस तरह पाल पोस नहीं सकती)।

वह स्वयं को इस विचार से आश्वस्त नहीं कर सकी कि एक बार फिर उस लम्बी कीचड़ भरी सड़क पर एक पूरी तरह से अजनबी व्यक्ति के साथ रास्ता तय करे।

वह आधी रात तक उस हत्थेदार कुर्सी पर बैठी रही। उसने उनमें से एक भी काम नहीं किया जिन्हें शाम से ही करने की बात थी। उसने रोशनी भी नहीं जलाई। रेडियो के डायल से उसे पर्याप्त रोशनी मिल रही थी। हरी रोशनी और डायल पर अंकित काले अंकों को देखते हुए उसका विचार प्रवाह अबाध रूप से चल रहा था।

उसने बहुत से रेकार्ड सुने और सर्वाधिक दुखपूर्ण रेकार्डों से भी वह विचलित नहीं हुई। उसने सेनाओं के कूच करने की धुनें भी सुनीं। ये धुनें ऐसी थीं जो उसके सामने अंधकार में विजय को उद्घाटित कर रही थीं जब कि वह एक विजेता की तरह पुरानी हत्थेदार कुर्सी में बैठी हुई थी, जिसकी ऊंची पीठ सिंहासन की पीठ की तरह थी और उसकी कोमल टांगें उसके नीचे मुड़ी हुई थीं।

वह १४ रेगिस्तान पार कर चुकी थी। लेकिन अब घर वापस आ गई थी। उसने पागलपन के १४ वर्ष बिताये थे और वह इस अवधि में सदा सही

रही थी।

यह वह दिन था जब उसकी वफादारी के वर्षों ने एक नया, अन्तिम अर्थ ग्रहण किया था।

वफादारी के समीप की प्राय: वफादारी की स्थिति। कोई इसे वफादारी समझ सकता है—आखिर महत्व तो वफादारी का ही है न।

आज ही वह इस विचार से परिचित हुई कि जो मर चुका है वह एक लड़का था। वह उसकी आज की उम्र का नहीं था। वह पुरुष नहीं था। उसमें वह असंयमित भारीपन नहीं था जो पुरुषों में होता है, जो एक स्त्री का एकमात्र आश्रय होता है। उसने न तो समस्त युद्ध ही देखा था और न ही इसका अन्त। अथवा बाद के अनेक कठिन वर्ष। वह स्वच्छ और बेध्य आंखों वाला लड़का ही बना रहा

वह बिस्तर पर लेट गई और यद्यपि उसे तुरन्त नींद नहीं आई लेकिन उसे इस बात की चिन्ता नहीं थी कि आज रात उसे पर्याप्त नींद नहीं मिल पायेगी। नींद आ जाने के बाद वह अनेक बार जगी और उसने बहुत से सपने देखे। शायद एक रात के लिये आवश्यकता से अधिक सपने। इनमें कुछ सपने मामूली-सा परेशान करने वाले थे। लेकिन कुछ दूसरे सपनों को उसने अगले दिन सुबह के लिये अपने मन में समेट कर रखने की कोशिश की।

वह सुबह उठी और मुस्कराई।

बस में, भीड़ में वह कुचली, उसे धक्के लगे और परेशानी का सामना करना पड़ा। कुछ लोगों ने उसके पांव पर पांव रख दिये। लेकिन उसने बिना किसी नाराजी के इन सब बातों को बर्दाश्त किया।

उसने अपना सफेद कोट पहना। अस्पताल में पांच मिनट की प्रतिदिन की बैठक में हिस्सा लेने को जाते हुए वह निचले बरामदे में एक शक्तिशाली, मित्रतापूर्ण, भद्दी और गुरिल्ला जैसी आकृति को अपनी ओर आती हुई देख कर खुश हुई। वह लेव लियोनिदोविच था। उसने उसे मास्को से वापस लौटने के बाद नहीं देखा था। उसकी लम्बी-लम्बी बाहें उसके लिये बड़ी भारी दिखाई पड़ रही थीं। ये लटकी हुई लगती थीं। ऐसा लगता था मानो वह उसके साथ अपने कन्धों को भी नीचे घसीटे लिये जा रहे हैं। ऐसा लगता था कि इन बांहों में कहीं न कहीं कोई खामी है। पर वस्तुत: उसके शरीर का यही सर्वाधिक खूबसूरत हिस्सा थीं। उसका सिर अलग-अलग स्तरों पर बड़ी स्पष्ट आकृतियों से निर्मित था। इसका सबसे ऊपरी हिस्सा दृढ़ था और इसके ऊपर एक अजीब-सी सफेद टोपी रखी थी जैसी पायलट लोग पहनते हैं। सदा की तरह बड़ी लापरवाही से इस टोपी को रख दिया गया था। यह उसके अपने दो पिछले सुअर जैसे कानों और नीचे की ओर दबे हुए तथा मुसे हुए ऊपरी हिस्से के कारण निरर्थक दिखाई पड़ रही थी। सफेद तंग कोट के नीचे उसकी छाती,

एक ऐसे टैंक के अगले हिस्से की तरह दिखाई पड़ती थी जिसको बर्फीले इलाके में छिपाने के लिये सफेद रंग दिया गया हो। इस कोट में आगे की ओर बटन नहीं थे। उसकी आंखें सदा की तरह कुछ मिची हुई थीं और वह बहुत कठोर और आतंककारी मुद्रा में चला आ रहा था। लेकिन वेरा जानती थी कि उसे अपनी मुखाकृति में मामूली-सा ही परिवर्तन करना होगा और उसकी यह आतंककारी मुद्रा मुस्कराहट में बदल जायेगी।

और ठीक यही उसने किया भी जब वह और वेरा विपरीत दिशाओं से एक साथ बरामदे से बाहर निकले और सीढ़ियों के नीचे एक दूसरे से मिले। "मुझे खुशी है कि तुम लौट आये हो", "सचमुच हम लोगों को तुम्हारी कमी अखरती रही।"

उसकी मुस्कराहट और बढ़ गई। उसके झूलते हुए हाथ ने वेरा को कुहनी के पास से थाम लिया और उसे सीढ़ियों की ओर मोड़ दिया। "तुम इतनी प्रसन्न क्यों हो?" उसने पूछा। "मुझे भी खुश बना दो।"

"ओह नहीं, ऐसी कोई-सी बात नहीं है। हां, तुम्हारी यात्रा कैसी रही?"

लेव लियोनिदोविच ने आह भरी। "यह ठीक रही। लेकिन कुछ चिंता भी हुई। मास्को एक चिन्ताजनक स्थान है।"

"तुम मुझे इसके बारे में बाद में और बताना।"

"मैं तुम्हारे लिये कुछ रिकार्ड लाया हूं। तीन।"

"क्या सचमुच? कौन-से रिकार्ड हैं?"

तुम जानती ही हो मुझे सैंट-सीन्स और ऐसे ही लोगों के बारे में ज्यादा भरोसा नहीं है…अब जी०[1] यू० एम० में बहुत देर तक बजने वाले नए रिकार्डों का एक नया विभाग खुला है। मैंने उन्हें तुम्हारी सूची दे दी थी और उन्होंने तीन रिकार्ड मुझे दे दिये। मैं कल उन्हें लेता आऊंगा। वेरूसिया—आज मुकदमा देखने चलेंगे।"

"कौन-सा मुकदमा?"

"क्या तुम नहीं जानतीं? वे एक सर्जन का मुकदमा चला रहे हैं। वह नम्बर ३ अस्पताल का है।"

"एक वास्तविक अदालत में?"

"नहीं यह कामरेडों की अदालत है,[2] फिलहाल। लेकिन जांच पड़ताल

---

१. मास्को का सबसे बड़ा डिपार्टमेंटल स्टोर।

२. इ अदालत में साथी कार्यकर्ता होते हैं, जो किसी व्यक्ति पर समाजी अपराधों के कारण मुकदमा चलाते हैं। इस अदालत के फैसले को कानूनी मान्यता तो नहीं होती मगर अदालत को इतना अधिकार अवश्य होता है कि वह यदि उचित समझे तो मुकदमे को सामान्य अदालत में भेजे जाने की सिफारिश कर सकती है।

एक ऐसे टैंक के अगले हिस्से की तरह दिखाई पड़ती थी जिसको बर्फीले इलाके में छिपाने के लिये सफेद रंग दिया गया हो। इस कोट में आगे की ओर बटन नहीं थे। उसकी आंखें सदा की तरह कुछ मिची हुई थीं और वह बहुत कठोर और आतंककारी मुद्रा में चला आ रहा था। लेकिन वेरा जानती थी कि उसे अपनी मुखाकृति में मामूली-सा ही परिवर्तन करना होगा और उसकी यह आतंककारी मुद्रा मुस्कराहट में बदल जायेगी।

और ठीक यही उसने किया भी जब वह और वेरा विपरीत दिशाओं से एक साथ बरामदे से बाहर निकले और सीढ़ियों के नीचे एक दूसरे से मिले। "मुझे खुशी है कि तुम लौट आये हो", "सचमुच हम लोगों को तुम्हारी कमी अखरती रही।"

उसकी मुस्कराहट और बढ़ गई। उसके झूलते हुए हाथ ने वेरा को कुहनी के पास से थाम लिया और उसे सीढ़ियों की ओर मोड़ दिया। "तुम इतनी प्रसन्न क्यों हो?" उसने पूछा। "मुझे भी खुश बना दो।"

"ओह नहीं, ऐसी कोई-सी बात नहीं है। हां, तुम्हारी यात्रा कैसी रही?"

लेव लियोनिदोविच ने आह भरी। "यह ठीक रही। लेकिन कुछ चिंता भी हुई। मास्को एक चिन्ताजनक स्थान है।"

"तुम मुझे इसके बारे में बाद में और बताना।"

"मैं तुम्हारे लिये कुछ रिकार्ड लाया हूं। तीन।"

"क्या सचमुच? कौन-से रिकार्ड हैं?"

तुम जानती ही हो मुझे सैंट-सीन्स और ऐसे ही लोगों के बारे में ज्यादा भरोसा नहीं है...अब जी०[1] यू० एम० में बहुत देर तक बजने वाले नए रिकार्डों का एक नया विभाग खुला है। मैंने उन्हें तुम्हारी सूची दे दी थी और उन्होंने तीन रिकार्ड मुझे दे दिये। मैं कल उन्हें लेता आऊंगा। वेरूसिया— आज मुकदमा देखने चलेंगे।"

"कौन-सा मुकदमा?"

"क्या तुम नहीं जानतीं? वे एक सर्जन का मुकदमा चला रहे हैं। वह नम्बर ३ अस्पताल का है।"

"एक वास्तविक अदालत में?"

"नहीं यह कामरेडों की अदालत है,[2] फिलहाल। लेकिन जांच पड़ताल

---

१. मास्को का सबसे बड़ा डिपार्टमेंटल स्टोर।

२. इ अदालत में साथी कार्यकर्ता होते हैं, जो किसी व्यक्ति पर समाजी अपराधो के कारण मुकदमा चलाते हैं। इस अदालत के फैसले को कानूनी मान्यता तो नहीं होती मगर अदालत को इतना अधिकार अवश्य होता है कि वह यदि उचित समझो तो मुकदमे को सामान्य अदालत में भेजे जाने की सिफारिश कर सकती है।

में आठ महीने का समय लगा है।"

"उसके ऊपर क्या अभियोग है ?"

नर्स जोय सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी। उसकी रात की ड्यूटी अभी खत्म हुई थी। उसने बड़े जबर्दस्त लहजे से दोनों का अभिवादन किया उसकी सुनहरी पलकें रोशनी में चमक रही थीं।

"आपरेशन के बाद एक बच्चे की मृत्यु हो गई...मैं अपने भीतर मास्को की स्फूर्ति रहते वहां जाना चाहता हूँ। मैं बहुत जबर्दस्त शोर मचाने की सोच रहा हूं। बस यहां एक सप्ताह का समय बिताते ही आप फिर अपने पहले की स्थिति से वापस लौट आते हैं और अपनी दुम टांगों के बीच छिपाकर चलने लगते हैं। क्या तुम भी चलोगी ?"

वेरा के पास उत्तर देने अथवा निर्णय पर पहुंचने का समय नहीं था।

बैठक के कमरे में पहुँचने का समय था। मेज़ पर वही चमकदार नीला कपड़ा बिछा हुआ था। और इसके चारों ओर कपड़े से ढकी कुछ छोटी-छोटी हत्थेदार कुर्सियां रखी थीं।

वेरा लेव के साथ अपने अच्छे सम्बन्धों को बहुत महत्व देती थी। वह और लुदमिला अफानासएवना उसके इतने अधिक समीप थे जितना अन्य कोई भी इस अस्पताल में नहीं था। उनके इस सम्बन्ध की सबसे मूल्यवान बात यह थी कि यह एक ऐसा सम्बन्ध था जैसा कभी भी एक अविवाहित पुरुष और स्त्री के बीच नहीं हुआ होगा। लेव ने उसकी ओर कभी उन नजरों से नहीं देखा जिनसे पुरुष देखते हैं। उसने कोई संकेत भी कभी नहीं दिया, कभी भी सीमा को नहीं लांघा। कभी कोई दावा नहीं जताया और इसी प्रकार वेरा ने भी कभी यह नहीं किया। उनकी निर्दोष तनावरहित मित्रता थी। वे एक विषय पर चर्चा से सदा बचते थे। उन्होंने कभी भी इस विषय का उल्लेख नहीं किया, कभी भी उस पर बात नहीं की। प्रेम, विवाह और ऐसी ही कोई बात। वे इस प्रकार व्यवहार करते थे मानो इन चीजों का अस्तित्व ही नहीं है। सम्भवत: लेव लियोनिदोविच यह अनुमान लगा चुका था कि वेरा को भी ऐसे ही सम्बन्ध की आवश्यकता है। लेव ने एक बार विवाह किया था, फिर वह विवाहित नहीं रहा। इसके बाद उसने किसी से 'मित्रता' की। अस्पताल की स्त्रियां जिसका अर्थ पूरा अस्पताल ही था उसके बारे में बातचीत करना बहुत पसन्द करती थीं। फिलहाल उन्हें यह सन्देह था कि आपरेशन कक्ष की एक नर्स से उसका मामला चल रहा है। एक युवती डाक्टर, एंजली ने बड़े जबर्दस्त तरीके से यह घोषणा की थी कि यही सच्चाई है। पर कुछ का सन्देह था कि वह स्वयं लेव के पीछे पड़ी है।

लुदमिला अफानासएवना ने पांच मिनट की बैठक का समय एक कागज के टुकड़े पर कुछ तीखी आकृतियां बनाने में गुजारा। और इस कागज को

अपने पैन से फाड़ने में सफल हुई। दूसरी ओर वेरा पहले से कहीं अधिक शान्ति से बैठी थी उसे अपने भीतर एक अपरिचित दृढ़ता का अनुभव हो रहा था।

बैठक समाप्त हुई और वेरा ने स्त्रियों के बड़े वार्ड से अपना राउंड शुरू किया। इस वार्ड में उसकी बहुत-सी रोगिणियां थीं और यहां उसे सदा काफी समय लगता था। वह प्रत्येक रोगणी के बिस्तर पर बैठती, उसकी परीक्षा करती और कोमल स्वर में बातचीत करती। अपने राउंड के समय वह वार्ड में पूरा मौन रखने पर जोर नहीं देती थी क्योंकि इतने लम्बे समय तक औरतों का बोलने से रोके रख पाना असम्भव था। (औरतों के वार्ड में पुरुषों के वार्ड से कहीं अधिक चतुरता और व्यावहारिकता बरतने की ज़रूरत होती थी।) यहां डाक्टर के रूप में उसके दर्जे और विशिष्टता को उस प्रकार बिना किसी शर्त के स्वीकार नहीं किया जाता था। उसे सदा से अधिक बेहतर मनःस्थिति में वहां जाना पड़ता था और उसे रोगियों को यह आश्वासन देते समय और अधिक प्रसन्नता दिखानी पड़ती थी कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। वह मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के सिद्धान्तों को लागू करने का प्रयास करती और वह यह अनुभव करती कि कुछ स्त्रियां सीधे बड़ी ढिठाई से उसकी ओर घूर रही हैं अथवा कनखियों से ईर्ष्यापूर्वक उसके ऊपर नजर डाल रही हैं। "तुम्हें क्या परवाह है?" वह नजरें यह कहती हुई लगतीं। "तुम तो बीमार नहीं हो। ये बातें तुम्हारी समझ में कैसे आ सकती हैं?" इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर वह इन रोगग्रस्त स्त्रियों को जो भय के कारण पूरी तरह अस्तव्यस्त हो चुकी थीं, यह सलाह देती कि उन्हें अपने बनाव सिंगार की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। वे उन्हें अपने बाल बनाने और मेकअप करने के लिये आग्रह करती। लेकिन यदि वह स्वयं अपने मेकअप पर अधिक समय खर्च करती होती तो ये औरतें उसका कोई अच्छा स्वागत न करतीं।

आज का दिन भी सदा जैसा ही था। वह एक बिस्तर से दूसरे विस्तर पर जाती रही। वह अधिक से अधिक विनम्र और संयत दिखाई पड़ने का प्रयास करती रही। वार्ड में व्याप्त शोर की उपेक्षा करती रही और पूरे ध्यान से रोगिणियों की परीक्षा करती रही। अचानक एक विशेष रूप से कर्कश और अनियन्त्रित स्वर सामने की दीवार के पास से उसके कानों तक पहुंचा। "मुझसे रोगियों के बारे में बात मत करो? यहां कुछ रोगी सुबह, दोपहर और रात हर समय अपने धन्धे में लगे रहते हैं। तुम उसी झबरे बालों वाले को लो, वह जो अपने गाउन के ऊपर पेटी बांधे रहता है। नर्स जोया जब कभी भी रात की ड्यूटी पर होती है तो वह उसके साथ रंगरेलियां मनाता है।"

"यह क्या बात है? तुमने क्या कहा?" गैंगार्त ने उस औरत से पूछा जिसकी वह परीक्षा कर रही थी। "क्या आप मेहरबानी करके यह बात

एक बार फिर कहेंगी ?"

रोगणी ने बात को शुरू से फिर दुहरा दिया।

कल रात जोया ड्यूटी पर थी। तो कल रात, यह बात हुई थी जब रेडियो का हरा डायल जल रहा था…

"मुझे बड़ा खेद है पर क्या आप मेहरबानी करके इस बात को फिर दुहरायेंगी ? एक दम शुरू से और विस्तार से।"

५—अद्‌भुत पहल

एक सर्जन (नया नहीं, बल्कि अनुभवी) किस समय घबराता है ? आपरेशन के दौरान नहीं आपरेशन के दौरान वह ईमानदारी से और खुलकर काम करता है। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है ? वह जानता है कि उसका कार्य जिस चीज को निकालना है उसे यथासम्भव सफाई से निकाल दे ताकि आगे चलकर इस बात की शिकायत और पश्चाताप न हो कि काम पूरा नहीं हुआ था। यह सच है कि कभी-कभी अप्रत्याशित जटिलताएं सामने आती हैं। अचानक तेजी से खून निकलना शुरू हो सकता है और उसे याद आ सकती है कि हरनिया के आपरेशन के समय किस प्रकार रदरफोल्ड की मृत्यु हो गई थी पर बुनियादी तौर पर एक सर्जन की घबराहट आपरेशन के बाद शुरू होती है। जब किसी कारण से किसी रोगी का ज्वर उतरता ही नहीं अथवा पेट भद्दी स्थिति में ही बना रहता है और इसे चाकू से नहीं बल्कि अपने दिमाग में खोलना पड़ता है। यह देखने के लिए कि क्या हो गया है, कमी अथवा खामी को समझने और इसे ठीक करने के लिए। जब समय तेजी से निकला जा रहा हो तो आपको उसे कसकर पकड़ने और इसे बांध रखने की आवश्यकता होती है।

यही कारण था कि लेव लियोनिदोविच अपने आपरेशन के बाद के रोगियों को एक नजर देखने के लिए पांच मिनट की बैठक से पहले अवश्य जाया करता था। आपरेशन के दिन से पहले के सामान्य राउंडों में बहुत समय लगता था और उसे यह जाने बिना कि उस रोगी की क्या हालत है, जिसके पेट का आपरेशन हुआ था, अथवा द्योमा कैसा है, डेढ़ घंटे का समय गुजारना पड़ता था। वह पेट के आपरेशन वाले रोगी के पास गया, जिसकी हालत खास खराब नहीं थी। उसने नर्स से कहा कि उसे क्या चीज पीने के लिये दी जाए और कितनी। इसके बाद वह अगले कमरे में गया। यह एक छोटा-सा कमरा था और इसमें दो मरीज रखे जाते थे। वह यहां द्योमा को देखने गया था।

कमरे के दूसरे रोगी की स्थिति पहले ही सुधार की ओर थी और उसे अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली थी। लेकिन द्योमा वहां लेटा हुआ था और कम्बल उसकी छाती पर ढका हुआ था। उसके चेहरे का रंग बिल्कुल पीला पड़ चुका था। वह छत को घूर रहा था यह घूरने का तरीका शान्त और

राहतपूर्ण नहीं था। वह अपनी आंखों के समस्त स्नायुओं पर जोर डालकर देख रहा था मानो छत पर कोई बहुत छोटी-सी वस्तु चिपकी हुई हो जिसे वह देखना चाहता हो पर देख न पा रहा हो। वह घबराया हुआ दिखाई पड़ रहा था।

लेव लियोनिदोविच चुपचाप खड़ा था, उसकी टांगें थोड़ी अलग-अलग थीं और दोनों बांहें बराबर में झूल रही थीं। वह द्योमा के पलंग के पास एक ओर खड़ा था। वह बहुत गम्भीर और क्रुद्ध-सा दिखाई पड़ रहा था। ऐसा भी लग रहा था कि उसने अपनी दाहिनी बांह थोड़ी-सी पीछे को खींची हो मानो यह अनुमान लगा रहा हो कि यदि द्योमा के जबड़े पर दाहिने हाथ का एक घूंसा जमा दे तो क्या होगा। द्योमा ने अपना सिर घुमाया उसे देखा और जोर-जोर से हंसने लगा।

सर्जन की कठोर और क्रोधभरी मुखाकृति तुरन्त हंसी में बदल गई। लेव लियोनिदोविच ने द्योमा की ओर देखकर आंख मारी यह एक-दूसरे को समझने की, एक पुरुष की दूसरे पुरुष से बात थी। "तुम ठीक हो न ?" उसने उससे पूछा। "सब कुछ नियंत्रण में है न ?"

"नियंत्रण में ?" ऐसी अनेक बातें थीं, जिनकी द्योमा को शिकायत करनी थी। लेकिन जब एक पुरुष दूसरे पुरुष से ऐसे स्तर पर बात कर रहा हो तो शिकायत की कहां गुंजाइश थी।

"क्या दर्द होता है ?"

"हां।"

"उसी जगह ?"

"हां।"

"द्योमा अभी यह इसी तरह काफी अरसे तक होता रहेगा। अगले साल भी तुम इसे अपने हाथ से पकड़ना चाहोगे, यद्यपि यहां कुछ नहीं है। लेकिन जब तुम्हें दर्द हो तो यह याद करने की कोशिश करना यह वहां नहीं है। इससे तुम बेहतर अनुभव करोगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तब तक ठीक रहोगे। जहां तक जीवित रहोगे। जहां तक तुम्हारी टांग का सवाल है जाने दो उसको जहन्नुम में।"

लेव लियोनिदोविच ने इस बात को कितना आसान बना कर कहा था। वह सही था। वह चीज जहन्नुम में ही जाये जो इस प्रकार तकलीफदेह हो। उसके बिना वह बेहतर अनुभव कर रहा था।

"ठीक है, ठीक है मैं फिर आऊंगा तुम्हें देखने।"

वह तेज़ी से पांच मिनट की बैठक के लिए चल पड़ा। ऐसा लग रहा था कि वह तोप के गोले की तरह हवा को चीरता हुआ जा रहा हो। (उसे देर हो गई थी। बैठक में पहुंचने वाला वह अन्तिम व्यक्ति था। निजामुद्दीन बहरा-

मोविच को देर से आने वाले लोग पसन्द नहीं थे)। उसका सफेद कोट बहुत कसकर उससे चिपटा हुआ था। यह सामने से खुला नहीं था। पीठ पीछे उसे बेहद कसकर खींचा गया था। लेकिन फिर भी दोनों सिरे मिल नहीं रहे थे। जब वह अकेला अस्पताल में चलता था तो बहुत तेजी से चलता था और हमेशा दो-दो सीढ़ियां एक साथ चढ़ता था और अपनी टांगें और बाहें बहुत तेजी से हिलाता था। इन निश्चित और तेज़ गतिविधियों के कारण ही मरीजों को इस बात का एहसास था कि वह अपना समय बर्बाद करते हुए इधर-उधर नहीं घूमता रहता।

पांच मिनट की बैठक शुरू हुई और आधा घंटे तक चली। निजामुद्दीन बैठक की कार्रवाई को बड़ी गरिमा और अनावश्यक जल्दबाजी के बिना ही संचालित करना पसन्द करता था (अथवा वह यह बात सोचता था)। यह बात स्पष्ट थी कि उसे स्वयं अपनी आवाज़ सुनना बड़ा पसन्द था। जब कभी वह कोई संकेत करता अथवा किसी की ओर मुड़ता तो यह स्पष्ट होता कि वह अपने घूमने के तरीके पर भी विचार कर रहा हो। उसका विचार था कि वह एक सत्ताधारी, ख्याति प्राप्त, सुशिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति जैसा दिखाई पड़ता है। वह जिस आल[1] में पैदा हुआ होगा वहां निश्चय ही इसके बारे में बड़े-बड़े किस्से प्रचारित होंगे। पूरे शहर में भी उसका काफी नाम था। कभी-कभी समाचार-पत्र भी उसका नाम देते थे।

लेव लियोनिदोविच जिस कुर्सी पर बैठा था उसे उसने मेज़ से थोड़ा-सा पीछे हटा लिया था। उसने अपनी एक टांग अपनी दूसरी टांग के ऊपर रखी और अपने हाथ के अंगूठे पीछे की ओर उन डोरियों में फंसा लिये जिनसे उसका सफेद कोट कसकर खींचा हुआ था। अपनी पायलटों जैसी टोपी के नीचे उसके चेहरे पर एक क्रोध भरी मुखाकृति विद्यमान थी। अब क्योंकि वह हमेशा अपने वरिष्ठ अधिकारी उपस्थिति में निरन्तर गुर्राता रहता था, वरिष्ठ डाक्टर को इस बात का आभास नहीं था कि यह गुर्राहट उसी के लिए है।

वरिष्ठ डाक्टर अपनी स्थिति को, अपने पद को एक ऐसा कार्य नहीं समझता था जिस पर रहते उसे निरन्तर लगातार परिश्रमसाध्य काम करना चाहिए बल्कि उसे एक ऐसा अवसर मानता था जिसका लाभ उठाकर वह सदा अपना विज्ञापन कर सके और अपने समस्त विशेषाधिकारों का अधिकतम उपयोग कर सके। उसका पदनाम वरिष्ठ डाक्टर था और वह यह विश्वास कर बैठा था कि उस पदनाम ने वस्तुतः उसे एक महत्वपूर्ण डाक्टर भी बना दिया है, कि वह शेष डाक्टरों से अधिक जानता है (हो सकता है, अन्तिम सूक्ष्म विवरण तक न भी जानता हो), कि वह उस प्रत्येक इलाज से परिचित है, जो उसके

---

१. सोवियत संघ के तुर्की भाषी क्षेत्र का एक गांव।

मातहत कर रहे हैं, और यह भी कि केवल उसका मार्गदर्शन और हिदायतें ही उन्हें गलतियां करने से रोके हुए हैं। यही कारण था कि उसे अपनी पांच मिनट की बैठक में इतना समय देना पड़ता था। यद्यपि अन्य लोग भी इसका पूरा आनन्द लेते हुए दिखाई पड़ते थे। सौभाग्यवश वरिष्ठ डाक्टर के विशेषाधिकार उसके कर्तव्यों से कहीं अधिक थे। जिसका अर्थ था कि उसे प्रशासनिक कर्मचारियों, डाक्टरों अथवा नर्सों के अस्पताल में आने और काम करने के बारे में चुनाव करने में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं थी। क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवाओं के कार्यालय से अथवा नगर की पार्टी समिति अथवा मैडिकल कालेज से जो सिफारिशें टेलीफोन पर आतीं उनके अनुसार नियुक्तियां करना वह पर्याप्त समझता था। जहां तक मैडिकल कालेज का सम्बन्ध था वह जल्दी ही अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने जा रहा था। इसके अलावा कभी किसी रात्रि भोज में अत्यधिक मित्रतापूर्ण क्षणों में किसी व्यक्ति को काम देने का वचन दे देने पर अथवा अपने पुराने कबीले के सदस्यों को काम देने के अलावा वह सही चुनाव का कष्ट नहीं उठाता था। जब अस्पताल के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष उसके पास आते और किसी ऐसे नये आदमी की शिकायत करते जो कुछ नहीं जानता था और पूरी तरह निकम्मा होता था तो निजामुद्दीन बहरामोविच इन शिकायत करने वालों से कहीं अधिक आश्चर्य-चकित दिखाई पड़ता। "ठीक है कामरेडो इन्हें काम सिखाइए, आखिरकार आपकी राय में आप लोग यहां किस लिए हैं।"

उसके सिर के बाल एकदम सफेद थे। ये ऐसे बाल थे। जो एक खास उम्र के लोगों को चाहे वह प्रतिभा सम्पन्न हों अथवा मूर्ख, सन्त हों अथवा धूर्त, सक्रिय हों अथवा आलसी, गरिमा की आभा प्रदान करते हैं। उसका चेहरा मोहरा बड़ा अच्छा और प्रभावशाली था। ठीक वैसे लोगों की तरह जिन्हें प्रकृति यह चेहरा मोहरा उपहार में देती है, जिन्हें विचारशीलता का कष्ट नहीं भोगना पड़ता। और उसका काला रंग भी बुरा नहीं लगता था विशेषकर उसके सफेद बालों के साथ। निजामुद्दीन बहरामोविच अपने चिकित्सा कर्मचारियों को बता रहा था कि उनके काम में क्या खामी है और उन्हें किस प्रकार मूल्यवान मनुष्य जीवन की रक्षा के अपने संघर्ष को तीव्र करना चाहिए। इस प्रकार वह उन स्त्री पुरुषों के ध्यान को अपने पर केन्द्रित रखने का आदी था जो मोर जैसे गहरे नीले रंग के मेजपोश के चारों ओर सीधी पीठ वाले सरकारी सोफा, आरामदेह कुर्सियों और सादी कुर्सियों पर बैठे होते थे। ये वे लोग होते थे, जिन्हें वह इस समय तक नियुक्त कर चुका होता था अथवा जिनसे अब तक मुक्ति पाने में उसे कामयाबी नहीं मिली होती थी।

लेव लियोनिदोविच जिस स्थान पर बैठा हुआ था वहां से घुंघराले बालों वाले हाल मोहम्मदोव को बहुत अच्छी तरह देख सकता था। वह केप्टेन कुक

की आत्माओं के विवरण की एक तस्वीर दिखाई पड़ता था। किसी जंगल से सीधे आया हुआ जंगली आदमी। उसके बाल चटाई की तरह घने थे। उसका कांसे जैसा रंग था और काले से काले कोयले के रंग के मुहासे निकले हुए थे। उसकी भयंकर हंसी उसके बड़े-बड़े सफेद दान्तों को उद्घाटित करती थी—केवल एक चीज की कमी थी : उसके नाक में बस बाली नहीं थी। हां वस्तुतः केवल उसकी शक्ल सूरत ही महत्व की बात नहीं थी अथवा वह साफ सुथरा लिखा हुआ प्रमाणपत्र जो उसे मैडिकल कालेज से प्राप्त हुआ था। बल्कि बात यह थी कि वह बिना भयंकर भूल और गड़बड़ के एक भी आपरेशन नहीं कर सकता था। लेव लियोनिदोविच ने उसे दो बार आपरेशन करने दिया लेकिन अब वह कसम खा चुका था कि उसे फिर कभी आपरेशन नहीं करने देगा। उसे अस्पताल से निकाल बाहर करना भी इसी प्रकार असम्भव था। इसका अर्थ होता आदिम जातियों के लोगों को प्रशिक्षण देने की नीति को क्षति पहुँचाना। अतः यह आदमी तीन वर्ष से अधिक का समय रोगियों के रोग का विवरण लिखने में गुजार चुका था और यह विवरण भी बहुत सामान्य रोगियों के होते थे। वह डाक्टरों के साथ राउंड पर जाता और स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण दर्शाने की कोशिश करता। मरहम पट्टी के कमरे का भी मुआइना करता और रात की ड्यूटी पर भी आता (जिसके दौरान वह सोता रहता) इधर उसने अपना ड्योढ़ा वेतन भी लेना शुरू कर दिया था, जो काम के घंटों के अनुसार दिया जाता था। यद्यपि वह काम के सामान्य घंटों में भी अस्पताल से चला जाता था।

इस कमरे में दो महिलाएं भी थीं, जिन्हें सर्जन का प्रमाणपत्र प्राप्त था इनमें से एक थी पांतियो खीना जो लगभग ४० वर्ष की अत्यधिक मोटी महिला थी। वह निरन्तर चिन्ता में पड़ी रहती थी। उसकी चिन्ता यह थी कि उसके दो अलग-अलग पतियों से छः बढ़ते हुए बच्चे थे और उनके लिए कभी भी पर्याप्त पैसा अथवा देखभाल के लिए समय नहीं होता था। ये चिन्ताएं हमेशा उसके चेहरे पर मौजूद रहती थीं काम के घंटों के दौरान भी। इसका अर्थ यह था कि उन घंटों के दौरान भी जो वह अपना वेतन प्राप्त करने के लिए अस्पताल में गुजारती थी। दूसरी महिला एंजली थी। इस युवती को प्रमाण-पत्र प्राप्त किए हुए केवल दो वर्ष हुए थे। वह छोटे कद की, लाल से बालों वाली और प्रायः सुन्दर थी और लेव लियोनिदोविच से इस कारण घृणा करती थी कि वह उसकी ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देता था। सर्जिकल वार्ड में लियो-निदोविच के खिलाफ जो षड्यंत्र जारी रहते थे मुख्यतः वही इनके लिए जिम्मेदार होती थी। ये दोनों स्त्रियां बाहर से चिकित्सा के लिए आने वाले रोगियों का स्वागत करने के अलावा अन्य कुछ नहीं कर सकती थीं और चाकू के इस्तेमाल में तो इनका भरोसा ही नहीं किया जा सकता था। फिर भी ऐसे

महत्वपूर्ण कारण थे कि वरिष्ठ डाक्टर उनमें से किसी को भी बरखास्त नहीं कर सकता था।

कागज पर विभाग में पाँच सर्जन थे और आपरेशनों की संख्या पांच सर्जनों के आधार पर ही गिनी जाती थी।

पर केवल दो ही आपरेशन करने की क्षमता रखते थे।

इस कमरे में कुछ नर्सें भी थीं। इनमें से कुछ इन डाक्टरों से बेहतर नहीं थीं। इनके सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है कि निजामुद्दीन बहरामोविच ने ही उन्हें नियुक्त किया था और उनका संरक्षण कर रहा था।

ऐसे अवसर आते जब इन सब बातों का दबाव इतना अधिक बढ़ जाता कि लेव लियोनिदोविच के लिए स्थिति भयंकर हो उठती और वह यह अनुभव करता कि वह अब ऊपर एक दिन भी काम नहीं कर सकता। बस वह अस्पताल छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जाना चाहता। लेकिन वह जा कहां जा सकता था? प्रत्येक नई जगह में उसका अपना वरिष्ठ डाक्टर होगा, जो यहां के डाक्टर से भी बुरा हो सकता था। उस अस्पताल के स्वयं अपनी गरिमा अनुभव करने वाले अपने मूर्ख होंगे और वे आलसी भी जो कर्मचारियों के पदों पर आसीन हैं। यह बात दूसरी थी कि उसे स्वयं किसी अस्पताल का कार्यभार मिल जाता और परिवर्तन के रूप में वह कार्य कुशलता के आधार पर सब कार्यों का संचालन करता। वह अस्पताल के प्रत्येक कर्मचारी को अपना उचित काम करने के लिए बाध्य करता और केवल उतने ही लोगों को रखता जितनों की आवश्यकता होती। लेकिन लेव लियोनिदोविच ऐसी स्थिति में नहीं था कि उसे वरिष्ठ डाक्टर का पद दे दिया जाता। केवल कहीं सुदूर स्थान पर ही यह सम्भव था। यहीं आना उसके लिए मास्को से बहुत दूर था।

वैसे वह वस्तुतः किसी अस्पताल का वरिष्ठ डाक्टर नहीं बनना चाहता था। वह जानता था कि शायद ही कभी किसी प्रशासक को अपने डाक्टरी पेशे में नाम मिला हो। अपने जीवन में एक बार उसने ऐसे महान् लोगों को देखा जो अपनी क्षमता के बावजूद कुछ न कर सके और तब उसने यह अनुभव किया कि सत्ता कैसी भयंकर चीज है। उसने ऐसे भूतपूर्व डिवीजनल कमांडरों को देखा जिनकी महत्वाकांक्षा रसोई घर के अर्दलियों का काम प्राप्त करने की थी। उसका पहला व्यावहारिक शिक्षक सर्जन कोरयाकोव था, जिसे उसे एक बार कूड़े के ढेर से उठाना पड़ा।

कुछ अन्य अवसरों पर स्थिति शान्त रही और लेव लियोनिदोविच ने यह अनुभव किया कि वह इसे बर्दाश्त कर सकता है और उसे यहां से छोड़कर नहीं जाना होगा। इस स्थिति में उसकी आशंकाएं एकदम दूसरे छोर पर पहुँच जातीं। वह इस आशंका से भयभीत हो उठता कि कहीं वह दोंतसोवा, गैंगार्त अथवा स्वयं उसे ही निकाल तो न देंगे। स्थिति कुछ ऐसी ही होती जा रही थी।

हर वर्ष स्थिति और अधिक सरल नहीं बल्कि और अधिक जटिल हो जाती थी। अब उसके लिए अपने जीवन में अचानक ऐसे घातक परिवर्तनों के लिए गुंजाइश नहीं थी। वह लगभग ४० वर्ष का था और अब उसके शरीर को कुछ आराम और सुरक्षा की आवश्यकता का अनुभव होता था।

उसे स्वयं अपना जीवन भी बहुत उलझन में डाल देता था। यह बात उसकी समझ में नहीं आती थी कि वह वीरतापूर्वक धावा बोल दे अथवा शांतिपूर्वक प्रवाह के साथ तैरता रहे। उसका गम्भीर काम यहां शुरू नहीं हुआ था। आरम्भ में उसे अपने भविष्य के बारे में बहुत व्यापक संभावनाएं दिखाई पड़ती थीं। एक वर्ष तो उसे प्रायः स्तालिन पुरस्कार मिलने ही वाला था। तभी अचानक उसका पुराना अस्पताल ही एक बुलबुले की तरह फूट पड़ा। अनुसंधान के कुछ क्षेत्रों को आवश्यकता से अधिक व्यापक बना दिया गया था। इस सम्बन्ध में बहुत अधिक जल्दबाजी की गई थी। इसके बाद पता चला कि उसका शोध प्रवन्ध प्रस्तुत ही नहीं हुआ था। उसकी वर्तमान मनःस्थिति के लिए आंशिक रूप से कोरयाकोव जिम्मेदार था। "बस तुम काम करते रहो" उसने कहा था। "इन सब बातों को लिख डालने का सदा पर्याप्त समय मिलेगा।" लेकिन समय कब मिलेगा?

और यह सब लिख डालने का लाभ भी क्या है?

लियोनिदोविच के चेहरे पर वरिष्ठ डाक्टर के प्रति कोई नाराजगी का भाव नहीं था। उसने अपनी आंखों को भींचा, उसकी बातें सुनने का नाटक रचा, विशेष कर उस समय जब वे लोग यह सुझाव दे रहे थे कि अगले महीने वह थो रैक्स का सबसे पहला आपरेशन करे।

हर चीज का अन्त होता है और इसी प्रकार ५ मिनट की बैठक का भी हुआ। सर्जन धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकले और सीढ़ियों के ऊपर के हिस्से में खड़े हो गये। लेव लियोनिदोविच के हाथ के अंगूठे अभी भी उसके पेट पर बंधी कम चौड़ी पेटी में अटके हुए थे। वह एक गम्भीर और अन्य मनस्क कर्नल की तरह अपने डाक्टरों की टोली का नेतृत्व करते हुए प्रमुख राउंड पर चल पड़ा। उसकी टोली में येव जेनिया, उस्तीनोवना, जिसके सफेद बाल थे और जो सीधी सादी दिखाई पड़ रही थी, अपने शानदार घुंघराले बालों सहित हाल मोहम्मदोव मोटी पांकियोखिना, लाल बालों वाली एंजली और दो नर्सें थीं।

कुछ राउंड बहुत तेज रफ्तार से किये गये मुआइनों की तरह होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति काम को जल्दी से जल्दी कर डालने की जल्दबाजी में होता है। उन्हें आज भी जल्दी से जल्दी काम निपटाना चाहिए था केवल दिक्कत यही थी कि टाइमटेबल में आदेश दिया गया था कि धीरे-धीरे व्यापक राउंड लगाये जायें और प्रत्येक आपरेशन सम्बन्धी मामले पर विचार किया

जाये। वे एक-एक करके सातों के सात वार्डों में घुसे। एक ऐसे वातावरण में प्रवेश किया जो दवाइयों की गन्ध से दम घोट देने वाला बन चुका था, जिसमें स्वच्छ हवा के आने-जाने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं की गई थी और रोगियों के शरीरों की गन्ध भी जिसमें समाई हुई थी। ये लोग एक दूसरे के लिए रास्ता छोड़ते हुए किसी न किसी तरह पलंगों के बीच के सकरे रास्ते में घुसे और एक दूसरे के कन्धे के ऊपर से रोगियों पर नजर डालते रहे। ये लोग प्रत्येक रोगी के बिस्तर के चारों ओर छोटा सा घेरा बना कर खड़े हुए लोगों से यह आशा की जाती थी कि ये प्रत्येक रोगी के पास एक, तीन अथवा पांच मिनट का समय बितायेंगे और रोगी की उसी प्रकार बेधक जांच पड़ताल करेंगे जिस प्रकार उन्होंने वार्ड की भारी हवा को बेधा था। उन्हें रोगी के दर्द, उसकी भावना, उसके रक्त की स्थिति, उसके रोग के वित्ररण, उसकी चिकित्सा की प्रगति, उसकी वर्तमान स्थिति—वस्तुत: ऐसे प्रत्येक सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विवरण को बेधना था जो उनके लिये सम्भव था।

यदि इन लोगों की संख्या कम होती। यदि इनमें से प्रत्येक सर्वोत्तम उपलब्ध विशेषज्ञ होता। केवल एक ऐसा व्यक्ति नहीं जो डाक्टर का वेतन प्राप्त कर रहा हो। यदि प्रत्येक डाक्टर के पीछे तीस रोगी न होते। यदि उन्हें सर्वाधिक चतुरतापूर्ण वस्तु के बारे में यह चिन्ता न करनी होती कि उन्हें इसे बड़ी चतुरता से रोगी के रोग के विवरण में लिखना होगा (यह एक ऐसा दस्तावेज है, जो एक दिन सरकारी वकील की मेज पर भी पहुँच सकता है) यदि वह मनुष्य न होते अर्थात् उनका अपनी चमड़ी और हड्डियों से लगाव न होता, अपनी स्मृतियों और इरादों से वे जुड़े न होते। यदि उन्हें इस कल्पना से, जानकारी से बेहद राहत न मिलती कि वे उन लोगों में तो नहीं हैं, जिन्हें कष्ट है, जो दर्द से पीड़ित हैं तो बहुत सम्भव है कि डाक्टरों के इस प्रकार राउंड लगाने की प्रणाली, समस्या का सर्वोत्तम हल होती।

लेकिन जैसा कि लेव लियोनिदोविच बहुत अच्छी तरह से जानता था स्थिति वही थी जो थी। राउंड की व्यवस्था को न तो रद्द किया जा सकता था और न उसके स्थान पर कोई और व्यवस्था की जा सकती थी। अत: सदा की तरह उसने अपनी टोली का नेतृत्व किया। वह अपनी आँखें सिकोड़ता, एक आंख को दूसरी आंख से अधिक बन्द करता और अपने साथी डाक्टरों के विवरण को बड़ी शान्ति से सुनता ये लोग रोगी का विवरण अपनी स्मृति से नहीं बताते बल्कि फाइल से पढ़कर सुनाते। ये लोग बताते कि रोगी कहां का रहने वाला है, कब भरती हुआ पुराने रोगियों के बारे में उसे स्वयं यह जानकारी होती भर्ती होने का कारण, क्या इलाज किया जा रहा है। और कितनी मात्रामें दवाइयां दी जा रही हैं, रक्त की स्थिति क्या है, क्या वह आपरेशन की स्थिति में आ गया है अथवा उसका आपरेशन

नहीं होगा और यदि होगा तो क्यों, अथवा आपरेशन करने अथवा न करने का निर्णय लिया जा चुका है या नहीं वह कुछ रोगियों की बातें सुनता और उनके बिस्तरों पर बैठता। उनमें से कुछ को वह अपने रोगग्रस्त अंग दिखाने को कहता। उनकी जांच करता, हाथ से छूता और रोगी को स्वयं अपने हाथ से कम्बल से ढक देता अथवा दूसरे डाक्टरों से उसे छू कर देखने को कहता।

वास्तव में जटिल मामलों को ऐसे दौरों के समय नहीं सुलझाया जा सकता था। ऐसे रोगियों को बुलाना पड़ता और उनकी जांच करनी पड़ती। राउंड के दौरान आप बहुत सी बातें स्पष्ट रूप से कह भी नहीं सकते। आप वहां स्पष्ट शब्दों में सही स्थिति बताकर एक दूसरे की सहमति भी प्राप्त नहीं कर सकते। आप यह भी नहीं कह सकते कि रोगी की स्थिति खराब हो गई है। आप बस यही कह सकते हैं कि "यह प्रक्रिया कुछ अधिक तीव्र दिखाई पड़ रही है।" प्रत्येक बात पर सर्वोत्तम शब्दावली में और संकेत के द्वारा विचार होता कभी-कभी तो स्थानापन्न शब्दों के स्थान पर ऐसे ही शब्दों का प्रयोग किया जाता अथवा ऐसे तरीके से जो सच्चाई का प्रत्यक्ष विरोध होता। कोई भी व्यक्ति कभी भी 'कैन्सर' अथवा 'सारकोमा' नहीं कहता था और न ही वह ऐसे शब्दों का इस्तेमाल कर सकते थे जिनका आधा अर्थ रोगी समझते थे जैसे 'कैन्सेरोमा', 'सी० आर०' अथवा 'एस० आर०'। इसके स्थान पर उन्हें 'अल्सर', 'मैस्ट्राइट्रिस, 'सूजन' अथवा 'पोलिप' जैसे निर्दोष शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ता। इन शब्दों का वास्तविक अर्थ क्या था यह केवल राउंड के बाद ही विस्तार से बताया जा सकता है। कभी-कभी स्थिति को बेहतर समझने के लिये उन्हें 'नीडिया स्टिनम में छाया चौड़ी हो गई है' जैसी अभिव्यक्तियों के इस्तेमाल की इजाजत थी वह 'मामला रिसेक्टिबल (काटने योग्य) नहीं है' अथवा 'सांघातिक परिणाम की भी सम्भावना है' जिसका यह अर्थ होता है कि रोगी आपरेशन की टेबल पर ही मर सकता है। जब कभी इन सब अभिव्यक्तियों के बावजूद उसके पास अपनी सही बात कहने का कोई रास्ता न रह जाता तो लेव लियोनिदोविच कहा करता, "इस रोगी का विवरण एक ओर रख दो" और इसके बाद वे आगे बढ़ जाते।

राउंडों के दौरान उन लोगों की समझ में रोग के बारे में अथवा एक दूसरे के बारे में कोई बात अच्छी तरह से नहीं आ पाती थी। लेकिन जिस सम्बन्ध में कम सहमति होती लेव लियोनिदोविच रोगी के मनोबल को ऊंचा उठाने को और अधिक महत्व देता। उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया था कि राउंड का प्रमुख उद्देश्य रोगियों के मनोबल को ऊंचा करना है।

"स्टेटस आइदेम" कोई उसको कहता। (कोई परिवर्तन नहीं)।

"क्या यही बात है?" वह बड़ी प्रसन्नता से उत्तर देता। वह तुरन्त इस सम्बन्ध में रोगिणी से पूछता। "तुम पहले से कुछ बेहतर अनुभव करती

हो क्यों करती हो न ?"

"हां, शायद," रोगिणी अपनी सहमति देती और उसे कुछ आश्चर्य-सा होता। उसने स्वयं यह बात तो देखी नहीं लेकिन जब डाक्टर लोग यह कहते हैं तो यह बात सच ही होगी।

"देखिए बात यह है धीरे-धीरे आप जल्दी ही बेहतर हो जायेंगी।"

लेकिन एक और रोगी ने मानो खतरे की घंटी ही बजा दी।

"मुझे यह बताइए," वह बोली," मेरी रीढ़ की हड्डी में दर्द क्यों होता रहता है, शायद वहां भी कोई रसौली निकल आई है?"

"अह, नहीं, नहीं तो।" इन शब्दों को घसीटते हुए लेव लियोनिदोविच मुस्कराया, "यह तो एक गौण विकास है। (वह सच्चाई ही बता रहा था, दूसरी श्रेणी की रसौलियां गौण विकास की होती हैं।)

वह एक वृद्ध के पास खड़ा था, जिसका चेहरा भयंकर रूप से दुर्बल हो गया था और जिसका रंग एक मुर्दे के रंग के समान था और जो मुश्किल से ही अपने होंठ हिला पा रहा था। रोगी को सामान्य टॉनिक और शमन-कारी औषधियां दी जा रही हैं, उन्होंने उसे बताया।

इसका अर्थ था। अब चिकित्सा के लिये आवश्यकता से अधिक विलम्ब हो चुका था। उसकी चिकित्सा के लिये कुछ भी शेष नहीं रह गया था। एक मात्र लक्ष्य उसके कष्ट को कम करना था।

इसके बाद लेवलियोनिदोविच अपनी घनी भंवों को तरेरता, मानो वह रहस्योद्घाटन के लिए कोई निर्णय ले रहा हो और वह बातें समझना चाहता हो जो उसे समझानी चाहिएं: "ठीक है बाबा, हमें इस सम्बन्ध में थोड़ी स्पष्ट वादिता से काम लेना चाहिए। इस समय आप जो अनुभव कर रहे हैं वह आपकी पहले की चिकित्सा की प्रतिक्रिया है। हमारे ऊपर बहुत ज्यादा दबाव न डालिए। बस वहां शांति से पड़े रहिए और हम आपको बेहतर करने का प्रयास करेंगे। बस लेटे रहिए। आप यह सोच सकते हैं कि हम पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। लेकिन हम आपके शरीर को रोग से अपनी रक्षा करने में मदद दे रहे हैं।" वह आदमी जिसका अन्त समीप आ गया था अपना सिर हिलाता। डाक्टर की स्पष्टवादिता उससे कम संघातिक सिद्ध हुई जितनी कि पहले आशा थी इससे उसके मन में आशा का संचार हुआ।

"आप इलियेक क्षेत्र में अमुक प्रकार की रसौली का निर्माण देख सकते हैं," कोई रिपोर्ट पेश करता और लेव लियोनिदोविच को एक्सरे दिखाता।

वह धुंधली, काली, पारदर्शक एक्सरे फिलम को रोशनी के सामने करता और बड़े उत्साहवर्द्धक ढंग से सिर हिलाते हुए कहता, "यह तो बड़ा अच्छा चित्र है। बहुत अच्छा।"

और इस प्रकार रोगी का उत्साह बढ़ता। जहां तक स्वयं रोगी का संबंध

होता यह चित्र अच्छा ही नहीं बल्कि बहुत अच्छा था। चित्र बहुत अच्छा था। लेकिन केवल इसलिए क्योंकि अब एक और चित्र की आवश्यकया नहीं थी। इसमें रसौली का आकार और उसकी सीमाएं बड़े स्पष्ट ढंग से आ गई थीं।

९० मिनट के सामान्य राउंड के दौरान वरिष्ठ सर्जन एक बात का खास ध्यान रखता कि वह वास्तव में जो वह सोचता रहता था उसे वह कभी न कहता। वह अपने स्वर में भी अपनी भावनाओं को व्यक्त न होने देने के लिए विशेष सावधानी बरतता। साथ ही अन्य डाक्टरों को रोगियों के विवरणों के लिए सही टिप्पणियां लिखनी पड़तीं। यह विवरण उन संदर्भ कार्डों पर लिखे जाते जो फाइलों में लगे रहते थे। इन्हें कलम और रोशनाई से भरा जाता जो आगे चलकर उनमें से किसी के खिलाफ मुकदमा चलाने का आधार बन सकता था। एक बार भी कभी वह अचानक जल्दबाजी में अपना सिर नहीं घुमाता। एक बार भी कभी वह चिन्तित और भयभीत दिखाई नहीं पड़ा। उसकी दयापूर्ण और उकताहट से भरी मुखाकृति रोगियों को केवल इसी बात का आभास देती थी कि उनके रोग कितने मामूली हैं और सीधे सादे हैं। यह सब रोग जाने पहचाने थे और एक भी मामला गम्भीर नहीं था।

डेढ़ घंटे का अभिनय और इसके साथ ही वैज्ञानिक विश्लेषण लेव लियोनिदोविच को पस्त कर डालने के लिए पर्याप्त था। वह गुर्राया और अपने माथे की चमड़ी को उसने यथासम्भव खींचने की कोशिश की।

तभी एक वृद्ध स्त्री ने शिकायत की कि कुछ समय से उसकी छाती का मुआइना नहीं किया गया है अतः उसने अपनी अंगुलियां रखकर और ठक-ठक कर के छाती का मुआइना किया।

एक वृद्ध ने घोषणा की, "देखिए, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं।"

उसने अपने दर्द के समारम्भ और विकास के बारे में अपने स्पष्टीकरण की एक उलझी हुई कहानी शुरू की। लेव लियोनिदोविच ने सब्र से उसकी बातें सुनीं और बीच-बीच में अपना सिर भी हिलाता गया।

"आप कुछ कहना चाह रहे थे क्यों कहना चाह रहे थे न ?" वह वृद्ध बोला और उसने सर्जन को बोलने का अवसर दिया।

सर्जन मुस्कराया, "मेरे कहने के लिए क्या है ? हमारे हित और दिलचस्पी समान हैं। आप स्वस्थ होना चाहते हैं और हम भी चाहते हैं कि आप स्वस्थ हो जायें। हमें इसी प्रकार सहमति से काम करते रहना चाहिए।"

वह उज़बेक भाषा के भी कुछ शब्द जानता था। वह कुछ सीधी-सादी बातें उज़बेक भाषा में कह सकता था। वार्ड में एक अत्यधिक परिष्कृत किस्म की महिला थी, जिसने चश्मा लगा रखा था। अस्पताल के एक बिस्तर पर भी उसे एक ड्रेसिंग गाउन में उसका मुआइना करना कुछ उलझन भरा दिखाई पड़ा अतः उसने यह निश्चय किया कि अब वह मरीजों के समक्ष उसे नहीं देखेगा। इसी

प्रकार उसने बड़ी गम्भीरता से एक छोटे से लड़के से भी हाथ मिलाया जिसके साथ उसकी मां अस्पताल में थी। इसके बाद उसने एक सात वर्ष के बच्चे के पेट पर हल्की-सी चपत जमाई और फिर वे दोनों एक साथ जोर-जोर से हंसने लगे।

केवल एक रोगिणी का ही वह कुछ कम विनम्रता से इलाज कर रहा था। यह एक स्कूल की अध्यापिका थी और एक मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ से परामर्श करने के अपने अधिकार की मांग कर रही थी।

अब वह अन्तिम वार्ड में पहुँच चुका था। वह इस प्रकार पस्त होकर बाहर निकला मानो उसने कोई बहुत बड़ा आपरेशन किया हो। "अब पांच मिनट के लिए सिगरेट पीने की छुट्टी रहेगी", वह बोला।

उसने और येवजेनिया उस्तीनोवना ने अपनी सिगरेटें जलाने के बाद धुएं के दो बड़े-बड़े गुब्बार छोड़े मानो पूरे राउंड की यही चरम परिणति हो। (इसके बावजूद वह रोगियों से यही कहते थे कि सिगरेट से कैन्सर की बीमारी हो सकती है और इसे नहीं पीना चाहिए।)

इसके बाद ये लोग एक छोटे से कमरे के भीतर चले गए और एक गोल मेज के चारों ओर बैठ गए। राउंड के दौरान जिन नामों का उल्लेख किया गया था अब एक बार फिर उन पर विचार हुआ। लेकिन राउंड के दौरान किसी बाहरी व्यक्ति को रोगियों के स्वास्थय में सुधार और बेहतरी का जो सामान्य आभास मिल सकता था वह अब पूरी तरह से समाप्त हो गया। वह व्यक्ति जिसके सम्बन्ध में स्टेटस आइदेन अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं कहा गया था एक ऐसा मरीज था जिसका आपरेशन नहीं किया जा सकता था। उसके दर्द को रोकने के लिए लक्षणों के आधार पर ही उसकी एक्सरे चिकित्सा की जा रही थी। लेकिन उसके स्वस्थ होने की कोई आशा नहीं थी। वह छोटा लड़का, जिससे लियोनिदोविच ने हाथ मिलाया था, इसी प्रकार असाध्य था। उसकी रसौली बहुत फैल चुकी थी और उसके माता-पिता के बहुत जोर देने पर ही उसे अस्पताल में कुछ समय और रहने की अनुमति दे दी गई थी। जहां तक उस वृद्ध स्त्री का सम्बन्ध था, जिसने अपनी छाती के ठक-ठक करके मुआइने की मांग की थी, लेव लियोनिदोविच ने कहा, "वह ६८ वर्ष की है। यदि हम एक्सरे से उसका इलाज करते हैं तो हम ७० वर्ष की उम्र तक इसे टाल सकते हैं। यदि हम आपरेशन करते हैं तो वह एक वर्ष भी जीवित नहीं रहेगी। तुम्हारी क्या राय है, येवजेनिया उस्तीनोवना ?"

यदि नश्तर का इतना जबर्दस्त समर्थक लेव लियोनिदोविच यह बात कह रहा था तो निश्चय ही येवजेनिया उस्तीनोवना इस बात से सहमत होगी।

वैसे वास्तविकता यह थी कि वह नश्तर का समर्थक नहीं था। बल्कि वह अविश्वासी था। वह यह जानता था कि आँखों से बेहतर ऐसा कोई उपकरण नहीं है जो आपके समक्ष साफ तस्वीर पेश कर सके और यदि किसी चीज को

काटकर अलग करना है तो नश्तर से अधिक बेहतर ढंग से अन्य कोई चीज यह काम नहीं कर सकती।

एक रोगी था, जिसने स्वयं यह निर्णय न कर पाने के कारण कि आपरेशन के लिए अपनी सहमति दे अथवा नहीं, अपने परिवार से परामर्श करने की अनुमति मांगी। लेव लियोनिदोविच ने कहा, "उसका परिवार सुदूर जंगलों में रहता है। परिवार के लोगों से सम्पर्क करने और उनके यहां पर आकर अपनी राय देने में जो समय लगेगा उसमें तो यह रोगी मर ही जायेगा। हमें उसे आपरेशन की मेज पर लेटने के लिए राजी करना चाहिए। कल नहीं बल्कि अगले राउंड के समय। इसमें जोखिम है, यह सच है। हम उसके भीतर बस एक नजर देख लेंगे और फिर हो सकता है कि कुछ किए बिना ही फिर टांके भर दें।"

"यदि वह आपरेशन की मेज पर ही मर जाता है तो क्या होगा?" हाल मोहम्मदोव ने बड़े महत्वपूर्ण लहजे में प्रश्न उठाया मानो वह स्वयं ही यह जोखिम उठाने जा रहा हो।

लेव लियोनिदोविच ने अपनी लम्बी, और बड़ी जटिल आकृति में निर्मित भवों को हिलाया, जो एक-दूसरे से माथे के बीच में मिली हुई थीं। "एक, यदि, केवल, यदि" ही होता है लेकिन यदि हम कुछ नहीं करते तो वह निश्चय ही मर जाएगा।" वह सोचने के लिए रुका। "अभी तक हमारे अस्पताल में मृत्युदर अच्छी रही है। हम यह जोखिम उठा सकते हैं।"

प्रत्येक विचार के बाद वह पूछता, "क्या कोई असहमत है?"

पर यदि उसे किसी की राय में दिलचस्पी होती थी तो येवजेनिया उस्तीनोवना ही थी। उसके अनुभव, उम्र और दृष्टिकोण पर्याप्त भिन्न थे। लेकिन उनके विचार प्रायः सदा समान ही होते थे, जिससे यह प्रकट होता था कि समझदार लोगों के लिए एक-दूसरे को समझ पाना पर्याप्त आसान है।

"भूसे के रंग के बालों वाली लड़की के बारे में क्या राय है?" लेव लियोनिदोविच ने पूछा—"क्या हम किसी और ढंग से उसकी मदद नहीं कर सकते, येवजेनिया उस्तीनोवना? क्या हमें काटना ही होगा?"

"इससे बचा नहीं जा सकता", येवजेनिया उस्तीनोवना अपने गहरा लिपस्टिक लगे होठों को पीछे की ओर खींचती हुई बोली और इसके बाद हमें एक्स किरणों से भी उसका इलाज करना होगा।"

"इसकी कल्पना से ही आपका मन बेहद दुखी हो उठता है" लेव लियोनिदोविच ने अचानक आह भरी। उसका सिर अनेक स्तरों पर निर्मित था, इसका सबसे ऊपरी हिस्सा दृढ़ता से निर्मित था और उसके ऊपर एक विचित्र टोपी रखी हुई थी। उसने अपना सिर झुका लिया और लगा कि वह अपने नाखूनों का मुआइना कर रहा है। उसने अपना अंगूठा, जो बहुत बड़ा था,

अपनी तर्जनी के ऊपर चढ़ाते हुए उसे गौर से देखा। "एक इतनी कम उम्र लड़की के किसी अंग को काट देने की कल्पना के विरुद्ध हाथ वस्तुतः विद्रोह कर उठता है," वह बुदबुदाया। "आपके मन में बस यही भाव उठता है कि आप प्रकृति के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं।"

उसने अपनी तर्जनी अंगूठे के नाखून के ऊपर रख दी पर वह चाहे कुछ भी करता कोई लाभ नहीं था। किसी भी वस्तु में इसका हल नहीं मिल सकता था उसने अपना सिर उठाया। "ठीक है कामरेडो," वह बोला, "क्या अब आपकी समझ में शुलुबिन का मामला आ गया है?"

"गुदा का कैन्सर है"'सी आर रेक्टी?" पान्तियोखीना बोली।

"हां, सी आर रेक्टी।" पर क्या तुम्हें मालूम है कि उन्हें इस बात का पता कैसे चला? इससे यह पता चलता है कि कैन्सर रोग सम्बन्धी हमारे प्रचार और कैन्सर रोग सम्बन्धी जानकारी देने वाले हमारे केन्द्रों की क्या कीमत है। जब एक सम्मेलन में ओरेश चेन्कोव ने यह कहा था तो वह ठीक ही था "वह डाक्टर जो किसी रोगी की गुदा में अंगुली डालने से हिचकिचाता है वह डाक्टर ही नहीं है।" हमारे लोग बहुत-सी बातों की उपेक्षा कर जाते हैं। शुलुबिन बाहरी रोगियों का इलाज करने वाले एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल तक धक्के खाता रहा और यह शिकायत करता रहा कि उसे बार-बार शौचालय जाना पड़ता है, उसे खून आता है और फिर वह दर्द का अनुभव करता है। उन लोगों ने सरलतम परीक्षण यानी अंगुली से उसे देखने के अलावा अन्य सब परीक्षण किए। उन्होंने पेचिश और बवासीर के लिए उसका इलाज किया लेकिन इससे क्या होता। इसके बाद उसने एक ऐसे ही अस्पताल में कैन्सर सम्बन्धी एक पोस्टर लगा हुआ देखा। वह पढ़ा लिखा आदमी है। उसने इसे पढ़ा और उसकी समझ में बात आ गई। तो उसने स्वयं अपनी अंगुली से अपनी रसौली छूकर देखी। अब आप ही बताइए कि डाक्टर लोग छः महीने पहले स्वयं यह काम क्यों नहीं कर सकते थे?"

"क्या रसौली बहुत अन्दर है?"

"लगभग सात सेंटीमीटर, स्फींक्टर (संवरणी) के पीछे। यदि हमें जल्दी, इससे पहले इसका पता चल जाता तो हम गुदा के संवरणी स्नायु का नियंत्रण कायम रख सकते थे और वह एक सामान्य मनुष्य बना रह सकता था। लेकिन अब संवरणी में रोग की छूत लग चुकी है और हमें गुदा के संवरणी स्नायु को काटकर निकालना होगा। इसका यह अर्थ होता है कि उसे अपने पाखाने पर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा। इसका यह अर्थ भी होता है कि हमें उसकी बगल से मल की निकासी के लिए रास्ता बनाना होगा। यह भी क्या जीवन है और वह एक अच्छा आदमी है।"

उन लोगों ने अगले दिन के आपरेशनों की सूची बनानी शुरू की। सूची

पर उन्होंने लिखा कि किन रोगियों को आपरेशन से पहले की चिकित्सा की आवश्यकता है और किन रोगियों को नहलाया जाना चाहिए और किन रोगियों को किस प्रकार आपरेशन के लिए तैयार किया जाना चाहिए।

"चाली को आपरेशन से पहले के इलाज की आवश्यकता नहीं है" लेव लियोनिदोविच बोला, उसे पेट का कैन्सर है। वह कितना खुश मिजाज है। ऐसा रोगी कभी सुनने में भी नहीं आया।

"(काश डाक्टर को यह पता होता कि अगले दिन सुबह चाली अपना इलाज अलकोहल की एक बोतल से करने जा रहा था)" उन्होंने यह भी विवरण तैयार करना शुरू किया कि कौन किसकी मदद करेगा और कौन रोगियों के रक्त की स्थिति का ध्यान रखेगा। अनिवार्यत: यह निष्कर्ष निकला कि लेव लियोनिदोविच की सहायता ऐंजेलिका करेगी। इसका यह अर्थ था कि एक बार फिर वह मेज के उस पार खड़ी रहेगी और आपरेशन थियेटर की नर्स मेज के एक ओर निरन्तर आती जाती रहेगी और ऐंजेलिका अपना ध्यान अपने काम पर लगाने के बजाय पूरे समय कनखियों से यही देखती रहेगी कि लेव लियोनिदोविच नर्स के साथ क्या कर रहा है।

एक प्रकार से वह मानसिक रोगग्रस्त थी। यह जानने के लिए आपका उसके पास से गुजरना भर काफी था। अत: यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि उसका रेशमी धागा पूरी तरह से विशाणुमुक्त है अथवा नहीं। और पूरा आपरेशन इसी बात पर निर्भर करता था···भयंकर औरतें। वे लोग आदमियों का एक सीधा सादा नियम नहीं जानतीं : काम और सैक्स आपस में नहीं मिलते।'

उसके जन्म के समय उसे ऐंजेलिका नाम देकर उसके माता पिता ने गलती की थी।

पर वे यह किस प्रकार अनुमान लगा सकते थे कि वह बड़ी होकर कैसी भयानक औरत बनेगी। लेव लियोनिदोविच ने तिरछी नजर से उसके सुन्दर, यद्यपि लोमड़ी जैसे चालाक, छोटे चेहरे को देखा और उसके मन में बहुत शांति से यह बात कहने की इच्छा जगी, "सुनो, ऐंजेलिका और ऐंजेला अथवा ऐसा कोई भी नाम जिससे तुम पुकारा जाना चाहती हो या संबोधित किया जाना चाहती हो—तुम शिक्षा और योग्यता से पूरी तरह वंचित नहीं हो। यदि तुम विवाह करने के षड़यंत्र रचने के स्थान पर आपरेशन करना सीखने पर अधिक ध्यान देतीं तो अब तक तुम अच्छा काम करने लगतीं। देखो, झगड़े से कोई फायदा नहीं है। आखिरकार आपरेशन की मेज पर हम लोग बराबर-बराबर खड़े होते हैं···"

लेकिन वह इसका यह अर्थ निकालती कि अब लियोनिदोविच उसके अभियान से घबरा गया है और उसके समक्ष घुटने टेक रहा है।

उसके मन में कल के मुकदमे का विस्तृत विवरण देने की भी बात आई। उसने येवजेनिया उस्तीनोवना से भी यह बात सिगरेट पीते समय कहनी शुरू की थी। लेकिन वह इन दूसरे सहयोगियों को इसके बारे में कुछ अधिक नहीं कहना चाहता था।

जैसे ही बैठक समाप्त हुई लेव लियोनिदोविच उठ खड़ा हुआ, सिगरेट जलाई और एक्स-रे किरणों से चिकित्सा करने वाले विभाग की ओर बरामदे को पार करते हुए बढ़ चला। चलते समय वह आवश्यकता से अधिक लम्बी अपनी बाहें तेजी से हिला रहा था और सफेद कोट से ढकी अपनी छाती से हवा को चीरता हुआ चला जा रहा था। वेगा गैंगार्त ऐसी डाक्टर थी, जिससे वह बात करना चाहता था। वह उसे समीप फोकस वाली एक्स-रे यूनिट में मिली। वह दोन्तसोवा के साथ बैठी हुई कागज देख रही थी।

"अब आपके लंच का समय हो गया है।" वह बोला। "मुझे एक कुर्सी दो।"

उसने एक कुर्सी को अपने नीचे खींचा और उस पर बैठ गया। वह प्रसन्नतापूर्ण और मित्रतापूर्ण बात की मनः स्थिति में था। लेकिन तभी उसने कुछ देखा, कुछ अनुभव किया। "आप लोग मुझे देख कर बहुत प्रसन्न नहीं हुए हैं?" वह बोला।

दोन्तसोवा कुछ मुस्कुराई। उसने सींग के फ्रेम वाले अपने चश्मे को अपने हाथों में घुमाया। "इसके विपरीत मैं आप से अच्छे से अच्छे सम्बन्ध रखने का भरसक प्रयास कर रही हूँ। क्या तुम मेरा आपरेशन करोगे?"

"तुम्हारा आपरेशन?" नहीं, संसार में किसी भी वस्तु के लिए नहीं।

"पर क्यों नहीं?"

"क्योंकि अगर मैं तुम्हें मार डालूंगा तो वे लोग कहेंगे कि मैंने ईर्ष्या से यह काम किया है। क्योंकि तुम्हारा विभाग मेरे विभाग से अधिक सफल था।"

"मजाक की बात नहीं है लेव लियोनिदोविच मैं गम्भीरतापूर्वक बात कर रही हूँ।"

यह सच था। इस बात की मुश्किल से ही कल्पना की जा सकती है कि लुदमिला अफानासएवना मजाक करेगी। वेरा बहुत उदास बैठी हुई थी। वह जैसे अपने भीतर सिमट गई थी। उसके कन्धे झुक गये थे मानो वह बेहद ठण्ड अनुभव कर रही हो।

"लुदमिला अफानासएवना की अगले कुछ दिनों में परीक्षा करनी होगी, लेव। ऐसा लगता है कि काफी समय से उनके पेट में दर्द चल रहा है और उन्होंने किसी को यह बात नहीं बताई। यह भी कैसी अद्भुत कैंसर रोग विशेषज्ञ है। और तुम पहले ही प्रमाण जुटा चुकी हो और यह साबित कर सकती

हो कि यह कैंसर है क्यों ठीक है न ?" लेव लियोनिदोविच ने एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक फैली हुई अपनी असाधारण भवों को तरेरते हुए कहा। उसके चेहरे पर सदा उपहास का भाव रहता था। ऐसे अत्यधिक सामान्य अवसर पर जब हंसने की कोई बात नहीं होती थी। पर आप यह अनुमान नहीं लगा सकते थे कि वह किस की मजाक उड़ा रहा है।

"नहीं, पूरी तरह से नहीं, अभी तक पूरी तरह से नहीं।"

दोन्तसोवा ने स्वीकार किया।

"ठीक है, फिलहाल क्या प्रमाण है? उदाहरण के लिए ?"

उसने उसे बताया।

"यह पर्याप्त नहीं है।" लेव लियोनिदोविच का फैसला था। "पहले बेरोचका को निदान के विवरण पर हस्ताक्षर करने दो उसके बाद हम लोग बात करेंगे। ये लोग बहुत जल्दी ही मुझे एक अस्पताल का कार्यभार सौंपने जा रहे हैं। और मैं तब बेरोचका को अपने निदान विशेषज्ञ के रूप में यहां से ले जाऊंगा। क्या तुम उसे जाने दोगी ?"

"मैं किसी भी कीमत पर वेरा को नहीं छोड़ सकती। तुम अपने लिए किसी और की तलाश करो।"

"मैं और किसी को नहीं लूंगा। मुझे केवल बेरोचका चाहिए। यदि तुम उसे छोड़ने को तैयार नहीं हो तो मैं तुम्हारा आपरेशन क्यों करूं ?"

वह अपनी सिगरेट के अन्तिम कश खींच रहा था। इधर-उधर नजर डालते हुए वह हंसी मजाक कर रहा था। लेकिन भीतर से वह पूरी तरह गम्भीर था। जैसे कि उसका पुराना शिक्षक कोरयाकोव कहा करता था, "जब तुम जवान होते हो तुम्हारे पास अनुभव नहीं होता, जब तुम वृद्ध हो जाते हो तुम्हारे पास शक्ति नहीं रह जाती।" लेकिन इस क्षण वेरा गैंगार्त उसी की तरह थी। वह उम्र की उस सीमा पर पहुंच चुकी थी जब अनुभव पूरी तरह परिपक्व हो जाता है और इसके बावजूद शक्ति भी कायम रहती है। उसकी आंखों के सामने ही एक नौसिखिए डाक्टर से विकसित होकर वह इतनी योग्य निदान करने वाली बन गई कि उसे वेरा के ऊपर उतना ही विश्वास था जितना स्वयं दोन्तसोवा के निदान पर। उस जैसी निदानकर्ती के रहते किसी भी सर्जन को चाहे वह कितना भी अविश्वासी क्यों न हो चिन्ता की गुंजाइश नहीं रहती। संकट केवल इतना था कि जीवन की इस चरम स्थिति की अवधि एक औरत के लिए एक पुरुष की तुलना में भी कहीं छोटी होती है।

"क्या तुम अपने साथ लंच लाई हो ?" उसने वेरा से पूछा। "तुम तो खाओगी ही नहीं तुम इसे ऐसा ही वापस ले जाओगी, क्यों नहीं क्या ? तो मुझे ही इसे खाने दो।"

हंसी-मजाक के बीच पनीर की सैंडविच पेश हुई। उसने खाना और

दूसरों को सैंडविच देना शुरू किया। "तुम भी लो !...ओ हां, कल मैं मुकदमे में गया था। तुम्हें भी चलना चाहिए था। वहां तुम्हें बहुत-सी बातें सीखने को मिलतीं। यह एक स्कूल की इमारत में हुआ था। लगभग चार सौ आदमी मौजूद थे। तुम्हें मालूम था कि यह दिलचस्प रहेगा। मैं तुम्हें बताता हूं कि वहां क्या हुआ। बोलवुलस और मुड़ी हुई आन्तों के रोग से ग्रस्त एक बच्चे का आपरेशन किया गया। आपरेशन के कई दिन बाद तक वह जीवित रहा। वह घर से बाहर जाकर खेलने भी लगा—इस बात के प्रमाण हैं। इसके बाद उसकी आंतें आंशिक रूप से फिर उलझ गईं और उसकी मृत्यु हो गई। जिस अभागे सर्जन ने यह आपरेशन किया था उसे आठ महीने तक पूछताछ का सामना करना पड़ा—कौन जाने वह किस तरह इस अवधि में और आपरेशन करता रहा। मुकदमे के समय नगर की स्वास्थ्य सेवा का एक प्रतिनिधि, नगर का मुख्य सर्जन और एक सरकारी वकील मौजूद था। यह सरकारी वकील मैडिकल कालेज से आया था। क्या तुम उसकी कल्पना कर सकती हो ? वह सर्जन की अपराधपूर्ण उपेक्षा का राग अलापता रहा, बच्चे के माता-पिता को गवाहों के रूप में पेश किया गया—ये लोग जोरदार गवाह सिद्ध हुए। इन लोगों ने कम्बल सीधा न होने जैसी कुछ बात कही, एकदम मूर्खतापूर्ण। जहां तक जनता, डाक्टर के साथी नागरिकों, का सम्बन्ध था वे लोग वहां बैठें हुए घूरते रहे और अपने आपसे कहते रहे, "ये डाक्टर लोग कैसे हरामजादे हैं !" फिर भी जनता में कुछ डाक्टर मौजूद थे। हम जानते हैं कि सब कुछ कितना मूर्खतापूर्ण है। हमें वह भंवर दिखाई पड़ रहा है, जो हमें अपने भीतर अन्ततः खींच लेगा। हमें यह भंवर दिखाई पड़ रहा है फिर भी हम इसमें अवश्य गिरेंगे। आज तुम कल मैं। फिर भी हम कुछ नहीं कहते। यदि मैं मास्को से हाल में वापस न आया होता तो शायद मैं भी कुछ न कहता। लेकिन वहां दो महीने बिताने के बाद सब मूल मान्यताएं बदलती हुई दिखाई पड़ती हैं। मास्को की मान्यताएं भी और कुछ स्थानीय मान्यताएं भी। ढलवां लोहे से बनी बाधाएं, सड़ी-गली लकड़ी से निर्मित दिखाई पड़ने लगती हैं। तो मैंने अपनी गर्दन उठाई। मैं उठ खड़ा हुआ और एक भाषण किया।"

"क्या वहां भाषण करने की अनुमति होती है ?"

"हां, यह एक तरह का वादविवाद होता है। मैंने उनसे कहा, "आप लोगों को अपने ऊपर शरम आनी चाहिए, इस सरकस का आयोजन करने के लिए।" मैंने सचमुच उन्हें खूब फटकारा। उन लोगों ने मुझे रोकने की कोशिश की, मुझे आगे न बोलने देने की अनुमति देने से इन्कार करने की बात कही। "आप क्या यह जानते हैं कि चिकित्सा सम्बन्धी गलती की तुलना में न्याय सम्बन्धी गलती करना अधिक आसान है। "मैंने कहा," इस पूरे मामले की वैज्ञानिक जांच होनी चाहिए थी, न्यायिक जांच नहीं। आप लोगों को डाक्टरों

की एक टोली गठित करनी चाहिए थी, केवल डाक्टरों की और अन्य कोई नहीं और उन्हें एक उचित वैज्ञानिक विश्लेषण करने देना चाहिए था। हर मंगलवार और शुक्रवार को हम सर्जन लोग बहुत बड़ी-बड़ी जोखिम उठाते हैं, हम बारूद की सुरंगों से भरे मैदान में प्रवेश करते हैं। हमारा काम पूरी तरह से विश्वास पर आधारित होता है। एक मां को अपना बच्चा हमारे हाथों में सौंपना होता है, उसे एक अदालत में हमारे खिलाफ एक गवाह के रूप में पेश होने की आवश्यकता और गुंजायश नहीं होती।

लेव लियोनिदोविच एक बार फिर उत्तेजित हो उठा था। उसे लगा कि उसका गला रुंध गया है। वह भूल गया था कि अभी भी सैंडविच का टुकड़ा उसके मुंह में ही है। एक सिगरेट तेज़ी से निकाल कर जलाने में उसने अपनी आधी खाली सिगरेट की डिब्बी को फाड़ ही डाला।

"और यह सर्जन एक रूसी था। यदि वह जर्मन जाति का होता अथवा हम कह सकते हैं कोई यहूदी होता,"—इस शब्द को लम्बा घसीटते हुए उसने अपने होंठ बाहर की ओर निकाले—"तो वे सब लोग वहां चीखते-चिल्लाते "इसे फांसी पर लटका दो। किस बात की प्रतीक्षा है।" मेरे भाषण के बाद उन लोगों ने तालियां बजाईं। बस जरा सोचिए तो मैं चुप कैसे रह सकता था?" यदि कोई आपकी गर्दन में फांसी का फन्दा डाल रहा हो तो आपको उसे निकाल कर फेंकना ही होगा। प्रतीक्षा करने में कोई तुक नहीं होती।"

इस पूरे किस्से के दौरान वेरा निरन्तर अपना सिर हिलाती जा रही थी। उसे गहरा आघात पहुँचा था। उसकी आंखों से सूझबूझ बुद्धिमत्ता और तनावपूर्ण आश्चर्य प्रकट हो रहा था—यही कारण था कि लेव लियोनिदोविच को उसे ऐसी बातें बताना पसन्द था। ये बातें सुनते समय लुदमिला अफानासएवना बड़ी उलझन में दिखाई पड़ रही थी। अब उसने अपने भूरे-सलेटी रंग के छोटे-छोटे कटे हुए बालों से युक्त सिर को हिलाया।

"मैं आपसे सहमत नहीं हूं," वह बोली। "हम डाक्टरों को रास्ते पर लाने के लिये दूसरा क्या तरीका है? मुझे याद है कि एक बार एक सर्जन ने एक रोगी के पेट में एक रुई-सी दी थी—वे बस इसके बारे में एकदम भूल गए थे। कहीं अन्यत्र उन्होंने नोवोकेन के स्थान पर शरीर क्रिया सम्बन्धी नमकीन घोल का इनजैक्शन लगा दिया था। एक और ऐसा मामला सुनने में आया था कि प्लास्टर के भीतर एक रोगी की टांग निर्जीव हो गई और इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। किसी अन्य ने दवा की मात्रा के बारे में गलती की, उचित मात्रा से दस गुनी अधिक दवा दे दी। हम भी कभी-कभी गलत वर्ग का खून चढ़ा देते हैं। हम किसी रोगी को जला ही डालते हैं। हम लोगों के खिलाफ कार्यवाही का और क्या तरीका है? उन लोगों को चाहिए कि हमें बाल खींचकर बच्चों की तरह सही रास्ते पर लायें!"

"लुदमिला अफानासएवना, आप तो मुझे मारे डाल रही हैं ?" लेव लियोनिदोविच ने अपना एक लम्बा-चौड़ा हाथ अपने बचाव की मुद्रा में उठाते हुए कहा। "तुम ऐसी बातें कैसे कर पा रही हो। सबको छोड़कर केवल तुम ? यह एक ऐसी समस्या है, जो चिकित्सा की परिधि के बाहर है। यह एक ऐसा संघर्ष है, जिसका सम्बन्ध हमारे पूरे समाज के स्वरूप से है।"

"यही जवाब है, यही जवाब है ?" शान्ति कायम करने का प्रयास करते हुए वेरा गैंगार्त बोली। उसने उन दोनों के हाथ थाम लिए। "हां यह सच है कि डाक्टरों को अपनी जिम्मेदारी को और अधिक समझना चाहिए। पर इसके साथ ही उनके रोगियों की संख्या में भी दो या तीन गुनी कमी की जानी चाहिये। बाहर से आकर इलाज कराने वाले रोगियों को देखिए एक घंटे में नौ रोगियों को देखना पड़ता है। क्या यह भयानक स्थिति नहीं है हमें प्रत्येक रोगी से शान्तिपूर्वक और बिना किसी जल्दबाजी के बात करने का अवसर दीजिए और फिर उसके रोग के बारे में भी शान्तिपूर्वक सोचने का अवसर दीजिए। जहां तक आपरेशनों का सम्बन्ध है एक सर्जन को एक दिन में एक ही आपरेशन करना चाहिए—तीन नहीं।"

लेकिन लुदमिला अफानासएवना और लेव लियोनिदोविच एक दूसरे पर चीखते रहे, वे सहमत नहीं हो सके। अन्ततः वेरा उन्हें शान्त करने में सफल हुई। तो आखिर परिणाम क्या निकला ? उसने पूछा।

लेव लियोनिदोविच ने अपनी आंखों को तरेरना बन्द किया और मुस्कुरा कर बोला, "हमने उसे बचा लिया।" पूरा मुकदमा मूर्खतापूर्ण सिद्ध हुआ। अदालत ने केवल एक ही बात को मंजूर किया और यह बात थी कि रोग के विवरण में गलत बातों का उल्लेख। लेकिन जरा यह भी सुनिए यहीं अन्त नहीं हुआ निर्णय सुनाये जाने के बाद नगर की स्वस्थ्य सेवा के निर्देशक ने एक भाषण किया। तुम जानती हो उसने क्या कहा। उसने कहा कि हम लोग डाक्टरों को अथवा अपने रोगियों को उचित प्रशिक्षण नहीं दे रहे हैं और हम लोग अपने मजदूर संघ की भी पर्याप्त बैठकें नहीं बुलाते। और अन्त में नगर के मुख्य सर्जन का भाषण हुआ। इस सबके बाद आखिर वह क्या निष्कर्ष निकालना चाहता है ? उसका संदेश क्या था ? 'कामरेडो,' वह बोला, डाक्टरों के खिलाफ मुकदमा चलाना अद्‌भुत पहल का परिचायक है, सचमुच अद्‌भूत।"

६. अपना–अपना हित

यह सप्ताह का एक साधारण आखिरी दिन था और साधारण राउन्ड चल रहे थे। वेरा कोर्निलएवना अपने उन रोगियों को देखने जा रही थी जिनकी चिकित्सा एक्सरे किरणों से की जा रही थी। वह अकेली थी लेकिन सीढ़ियों के ऊपर के हिस्से पर उसके साथ एक नर्स भी आ गई।

यह नर्स जोया थी।

वे लोग कुछ समय के लिये सिबगातोव के पास खड़ी रहीं लेकिन वे वहां बहुत देर तक नहीं रहीं क्योंकि इस मामले में प्रत्येक नए कदम का निर्णय लुदमिला अफानासएवना स्वयं करती थीं। वे लोग वार्ड में चली गईं।

वे दोनों लगभग समान ऊंचाई की थीं। उनके होंठ, आंखें और टोपियां एक ही स्तर पर थीं। लेकिन जोया का शरीर कुछ अधिक भारी होने के कारण वह वेरा से अधिक लम्बी चौड़ी दिखाई पड़ रही थी। यह अनुमान लगाया जा सकता था कि जब दो वर्ष बाद वह डाक्टर बन जायेगी तो वेरा कोर्निलएवना से कहीं अधिक प्रभावशाली रहेगी।

वे दोनों ओलेग के बिस्तर के सामने की कतार के रोगियों को देखती हुई आगे बढ़ रही थीं। वह केवल उन लोगों की पीठ ही देख सकता था। बालों की गहरे कथई रंग की गांठ वेरा कोर्निलएवना की टोपी के नीचे से और सुनहरी रंग के बालों के गुच्छे जोया की टोपी के नीचे से झांक रहे थे।

आज रोगियों की इस पंक्ति में सब रोगी एक्स किरणों से चिकित्सा वाले ही थे। सुधार की गति बड़ी धीमी थी। वेरा कोर्निलएवना प्रत्येक रोगी के पास उसके बिस्तर पर बैठती, उसकी जांच करती और उसके बाद बातें करती।

वेरा कोर्निलएवना ने अहमद जान की त्वचा की जांच की उसके रोग के विवरण को पढ़ा और हाल की खून की रिपोर्ट भी देखी और वह बोली, "ठीक है, हम बहुत जल्दी ही एक्सरे से चिकित्सा बन्द कर देंगे। आप घर जा सकेंगे।"

अहमदजान ने अपने दांत चमकाये।

"आप कहां रहते हैं?"

"कारावेयर।"

"ठीक है, आप वहीं वापस जा सकेंगे।"

"क्या मैं ठीक हो गया हूं ?" अहमद जान वस्तुत: जगमगा रहा था।

"हां, आप ठीक हो गए हैं।"

"एक दम ?"

"हां फिलहाल पूरी तरह से।"

"तो तुम्हारा यह अभिप्राय है कि अब मुझे यहां वापस आने की कोई आवश्यकता नहीं होगी ?"

"आप छ: महीने बाद आयेंगे।"

"क्यों ? यदि मैं पूरी तरह से ठीक हो गया तो क्यों ?"

"हम आप को फिर देखना चाहेंगे।"

और इस प्रकार उसने पूरी पंक्ति के रोगियों को देखा और एक बार भी ओलेग की ओर नहीं मुड़ी। पूरे समय उसने अपनी पीठ ही उसकी तरफ रखी। बस जोया ने उसके कोने की ओर एक हल्की-सी नजर डाली।

वेरा कोर्निलएवना कुछ देर वादिम के पास रुकी रही। उसने उसकी टांग देखी और उसकी जांघों के जोड़ को दबा कर देखा। इसके बाद उसने उसके पेट की जांच की और डायाफ्राम की भी और यह पूछती गई कि उसे कैसा लग रहा है। उसने एक ऐसा सवाल भी पूछा जो वादिम के लिये नया था—विभिन्न प्रकार की खाने की चीजें, खाने के बाद उसे कैसी अनुभूति होती है ?

वादिम बहुत ध्यान से सोचने लगा। वह उससे बड़ी शान्ति से बातें कर रही थी और वह भी बड़ी शान्ति से उत्तर दे रहा था। उसे यह आशा नहीं थी कि वह डायाफ्राम के दाहिनी ओर भी दबा कर देखगी अथवा उससे खाने के बारे में सवाल करेगी ? क्या आप मेरे जिगर की जांच कर रहे हैं ? उसने पूछा।

उसे याद आया, मानो संयोग से ही, कि उसकी मां ने भी अस्पताल से जाते समय उसे यहीं छू कर, दबा कर देखा था।

"उसे सब कुछ जानने की जरूरत है, क्यों नहीं क्या ?" वेरा कोर्निलएवना ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। इन दिनों हमारे रोगी इतने अधिक शिक्षित हो गए हैं कि जल्दी ही हमें अपने सफेद कोट उनके हवाले करने होंगे।

वादिम कठोर भविष्यवाणी की मुद्रा में खड़ी डाक्टर को इस प्रकार देख रहा था मानो किसी चित्र में चित्रित लड़का हो। उसका सिर, जिस पर गहरे काले बाल थे सफेद तकिए पर टिका हुआ था और उसका रंग पीला पड़ गया था तथा चेहरे पर कुछ सूजन भी आ गई थी।

"मैं ठीक-ठीक नहीं जानता" उसने शान्ति से कहा। "मैंने इसके बारे में पढ़ा है। मैं जानता हूं यह कैसा होता है।" उसने डाक्टर पर कोई दबाव

डाले बिना ही कहा। इस बात पर जोर देते बिना ही कहा कि वह उसकी बात से सहमत हो और उसे तुरन्त सब बातें समझाये। लेकिन उसके शान्त व्यवहार से वेरा को बड़ी उलझन हुई। वह तुरन्त कोई बात न सोच सकी और उसके बिस्तर पर बैठी रही मानो वह उसे कोई नुकसान पहुंचाने की जिम्मेदार हो। वह सुन्दर कम उम्र और सम्भवतः बहुत अधिक प्रतिभा सम्पन्न था। उसे देख कर वेरा को एक ऐसे परिवार के एक युवक की याद हो आई, जिससे वह परिचित थी, जिसे बीमार होने पर मौत के मुंह में जाने में बड़ा लम्बा समय लगा और वह पूरे समय पूरी तरह होश में रहा जबकि कोई भी डाक्टर उसकी कोई भी मदद करने की स्थिति में नहीं था। उस समय वेरा आठवें दर्जे में ही पढ़ती थी। इसी युवक के कारण उसके विचार बदले और उसने इंजीनियर के स्थान पर एक डाक्टर बनने का निश्चय किया।

अब वह डाक्टर थी। लेकिन फिर भी वह उसकी कोई सहायता नहीं कर सकती थी।

यादिम की खिड़की की सिल पर एक जग रखा हुआ था, जिसमें चागा का गहरे कथई रंग का काढ़ा रखा हुआ था। दूसरे रोगी इस काढ़े को आकर बड़ी ईर्ष्या से देखते थे।

"क्या तुम इसे पी रहे हो?"

"हां, मैं पी रहा हूं।"

वेरा गैंगार्त को चागा पर कोई विश्वास नहीं था। उसने इसके बारे में कभी कुछ सुना ही नहीं था। उसे इससे पहले किसी ने इसके बारे में बताया नहीं था। फिर भी यह हानिरहित था। और यह आइसिक-कुल की जड़ियों की तरह नहीं था। और यदि किसी रोगी को उस पर विश्वास था तो इसका लाभ ही था।

"रेडियो सक्रिय सोना प्राप्त होने के बारे में क्या स्थिति है?" उसने पूछा।

"वह अभी भी वायदे किये जा रहे हैं। शायद अगले कुछ दिनों में वे हमें थोड़ा-सा सोना दे देंगे।" वह सदा की तरह अपने तीव्र और गम्भीर लहजे से बोल रहा था। "पर ऐसा लगता है कि वे लोग सीधे आपको यह नहीं देते उन्हें इसे सरकारी आदमियों के जरिये भेजना होता है। सुनो..." उसने बड़ी गम्भीरता से प्रश्नसूचक दृष्टि से गैंगार्त की आंखों में देखते हुए कहा। "यदि वे लोग दो सप्ताह के भीतर इसे लाते हैं तो क्या तब तक मेरे जिगर में दूसरे दौर की रसौलियां निकल आयेंगी। क्यों?"

"ओह, नहीं, रसौलियां क्यों निकल आयेंगी, नहीं, नहीं ऐसा नहीं होगा।" गैंगार्त ने उसे अत्यधिक आश्वस्त करने और जोश के साथ झूठ बोला। उसे लगा कि उसने वादिम को आश्वस्त कर लिया है।

"यदि तुम्हारे लिये यह बात जाननी जरूरी है तो सुनो दूसरे दौर की रसौलियां निकलने में महीनों का समय लगता है।"

(तो वह उसके डायाफ्राम की जांच क्यों कर रही थी ? वह यह क्यों पूछ रही थी कि भोजन के प्रति उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है ?)

वादिम के मन में उसकी बातों पर भरोसा कर लेने का भाव जगा।

यदि वह इन बातों पर विश्वास कर लेता है तो उसके लिये स्थिति आसान हो जाती है...

जिस समय वेरा गैंगार्त वादिम के बिस्तर पर बैठी हुई थी जोया ने कोई भी काम न होने के कारण ओलेग की ओर अपना सिर घुमाया क्योंकि वह इतना अधिक समीप था। उसने तिरछी नजर से खिड़की की सिल पर रखी उसकी किताब को देखा और फिर स्वयं ओलेग को। वह अपनी आंखों से उससे कोई बात पूछ रही थी। लेकिन यह समझ पाना असम्भव था कि यह बात क्या थी। थोड़ी-सी तनी हुई भवों के नीचे उसकी जिज्ञासापूर्ण आंखें सचमुच बड़ी सुन्दर लग रही थीं। लेकिन ओलेग बिना किसी अभिव्यक्ति अथवा उत्तर के उसकी ओर देखता रहा। राउंड के दौरान वह सदा एक ऐसा क्षण निकाल लेती थी जब केवल वही उसकी आंखें देख पाता और फिर ये आंखें उसे तार के संकेतों की तरह छोटे-छोटे, सुखद स्वागत संदेश भेजने लगतीं। लेकिन इधर ये संकेत बहुत क्षीण हो गए थे और इनका स्थान कुछ अन्य सन्देशों ने ले लिया था।

ओलेग जोया से उन कुछ दिनों के कारण नाराज था जब उसने जोया से समर्पण करने की याचना की थी लेकिन वह राजी नहीं हुई थी।

पिछली रातों को भी, जब वह ड्यूटी पर थी, उसने सदा की तरह अपने होठों और अपने हाथों की क्रियाओं को फिर दोहरामा था लेकिन उसे पहले जैसी अनुभूति नहीं हुई थी। ये क्रियाएं ऐसी हो गई थीं मानो जिन्हें बलपूर्वक किया जा रहा हो। इसके बाद वह जब कभी भी ड्यूटी पर रही वह उससे मिलने तक नहीं गया और इसके बजाय उसने सोना पसन्द किया। अब ये सब बातें अतीत का हिस्सा बन चुकी थीं और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आंखों के इस खेल का क्या अर्थ है। उसकी शांत और स्थिर दृष्टि का अभिप्राय यह दर्शाना था कि उसकी समझ में कुछ नहीं आया। वह स्वयं को ऐसे खेल के लिये अधिक उम्र का समझता था।

उसने स्वयं को अपनी पूरी शारीरिक परीक्षा के लिए तैयार किया था जैसा कि ऐसे दिन सामान्यतया होता था। उसने अपनी जाकट उतार दी थी और अपनी बनियान उतारने के लिए भी तैयार था।

वेरा कोर्निलएवना अब तक जातसिरको की जांच कर चुकी थी। वह अपने हाथ पोंछ रही थी और उसने कोस्तोग्लोतोव की ओर अपना मुंह

घुमाया। लेकिन वह उसकी ओर देखकर मुस्कुराई नहीं और न ही उसने उससे अपना हाल बताने को कहा और न ही वह उसके बिस्तर पर बैठी। उसने बस कुछ क्षणों के लिये उसकी ओर देखा। केवल यह दर्शाने के लिए कि अब उसकी बारी है। लेकिन जैसे ही वेरा की आंखें उसके ऊपर से हटीं कोस्तोग्लोतोव को यह बात स्पष्ट हो गई कि उनमें कितना अलगाव आ गया था। जिस दिन उसे खून चढ़ाया गया था उस दिन इन आंखों ने जो प्रकाश और हर्ष विकरित किया था वह अन्तर्धान हो चुका था। उस दिन से पहले की स्नेहपूर्ण मित्रता और चिन्तायुक्त सहानुभूति भी गायब हो चुकी थी। अब ये आंखें खाली हो गई थीं।

"कोस्तोग्लोतोव," गैंगार्त ने कहा और वह उसकी ओर कम तथा रूसानोव की ओर अधिक देख रही थी। "वही इलाज, लेकिन एक विचित्र बात है..." वह मुड़ी और उसने जोया की ओर देखा। "हारमोन चिकित्सा के प्रति, प्रतिक्रिया कुछ कमजोर है।"

जोया ने अपने कन्धे हिलाये, "शायद यह उसके शरीर की अपनी विलक्षणता हो," वह बोली।

जोया ने, जो एक वर्ष बाद डाक्टर के रूप में प्रमाणपत्र हासिल करने जा रही थी सम्भवतः यह सोचा कि डाक्टर गैंगार्त एक सहयोगी के रूप में उसकी सलाह मांग रही है। लेकिन गैंगार्त ने उसके सुझाव की उपेक्षा कर दी। "उसे कितनी नियमितता से इन्जेक्शन लग रहे हैं।" उसने एक ऐसे स्वर में कहा जिससे यह स्पष्ट था कि यह परामर्श नहीं है।

जोया तुरन्त ताड़ गई कि असली बात क्या है। उसने अपने सिर को झटका दिया और डाक्टर की ओर अपनी आंखों को थोड़ा-सा फैलाते हुए देखा। उसकी आंखें हल्के पीले रंग की कथई आंखें थीं और बाहर को उभरी हुई थीं। उनमें सच्चा आश्चर्य का भाव भरा हुआ था।

"इस सम्बन्ध में क्या सन्देह हो सकता है।" उसने पूछा। "जो भी दवाएं आदि निर्धारित की जाती हैं उन्हें सदा..." बस एक कदम और आगे बढ़ जाने पर वह स्वयं को वस्तुतः अपमानित पाती। "कम-से-कम जब मैं ड्यूटी पर होती हूं यही होता है।"

स्पष्ट था कि जब दूसरी नर्सें ड्यूटी पर होती थीं तब क्या होता था यह सवाल डाक्टर उससे नहीं पूछ सकती थी। जोया ने कम-से-कम शब्द बहुत तेजी से कहे थे और उसकी अस्पष्टतापूर्ण जल्दबाजी ने गैंगार्त को इस बात से आश्वस्त कर दिया था कि जोया झूठ बोलती है। यदि इन्जेक्शनों का पूरा असर नहीं हो रहा है तो अवश्य ही उन्हें लगाने में असफल रही है। यह काम मारिया नहीं कर सकती। यह ओलम्पियादा व्लादि स्लावोवना भी नहीं हो सकती और वह यह भी जानती थी कि रात की ड्यूटी के समय जोया...

जोया की नजरें जो प्रतिवाद के लिये तत्पर थीं इतनी दृढ़ता से वेरा कोर्निलएवना पर जमीं हुई थीं कि उसने अनुभव किया कि उसके लिये कुछ भी प्रमाणित कर पाना असम्भव होगा और जोया भी यह बात जानती है। जोया का प्रतिवाद और उसका संकल्प इतना दृढ़ था कि वेरा कोर्निलएवना उसका सामना नहीं करती थी। उसने अपनी आंखें नीचे झुका लीं।

वह उस समय सदा अपनी आंखें नीचे झुका लेती थी जब वह किसी के बारे में असुखद बातें सोचती थी।

उसने एक दोषी की तरह अपनी आंखें नीचे झुका लीं जबकि जोया जो लड़ाई जीत चुकी थी, उसकी ओर तीखी अपमानजनक नजरों से देखती रही।

जोया लड़ाई जीत गई थी। लेकिन उसने तुरन्त ही यह अनुभव किया कि उसे ऐसी जोखिम नहीं उठानी चाहिये थी। दोन्तसोवा स्वयं जांच शुरू कर सकती है और यदि एक भी रोगी, उदाहरण के लिए रूसानोव इस बात की पुष्टि कर देता है कि वह कोस्तोग्लोतोव को इन्जेक्शन नहीं लगाती थी तो वह आसानी से बरखास्त की जा सकती थी और उसके कालेज को बुरी रिपोर्ट भेजीजा सकती थी।

यह एक जोखिम थी और इसे उठाने की क्या तुक थी ? यह एक खेल था जो वस्तुतः समाप्त हो चुका था। अब उसमें और कोई चाल चलनी शेष नहीं रह गई थी, अब पहिया घूमने की और कोई गुंजाइश नहीं थी। खेल की परिधि से बाहर जाना वस्तुतः हास्यास्पद होता। उसके लिये उस मूर्खतापूर्ण उथ तेरेक में कोई काम करना और एक ऐसे आदमी से अपनी जिन्दगी को जोड़ देना जो...नहीं इसका सवाल ही नहीं उठता यह बात एक सम्भावना के रूप में भी उसके दिमाग में नहीं थी। जोया ने ओलेग को ऊपर से नीचे तक देखा। और इस दृष्टि से उसने अपना वह समझौता तोड़ दिया जो उसने इंजेक्शन न देने के बारे में किया था।

अब ओलेग यह स्पष्ट रूप से देख रहा था कि वेरा उसकी ओर देखना तक नहीं चाहती। लेकिन उसकी समझ में इसका कारण नहीं आ रहा था। वह यह भी नहीं समझ पा रहा था कि यह सब अचानक कैसे हुआ। जहां तक उसका सम्बन्ध था, वह ऐसी कोई बात नहीं जानता था, जिससे इस परिवर्तन का स्पष्टीकरण दिया जा सके। यह सच है कि कल लॉबी में वह उसे देख कर दूसरी ओर मुड़ गई थी, लेकिन उसने इस बात को एक संयोग भर समझा था।

इन औरतों का मिजाज भी कैसा है। वह यह भूल चुका था कि औरतें कैसी होती हैं। ये सब एक-सी ही होती हैं : बस जरा-सी बात हुई और तुनक गईं। केवल पुरुषों से ही कोई पुरुष चिरस्थायी, जहां तक कि सामान्य सम्बन्ध

रख सकता है।

अब जोया भी उस पर नाराजी प्रकट कर रही थी। शिकायत के रूप में अपनी पलकें झपक रही थी। वह घबरा गई थी। यदि इंजेक्शन फिर शुरू होते हैं तो उनके बीच रह ही क्या जायेगा, उनका फिर गोपनीय रहस्य ही क्या होगा? तो आखिर गैंगार्त क्या चाहती थी? क्या वह यह चाहती थी कि उसे बिना किसी नागा के हर इंजेक्शन लगाया जाये? ये इंजेक्शन उसके लिये इतने महत्वपूर्ण क्यों थे? उसकी सहानुभूति ठीक है, सही थी पर क्या यह एक बहुत बड़ी कीमत नहीं है? नाश हो उसका।

इस बीच वेरा कोर्निलएवना रूसानोव से बात कर रही थी। उसका स्वर सहानुभूतिपूर्ण और विनम्रतापूर्ण था। यह उसके एकदम विपरीत था जिस तरह से बड़ी तीव्रता और जल्दबाजी में वह ओलेग से बोली थी। "हमने आपको अब इन इंजेक्शनों का आदी बना लिया" वह कह रही थी। "अब आप उन्हें इतनी अच्छी तरह से लगवा रहे हैं कि उन्हें रोकना नहीं चाहेंगे।" उसने मजाक करते हुए कहा।

(ठीक है चाहो तो उस हरामजादे के जूते चाटो। मुझे क्या परवाह)

डाक्टर के अपने पास आने की प्रतीक्षा करते समय रूसानोव ने गैंगार्त जोया की बातें सुनीं और उनकी झड़प देखी थी। ओलेग का पड़ौसी होने के नाते वह यह अच्छी तरह से जानता था कि यह युवती अपने प्रेमी की खातिर झूठ बोल रही है। वह जानता था कि उसका किस 'हड्डीचूस' से समझौता है। यदि इस बात का सम्बन्ध केवल 'हड्डीचूस' से ही होता और अन्य किसी से नहीं तो सम्भवतः पावेल निकोलाएविच डाक्टरों से कुछ शब्द कह देता—सम्भवतः राउंड के समय सब लोगों के सामने नहीं, डाक्टरों का कमरा इस काम के लिये बेहतर स्थान होगा। लेकिन उसमें जोया के खिलाफ यह करने का साहस नहीं था। यह बात अजीब थी लेकिन पिछले एक महीने में उसने यह देख-समझ लिया था कि सर्वाधिक महत्वहीन नर्स भी उसे बेहद असुविधा पहुंचा कर अपना बदला ले सकती है। यहां अस्पताल में इनकी अपनी कमान व्यवस्था है और जब तक वह अस्पताल में है तब तक उसे किसी नर्स तक से किसी ऐसी बात के बारे में झगड़ा मोल नहीं लेना चाहिये जिससे स्वयं उसका सम्बन्ध नहीं है।

वही 'हड्डीचूस' इतना मूर्ख है इन्जैक्शन लगाने से इन्कार करता है तो ठीक है वह इसका परिणाम खुद भोगेगा। ठीक है उसकी हालत खराब होने दो उसे मर जाने दो उसे क्या फर्क पड़ता है।

जहाँ तक उसका अपना सम्बन्ध था, रूसानोव अब यह निश्चयपूर्वक जानता था कि वह मरेगा नहीं। उसकी रसौली तेजी से घट रही थी और हर रोज वह डाक्टरों के राउण्ड की प्रतीक्षा करता था। जबकि उसे डाक्टरों से इस बात की पुष्टि सुनने को मिलती थी। आज वेरा कोर्निलएवना

ने यह पुष्टि की थी कि रसौली अच्छे ढंग से ठीक होती जा रही है और जहां तक सिर दर्द और कमजोरी का सवाल है यथा समय उनसे छुटकारा मिल जाएगा। वह उसे और रक्त भी चढ़ायेगी।

अब पावेल निकोलाएविच उन लोगों की बात को बहुत अधिक महत्व देता था जिन्होंने उसकी रसौली को शुरू से ही देखा था। यदि वह 'हड्डीचूस' की गिनती न करे तो इन पुराने रोगियों में केवल अहमद जान ही शेष रह जाता था। लेकिन अभी कुछ दिन पहले ही फेदेरो सर्जीकल वार्ड से लौट आया था। पोदुएव की गर्दन की कुछ सप्ताह पहले की स्थिति के विपरीत अब उसकी गर्दन बेहतर गति से ठीक होती जा रही थी और वे पट्टियों को धीरे-धीरे कम करते जा रहे थे। फेदेरो को अब चाली का बिस्तर दिया गया था और इस प्रकार वह पावेल निकोलाएविच का दूसरा पड़ौसी बन गया था।

पर वैसे रूसानोव का दो निष्कासित व्यक्तियों के बीच लेटना एक अपमानजनक बात थी और यह भाग्य का बड़ा भारी व्यंग्य था। यदि स्थिति वही होती जो उसके अस्पताल में प्रवेश करने से पहले थी तो वह सीधा अधिकारियों के पास जाता और सिद्धान्त के रूप में यह प्रशन उठाता—क्या प्रमुख अधिकारियों को संदेहास्पद और सामाजिक दृष्टि से हानिप्रद तत्वों के साथ इस प्रकार रखा जा सकता है? लेकिन पांच सप्ताह तक उसकी रसौली उसे कांटे में फंसी मछली की तरह घसीटती रही थी और वह अधिक सहृदय अथवा अधिक सरल हो गया था। वह सदा 'हड्डीचूस' की ओर अपनी पीठ घुमा सकता था विशेष कर अब क्योंकि वह अधिक शोर नहीं मचाता था और प्रायः बिना हिले-डुले चुपचाप लेटा रहता था। जहां तक फेदेरो का सवाल था, यदि उदारतापूर्ण दृष्टि अपनाई जाये तो यह कहा जा सकता है कि वह एक सहीय पड़ौसी था। पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह इस बात से बड़ा प्रसन्न था कि पावेल निकोलाएविच की रसौली किस तरह घट गई है और पहले से तिहाई रह गई है। पावेल निकोलाएविच के अनुरोध पर वह बार-बार इसकी जांच करता और इसका मूल्यांकन और पुन:मूल्यांकन करता। वह सब्र वाला आदमी था, कभी भी उद्दण्डता नहीं दिखाता था और पावेल निकोलाए-विच जो कुछ भी कहना चाहता था उसे सुनने को तैयार रहता था। वह कभी भी प्रतिवाद नहीं करता था। स्पष्ट है कि पावेल निकोलाएविच एक ऐसे स्थान पर अपने काम के बारे में विस्तार से बात नहीं कर सकता था। लेकिन क्या कोई ऐसा कारण था कि वह अपने फ्लैट का विस्तृत विवरण उसे न बताये, जिसे वह सचमुच बेहद ईमानदारी से प्यार करता था और जिसमें वह अब कुछ ही समय बाद वापस लौटने जा रहा था? इस सम्बन्ध में कोई गोपनीयता नहीं थी। और फेदेरो को भी यह सुनना पसन्द आता था कि लोग कितने अच्छे ढंग से रह सकते हैं (एक दिन हर व्यक्ति इस प्रकार रह सकेगा)। ४०

वर्ष की उम्र के बाद एक व्यक्ति का फ्लैट इस बात का पर्याप्त अच्छा संकेत देता है कि वह क्या है और वह किस वस्तु के योग्य रहा। अतः पावेल निकोलाएविच ने उसे विभिन्न चरणों में यह बताया कि किस प्रकार पहले कमरे की व्यवस्था की गई है और उसमें कैसा फर्नीचर लगा है। इसके बाद दूसरे और फिर तीसरे कमरे की बारी आई और फिर उसने यह बताया कि फ्लैट में किस किस्म की बालकनी है और बालकनी को किस प्रकार सजाया संवारा गया है। पावेल निकोलाएविच ने जिसकी स्मृति अच्छी थी, बड़े स्पष्ट रूप से प्रत्येक सोफा और छोटी अलमारी का विवरण दिया। उन्हें कहां और कब खरीदा गया था, उसने कितना दाम चुकाया था और इनकी क्या विशेषताएं थीं। जहाँ तक उसके बाथरूम का सम्बन्ध था उसने इसका विवरण और अधिक विस्तार से दिया था। उसने पेतेरोव को बताया था कि उसने फर्श पर कैसी टाइलें लगवाई हैं और दीवारों पर कैसी। उसने चीनी मिट्टी के आधार का भी विवरण प्रस्तुत किया साबुन रखने के लिए नहाने के टब में बनी छोटी सी साबुनदानी, सिर टिकाने की गोलाकार जगह, गर्म पानी के नल, फुहार के नियन्त्रण की व्यवस्था और तौलिया टांगने की रेलिंग के बारे में भी बताया। यह मामूली महत्वपूर्ण चीजें नहीं थीं। ये चीजें एक व्यक्ति के दैनिक जीवन और व्यक्तित्व का अंग थीं और "अस्तित्व चेतना का निर्धारण करता है।"[1] एक व्यक्ति को सभी किस्म की चेतना देने के लिए उसका जीवन अच्छा और सुखद होना चाहिये। गोर्की के शब्दों में, "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है।"

रंगहीन और विचित्र बालों वाला फेदेरो रूसानोव की कहानियां सुनता रहा। अत्यधिक प्रशंसा के भाव से उसका मुंह खुला हुआ था और एक बार भी उसने कोई आपत्ति नहीं उठाई, कोई विरोध प्रकट नहीं किया कभी-कभी तो वह उस सीमा तक अपना सिर सहमति के रूप में हिलाता जाता, जिस सीमा तक उसकी पट्टियों से बंधी गर्दन हिलाने की अनुमति देती।

यद्यपि वह एक जर्मन और निष्कासित था फिर भी बड़ा शान्त था और उसके बारे में यह कहा जा सकता है कि वह पर्याप्त भद्र पुरुष था। उसके बराबर के बिस्तर पर लेटने में कोई हानि नहीं थी। उसके साथ हेलमेल हो सकता था। तकनीकी दृष्टि से वह एक कम्युनिस्ट तक था। पावेल निकोलाए-विच ने इस बात का अपने सदा जैसे अत्यधिक स्पष्ट तरीके से स्पष्टीकरण दिया। "फेदेरो" वह बोला, "तुम यह अनुभव करते हो कि राज्य के लिए तुम्हें निष्कासन में भेजना आवश्यक था ? तुम यह बात समझते हो न ?"

---

१. कार्ल मार्क्स का यह कथन कम्युनिस्ट क्षेत्रों में एक कहावत बन गया है (अनुवादक की टिप्पणी)

"हां मैं समझता हूँ मैं समझता हूँ," फेदेरो ने अपनी बेलचक गर्दन को हिलाते हुए कहा।

"स्थिति का सामना करने का और कोई तरीका नहीं था।"

"ठीक है, ठीक है।"

"यह आवश्यक है कि आपको निष्कासन सहित समस्त सरकारी कार्रवाइयों के पीछे जो कारण होते हैं उन्हें स्पष्ट रूप से समझना चाहिये। आपको एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए। आपको पार्टी के भीतर बने रहने की अनुमति दी गई।"

"बिल्कुल सही है! मैं तो..."

"और जहां तक पार्टी में कुछ खास पदों पर नियुक्ति का सवाल है निष्कासन से पहले तुम्हारी नियुक्ति ऐसे किसी भी पद पर नहीं हुई थी क्यों नहीं न।"

"नहीं मैं नियुक्त नहीं हुआ था।"

"पूरे समय तुम एक साधारण कार्यकर्ता ही रहे?"

"मैं एक मकैनिक का काम करता रहा। पूरे समय।"

"एक समय मैं भी एक मामूली सा श्रमिक था। देखो मैं कैसे आगे बढ़ा।"

इन लोगों ने बड़े विस्तार से अपने बच्चों के बारे में बातचीत की। यह पता चला कि फेदेरो की पुत्री हेनेरीता क्षेत्रीय शिक्षक शिक्षण कालेज में दूसरे वर्ष की छात्रा है।

"जरा इस बात की कल्पना कीजिए?" पावेल निकोलाएविच ने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा।

इस बात ने वस्तुत: उसका हृदय छू लिया था। "तुम्हें इस बात की अवश्य प्रशंसा करनी चाहिये। देखो, एक तुम हो, निष्कासित व्यक्ति, और तुम्हारी पुत्री एक कालेज से डिग्री प्राप्त करने जा रही है। जारों के जमाने में रूस में कौन व्यक्ति ऐसी किसी बात की कल्पना कर सकता था? यहां आपके ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।"

यहां आकर फ्रेड्रिच जैकोबविच ने पहली बार उसकी किसी बात का विरोध किया। "(पाबन्दियां केवल इसी साल उठाई गई थीं।)" "इससे पहले हमें कोमिन्दातुरा से अनुमति पत्र प्राप्त करने पड़ते थे और सब कालेज उसके प्रार्थना पत्र वापस भेज देते थे और यह कहा जाता था कि उसने प्रवेश परीक्षा पास नहीं की है। हम इस बात का कैसे पता लगा सकते थे कि वस्तुत: वह पास नहीं हो पाई थी?"

"लेकिन तुमने अभी कहा है कि तुम्हारी लड़की दूसरे वर्ष में है?"

"हां यह बात है कि वह बास्केट बाल बहुत अच्छा खेलती है। यही

कारण था कि उन्होंने उसे भर्ती कर लिया।"

"उन्होंने उसे चाहे किसी भी कारण से भर्ती क्यों न किया हो पर फेदेरो व्यक्ति को अपने मूल्यांकन और निर्णय में न्यायोचित दृष्टिकोण ही अपनाना चाहिए। इस वर्ष से तो कोई भी पाबन्दी नहीं रह गई हैं।"

"आखिरकार फेदेरो एक कृषि श्रमिक रहा था और रूसानोव जैसे एक कारखाना श्रमिक को यह बड़ा स्वाभाविक लग रहा था कि उसे अपने संरक्षण में ले ले।"[1]

"जनवरी में पार्टी के महाधिवेशन के निर्णयों के बाद आप लोगों के लिए स्थिति और बदतर हो जायेगी।" पावेल निकोलाएविच ने बड़े कृपाभाव से ये बातें समझाते हुए कहा।

"हां यह तो ठीक है।"

"मुख्य कड़ी मशीनी ट्रैक्टरों के केन्द्र के प्रत्येक क्षेत्र में प्रशिक्षकों की टोलियों की नियुक्ति की है।[2] हर बात इसी पर निर्भर करती है।"

"हां, हां।"

लेकिन "हां, हां," कहना ही काफी नहीं था। उसे यह बात समझनी भी थी। अतः पावेल निकोलाएविच ने अपने इस विनम्र पड़ोसी को बड़े विस्तार से यह समझाया कि मशीनी ट्रैक्टर केन्द्र, प्रशिक्षकों की टोलियों की नियुक्ति के बाद किस प्रकार जबर्दस्त किलों में परिवर्तित हो जायेंगे। उसने युवक कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा जारी अपील पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। यह अपील मक्का की खेती के बारे में जारी की गई थी और बताया कि इस वर्ष युवकों से क्या आशा की जा रही है कि वे मक्का की समस्या का मुकाबला करेंगे और इस कार्रवाई से इस प्रकार कृषि का स्वरूप ही बदल जायेगा।[3] कल के अखबारों में उन लोगों ने कृषि आयोजन

---

१. अधिकृत सोवियत विचारधारा के अनुसार श्रमिक वर्ग अन्य समस्त सामाजिक वर्गों का स्वाभाविक नेता होता है। रूसानोव, जो एक 'श्रमिक' है यह स्वाभाविक बात समझता है कि फेदेरो को, 'जो एक किसान है', अपने संरक्षण में ले ले। (अनुवादक की टिप्पणी)

२. उस समय मशीनी ट्रैक्टर केन्द्रों का कार्य सामूहिक खेतों को खेती की मशीनें काम के लिए देना था। इनकी व्यवस्था कृषि बन्दोबस्त में निर्णायक स्थान रखती थी। यहाँ इन केन्द्रों के असंख्य बार पुनर्गठन की ओर संकेत किया गया है। (अनुवादक की टिप्पणी)

३. अभी हाल में ही ख्रुश्चेव पार्टी के नेता बने थे। उनका विश्वास था कि उत्तर रूस में बड़े पैमाने पर मक्का की खेती से अनाज और चारे की समस्या हल हो जायेगी। उन्होंने युवक कम्युनिस्टों का आह्वान करते हुए कहा था कि उन्हें उन लोगों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए जिनका विश्वास था कि उत्तर रूस में मक्का नहीं उगाई जा सकती। पर उनकी इस योजना को जलवायु ने पराजित कर दिया था। (अनुवादक की टिप्पणी)।

के बुनियादी मुद्दों में परिवर्तन के समाचार भी पढ़े थे। वे लोग इस विषय पर अनेक बार चर्चा करने की स्थिति में आ गए थे।

सामान्यतया यह कहा जा सकता है कि फेदेरो एक साकारात्मक किस्म का पड़ोसी सिद्ध हुआ। कभी-कभी पावेल निकोलाएविच उसे अखबार से ऐसे समाचार पढ़ कर सुनाता जिन्हें वह स्वयं अस्पताल के इस अवकाश के अभाव में कभी नहीं पढ़ सकता था। एक वक्तव्य इस बारे में था कि आस्ट्रिया से एक शांति संधि जर्मनी से शांति संधि के बिना क्यों नहीं की जा सकती थी। यह बुडापेस्ट में राकोसी के भाषण का अंश था। यह कुख्यात पेरिस करारों के खिलाफ संघर्ष का नया दौर था। और एक लेख पश्चिम जर्मनी के मुकदमों की अपर्याप्तता और ढील के बारे में था। यह मुकदमे यातना शिविरों का संचालन करने वाले लोगों के खिलाफ चलाये जा रहे थे। कभी-कभी वह फेदेरो को अपने घर से आई हुई खाने की चीजें भी देता था। जब ये चीजें उसके लिये फालतू होतीं तभी वह यह उदारता दिखाता था। अथबा कभी-कभी अस्पताल से मिलने वाले खाने का कुछ हिस्सा उसे दे देता था।

चाहे ये लोग कितने भी धीरे-धीरे बातें करते। इस कारण से कुछ तनाव का वातावरण बना होता कि शुलुबिन निरन्तर उनका वार्तालाप सुनता रहता है। यह, गिद्ध, उल्लू फेदेरो के बराबर के बिस्तर पर मूक और गतिहीन बैठा रहता था। जब से यह आदमी वार्ड में आया था उसकी उपस्थिति को एक क्षण के लिए भी भुला पाना सम्भव नहीं था। वह निरन्तर अपनी बड़ी-बड़ी गोल मटोल आंखों से निरन्तर आपकी ओर देखता रहता था और लगता था कि मानो वह प्रत्येक शब्द पूरी स्पष्टता से सुन रहा हो और जब वह पलक झपकाता तो लगता कि यह उसकी असहमति का चिन्ह है। पावेल निकोलाएविच को उसकी उपस्थिति निरन्तर बने रहने वाले दबाव जैसी महसूस होती थी। उसने उससे बातचीत करने और यह पता लगाने की कोशिश की कि उसके मन में क्या है अथवा शारीरिक दृष्टि से ही उसमें क्या खामी है। लेकिन शुलुबिन अत्यधिक निराशा भरे दो-चार शब्दों के अलावा कुछ नहीं बोलता। उसकी रसौली के बारे में भी बातचीच करने का कोई कारण नहीं था।

और जब वह बैठता था तो अन्य लोगों की तरह उसकी स्थिति सामान्य और आरामदेह नहीं होती थी। वह इस तरह तनावग्रस्त रहता मानो उसके लिए बैठना बहुत कष्टप्रद और कठिन बात हो। लगता था कि वह निरन्तर सतर्कता की स्थिति में रहता है और बेहद तनाव से बैठने का उसका तरीका यह दर्शाता था। कभी-कभी वह बैठे-बैठे ऊब जाता था और उठ खड़ा होता था। लेकिन उसके लिए चलना कष्टप्रद होता था। कुछ देर के लिए वह इधर-उधर लड़खड़ाता हुआ डग भरता और फिर एकदम सीधा, निश्चल खड़ा हो जाता और लगातार आध घंटे तक इसी प्रकार खड़ा रहता।

रूसानोव को वह बड़ा विचित्र और उदासी में डाल देने वाला व्यक्ति भी दिखाई पड़ता था। इसके अलावा वह अपने बिस्तर के बराबर ही नहीं खड़ा रह सकता था क्योंकि इस प्रकार वार्ड का दरवाजा ही रुक जाता। वह बिस्तरों की कतारों के बीच के रास्ते में भी नहीं खड़ा हो सकता था क्योंकि इससे आने जाने वालों को रुकावट होती। अतः उसने कोस्तोग्लोतोव और जात सिरको की खिड़कियों के बीच की जगह चुनी थी। यह उसका प्रिय स्थान बन गया था। वह वहां एक शत्रु के सैनिक की तरह निरन्तर निश्चल खड़ा रहता और पावेल निकोलाएविच जो कुछ भी करता जो कुछ खाता अथवा कहता उसे निरंतर देखता रहता। वह वहां अनन्त समय तक खड़ा हुआ दिखाई पड़ता। उसकी पीठ दीवार से करीब-करीब सटी हुई होती।

डाक्टरों के राउंड के बाद आज उसने फिर यह जगह संभाल ली थी। और ओलेग तथा वादिम की नजरों की मार के बीच खड़ा हुआ था। वह दीवार के बीच लगी किसी मूर्ति जैसा दिखाई पड़ रहा था।

ओलेग और वादिम के बिस्तरे इस प्रकार लगे हुए थे कि उनकी नजरें अक्सर मिल जाती थीं। यद्यपि वे एक दूसरे से अधिक बातचीत नहीं करते थे। पहली बात तो यह थी कि इन दोनों का उत्साह टूटा हुआ था और निरर्थक बातों के लिए उनमें पर्याप्त शक्ति नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि वादिम ने कुछ सप्ताह पहले यह कहकर ऐसी प्रत्येक संभावना को समाप्त कर दिया था, "कामरेडो, पानी का एक छोटा-सा गिलास गरम करने के लिए जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है वह दो हजार वर्ष तक धीमे स्वर में बात करने से अथवा ७५ वर्ष तक जोर-जोर से चिल्ला कर बोलने में खर्च होने वाली ऊर्जा के समान होती है। और इतनी ऊर्जा तभी पर्याप्त होती है जब ताप गिलास में ही बना रहे। गप्पें लगाना कोई उपयोगी काम नहीं है?"

इन दोनों ने ऐसी बातें कही थीं, जिनसे दूसरा रुष्ट हुआ था। संभवतः ये बातें अनजाने में ही कही गई थीं। वादिम ने ओलेग से कहा था, "तुम्हें लड़ना चाहिए था। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे जैसे आदमी क्यों नहीं लड़े?" (उसका कहना सही था। लेकिन अभी तक ओलेग में अपना मुंह खोलने और यह बताने का साहस नहीं था कि वे लोग किस प्रकार लड़े थे।) ओलेग ने वादिम से कहा था, "आखिर वे किस काम के लिए सोना बचा रहे हैं? तुम्हारे पिता ने अपने देश के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग किया। वे तुम्हें यह सोचने क्यों नहीं देते?"

और उसका कहना सही भी था। यह विचार स्वयं अपने आप से यह सवाल पूछने लगा था। लेकिन एक पूरी तरह अजनबी आदमी के ये सवाल पूछने से उसे बुरा लगा। केवल एक महीने पहले ही उसने अनुभव किया था कि उसकी मां का इस प्रकार सिफारिशें करना गलत बात है उसे लगा था

कि उसके पिता की स्तुति का लाभ उठाना बुरी बात थी। लेकिन अब जबकि फंदा उसकी टांग में बुरी तरह फंस चुका था वह अपनी मां के यह अच्छा समाचार देने वाले तार की प्रतीक्षा में बुरी तरह छटपटा रहा था। "काश मम्मी को यह सोना मिल पाता" उसने अपने मन में सोचा। यह सच था कि उसे यह बात उचित नहीं लग रही थी कि उसके प्राण केवल इसलिए बचाये जायें कि उसके पिता ने कुछ उपलब्धियां की थीं। यह बात कहीं अधिक उचित होती कि स्वयं उसकी प्रतिभा के कारण उसके प्राणों को बचाया जाता। दुर्भाग्य-वश जिन आदमियों के हाथ में सोना देने का अधिकार था उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। यह अत्यधिक कष्टप्रद और उत्तरदायित्वपूर्ण स्थिति थी कि वह अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न हो और अभी तक संसार को इसका परिचय दे पाने में सफल न हुआ हो। उसके लिए अपनी प्रतिभा के उजागर होने और पूरे संसार पर प्रकट होने से पहले मर जाना एक सामान्य व्यक्ति की मृत्यु से कहीं अधिक दुःखद घटना थी। वस्तुत: वार्ड में मौजूद किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु से कहीं अधिक दुखद थी।

वादिम भयंकर एकाकीपन का अनुभव करता था। यह स्थिति निरन्तर उसे सालती रहती थी। इसका कारण यह नहीं था कि कोई भी व्यक्ति उससे मिलने नहीं आता था अथवा उसके पास उसकी मां या गोलका नहीं थी। इसका कारण यह था कि न तो वार्ड के रोगी ही और न ही वे लोग जो उसकी चिकित्सा कर रहे थे, और न ही वे अधिकारी जिनके हाथों में उसकी मुक्ति की कुंजी थी, यह जानते थे कि उसके लिए अन्य लोगों की तुलना में जीवित रहना कितना अधिक महत्वपूर्ण था।

आशा और निराशा का यह द्वन्द्व उसके मन में इतनी तीव्रता से चलता रहता था कि उसने देखा कि अब वह जो पढ़ता रहता था उसका अर्थ उसकी समझ में अच्छी तरह नहीं आ पाता था। वह एक पूरा पृष्ठ पढ़ जाता और फिर यह अनुभव करता कि उसकी समझ में कुछ नहीं आया है। वह भारी हो गया था। वह इस प्रकार दूसरे लोगों के विचारों के दुर्गम शिखरों पर नहीं चढ़ पाता था, जिस प्रकार एक बकरी पहाड़ के ऊपर चढ़ जाती है। वह एक पुस्तक के ऊपर नि:स्तबध-सा झुका हुआ था। बाहर से यह दिखाई पड़ता मानो वह पढ़ रहा हो पर वास्तव में वह पढ़ नहीं रहा था।

उसकी टांग एक फंदे में फंस चुकी थी और इसके साथ उसका पूरा जीवन भी।

तो वह वहां बैठा रहता, जबकि उसके ऊपर दोनों खिड़कियों के बीच की जगह में स्वयं अपनी पीड़ा और अपने मौन से ग्रस्त शुलुबिन खड़ा रहता। कोस्तोग्लोतोव भी चुपचाप अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था और उसका सिर एक ओर नीचे लटक रहा था।

परियों की कहानी की तीन बत्तखों की तरह वे युगों तक मौन रह सकते थे।

सामान्य तथा इन तीनों में शुलुबिन ही सबसे अधिक और निरन्तर मौन रहता था। लेकिन अब अचानक उसी ने वादिम से यह सवाल पूछा, "क्या तुम्हें निश्चय है कि जिस चीज के इन्तजार में हो वही सही है? क्या तुम्हें सचमुच वह चीज चाहिए? वही क्यों? कोई और चीज क्यों नहीं?"

वादिम ने अपना सिर उठाया, उसकी गहरे रंग की प्रायः काली आंखों ने उस वृद्ध की ओर देखा मानो उसे यह विश्वास ही न रहा हो कि वह इतना लम्बा प्रश्न पूछ सकता था। अथवा यह भी हो सकता है कि उसकी आंखों से स्वयं इस प्रश्न के कारण ही आश्चर्य प्रकट हो रहा हो।

इस बात का कोई संकेत नहीं था कि यह अत्यधिक मनमाना सवाल पूछा ही नहीं गया था। अथवा यह भी कि इस वृद्ध ने ही यह सवाल पूछा था।

इस वृद्ध की लटकती हुई और लाल आंखें वादिम की ओर उत्सुकता से देख रही थीं और बीच-बीच में वह पलक भी झपकता था।

उसे इसका जवाब देना था। वह जानता था कि किस प्रकार जवाब दिया जा सकता है। लेकिन किसी कारण से उसे यह नहीं लगा कि वह सदा की तरह तुरन्त मुंह तोड़ जवाब दे। उसने शांतिपूर्वक जवाब दिया। उसी सार्थक स्वर में जिसका इस्तेमाल उस वृद्ध ने किया था। "यह···यह दिलचस्प बात है। यह उन सब बातों में सबसे अधिक दिलचस्प है, जो मैं जानता हूँ।"

दर्द के बावजूद, भयंकर पीड़ा से ग्रस्त अपनी टांग के बावजूद, इस तथ्य के बावजूद कि वे आठ सांघातिक महीने कितनी तेजी से गुजर रहे थे। वादिम को आज भी इस बात से सुख मिलता था कि वह अपने आपको नियन्त्रण में रखता है। वह इस प्रकार आचरण करता है कि मानो जरा-सा भी खतरा न हो मानो वे लोग किसी आराम घर में रह रहे हों, कैंसर के अस्पताल में नहीं।

शुलुबिन फर्श की ओर कष्ट और निराशा से देखता हुआ खड़ा था। अभी भी उसका शरीर निश्चल था। उसने अपना सिर विचित्र रूप से एक दायरे में घुमाया और अपनी गर्दन को भी गतिशील किया मानो वह किसी से अपना सिर छुड़ाना चाह ही रहा हो लेकिन उसे इस काम में सफलता न मिल रही हो। "दिलचस्प बात है—यह कोई तर्क नहीं है," शुलुबिन बोला—"व्यापार भी दिलचस्प बात होती है: रुपया कमाना, उसे गिनना, सम्पत्ति खरीदना, चीजों का निर्माण करना और अपने चारों ओर आराम ही आराम की व्यवस्था करना। यह सभी दिलचस्प बातें हैं। यदि यही तुम्हारा स्पष्टीकरण है तो विज्ञान पूरी तरह से स्वार्थपूर्ण और अनैतिक कार्यों से किसी भी

रूप में भिन्न नहीं है।"

यह विलक्षण दृष्टिकोण था। वादिम ने अपने कन्धों को झटका दिया, "लेकिन यदि यह फिर भी दिलचस्प है तो क्या हुआ ?" उसने पूछा, "यदि यह सबसे अधिक दिलचस्प बात है तो भी क्या ?"

"यहां अस्पताल में ? अथवा सामान्य रूप से।"

"सामान्य रूप से"

शुलुबिन ने एक हाथ की अंगुलियाँ फैलाईं। इनसे चट-चट की आवाज निकली। "यदि तुम इसी मान्यता के आधार पर आगे बढ़ते हो," वह बोला, "तो तुम भी किसी ऐसी वस्तु का निर्माण नहीं कर सकोगे जो नैतिक दृष्टि से अच्छी हो।"

यह सचमुच एक विचित्र तर्क था। "नैतिक मूल्यों का निर्माण करना विज्ञान का दायित्व नहीं है," वादिम ने समझाते हुए कहा।

"विज्ञान भौतिक मूल्यों का निर्माण करता है और इसी प्रकार इसके व्यय का औचित्य सिद्ध होता है। खैर, आप किन मूल्यों को नैतिक कहते हैं ?"

शुलुबिन ने कुछ देर के लिये अपनी आंखें बन्द कर लीं, उन्हें खोला और फिर बन्द कर लिया। इसके बाद वह बहुत धीरे-धीरे बोला, "वे मूल्य जो मानव आत्मा को आलोकित करते हैं," उसने कहा।

"क्यों, विज्ञान भी आलोकित करता है, क्यों नहीं करता क्या ?" वादिम मुस्कराया।

"आत्मा को नहीं।" शुलुबिन ने अपनी अंगुली हिलाते हुए कहा। "तुमने 'दिलचस्प' शब्द का इस्तेमाल किया था। क्या तुमने कभी भी किसी सामूहिक खेत के मुर्गीघर में पांच मिनट का समय बिताया है ?"

"नहीं।"

"ठीक है, बस यह कल्पना करो कि एक लम्बा और निजी छत वाला खलिहान है। इसमें अन्धेरा इसलिए है कि खिड़कियों की जगह मामूली-सी झर्रियां हैं और इन्हें जाली लगाकर बन्द कर दिया गया है ताकि मुर्गियां बाहर न उड़ जायें। मुर्गियों की देखभाल करने के लिए नियुक्त स्त्रियों में से प्रत्येक के लिए ढाई हजार मुर्गियां हैं। फर्श मिट्टी का है, मुर्गियां निरन्तर इसे अपने पंजों से खोदती रहती हैं और हवा में इस तरह धूल भरी है कि आपको एक गैस मास्क की जरूरत पड़ती है। और इस पूरे समय मुर्गियों की देखभाल करने वाली लड़की एक खुले बर्तन में बासी चारा उबालती रहती है। तुम उसकी बदबू की कल्पना कर सकते हो। वह निरन्तर बिना किसी छुट्टी के काम करती है। गर्मियों में उसका काम का समय सुबह ३ बजे से लेकर शाम को गोधूली के समय तक होता है। ३० वर्ष की उम्र में वह ५० की दिखाई पड़ने लगती है। इस बारे में तुम्हारी क्या राय है ? क्या तुम समझते हो कि

इस लड़की को अपना काम दिलचस्प लगता है ?"

वादिम स्तम्भित रह गया। उसने अपनी भवें हिलाईं। "मैं अपने आपसे यह सवाल क्यों पूछूं," वह बोला।

शुलुबिन ने अपनी अंगुली वादिम की ओर उठाते हुए कहा, "यह एक व्यापारी का उत्तर है," वह बोला।

"वह विज्ञान के विकास की कमी के कारण यह कष्ट उठाती है" वादिम बोला, उसने अपने लिए एक सशक्त तर्क खोज निकाला था, "विज्ञान की उन्नति हो जाने पर सब मुर्गीघर स्वच्छ और सुन्दर होंगे।"

"लेकिन जब तक विज्ञान उन्नति करता है। उस समय तक आप हर रोज सुबह ३ अण्डे अपने लिये तलते जायेंगे ?" शुलुबिन ने कहा। उसने एक आंख बन्द कर ली और इस प्रकार दूसरी आंख की बेधक दृष्टि और भी बेधक हो उठी। "क्या तुम उस समय तक जब तक विज्ञान उन्नति करे उस समय के लिये एक मुर्गी घर में काम करना पसन्द नहीं करोगे ?"

"उसकी इस बात में दिलचस्पी नहीं है ?" कोस्तोग्लोतोव की कर्कश आवाज़ आई, उसका सिर अभी भी बिस्तर से नीचे लटक रहा था।

रूसानोव अब तक शुलुबिन के खेती सम्बन्धी मामलों पर घमंड भरे विचारों को सुन चुका था। एक बार वह अनाज के बारे में कोई बात समझा रहा था। तब शुलुबिन ने उसे बीच में टोक कर सही स्थिति का स्पष्टीकरण दिया था। अब शुलुबिन पर प्रहार करने का उसका अवसर था। "क्या इस बात की कोई गुंजाइश है कि आपने तिमिरयाजेव अकादमी[1] से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की हो।"

शुलुबिन ने उसकी ओर घूर कर देखा। उसने रूसानोव की ओर अपना सिर घुमाया 'हां', सही है, तिमिरयाजेव। उसने आश्चर्यभरे स्वर से इस बात की पुष्टि की।

अचानक वह आगे की ओर झुका। फिर अपने आपको बलपूर्वक सीधा किया और उसके चेहरे से कष्ट का भाव दिखाई पड़ने लगा। वह ऐसा लग रहा था मानो पंख कटा कोई पक्षी उड़ने का प्रयास कर रहा हो। वह लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा और अपने बिस्तर पर पहुँच गया। उसके चलने का

---

१. सोवियत संघ का कृषि विद्यालय। (अनुवादक की टिप्पणी)।

ढंग सदा की तरह बड़ा भद्दा था।

"तो तुम एक पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में क्यों काम कर रहे हो," रूसानोव ने उसके पीछे विजयपूर्ण आवाज़ कसी।

लेकिन जब शुलुबिन एक बार बोलना बन्द कर देता था तो वह बन्द ही कर देता था। अब वह एक पेड़ के फूस की तरह मौन था।

पावेल निकोलाएविच के मन में ऐसे लोगों के लिये कोई सम्मान का भाव नहीं था जो दुनिया में आगे बढ़ने, उन्नति करने के स्थान पर नीचे गिर जाते हैं।

७. सर्वत्र दुर्भाग्य

जब पहली बार कोस्तोग्लोतोव ने लेव लियोनिदोविच को अस्पताल में देखा था तो उसे लगा था कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जो काम से वास्ता रखता है। डाक्टरों के राउंड के समय स्वयं अपने पास कोई काम न होने के कारण ओलेग लेव लियोनिदोविच का मूल्यांकन करने में ही अपना समय बिताता। ऐसी बहुत-सी बातें थीं जिससे उसके मन में इस डाक्टर के प्रति अच्छा भाव पैदा होता था। उसके सिर के ऊपर जो टोपी रहती थी उससे यह स्पष्ट था कि किसी शीशे के सामने खड़े होकर उसे सिर के ऊपर नहीं रखा गया था। उसकी बांहें बेहद लम्बी थीं और कभी-कभी वह अपने आगे से बन्द सफेद कोट की अगली जेबों में अपनी मुट्ठियां घुसेड़ लेता था। उसके होंठ दोनों सिरों पर दबे हुए थे, जिससे ऐसा आभास मिलता था कि वह सीटी बजाने जा रहा हो और अपनी स्पष्ट शक्ति और भयंकरता के बावजूद वह रोगियों से बड़े मजाक और प्रसन्नता के तरीके से बात करता था। इन सब बातों से कोस्तोग्लोतोव के मन में यह विचार आया कि वह इस आदमी से दिल खोलकर बातें करेगा और कुछ ऐसे सवाल पूछेगा जिनका स्त्री डाक्टर न तो जवाब दे सकती हैं और न ही जवाब देना चाहिए।

लेकिन यह सवाल पूछने का समय ही नहीं मिलता था। राउंड के समय लेव लियोनिदोविच अपने आपरेशन के रोगियों के अलावा अन्य किसी की ओर नजर भी नहीं डालता था। जिन रोगियों की एक्स किरणों से चिकित्सा चल रही थी उनके बिस्तरों के पास से तो वह इस प्रकार गुजर जाता था मानो वे खाली पड़े हों। जब लोग बरामदों में अथवा सीढ़ियों पर उसे 'नमस्कार' करते तो उसका उत्तर पर्याप्त प्रसन्नतापूर्ण होता। लेकिन उसका चेहरा कभी भी चिन्ता से मुक्त नहीं होता था और वह हमेशा जल्दी में रहता था।

एक दिन लेव लियोनिदोविच किसी ऐसे रोगी के बारे में बात कर रहा था, जिसने पहले प्रत्येक बात से इन्कार करने के बाद फिर अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। लेव लियोनिदोविच हंसा और बोला, "एह, तो वह अन्ततः 'गा' उठा। क्यों?" इस वाक्य से ओलेग वस्तुतः चौंक उठा। प्रत्येक व्यक्ति इस शब्द का यह अर्थ नहीं जानता था और इस प्रकार उसका इस्तेमाल भी नहीं कर सकता था।

इधर कोस्तोग्लोतोव ने अस्पताल के चारों ओर चक्कर लगाने में कम समय बिताना शुरू कर दिया था और इस कारण अब पहले की तुलना में उसका वरिष्ठ डाक्टर से कम सामना होता था। एक दिन उसने लेव लियोनिदोविच को आपरेशन कक्ष के बराबर के छोटे कमरे का दरवाजा खोलकर भीतर जाते हुए देखा। स्पष्ट था कि इस कमरे में अन्य कोई नहीं होगा। ओलेग ने सफेद रोगन से पुते कांच के दरवाजे को खटखटाया और इसे खोल दिया।

लेव लियोनिदोविच स्टूल पर बैठा हुआ था। वह एक ओर टांगें करके बैठा हुआ था। उसके बैठने की मुद्रा ऐसी थी जैसी थोड़ी देर के लिए बैठने की होती है। लेकिन वह इससे पहले ही लिखना शुरू कर चुका था।

"हां ?" उसने अपना सिर उठाया। पर उसने कोई विशेष आश्चर्य प्रकट नहीं किया। जाहिर था कि वह अभी भी यह सोचने में व्यस्त था कि आगे क्या लिखे।

हर व्यक्ति सदा जल्दबाजी में रहता है ? पूरे जीवनों का निर्णय एक मिनट में कर लिया जाता है।

"क्षमा कीजिए, लेव लियोनिदोविच।" कोस्तोग्लोतोव यथासम्भव विनम्र होने की कोशिश कर रहा था। "मैं जानता हूं कि आप जल्दी में हैं। केवल आप ही मेर सवाल का जवाब दे सकते हैं···क्या आप मुझे दो मिनट का समय दे सकते हैं।"

सर्जन ने अपना सिर हिलाया। लेकिन अभी भी वह अपनी ही समस्याओं के बारे में सोच रहा था। यह पूरी तरह स्पष्ट था।

"वे लोग मेरी हारमोन चिकित्सा कर रहे हैं। इसका कारण है··· वे मुझे साइने स्ट्रोल के इन्जैक्शन स्नायु में लगा रहे हैं। इनकी मात्रा है···" (कोस्तोग्लोतोव को इस बात का बड़ा गर्व था कि उसमें डाक्टरों से स्वयं उनकी भाषा में, पूरी सूक्ष्मता से बात करने की योग्यता है। यही उसके दावे का आधार था कि उन लोगों को उसके साथ पूरी स्पष्टता से बात करनी चाहिए।) "मैं वस्तुत: यह जानना चाहता हूं कि क्या हारमोन चिकित्सा का पूरे शरीर पर असर होता है या नहीं ?"

उसने बातचीत के लिए जिन एक सौ बीस सेकिण्डों का समय मांगा था उसमें से २० से भी कम सैकिण्डों का समय इस परिचात्मक भाषण पर खर्च किया था। अब इसके बाद सैकिण्डों की संख्या उस पर निर्भर नहीं करती थी। वह पीठ पीछे हाथ बांधकर स्टूल पर बैठे हुए आदमी की ओर देखते हुए चुपचाप खड़ा हो गया। इस कारण से अपने लम्बे कद और छरहरे शरीर के बावजूद ओलेग कुछ कुबड़ा-सा नजर आने लगा।

लेव लियोनिदोविच ने अपने माथे पर सलवटें डालीं और अपने पूरे चेहरे को जबर्दस्त तरीके से कस लिया।

"नहीं, मैं यह नहीं समझता। ऐसा नहीं होना चाहिए," उसने उत्तर दिया। लेकिन उसकी बात बहुत निर्णायक नहीं लग रही थी।

"पर न जाने क्यों मुझे लगता है कि इसका असर पूरे शरीर पर होगा," कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बात को और आगे बढ़ाते हुए जोर देकर कहा। उसके कहने के तरीके से ऐसा लग रहा था मानो वह यह चाहता हो कि इसका प्रभाव ऐसा ही हो। अथवा उसे अब लेव लियोनिदोविच की बात पर विश्वास न हो रहा हो।

"नहीं, नहीं तो। ऐसा नहीं होना चाहिए," सर्जन ने उत्तर दिया और उसका स्वर अभी भी पहले की तरह ही निर्णयात्मक नहीं था। या तो यह उसका विशेष विषय नहीं था अथवा अभी तक वह अपना दिमाग इस विषय पर नहीं लगा सका था।

"मेरे लिये यह बात समझना बहुत महत्वपूर्ण है," कोस्तोग्लोतोव ने कहा। वह इस प्रकार देख और बोल रहा था मानो उसे धमका रहा हो। "इस चिकित्सा के बाद मेरी क्षमता···समाप्त हो जायेगी मेरा, मेरा कहने का यह अभिप्राय है कि जहां तक स्त्रियों का सम्बन्ध है यह क्षमता समाप्त हो जायेगी अथवा यह एक सीमित अवधि के लिये ही होगा? इन्जैक्शनों से जो हारमोन मेरे शरीर में पहुंचेंगे क्या वे कभी बाहर निकल जायेंगे अथवा सदा सर्वदा के लिए वहीं बने रहेंगे? अथवा कुछ समय के बाद दूसरे किस्म के इन्जैक्शन लगाकर इस चिकित्सा का प्रभाव समाप्त किया जा सकेगा।"

"नहीं, मैं इस बात की सलाह नहीं दूंगा। यह सम्भव नहीं है," लेव लियोनिदोविच बोला। वह झबरे काले बालों वाले इस रोगी को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसे उसके चेहरे में खास चीज़ घाव का निशान लगा यह एक बड़ा दिलचस्प निशान था। उसे ऐसा स्मरण आया मानो अभी हाल में इस हिस्से को काटा गया हो। वह एक ऐसे रोगी जैसा घाव का निशान था, जिसे हाल में ही सर्जीकल वार्ड में लाया गया था। वह सोच रहा था कि यह क्यों हुआ होगा। "लेकिन तुम्हें प्रभाव समाप्त करने वाले दूसरे प्रकार के इन्जैक्शन क्यों चाहिएं?" वह बोला। "यह बात मेरी समझ में नहीं आई।"

"यह कहने का आपका क्या अभिप्राय है कि यह बात आपकी समझ में नहीं आई?" स्वयं कोस्तोग्लोतोव यह नहीं समझ पा रहा था। क्या यह बात थी कि अपने धन्धे को ध्यान में रखते हुए और डाक्टरी पेशे की आवश्यकताओं के अनुरूप लेव लियोनिदोविच रोगी को अपनी नियति को स्वीकार करने के लिये फुसला रहा हो, राजी कर रहा हो। "क्या आपकी समझ में सचमुच यह बात नहीं आई?" ओलेग ने फिर पूछा।

वे अब तक दो मिनट से अधिक समय बिता चुके थे और अब उनका सम्बन्ध केवल डाक्टर और रोगी के सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं रह गया

था। तभी अचानक लेव लियोनिदोविच ने ओलेग से उस घमंड के बिना बात करनी शुरू की जो उसने ओलेग में देखा था और जो उसे पसन्द आया था। वह उसने एक पुराने दोस्त की तरह धीमे और गैर सरकारीपन में बात करने लगा। "मेरी बात सुनो," वह बोला, "क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि औरतें जीवन की सर्वोत्तम वस्तु है? तुम जानते ही हो कि कुछ-न-कुछ समय बाद औरतों से मन ऊब जाता है···बस औरतें इसके अलावा करती ही क्या हैं कि आपको कोई भी गम्भीर उपलब्धि नहीं करने देतीं।"

वह बड़ी ईमानदारी से बोल रहा था। उसकी आवाज़ बहुत उदासीनता और थकान से भरी हुई लग रही थी। वह अपने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षण का स्मरण कर रहा था। जब उसमें एक अन्तिम प्रयास करने की शक्ति नहीं थी क्योंकि सम्भव है उसकी यह शक्ति इसी कार्य पर समाप्त हो चुकी थी।

लेकिन कोस्तोग्लोतोव की समझ में उसकी बात नहीं आ रही थी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसे आवश्यकता से अधिक प्राप्ति हुई हो। उसका सिर निर्विकार रूप से बायें से दाहिनी ओर हिलता रहा। उसकी आंखें भी शून्य में देख रही थीं। "मेरे जीवन में और अधिक 'गम्भीर' बात ही नहीं रह गई है," वह बोला।

लेकिन यह बातचीत कैन्सर अस्पताल की कार्यसूची का अंग नहीं थी। जीवन के अर्थ के बारे में परामर्श और विचार विमर्श। वह भी एक दूसरे विभाग के डाक्टर से, अस्पताल की कार्यसूची में शामिल नहीं था। उस छोटी अत्यधिक नाजुक स्त्री सर्जन ने दरवाजे के भीतर अपना सिर डालकर झांका और अनुमति लिये बिना ही अन्दर चली आई। उसने ऊंची एड़ी के जूते पहन रखे थे और चलते समय उसका पूरा शरीर झूलता हुआ दिखाई पड़ता था। वह रुकी नहीं बल्कि पूरा कमरा पार कर दूसरे किनारे पर चली गई। लेव लियोनिदोविच के पास खड़ी हो गई, उसके सामने प्रयोगशाला से आया किसी परीक्षण का परिणाम रख दिया और उसके ऊपर झुक गई। (जिस स्थान पर ओलेग खड़ा था वहां से ऐसा लग रहा था कि वह वहां से लेव लियोनिदोविच के शरीर को छू रही है)। उसने उसे उसका नाम लेकर नहीं पुकारा। "यह सुनो," वह बोली, "ओवर्दिको के सफेद रक्त कणों की संख्या १०,००० है।"

उसके खुले हुए बाल लेव लियोनिदोविच के चेहरे के सामने लाल धुएं की तरह झूल रहे थे।

"इसमें क्या हुआ?" लेव लियोनिदोविच ने अपने कन्धों को झटका देते हुए कहा। "इसका संकेत अच्छे ल्योकोसाइटोसिस की ओर नहीं है। इसका केवल यही अभिप्राय है कि शोथ की स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसे एक्स किरणों से चिकित्सा के द्वारा रोकना होगा।"

वह लगातार बोलती रही (और यह सच था कि उसका दाहिना कंधा

लेव लियोनिदोविच की बांह से सटा हुआ था।) लेव लियोनिदोविच जिस कागज पर कुछ लिख रहा था वह ज्यों का त्यों पड़ा था। उसका पैन उसके हाथ में अंगुलियों के बीच उल्टा फंसा हुआ निरर्थक लटक रहा था। स्पष्ट था कि अब ओलेग को चला जाना चाहिये था। उनके लम्बे और गोपनीय ढंग से आयोजित वार्तालाप में सर्वाधिक दिलचस्प स्थान पर आकर बाधा पड़ी थी।

ऐंजेलिका पीछे की ओर मुड़ी और उसे कोस्तोग्लोतोव को अभी भी वहां देखकर आश्चर्य हुआ। लेव लियोनिदोविच ने, ऐंजेलिका के सिर के ऊपर से उसकी ओर देखा। और उसके चेहरे पर प्रायः हंसी का भाव था। उसके चेहरे पर एक ऐसा अवर्णनीय भाव था, जिसने कोस्तोग्लोतोव को यह निश्चय करने को प्रेरित किया कि उसे अपनी बात जारी रखनी चाहिए। "मैं आपसे यह भी पूछना चाहूँगा, लेव लियोनिदोविच," वह बोला, "कि क्या आपने चागा नामक बिर्च वृक्ष की फफूंद के बारे में भी सुना है?"

"हां, मैंने सुना है," उसने बड़ी तत्परता से इस बात की पुष्टि की।

"उसके प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है?"

"यह कहना मुश्किल है। मैं यह बात स्वीकार करता हूँ कि कुछ खास किस्म की रसौलियों में इसके प्रति प्रतिक्रिया होती है, उदाहरण के लिए पेट की रसौलियां। मास्को में लोग इसके पीछे पागल हुए जा रहे हैं। लोगों का कहना है कि नगर के दो सौ किलोमीटर के भीतर बिर्च वृक्षों की यह फफूंद अब नदारद हो चुकी है।"

ऐंजेलिका मेज की ओर फिर झुकी, उसने वह फार्म उठाया और कमरे से बाहर निकल गई। उसके चेहरे पर सदा की तरह घृणाभाव मौजूद था और वह अपने आपको बड़ी स्वतन्त्र दर्शा रही थी और वह जिस ढंग से झूल-झूलकर चल रही थी वह बड़ा आकर्षक था।

वह कमरा छोड़कर चली गई थी। लेकिन दुर्भाग्यवश वार्तालाप जो उन्होंने शुरू किया था ध्वस्त हो चुका था। एक सीमा तक उसके प्रश्न का उत्तर मिल गया था। लेकिन अब जीवन में स्त्री के योगदान के प्रश्न पर फिर विचार उचित नहीं था।

लेकिन जिस विनोदपूर्ण और हल्की नजर से लेव लियोनिदोविच ने उसकी ओर एक क्षण के लिये देखा था और जिस तनावरहित तरीके से उसके साथ व्यवहार किया था उसके आधार पर, उससे बल पाकर ओलेग ने एक तीसरा पहले से तैयार सवाल पूछा। यह सवाल भी कुछ महत्वपूर्ण था। "लेव लियोनिदोविच," उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "मुझे विवेकहीनता के लिये क्षमा कीजिए। यदि मैं गलती पर हूँ तो भूल जाइए कि मैंने कुछ कहा भी था। क्या आपने कभी ··" उसने उसी प्रकार अपना स्वर धीमा कर लिया था जैसे पहले लेव लियोनिदोविच ने किया था और अपनी एक आंख को कुछ दबाते

हुए कहा—"क्या आप कभी ऐसे स्थान पर रहे हैं, जहां निरन्तर संगीत और नृत्य होता रहता है ?"

लेव लियोनिदोविच एकदम सतर्क हो उठा। "हां-हां मैं रहा हूं," वह बोला।

"क्या ऐसा है ?" कोस्तोग्लोतोव ने बड़े सुखद आश्चर्य से कहा। अब वे समान स्तर पर आ गए थे ? "किस आरोप पर उन लोगों ने आपको वहां भेजा था ?" "नहीं मुझे किसी अभियोग पर नहीं पकड़ा गया था। मैं स्वतन्त्र व्यक्ति था। मैं वहां काम करता था।"

"ओह, एक स्वतन्त्र व्यक्ति !" कोस्तोग्लोतोव के स्वर में निराशा झलक रही थी। इससे लगा आखिरकार वे समान नहीं हैं, वह समानता का दावा नहीं कर सकता।

"तुमने इस बात का अनुमान कैसे लगाया ?" सर्जन ने उत्सुकता से पूछा।

"एक शब्द के आधार पर, जिसका आपने इस्तेमाल किया था। एक बार आपने 'गाया' शब्द का इस्तेमाल स्वीकारोक्ति के स्वर में किया था। आपने किसी अन्य व्यक्ति के लिए 'बाड़' शब्द का प्रयोग किया था।"

लेव लियोनिदोविच हंसा।

मैं कभी भी यह आदत नहीं छोड़ पाऊंगा। वह बोला।

चाहे वे समान स्तर के हों अथवा नहीं। पर अब उनमें एक क्षण पहले से अधिक समानता थी।

"क्या आप वहां लम्बे अरसे तक रहे ?" कोस्तोग्लोतोव ने बड़े सीधे सादे और स्पष्ट ढंग से पूछा। वह अब सीधा तन कर खड़ा हो गया था। अब वह उतना बीमार नहीं दिखाई पड़ रहा था।

"लगभग तीन साल। सेना से अवकाश मिलने के बाद मुझे वहां भेज दिया गया था—मैं इससे बच नहीं सका।"

उसे अन्तिम बात कहने की आवश्यकता नहीं थी। पर उसने कही। यह अन्य किसी भी काम की तरह एक सम्मानित काम था। भद्रजन यह क्यों सोचते हैं कि उन्हें कारण बताने चाहिएं, बहाने बनाने चाहियें ? आदमी के भीतर कहीं किसी स्थान पर एक सूचक लगा होता है चाहे इस यन्त्र के तार ठीक ढंग से जुड़े हुए भी न हों पर फिर भी यह काम करता है, हर स्थिति के बावजूद काम करता है।

"आप क्या काम करते थे ?"

"मैं बीमार कैदियों को रखने के स्थान का इन्चार्ज था।"

अहा ! वही काम जो मदाम दुबिन्सकाया करती थी—जीवन और मृत्यु की नियन्ता। बस अन्तर केवल इतना था उसने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि उसे बहाने बनाने चाहिएं। और इस आदमी ने वह काम छोड़

दिया है।

"तो आप युद्ध से पहले अपनी डाक्टरी की शिक्षा पूरी कर चुके थे ?" कोस्तोग्लोतोव ने पूछा और उससे लगातार चिपका रहा। वस्तुत: उसे उत्तरों की आवश्यकता नहीं थी वह तो केवल एक ऐसी आदत थी जो उसने जेल में सीखी थी, जहां वह पूछताछ के लिए बुलाये जाने के दौर के बीच ऐसे किसी भी अजनबी के जीवन का मूल्यांकन करता रहता था, जो उसकी कोठरी में होता था। "तो आपकी उम्र क्या है ?"

"नहीं, मैंने डाक्टरी परीक्षा पास नहीं की थी। अपने चौथे वर्ष के बाद मैंने एक सामान्य डाक्टर के रूप में मोर्चे पर जाने के लिये अपनी सेवाएं अर्पित कीं।" लेव लियोनिदोविच उठ खड़ा हुआ। उसने अपना लिखने का काम अधूरा ही छोड़ दिया था। वह ओलेग के पास गया और घाव के निशान को बड़ी दिलचस्पी से छूकर देखने लगा। अंगुलियों से दबा-दबाकर देखने लगा। "क्या ये घाव तुम्हें 'वहां' लगा था ?"

"हां ठीक है, वहीं।"

"उन लोगों ने अच्छा आपरेशन किया है, बहुत अच्छा। क्या डाक्टर कोई कैदी था ?"

"हां, आप ठीक कहते हैं।"

"तुम्हें उसका नाम शायद याद नहीं ? उसका नाम तोरयाकोव तो नहीं था ?"

"मुझे नहीं मालूम। हम लोग आगे शिविर में भेजे जाने से पहले एक जेल में थे। इस तोरयाकोव को किस अभियोग पर गिरफ्तार किया गया था ?" अब ओलेग की दिलचस्पी तोरियाकोव में हो गई थी और वह उसकी जिन्दगी के बारे में भी जान लेना चाहता था।

"उन लोगों ने उसे इसलिए जेल में डाल दिया था कि उसका पिता जार की सेवा में कर्नल था।"

पर तभी जापानी आंखों वाली और सफेद मुकुट वाली नर्स लेव लियोनिदोविच को मरहम पट्टी के कमरे में बुलाने के लिये आई।

कोस्तोग्लोतोव ने फिर अपनी पीठ झुका ली और बरामदे में आगे बढ़ गया।

अब उसके सामने एक और जीवनवृत्त था, एक रेखाचित्र, जिसे छोटी-छोटी रेखाएं खींच कर तैयार किया गया था। वस्तुत: ये दो जीवनवृत्त थे। इनकी बीच की खोई हुई कड़ियों की वह स्वयं कल्पना कर सकता था। 'वहां' भेजे जाने के अनेक तरीके थे···नहीं वह इस बारे में नहीं सोचना चाहता था, बात कुछ दूसरी ही थी। तुम यहां हो, उसने सोचा, वार्ड में अपने बिस्तर पर, तुम बरामदे में चलते हो, या बगीचे में चहलकदमी करते हो और तुम्हारे बराबर

अथवा तुम्हारी ओर आने वाला एक व्यक्ति है, बस एक व्यक्ति, और आप दोनों के मन में यह बात नहीं आती कि आप कहें, "अरे जरा अपने कोट का कालर उलट कर दिखाओ ?" यही तो वह स्थान है, जहां उनके गुप्त समाज का बिल्ला होता। और वह उनमें से एक था, उसका उन्हीं से सम्बन्ध था, वह इसी का हिस्सा था और इस बारे में जानता था। यहां ऐसे कितने लोग थे ? यह प्रश्न पूछना सही नहीं था, वे सब गूंगे हो चुके थे। बाहर से आप किसी भी बात का अनुमान नहीं लगा सकते थे। कितनी अच्छी तरह इन सब बातों को छिपाया गया था।

कैसा मूर्खतापूर्ण विचार है, उस दिन तक जीवित रहने का विचार जब औरतें निरर्थक दिखाई पड़ने लगेंगी। यह निश्चित है कि किसी भी पुरुष का मन स्त्रियों से नहीं भरेगा ? यह कल्पना ही असम्भव है।

लेकिन बुनियादी तौर पर ऐसी भी बात नहीं है, जिस पर आवश्यकता से अधिक हर्ष किया जाये। लेव लियोनिदोविच ने इतनी दृढ़ता से इन्कार नहीं किया था जिस पर बिश्वास हो जाता।

तो उसे मान लेना चाहिए कि वह सब कुछ खो चुका है। सब कुछ...

कोस्तोग्लोतोव ने यह अनुभव किया कि उसके मृत्युदण्ड को आजीवन-कारावास में बदल दिया गया है।

वह जीवित रहेगा, ईश्वर जाने किस उद्देश्य के लिये।

वह भूल गया था कि वह कहां जा रहा है। नीचे के बरामदे में वह जाकर ठिठक गया और फिर चुपचाप खड़ा रहा।

एक दरवाजे से एक सफेद कोट बाहर निकला, तीन दरवाजे पार। यह सफ़ेद कोट कमर पर बहुत सकरा हो गया था। यह उसका चिर परिचित कोट था।

वेरा !

वह उसी की ओर आ रही थी। वह उसकी रेखा में अधिक दूर नहीं थी। लेकिन उसे दीवार के सहारे लगे दो बिस्तरों का चक्कर लगाकर आना था। पर ओलेग उसकी ओर आगे नहीं बढ़ा। उसे सोचना था—एक सेकेंड, दो सेकेंड और तीन सेकेंड।

अपने पिछले राउंड के बाद से तीन दिन से ओलेग के प्रति उसका व्यवहार शुष्क और सरकारी हो गया था। उसने एक बार भी मित्रतापूर्ण दृष्टि उस पर नहीं डाली।

पहले उसने सोचा : जहन्नुम में जाए। उसके साथ जैसा व्यवहार होगा वह उसका वैसे ही जवाब देगा। उसकी इच्छा किसी के सामने झुकने और गिड़गिड़ाने की नहीं थी। उसे स्पष्टीकरण नहीं देना था। पर यह बहुत बुरी बात थी। उसे चोट पहुंचाना बुरी बात लग रही थी। वह स्वयं अपने लिए भी

दुखी था। क्या उन्हें अजनबियों की तरह एक-दूसरे के पास से गुजर जाना चाहिए ?

उसका अपना कसूर क्या है ? यह तो वेरा की गलती थी : उसने इंजेक्शनों के बारे में ओलेग को धोखा दिया वह उसका बुरा चाहती थी। माफ करना तो स्वयं उसके लिए मुश्किल था।

बिना कुछ देखे, उसकी ओर बिना नजर डाले वह बराबर में आ गई। और अपने संकल्प के बावजूद ओलेग ने देखा कि वह बड़ी शांति से उससे बात कर रहा है मानो किसी कृपा की याचना कर रहा हो। वेरा कोर्निलएवना।

(यह स्वर अपनाना हास्यस्पद था, लेकिन वह इसका इस्तेमाल पसन्द करता था।) उसने अपनी ठंडी नजर ऊपर उठाई और उसे देखा।

(नहीं, वह उसे क्यों माफ कर रहा है ?)

"वेरा कोर्निलएवना···क्या आप मुझे···एक बार और खून नहीं चढ़ाना चाहेंगी···!"

(ऐसा लग रहा था कि वह याचना कर रहा हो। फिर भी उसे यह पसन्द आ रहा था।)

"मैं समझ रही थी कि तुम खून चढ़वाने से इनकार करते हो" उसने उसकी ओर उसी प्रकार क्षमा रहित कठोरता से देखते हुए कहा लेकिन एक प्रकार का निश्चय उसकी आंखों में लड़खड़ा रहा था। उन्हीं प्यारी हल्की रंग की आंखों में।

(ठीक है, यदि उसकी दृष्टि से देखा जाए तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता था। लेकिन वे दोनों एक ही अस्पताल में पूरी तरह अजनबियों की तरह रह भी तो नहीं सकते थे।)

"लेकिन मुझे उस समय खून चढ़वाना पसन्द आया था। मैं और खून चढ़वाना चाहता हूं।"

वह मुस्कुराया। वह जब कभी मुस्कुराता उसके घाव का निशान छोटा पड़ जाता था और घाव की रेखा लहरदार हो जाती थी।

(अब वह उसे क्षमा कर देगा। कभी बाद में वे इस झगड़े का निपटारा कर लेंगे।)

फिर भी वेरा की आंखों में कुछ झलक रहा था—एक प्रकार का पश्चाताप।

हो सकता है वे कल कुछ और रक्त लायें।

वे अभी भी किसी अदृश्य खम्भे पर अपना हाथ टिकाये हुई थी पर ऐसा लग रहा था मानो वह खम्भा दबाव के कारण पिघल रहा हो या झुक रहा हो।

"लेकिन खून आप ही चढ़ायेंगी ?" वह बोला, "केवल आप ही।"

उसकी मांग हृदय से आती हुई दिखाई पड़ रही थी। अन्यथा मैं उन्हें खून नहीं चढ़ाने दूंगा।"

वेरा ने अपना सिर हिलाया और उसकी ओर न देखते हुए असली मुद्दे से बचते हुए कहा। "यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस समय क्या स्थिति होती है।"

वह आगे बढ़ गई।

वह अदभुत थी। हर चीज के बावजूद वह अद्‌भुत थी।

बस प्रश्न यह था कि वह उससे क्या अपेक्षा कर रहा था? एक अभिशप्त व्यक्ति, जिसे आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया जा चुका हो, आखिर वह क्या पा लेना चाहता था?

ओलेग एक मूर्ख की तरह बरामदे में खड़ा रहा। यह सोचते हुए कि वह कहां जा रहा था।

हां ठीक है, वह द्योमा से मिलने जा रहा था।

द्योमा एक छोटे से दो मरीजों वाले कमरे में लेटा हुआ था। उसके पड़ौसी को छुट्टी दे दी गई थी और वह अगले दिन आपरेशन कक्ष से नये पड़ौसी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इस बीच वह अकेला ही था।

एक सप्ताह गुजर गया था। पर इसके साथ ही उसकी कटी हुई टांग की प्रथम पीड़ा भी समाप्त हो गई थी। आपरेशन अतीत की वस्तु बनता जा रहा था। लेकिन उसकी टांग आज भी वहीं कायम लग रही थी। उसे पीड़ा पहुंचा रही थी मानो उसे काटकर अलग किया ही नहीं गया है। वह अलग-अलग प्रत्येक अंगुली की मौजूदगी तक का एहसास कर पाता था।

द्योमा को ओलेग को देखकर बड़ी खुशी हुई और उसने एक बड़े भाई के रूप में उसका अभिवादन किया। वस्तुतः वे रिश्तेदारों की तरह थे। वह उसके भूतपूर्व वार्ड के मित्रों में से था। कुछ रोगिणियों ने भी उसके लिए खाने की चीजें भेजी थीं। ये चीजें एक रूमाल से ढकी बराबर की मेज पर रखी थीं। कोई भी नया रोगी उसके पास नहीं आएगा। उसके लिए कुछ नहीं लायेगा।

द्योमा सीधा लेटा हुआ था और अपनी टांग को सहला रहा था (अथवा टांग के उस हिस्से को जो शेष रह गया था यानी जांघ के एक छोटे हिस्से को) उसकी टांग पर अभी भी पगड़ी की शक्ल की विशाल पट्टी बंधी थी लेकिन उसका सिर और उसकी बांहें स्वतंत्र थीं।

'हैलो ओलेग, आप कैसे हैं?" उसने ओलेग का हाथ अपने हाथ में थामते हुए कहा। "बैठ जाइए और मुझे बताइये कि वार्ड की क्या स्थिति है?"

ऊपर का जो वार्ड वह छोड़कर आया था वही उसकी दुनिया था। जिसका कि वह अभ्यस्त हो चुका था। यहां, नीचे की मंजिल में नर्सें और

अरदली दूसरे थे और इसी प्रकार यहां की दिनचर्या भी। निरन्तर इस बात पर झगड़ा चलता रहता था कि किसे क्या करना चाहिए।

"ठीक है पर वार्ड में तुम किस चीज की आशा कर सकते हो ?" ओलेग द्योमा के पीले चेहरे की ओर देख रहा था। उसका चेहरा पिचक गया था मानो उसके गालों में गड्ढे खोद दिए गये हों। उसकी भवें, नाक और ठोडी को रंदे से रंद कर तीखा बना दिया गया हो। "वार्ड आज भी वैसा ही है।"
"क्या कर्मचारी विभाग का अफसर अभी भी वहां है ?"

"ओह हां," कर्मचारी विभाग का अफसर "वहीं है।"

"वादिम का क्या हाल है ?"

"वादिम बहुत अच्छा नहीं है। उन्हें सोना नहीं मिला और वे लोग दूसरे दौर की रसौलियों से भयभीत हैं।"

द्योमा ने इस प्रकार अपनी चिन्ता प्रकट की, जिससे वादिम उसका छोटा बन गया। "बेचारा लड़का," वह बोला।

"तो द्योमा तुम्हें ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने समय रहते तुम्हारी टांग काट दी।"

"पर अभी भी मुझे दूसरे दौर की रसौलियां निकल सकती हैं।"

"ओह, मैं यह नहीं समझता।"

लेकिन कौन कह सकता था ? यहां तक कि डाक्टर भी इस बात का कैसे पता लगा सकते थे कि एकमात्र और विनाशकारी कोशिकाएं चुपचाप शरीर के दूसरे भागों में पहले ही प्रवेश नहीं कर चुकी हैं और उन्होंने अपना अड्डा वहां जमा लिया है।

"क्या वे तुम्हारा इलाज एक्स किरणों से भी कर रहे हैं ?"

"वे मुझे एक छोटी-सी हाथगाड़ी पर लिटाते हैं और इधर-उधर घुमाते हैं।"

"मेरे दोस्त अब तुम्हारा रास्ता साफ है। तुम्हें अब जल्दी से अच्छा हो जाना चाहिए और एक बैसाखी के इस्तेमाल की आदत डाल लेनी चाहिए।"

"नहीं दो की जरूरत होगी। दो बैसाखयां।"

बेचारा लड़का। वह पहले ही हर बात सोच चुका है। पहले भी वह एक बड़े आदमी की तरह आचरण करता था अब तो ऐसा लगता है कि वह और उम्रदार हो गया है।

"वे यह बैसाखियां तुम्हारे लिए कहां बनायेंगे ? क्या यहीं ?"

"हां, यहीं अस्थिरोग विभाग में।"

"वे तुम्हें मुफ्त मिलेंगी न ?"

"हां, मैंने अर्जी दी है। मेरे पास दाम चुकाने को है ही क्या ?"

उन दोनों ने आह भरी। उनके मुंह से आसानी से आह निकली। दो

ऐसे आदमी जो वर्षों से ऐसी स्थिति में पड़े थे, जहां उत्साह का कोई चिन्ह नहीं होता।

"तो तुम अगले साल अपने स्कूल की पढ़ाई कैसे पूरी कर पाओगे ?"

"मैं पढ़ाई पूरी करूंगा या समाप्त हो जाऊंगा ?"

"तुम अपनी जीविका कैसे चलाओगे ? तुम अब किसी कारखाने में तो काम नहीं कर सकते।"

"इन लोगों ने मुझे अपंगता का प्रमाणपत्र देने का वचन दिया है। मुझे नहीं मालूम कि यह वर्ग २ होगा अथवा वर्ग ३।"

"वर्ग ३ क्या है ?" कोस्तोग्लोतोव ने पूछा। उसे इन अपंगता वर्गों की जानकारी नहीं थी वैसे उसे ऐसे किसी भी नागरिक नियम की जानकारी नहीं थी।

"यह ऐसे वर्गों में है कि आपको रोटी खरीदने के लिये तो पर्याप्त पैसा मिलेगा पर यह चीनी खरीदने के लिये काफी नहीं होगा।"

सचमुच ही द्योमा एक सच्चा मर्द था। उसने हर बात सोच ली थी।

रसौली उसे नीचे घसीटने, उसका मनोबल पूरी तरह तोड़ डालने, उसे डुबा देने की पूरी कोशिश कर रही थी। लेकिन वह अभी भी सही रास्ते पर तैरता हुआ आगे बढ़ रहा था।

"क्या तुम विश्वविद्यालय में भर्ती होगे ?"

"मैं अधिकतम प्रयास करूंगा।"

"तुम साहित्य का अध्ययन करोगे ?"

"हां, यही।"

"द्योमा मेरी बात सुनो, मैं गम्भीरता से बात कर रहा हूं। तुम इस तरह बस अपने को बर्बाद ही कर डालोगे। तुम रेडियो सैट बनाने का काम क्यों नहीं सीख लेते। यह शांतिपूर्ण जीवन है और तुम सदा कुछ अतिरिक्त पैसा भी कमा सकोगे।"

"नाश हो रेडियो सैटों का।" द्योमा ने अपनी पलकें झपकीं। "मुझे तो सत्य से प्यार है।"

"ठीक है तुम रेडियो सैटों की मरम्मत करते हुए भी सच्चाई के रास्ते पर चल सकते हो! यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती। बेवकूफ कहीं के।"

वे लोग इस बात पर सहमत नहीं हो सके। उन्होंने हर तरीके से तर्क किए। उन्होंने ओलेग की समस्याओं के बारे में बातचीत की। यह द्योमा का व्यस्कों जैसा एक और आचरण था। वह दूसरों में दिलचस्पी रखता था। सामान्यतया युवक केवल अपनी ही चिन्ता रखते हैं ओलेग ने उसे उसी प्रकार अपनी स्थिति के बारे में बताया जैसी वह किसी व्यस्क को बताता।

"ओह, यह भयानक है।" द्योमा ने बुदबुदाते हुए कहा।

"मैं नहीं समझता कि तुम मुझ से जगह बदलने के लिये तैयार होगे। क्यों?"

"भगवान जाने।"

अब स्थिति यह थी कि एक्स किरणों की चिकित्सा और बैसाखियों के सहारे चलने के अभ्यास की प्रतीक्षा में द्योमा को अस्पताल में छः सप्ताह का समय और बिताना होगा। उसे मई में अस्पताल से छुट्टी मिलेगी।

"तुम सबसे पहले कहां जाओगे?"

"मैं सीधा चिड़ियाघर जाऊंगा।" द्योमा ने खुशी से चहकते हुए कहा। वह पहले भी कई बार ओलेग से चिड़ियाघर के बारे में बात कर चुका था। वह अस्पताल के मुख्य द्वार के बरामदे में खड़े होते और द्योमा यह बताता कि चिड़ियाघर कहां है। वह उन घने पेड़ों के पीछे नदी के उस पार किस प्रकार छिपा हुआ है। उसने जानवरों के बारे में पुस्तकें पढ़ने और रेडियो पर उनके बारे में कहानियां सुनने में बरसों का समय बिताया था। लेकिन उसने कभी भी कोई लोमड़ी या भालू नहीं देखा था। शेर या हाथी की बात तो दूर। वह सदा ऐसे स्थानों पर रहा था, जहां थोड़े से जानवर रखने का भी स्थान नहीं था। सरकस या जंगल नहीं था। उसका यह एक बहुत बड़ा सपना था कि वह जानवरों से मिल सके और बड़े होते हुए भी उसका यह सपना धूमिल नहीं पड़ा, अन्तर्धान नहीं हुआ। उसे जानवरों के आमने-सामने खड़े होने से किसी असाधारण घटना की प्रत्याशा थी। जिस दिन वह अपनी पीड़ा ग्रस्त टांग सहित अस्पताल आया था वह उससे पहले चिड़ियाघर भी गया था। लेकिन दुर्भाग्यवश यह सप्ताह का वह दिन था जब चिड़ियाघर बन्द रहता है। "सुनो, ओलेग," वह बोला, "तुम्हें जल्दी ही छुट्टी मिल जायेगी, क्यों!"

ओलेग अपनी पीठ झुकाये बैठा हुआ था। "हां, मुझे आशा तो है। मेरा रक्त अब और अधिक एक्स किरणों को बर्दाश्त नहीं कर सकता। मितली मुझे मारे डाल रही है।"

"लेकिन तुम चिड़ियाघर तो जाओगे, क्यों जाओगे न?" द्योमा इस मामले की उपेक्षा नहीं होने दे सकता था। अन्यथा उसके मन में ओलेग के प्रति बुरा भाव पैदा होता।

"हां, मैं जा सकता हूँ।"

"नहीं, तुम्हें अवश्य जाना चाहिए।" मैं कह रहा हूं तुम्हें अवश्य जाना चाहिए। और तुम्हें मालूम है? इसके बाद मुझे एक पोस्ट कार्ड भेजना, क्यों भेजोगे न? यह तुम्हारे लिए एक आसान बात होगी और मुझे इससे बेहद खुशी मिलेगी। मुझे यह भी बताना कि वहां आजकल कौन-कौन से जानवर हैं और सबसे अधिक दिलचस्प जानवर कौन-सा है? ठीक है? इस प्रकार यहां से

छुट्टी मिलने से एक महीने पहले ही मुझे इन बातों का पता चल जायेगा। तुम जाओगे न ? क्यों जाओगे न ? और मुझे लिखोगे ? लोग कहते हैं कि वहां मगर और बब्बर शेर भी हैं और···।

ओलेग ने वचन दिया।

वह इस विचार से कमरे से बाहर निकला कि अपने बिस्तर पर जाकर लेट जायेगा और द्योमा को इस बन्द दरवाजे वाले छोटे से कमरे में अकेला छोड़ जायेगा। लम्बे समय तक द्योमा ने अपनी किताब नहीं उठाई, वह बस छत की ओर देखता रहा, खिड़की से बाहर देखता रहा और सोचता रहा। उसे खिड़की से बाहर कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहा था। खिड़की में लगी छड़ें एक कोने में जाकर समाप्त हो जाती थीं और लगता था कि यह खिड़की अहाते के किसी महत्वहीन कौने में बनी है जो अस्पताल की चहारदीवारी से घिरा हुआ है। इस समय दीवार पर सूरज का प्रकाश भी नहीं पड़ रहा था। लेकिन बादल भी नहीं छाये हुए थे। सूर्य कुछ धूमिल था, बादलों से पूरी तरह छिपा नहीं था और इससे विचित्र कोणीय प्रकाश विकरित हो रहा था। यह दिन उन उदास दिनों में से एक होगा जो अधिक गरम और अधिक प्रकाशमान नहीं होते। जब बसन्त ऋतु शोर मचाये बिना, विज्ञापन किये बिना, अपना कार्य करती रहती है।

द्योमा चुपचाप बिना किसी हरकत के लेटा हुआ था और अच्छी बातें सोच रहा था। वह किस प्रकार बेसाखियों के सहारे तेजी से और चुस्ती से चलना सीखेगा, मई दिवस के कुछ दिन पहले एक सचमुच गरम दिन वह किस प्रकार बाहर जायेगाऔर शाम की रेलगाड़ी पकड़ने तक किस प्रकार चिड़ियाघर में घूमता रहेगा, अब उसे किस प्रकार अपने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के लिए पूरा समय मिलेगा। और वह अच्छी तरह पढ़ेगा तथा अब तक जिन आवश्यक पुस्तकों को नहीं पढ़ पाया है उन्हें पूरी करेगा। अब वह दूसरे लड़कों के साथ शाम का समय निर्रथक नहीं बिताया करेगा, और स्वयं को निरन्तर इस दुविधा का कष्ट पहुँचाने के बाद कि नृत्य के लिए जाये अथवा नहीं वह नृत्य कक्ष में नहीं जायेगा। चाहे वह स्वयं अब नाच नहीं सकता। अब यह बातें नहीं होंगी। वह रोशनी जलायेगा और अपनी पुस्तकों के अध्ययन में जुट जायेगा।

दरवाजे पर दस्तक हुई।

"भीतर आ जाइए," द्योमा ने कहा।

"(भीतर आ जाइए कहने से द्योमा को बड़ा संतोष मिला। उसे कभी भी ऐसी परिस्थिति की जानकारी नहीं हुई जब किसी व्यक्ति को उसके कमरे में प्रवेश करने से पहले दरवाजे पर दस्तक देने की जरूरत पड़ी हो)"

बड़ी तेजी से दरवाजा खुला और आस्या भीतर आ गई।

आस्या भीतर ही नहीं आई बल्कि उसने आंधी की तरह कमरे में

प्रवेश किया। वह इस तरह कमरे में घुसी मानो उसका कोई पीछा कर रहा हो। उसने अपने पीछे तुरन्त दरवाजा बन्द कर लिया और दरवाजे के खम्भे के बराबर खड़ी हो गई। उसका एक हाथ दरवाजा खोलने के लिए लगी मुट्ठी पर था और दूसरे हाथ से उसने अपने ड्रेसिंग गाउन के दोनों पल्ले थाम रखे थे।

अब वह आस्या नहीं थी, जो "तीन दिन की जांच" के लिए अस्पताल में आई थी और जिसके मित्र शीत स्टेडियम में फिर दौड़ प्रतियोगिताओं के लिए कुछ ही दिनों में वापस लौट आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसका उत्साह भंग हो चुका था और उसके चेहरे का रंग उड़ चुका था। यहां तक कि उसके सुनहरे बाल भी, जो अन्य वस्तुओं की तरह आसानी से बदल नहीं सकते थे, अब बड़ी दयनीय दशा में लटक रहे थे।

उसने आज भी वही ड्रेसिंग गाउन पहन रखा था। यह बिना बटन का एक भद्दा ड्रेसिंग गाउन था, जिसने अनेक कन्धों को ढका था और न जाने उसे कितनी बार उबाला गया था। अब यह पहले की तुलना में उसके शरीर पर बेहतर लग रहा था।

आस्या ने द्योमा की ओर देखा और उसकी पलकें थोड़ा-सा थरथराईं क्या वह सही स्थान पर आई है? क्या उसे कहीं अन्यत्र दौड़ कर जाना होगा?

अब तक वह पूरी तरह से कुचली जा चुकी थी। अब वह स्कूल में पूरे एक वर्ष द्योमा से आगे नहीं थी, वह अपने अतिरिक्त अनुभव के लाभ से भी वंचित हो चुकी थी, वह जीवन का अपना ज्ञान और तीन लम्बी यात्राओं में अर्जित ज्ञान भी खो चुकी थी। वह द्योमा को ऐसी दिखाई पड़ रही थी मानो वह उसका स्वयं अपना अंग हो। वह उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। "आस्या, बैठ जाओ। क्या बात है?" वह बोला।

अस्पताल में अनेक बार उसकी बातचीत हुई थी। उन लोगों में उसकी टांग के बारे में विचार हुआ था। आस्या ने बड़ी कड़ाई से कहा था कि किसी भी हालत में टांग नहीं कटवानी चाहिए। आपरेशन के बाद वह उसे देखने दो बार आई थी, उसके लिए सेब और बिस्कुट लाई थी। यद्यपि उस पहली शाम को उनकी मित्रता बड़े स्वभाविक रूप से हुई थी लेकिन अब यह और गहरी हो गई थी। और उसने द्योमा को बताया था यद्यपि पहली बार ही नहीं कि उसे क्या तकलीफ है। उसकी दाहिनी छाती में दर्द था, उन्हें इसके भीतर कुछ कड़े टुकड़े दिखाई पड़े। वे लोग एक्स किरणों से उसका इलाज कर रहे थे और उसे जीभ के नीचे रखने के लिए गोलियां भी दी जाती थीं।

"बैठ जाओ, आस्या, बैठ जाओ।"

उसने दरवाजे की मुट्ठी छोड़ दी और द्योमा के बिस्तर के सिरहाने जो

स्टूल रखा था उस पर बैठ गई। वह दरवाजे के बराबर की दीवार पर अपना हाथ घसीटती हुई आगे की ओर आई थी। ऐसा लग रहा था मानो उसे सहारे की जरूरत है और उन चीजों को पकड़े बिना वह आगे नहीं बढ़ सकती।

वह बैठ गई।

वह बैठ गई और उसने सीधे द्योमा की आँखों में आंखें डालकर नहीं देखा उसने अपनी नजरें उससे आगे कम्बल पर जमा दीं। वह उसे देखने का उसका सामना करने का साहस नहीं जुटा पा रही थी और द्योमा भी उसे साफ-साफ देखने के लिए मुड़ नहीं सकता था।

"अरे, बताओ तो क्या हुआ है?" अब उसे एक बार फिर "बड़े आदमी" का अभिनय करना था। यही उसके भाग्य में बदा था। उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, अपनी गर्दन को तकियों के ढेर के ऊपर यथा-सम्भव पीछे तक खींचा ताकि वह अपनी पीठ के बल लेटा हुआ उसे देख सके।

उसके ओंठ फड़फड़ा रहे थे। उसकी पलकें फरफरा रही थीं।

"आसयेंका!" बस द्योमा यही शब्द कह पाया। करुणा भाव से उसका गला रुंध गया अन्यथा वह उसे "आसयेंका" कह कर पुकारने का साहस नहीं बटोर सकता था। अचानक आस्या ने स्वयं को उसके तकियों पर फेंक दिया, उसका सिर द्योमा के सिर से सट गया, उसके बालों का एक छोटा सा गुच्छा उसके कान को सहलाने लगा।

"आसयेंका, मेहरबानी करके कुछ बताओ तो!" उसने याचना करते हुए कहा और उसका हाथ थामने के लिए कम्बल के ऊपर टटोलने लगा। वह उसका हाथ नहीं देख पा रहा था और इस कारण से उसे उसका हाथ मिला भी नहीं। वह तकिये पर सिर रखे रो रही थी।

"यह क्या है? बताओ न, मुझे बताओ क्या हुआ है?"

लेकिन वह बात का प्राय: अनुमान लगा चुका था।

"वे लोग इसे काटने जा रहे हैं···।"

वह निरन्तर जोर-जोर से रोती रही और इसके बाद वह कराहने लगी, ओह···ओह···!

द्योमा को याद नहीं था कि उसने कभी जीवन में दुःख भरी इतनी लम्बी कराह सुनी है, इतनी "ओ, ओ···ह" की ऐसी असाधारण आवाज सुनी है।

"हो सकता है कि वे यह न भी करें," वह बोला, वह उसे ढाढस बंधाने की कोशिश कर रहा था। "हो सकता है उन्हें यह करना ही न पड़े।" लेकिन वह न जाने क्यों यह जानता था कि उसे दिलासा देने के लिए उसके शब्द पर्याप्त न होंगे।

वह तकिये में मुंह छिपाये निरन्तर रोती जा रही थी। वह अपने बराबर

की जगह को अनुभव कर सकता था, वह पूरी तरह गीली हो गई थी।

द्योमा ने उसका हाथ ढूंढ लिया था और अब वह उसे थपथपा रहा था। "आसयेंका" वह बोला, "हो सकता है उन्हें यह करना ही न पड़े।"

"वे करेंगे वे करेंगे। वे लोग शुक्रवार को यह करने जा रहे हैं..."

और उसने ऐसी कराह भरी, जिसने द्योमा की आत्मा को ही जड़ कर दिया।

वह उसका आंसुओं से भरा चेहरा नहीं देख पा रहा था। उसके बालों की एक लट उसकी आंखों पर आ गई थी। उसके बाल बड़े कोमल थे, कोमल और गुदगुदी पैदा करने वाले।

द्योमा सही शब्दों की तलाश कर रहा था पर उसे कामयाबी नहीं मिल रही थी। बस वह यही कर सकता था कि उसके हाथ को और कड़ाई से और कस कर थामे रहे और इसी प्रकार उसे दिलासा दे सके। अब उसके मन में आस्या के प्रति उससे कहीं अधिक करुणा का भाव जग रहा था, जितना स्वयं अपने प्रति जगा था।

"अब मैं किस बात के लिए जिऊंगी?" उसने सिसकियों के बीच कहा।

द्योमा अपने अनुभवों के आधार पर, यद्यपि वे अस्पष्ट थे, इस प्रश्न का उत्तर दे सकता था लेकिन वह अपने विचारों को व्यक्त न कर सकता था। यदि वह यह बात कह भी पाता तो भी वह आस्या की कराह से यह बात अच्छी तरह जान गया था कि न तो वह और न ही कोई अन्य व्यक्ति और न ही अन्य कोई वस्तु उसे आश्वस्त कर सकती है। उसने अपने अनुभवों के आधार पर बस एक यही निष्कर्ष निकाला था। अब जीने के लिए कुछ भी नहीं रह गया है।

"अब संसार में ऐसा कौन होगा जो मुझे चाहेगा?" उसने असह्य बेचैनी से ये शब्द कहे। "संसार में ऐसा कौन होगा...।"

उसने एक बार फिर अपना मुंह तकिए में छिपा लिया और तब तक द्योमा का गाल पूरी तरह भीग चुका था।

"अरे, तुम जानती हो।" वह अभी भी उसे दिलासा देने की कोशिश कर रहा था। अभी भी उसका हाथ थामे हुए था। "तुम जानती ही हो कि लोग विवाह कैसे करते हैं। उनके समान विचार होते हैं, उनके समान चरित्र होते हैं।"

"कौन ऐसा मूर्ख है जो उस जैसी लड़की से प्यार करेगा?" उसने बड़े क्रोध से ऊपर देखते हुए कहा, ठीक उसी तरह जैसे कोई घोड़ी अपने पिछले दो पांवों पर खड़ी हो गई हो। उसने अपना हाथ खींच कर अलग कर लिया और द्योमा ने पहली बार उसका चेहरा देखा—आंसुओं से भरा, लाल, चकत्तेदार, अत्यन्त दुखी और क्रोध से भरा। "ऐसा कौन सा आदमी है जो एक

छाती वाली लड़की को लेने को तैयार हो, किसे ऐसी लड़की चाहिए ? और वह भी जब उसकी उम्र केवल १७ साल हो ।" उसने चिल्लाकर ये बातें कहीं । यह उसी का कसूर था ।

उसे मालूम नहीं था कि उसे कैसे दिलासा दे ।

"अब मैं समुद्र तट पर कैसे जा पाऊंगी ?" यह नया विचार आते ही वह जोर से चिल्लाई । "समुद्र तट ! मैं तैरने कैसे जा सकती हूँ ।" उसका शरीर ऐंठने लगा और वह गिर पड़ी । उसने अपना सिर दोनों हाथों से थाम रखा था । वह द्योमा से अलग फर्श की ओर गिरती जा रही थी ।

असह्य रूप से उसने विभिन्न प्रकार की तैरने की पोशाकों की कल्पना शुरू कर दी—कन्धे की पट्टियों वाली और इन पट्टियों के बिना ही कपड़े के एक ही टुकड़े से बनी अथवा दो टुकड़ों से, प्रत्येक वर्तमान और भविष्य का फैशन, नारंगी और नीले, लाल और समुद्र जैसे रंग की, एक ही रंग की और धारीदार, ऐसे तैरने के कपड़े, जिनका उसने अभी तक प्रयोग नहीं किया था । लेकिन जिन्हें शीशे के सामने खड़े होकर अपने शरीर पर लगा कर अवश्य देखा था—अब उसकी कल्पना में वे सब साकार हो उठी थीं, जिन्हें वह कभी नहीं खरीदेगी कभी नहीं पहनेगी ।

अब वह कभी समुद्र तट पर नहीं जा सकेगी । अचानक उसे यह विचार सबसे भयानक रूप से कुचल डालने वाला और अपने जीवन का सर्वाधिक निर्मम तथ्य दिखाई पड़ने लगा । जीवन का अर्थ समाप्त हो चुका था । और इसका कारण यह था ।

द्योमा ने कुछ प्रभावहीन और चतुरता रहित बातें अपने तकियों पर पड़े पड़े कहीं । पर तुम जानती ही हो, यदि कोई भी तुमसे विवाह करने को तैयार न होगा···हां मैं जानता हूँ···मैं समझता हूं कि अब मैं कैसा आदमी रह गया हूँ···लेकिन मुझे तुमसे विवाह करके सदा बड़ी खुशी होगी, तुम मुझे जानती हो···

"मेरी बात सुनो, द्योमा !" एक नये विचार ने आस्या को डस लिया था । वह खड़ी हो गई, उसने उसकी आंखों में आंखें गड़ा दीं और एक टक उसे देखने लगी । उसकी आंखें पूरी खुली थीं और उनमें आँसू नहीं थे । "मेरी बात सुनो, तुम वह अन्तिम व्यक्ति होगे ! तुम वह अन्तिम व्यक्ति होगे, जो इसे देख सकता है और इसका चुम्बन कर सकता है । तुम्हारे अलावा ऐसा कोई नहीं होगा, जिसने इसका चुम्बन किया हो । द्योमा, कम से कम तुम्हें तो इसका चुम्बन करना ही चाहिए ।"

उसने एक झटके से अपने ड्रेसिंग गाउन के पल्ले अलग कर दिये । (वैसे यह पल्ले एक साथ मिले हुए भी नहीं रह गए थे) उसे लगा कि जब वह अपने रात को पहनने की पोशाक के ढीले कालर को नीचे खींच कर अपनी

दाहिनी अभिशप्त छाती को उघाड़ रही थी तो वह रोती जा रही थी, कराहती जा रही थी।

तभी लगा मानो कमरे में सूरज निकल आया हो। सारा वार्ड आग के प्रकाश से आलोकित हो उठा हो। उरोज का अग्रभाग दमक रहा था। यह उसकी कल्पना से कहीं अधिक बड़ा था। यह उसके सामने उपस्थित था। उस की आखें इस सूर्य के प्रकाश जैसी लालिमा का सामना नहीं कर सकीं।

आस्या ने अपना उरोज उसके चेहरे के समीप कर दिया और वहीं रुकी रही।

"इसका चुम्बन करो! चुम्बन करो!" उसने मांग की। वह वहां प्रतीक्षा में खड़ी रही।

और आस्या का शरीर जो ऊष्मा उसे अर्पित कर रहा था, उसे अपने सांसों में अपने भीतर समेटते हुए उसने अपने होंठ ऊरोज के अग्रभाग पर टिका दिये। दूध पीने वाले सूअर के बच्चे की तरह। अत्यधिक आभार से, अत्यधिक प्रशंसा के भाव से। कभी भी इस सुन्दर आकृति से अधिक सुन्दर वस्तु को चित्रित नहीं किया जा सका। कभी भी इससे अधिक सुन्दर मूर्ति नहीं बनाई जा सकी। इसकी सुन्दरता ने उसे आप्लावित कर दिया था। बड़ी तेजी से उसके होंठों ने इसे अपने भीतर समा लिया इसकी सुन्दरता को अपने भीतर समाहित कर लिया।

"तुम्हें याद रहेगा?...तुम्हें याद रहेगा, क्यों रहेगा न? तुम्हें यह याद रहेगा कि यह उरोज एक वास्तविकता था और यह कैसा था?" आस्या के आंसू द्योमा के छोटे-छोटे कटे हुए बालों के ऊपर निरन्तर झरते जा रहे थे।

अब क्योंकि आस्या पीछे नहीं हटी थी, वह इसकी आभा का बार-बार आस्वादन करता रहा, बड़ी कोमलता से उसका चुम्बन भी करता रहा। वह जो कुछ कर रहा था, उसने जो कुछ किया था, उसका भावी बच्चा वह नहीं कर सकेगा। कमरे के भीतर कोई आया नहीं। अतः वह उस अत्यन्त सुन्दर और विलक्षण ऊरोज का चुम्बन करता गया, चुम्बन करता गया।

आज यह अद्भुत था। कल यह कूड़े के ढोल में होगा।

८. कठोर शब्द, कोमल शब्द

अपने सरकारी दौरे से लौटने के बाद यूरी ने सबसे पहला काम यह किया कि वह अपने पिता से अस्पताल में मिलने गया और उसके साथ दो घण्टे का समय बिताया। यूरी के रवाना होने से पहले पावेल निकोलाएविच ने उसे घर पर टेलीफोन किया था और कहा था कि उसके लिए गरम जूते ओवरकोट और टोप ले आये। वह इस बुरे वार्ड से दुखी हो चुका था, वह इसमें रहने वाले मन्द बुद्धि लोगों और उनके मूर्खतापूर्ण वार्तालापों से भी थक चुका था। उसे अस्पताल की लावी भी इससे कम वितृष्णा से भरी नहीं दिखाई पड़ती थी। यद्यपि वह बहुत कमजोर था फिर भी उसके मन में बाहर साफ हवा में जाने की इच्छा थी।

और उन्होंने यह भी किया। उन्होंने उसकी रसौली के ऊपर एक स्कार्फ हलके से लपेट दिया क्योंकि वह अभी भी अपने सिर को घुमाते समय रसौली की मौजूदगी अनुभव करता था लेकिन पहले से बहुत अधिक कम। उसे इस बात की संभावना नहीं थी कि वह अस्पताल के मैदान में घूमते समय किसी अपने परिचित व्यक्ति से मिल सकेगा। यदि कोई ऐसा ही परिचित उसके सामने पड़ भी जाए तो उसके लिए इन विचित्र कपड़ों में उसे पहचान पाना सम्भव न होगा। अतः पावेल निकोलाएविच ने टहलते समय कोई उलझन या परेशानी अनुभव नहीं की। यूरी ने उसकी बांह थाम ली और पावेल निकोलाए-विच उसका सहारा लेकर चलने लगा। उसे अस्पताल के मैदान की बीच की साफ, सूखी कोलतार की सड़क पर एक-एक कदम रखना बड़ा अच्छा लग रहा था। विशेष इस कारण से क्योंकि यह उसके सुन्दर फ्लैट और इसके बाद काम तथा गतिविधियों के वापस लौटने का पूर्वाभास था क्योंकि वह अपने घर को आराम की सर्वोत्तम जगह समझता था और उसे अपना काम पसन्द था। केवल इलाज से ही पावेल निकोलाएविच कमजोर नहीं हुआ था बल्कि चुपचाप पड़े रहने से भी वह पस्त हो गया था। अब वह एक विशाल महत्वपूर्ण व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग नहीं रह गया था। वस्तुतः उसे लगने लगा था कि वह समस्त अधिकारों और महत्व से वंचित हो गया है। वह उस स्थान पर जल्दी से जल्दी वापस लौट जाना चाहता था, जहां उसे लोग प्यार करते थे और उसके बिना जिनका काम नहीं चलता था।

इस सप्ताह ठण्ड और वर्षा के दौर आये थे लेकिन आज गरम मौसम फिर प्रभावशाली दिखाई पड़ रहा था। इमारत की छाया में अभी भी ठण्डक महसूस होती थी और वहां की ज़मीन गीली थी। लेकिन धूप में इतनी गर्मी थी कि पावेल निकोलाएविच अपने ओवरकोट का वजन मुश्किल से ही बर्दाश्त कर पा रहा था। उसने एक-एक बटन खोलना शुरू किया।

उसके लिये अपने पुत्र से शान्त भाव से गम्भीर वार्तालाप का अच्छा अवसर था। आज शनिवार था और यह दिन यूरी के सरकारी दौरे का अंतिम दिन समझा जा रहा था। यूरी अपने काम पर लौटने की जल्दबाजी में नहीं था और यह कारण भी था कि पावेल निकोलाएविच अपना मनमाना समय लेना चाहता था। उसके पुत्र के मामलों ने ऐसा स्वरूप ग्रहण कर लिया था जो खतरनाक सिद्ध हो सकता था। उसका पिता का हृदय यह अनुभव कर रहा था। वह यह भी स्वीकार कर रहा था कि उसने अपने पुत्र के मामलों की उपेक्षा की थी। यह भी स्पष्ट था कि उसका पुत्र सरकारी दौरे से साफ दिल और शुद्ध अन्तःकरण से वापस नहीं लौटा था ; वह अपने पिता की नजरों से नजरें मिलाने से बच रहा था। बचपन में यूरी बिल्कुल भिन्न था। वह स्पष्टवादी लगता था। उसने अपने पिता के प्रति यह शरमीला और बातचीत से बच निकलने वाला भाव अपने विद्यार्थी जीवन में ही विकसित किया था। इस बात से पावेल निकोलाएविच को बेहद झुंझलाहट होती थी और कभी-कभी उसके ऊपर बरस पड़ता था, "तुम सुनो अपना सिर ऊपर उठा कर बात करो!"

लेकिन आज उसने निश्चय किया था कि वह ऐसी तीखी डांट नहीं लगायेगा। वह बड़ी चतुरता से उससे बात करेगा। उसने यूरी से कहा कि वह उसे विस्तार से बताये कि गणराज्य की कानूनी जांच शाखा के प्रतिनिधि के रूप में उसने अपना उत्तरदायित्व किस प्रकार निभाया है और कोई नाम कमाया है या नहीं। उसे जांच के लिये सुदूर नगरों में दौरे पर भेजा गया था।

यूरी ने बताना शुरू किया पर उसके मन में विशेष उत्साह नहीं था। उसने एक मामले के बारे में बताया फिर दूसरे के, पर वह अपनी आंखें बराबर दूसरी ओर फेर लेता था।

"ठीक है, मुझे और बताओ, मुझे और बताओ!"

कुछ देर के लिये वे धूप में एक बैंच पर बैठ गए जो सूखी हुई थी। यूरी ने चमड़े का कोट और ऊनी टोपी पहन रखी थी। वह गम्भीर और पर्याप्त मर्द लग रहा था। लेकिन उसके भीतर की यह कमजोरी उसे बर्बाद कर रही थी।

"हां एक लारी ड्राइवर का भी मामला था..." उसने जमीन की ओर

घूरते हुए कहा।

"हां लारी ड्राइवर का क्या मामला था?"

"सर्दी का मौसम था और वह सहकारी समितियों की खाने की चीजें अपनी लारी में लेकर जा रहा था। उसे ७० किलोमीटर की यात्रा तय करनी थी लेकिन बर्फ के तूफान के कारण उसे बीच में ही रुकना पड़ा। हर चीज बर्फ से ढक गई, परियों की पकड़ समाप्त हो गई, भयंकर ठण्डक थी और कहीं भी कोई भी आदमी दिखाई नहीं पड़ रहा था। बर्फ का तूफान २४ घण्टे से अधिक समय तक उसके चारों ओर चलता रहा। अब वह लारी के भीतर इसे बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं रह गया था। तो उसने लारी को जहां की तहां छोड़ दिया। पूरी भरी लारी को और रात गुजारने के लिये किसी जगह की तलाश में निकल पड़ा। अगले दिन सुबह तक तूफान समाप्त हो चुका था और वह एक टैक्टर लेकर लारी को बर्फ से बाहर निकालने के लिये आया। लेकिन लारी से मैकारोनी की एक पेटी गायब थी।"

"डिलिवरी मैन कहां था?"

"बात यह थी कि ड्राइवर दोनों काम कर रहा था। वह अकेला ही था।"

"यह शर्मनाक उपेक्षा है!"

"हां सचमुच।"

"तो उसने अवसर का लाभ उठाया और तुरन्त पैसा बना लिया।"

"पिता जी, मैकारोनी की एक पेटी के लिये उसे जो कीमत चुकानी पड़ी वह बहुत बड़ी थी" यूरी बोला और अन्ततः उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं। उसके चेहरे पर हठ से भरा एक असुखद भाव छा गया था। "उसे इसके लिये पांच वर्ष की कैद की सजा मिली, मैकारोनी की उस पेटी के लिये। लारी में वोदका की पेटियां भी थीं और उन्हें छुआ तक नहीं गया था।"

"तुम्हें इस प्रकार आसानी से फांसे में नहीं आ जाना चाहिये यूरी। तुम्हें इतना बचकानापन नहीं दिखाना चाहिये। तूफान के बीच ड्राइवर के अलावा इस पेटी को और कौन ले जा सकता था।"

"कोई आदमी घोड़े पर आ सकता था, कौन जाने! सुबह तक वहां किसी का निशान नहीं बचा था।"

'चलो यदि यह भी मान लिया जाये कि स्वयं उसने यह पेटी नहीं चुराई। पर वह अपनी जगह तो छोड़ गया, क्यों गया न? यह कैसा आचरण है कि राज्य की सम्पत्ति को इस प्रकार छोड़कर चल दिया जाये?"

अपराध निर्विवाद था, दण्ड स्पष्ट रूप से सही था, सम्भवतः इसमें कुछ उदारता ही दिखाई गई थी। लेकिन पावेल निकोलाएविच को क्रोध इस बात का था कि उसका पुत्र इस मामले को इस नजर से नहीं देख रहा था।

उसे यह बात उसके हलक के नीचे उतारनी थी। अधिकांश चीजों में यूरी कमजोर और भद्दा था। लेकिन जब कभी किसी मूर्खतापूर्ण बात पर तर्क का सवाल उठता तो वह एक खच्चर की तरह अड़ियल बन जाता।

"पिता जी जरा यह सोचने की कोशिश कीजिए—बर्फ का तूफान है तापमान शून्य से १० डिग्री नीचे है—वह रात कैसे लारी में गुजार सकता था ? वहां मर जाता, क्यों मर जाता न ?"

"तुम्हारा क्या अभिप्राय है, मर जाता ? आर्मी के सन्तरियों के बारे में तुम क्या कहोगे ?"

"सन्तरियों की ड्यूटी हर दो घण्टे में बदली जाती है।"

"ठीक है, मान लो अगर किसी सन्तरी की ड्यूटी न बदली जाये। मोर्चे पर क्या होता है ? मौसम से कोई फर्क नहीं पड़ता। सन्तरियों को अपने स्थान पर तैनात रहना पड़ता है। यदि आवश्यकता हो तो उन्हें अपनी जान देनी पड़ती है लेकिन अपनी ड्यूटी का स्थान छोड़ दें, असम्भव !" पावेल निकोलाएविच ने अपनी अंगुली के संकेत से वह जगह भी दिखाई, जहां वे खड़े रह कर मर सकते थे पर अपनी ड्यूटी की जगह नहीं छोड़ सकते थे। "जरा सोचो तुम क्या कह रहे हो। यदि इस ड्राइवर को छोड़ दिया जाता है तो सब लारी ड्राइवरी अपनी जगह छोड़कर जाने लगेंगे, वे उस समय तक माल की चोरी करते रहेंगे जब तक राज्य के पास कुछ भी शेष नहीं रह जायेगा। क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती ?"

नहीं, यूरी की समझ में यह बात नहीं आ रही थी। उसकी गधे जैसी चुप्पी यह दर्शा रही थी कि यह बात उसकी समझ में नहीं आई थी।

"ठीक है, मैं जानता हूं, तुम्हारे ऐसे बचकाने विचार हैं। इसका कारण यह है कि अभी तुम्हारी उम्र बहुत कम है। तुम तो इन बातों के बारे में किसी और को भी बता सकते थे। पर मैं आशा करता हूं कि शायद तुमने इतना विवेक तो दिखाया ही होगा कि इन विचारों को अपनी सरकारी रिपोर्ट में शामिल नहीं किया होगा ?"

यूरी के पपड़ीदार होंठ हिले, इनमें फिर हरकत हुई, "मैंने···मैंने सरकारी तौर पर आपत्ति उठाई। मैंने इस सजा को लागू करने की कार्रवाई को निलम्बित कर दिया।"

"तुमने इसे निलम्बित कर दिया। और अब वे इस बात पर फिर विचार करेंगे ! ओह, नहीं ! नहीं।" पावेल निकोलाएविच ने अपना चेहरा ढक लिया, उसने अपना आधा चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया। बस उसे इसी बात का तो भय था। यूरी इस तरह गड़बड़ कर रहा था, अपने आपको बर्बाद कर रहा था और अपने पिता के नाम पर भी धब्बा लगा रहा था। पावेल निकोलाएविच क्रोध से पागल हो उठा। यह एक ऐसे पिता का असहाय

क्रोध था जो यह अनुभव कर रहा था कि वह स्वयं अपनी बुद्धिमत्ता अथवा अपनी कार्यकुशलता अपने सुस्त और मूर्ख पुत्र को हस्तांतरित नहीं कर सकता।

वह उठ खड़ा हुआ और उसके साथ ही यूरी भी। उन लोगों ने टहलना शुरू कर दिया और एक बार फिर यूरी ने अपने पिता को उसकी कोहनी पकड़ कर सहारा देने की कोशिश की। पावेल निकोलाएविच यह भी जानता था कि यदि वह अपने दोनों हाथों का भी इस्तेमाल करे तो भी वह अपने पुत्र के भेजे में यह बात नहीं घुसा सकेगा कि उसने कितनी भयानक भूल की है।

उसने अपने पुत्र को कानून, कानून के पालन, और उस दृढ़ आधार के बारे में बताया जिस पर यह आधारित था। यह एक ऐसा आधार था जिसके बारे में ऐसी सरलता से कोई सन्देह नहीं उठाया जा सकता था और विशेष कर उस स्थिति में जब आप एक राज्य के सरकारी वकील के कार्यालय में कानून निरीक्षक के रूप में काम कर रहे हों। सब सत्य सटीक होते हैं; कानून, कानून है। लेकिन व्यक्ति को विशेष क्षण और विशेष परिस्थिति को भी ध्यान में रखना चाहिए---उसे यह भी ध्यान रखना चाहिये कि किसी निर्धारित समय पर क्या कार्रवाई उचित होगी। उसने विशेष रूप से इस बात का प्रयास किया कि यूरी को राज्य संगठन के समस्त स्तरों और समस्त शाखाओं के मूलभूत पारस्परिक सम्बन्ध की बात समझाये। परिणामस्वरूप यह भी गलत होगा कि वह गणराज्य के आदेश पर किसी सुदूर स्थान पर पहुंच कर इस प्रकार गर्वपूर्ण दृष्टिकोण अपनाये। इसके विपरीत उसे स्थानीय संदर्भों के प्रति समवेदनशील होना चाहिये और स्थानीय अधिकारियों के आड़े नहीं आना चाहिये। जो स्थिति और उसकी आवश्यकताओं के बारे में उससे बेहतर जानते हैं। यदि उन्होंने लारी ड्राइवर को ५ वर्ष की सजा सुनाई तो इसका यही अभिप्राय था कि उस विशेष इलाके में यही सजा आवश्यक समझी गई।

और अब वह टहलते हुए इमारत के साये के नीचे आये और फिर उससे आगे बढ़ गये, वे सीधी और चक्करदार सड़कों पर टहलते रहे और फिर नदी के समीप पहुंच गये। यूरी सुन रहा था और उसने बस यही कहा, "पिताजी क्या आपको थकान का अनुभव नहीं हो रहा है? शायद हमें फिर थोड़ा बैठ जाना चाहिए।"

यह लड़का बेहद हठी था और इस बात में शक की कोई गुंजाइश नहीं थी। किसी भी बात ने उसे सही दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा नहीं दी। बस उसके दिमाग में एक ही बात जमी हुई थी कि ड्राइवर की लारी में तापमान शून्य से १० डिग्री नीचे था।

स्वाभाविक था कि पावेल निकोलाएविच इस स्थिति से पस्त हो गया था और उसे अपने ओवर कोट में बेहद गर्मी लग रही थी। वे लोग कुछ घनी झाड़ियों के पास रखा एक बैंच पर बैठ गए। इन झाड़ियों पर अभी तक

पत्तियां नहीं आईं थीं केवल पतली-पतली टहनियां ही उगी थीं। आप इनके आर-पार देख सकते थे। पर छोटी-छोटी कान की शक्ल की पत्तियां अपनी कलियों को फोड़कर अंकुरित भी होने लगी थीं। धूप में बड़ी तेजी थी।

पावेल निकोलाएविच ने टहलने के समय अपना चश्मा नहीं लगा रखा था। उसका चेहरा आराम की स्थिति में था और उसकी आंखें भी आराम कर रही थीं। धूप में बैठा हुआ वह चुपचाप अपनी आंखों को थोड़ा-थोड़ा मींच रहा था।

समीप ही सीधे कटावदार किनारे के नीचे नदी की आवाज किसी पहाड़ी धारा की तरह गरज रही थी। पावेल निकोलाएविच यह आवाज सुन रहा था। वह अपने भीतर ऊष्मा का अनुभव कर रहा था और उसके मन में यह विचार उठ रहा था कि फिर अपने सामान्य जीवन में वापसी कितनी सुखद है। यह जानना कितना सुखद है कि वह आज भी जीवित है और चारों ओर हरियाली फैलने जा रही है और अगली बसन्त ऋतु में भी वह प्रकृति का आनन्द लेने के लिये जीवित रहेगा।

लेकिन उसे उन परिस्थितियों की तस्वीर पूरी करनी थी, जिसमें यूरा फंसा हुआ था। उसे अपने ऊपर अंकुश रखना था, अपने क्रोध को रोकना था अन्यथा वह यूरी को भयभीत करके भगा सकता था। उसने एक आह भरी और अपने पुत्र से कहा कि वह उसे कुछ और मामलों के बारे में बताये।

यूरी चाहे कितना भी आरम्भ में सुस्त क्यों न रहा हो, वह यह बात अच्छी तरह से जानता था कि उसका पिता किस बात की प्रशंसा करेगा और किस बात की भर्त्सना। उसने जो अगला मामला सुनाया उसकी प्रशंसा किये बिना पावेल निकोलाएविच नहीं रह सकता था। फिर भी यूरी उसकी नजरों से नजरें नहीं मिला रहा था। उसने झूठ बोलना नहीं सीखा था और उसका पिता यह भांप गया कि कोई और बुरा मामला भी सामने आने वाला है। मुझे सब कुछ बताओ, वह बोला, "मैं हर बात जानना चाहता हूं। तुम जानते ही हो कि तुम्हें विवेकपूर्ण और उचित सलाह भर देना चाहता हूं। तुम जानते ही हो कि मैं यह तुम्हारी भलाई के लिये ही कर रहा हूं। मैं यह नहीं चाहता कि तुम गलतियां करो।"

यूरी ने आह भरी और किस्सा सुनाया। अपने दौरे और मुआइने के दौरान उसे अदालत के पुराने रेकार्डों और दस्तावेजों की जांच करनी थी। और इन दस्तावेजों में कुछ पांच वर्ष पुराने तक थे। उसका ध्यान इस ओर गया कि दस्तावेजों पर जो पहले एक रूबल या तीन रूबल के स्टाम्प लगे थे उनमें से कुछ गायब हो गये हैं। सही स्थिति यह थी कि इन टिकटों के चिपकाये जाने का निशान उन कागजों पर था पर टिकट गायब हो चुके थे। पर कहां जा सकते थे? यूरी ने विचार किया और इधर-उधर नजर दौड़ानी शुरू की।

उसने देखा कि हाल के कुछ दस्तावेजों पर जो टिकट लगे थे वे कुछ खराब थे और कुछ कहीं-कहीं से फटे हुए थे। इस स्थिति में वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि कात्या और नीना नाम की जो दो लड़कियां अदालत में काम करती हैं और जिनकी पहुँच इन दस्तावेजों तक है उन में से कोई न कोई नये टिकटों की जगह पुराने टिकट लगाती है और अर्जी देने वालों का पैसा अपनी जेब में रख लेती है।

"जरा यह बात तो देखो।" पावेल निकोलाएविच बोला। वह गुर्राया और उसने अपने दोनों हाथ झटके से ऊपर की ओर उठाये। "जरा सोचिए, राज्य की चोरी करने के कैसे-कैसे रास्ते हैं। यह रास्ता तुरन्त समझ में नहीं आ सकता, क्यों?"

यूरी ने अपनी पूछताछ बड़ी शांति से चुपचाप की और किसी व्यक्ति को एक शब्द भी नहीं बताया। उसने इस बात की जड़ तक पहुँचने का इरादा कर लिया था। वह यह जान लेना चाहता था कि इन दोनों लड़कियों में से कौन सी लड़की यह गबन कर रही है। उसने योजना बनाई। उसने दोनों से मुलाकात का समय तय किया, पहले कात्या से और फिर नीना से। वह प्रत्येक लड़की को सिनेमा ले जाता और फिर उसके घर पहुंचाने जाता। उसने सोचा था कि जिसके घर पर महंगा फर्नीचर और कालीन होंगे वही चोर होगी।

"बहुत खूब।" पावेल निकोलाएविच ने ताली बजाते हुए और मुस्कुराते हुए कहा। "बड़ी होशियारी का काम है। यह तो अपने काम के साथ-साथ मनोरंजन की भी बात हुई। अच्छा लड़का।"

लेकिन यूरी ने देखा कि इनमें से किसी भी लड़की के पास कोई खास चीज़ नहीं थी। एक लड़की अपने मां-बाप के साथ रहती थी, दूसरी अपनी छोटी बहन के। उनके पास ऐसी बहुत सी चीजें भी नहीं थीं जिन्हें यूरी अनिवार्य समझता था कालीनों की तो बात दूर। उनके घर देखकर उसे अचरज हुआ कि वह कैसे अपनी जिन्दगी काट रही हैं। उसने इस मामले पर विचार किया और यह पूरा किस्सा उस न्यायाधीश को बताया जिसकी अदालत में लड़कियां काम करती थीं। उसने न्यायाधीश से कहा कि वह इस मामले को अदालत में पेश न करे बस लड़कियों को डांट फटकार दे और यह किस्सा यहीं खतम कर दे।

न्यायाधीश इस बात के लिए यूरी का बड़ा आभारी हुआ कि वह निजी तौर पर इस मामले को रफा-दफा करवाना चाहता था। इस मामले के प्रचार से स्वयं न्यायाधीश को हानि पहुँचती। उन्होंने अलग-अलग दोनों लड़कियों को बुलाया और घंटों तक उन्हें बड़े क्रोध से डांटा-फटकारा। पहले एक ने स्वीकारोक्ति की और फिर दूसरी ने। ये दोनों लड़कियां इस तरीके से हर महीने

सौ रूबल बना रही थीं।

मेरे प्यारे बेटे, यह काम सरकारी तौर पर किया जाना चाहिये था। यह सरकारी तौर पर ही किया जाना चाहिए था, पावेल निकोलाएविच बोला। उसे इतना दुःख हो रहा था कि मानो यह मौका स्वयं उसके हाथ से निकल गया हो। लेकिन दूसरी ओर न्यायाधीश को उलझन में न डालना भी सही था। इस दृष्टि से यूरी ने बड़ी चतुरता से काम लिया। "कम-से-कम उन लोगों को वह राशि तो वापस लौटाने के लिये बाध्य करना चाहिए था जो उन्होंने ले ली थी।" वह बोला।

यह किस्सा कैसे खत्म हुआ, यूरी मुश्किल से ही यह बात बता सकता था। उसकी समझ में इस घटना का सही अर्थ आ ही नहीं रहा था। जब उसने न्यायाधीश के पास जाकर इस मामले को निजी तौर पर रफा-दफा करने का सुझाव दिया तब वह यह समझ रहा था कि उसने बड़ी उदारता का परिचय दिया है। उसे अपने इस निर्णय पर गर्व था। उसने यह कल्पना की कि वे दोनों लड़कियां अपने अपराध की स्वीकारोक्ति की भयानकता के बाद कितनी प्रसन्नता का अनुभव करेंगी। उन लोगों को दण्ड की आशा होगी और तभी उन्हें क्षमा दे दी जायेगी। वह उन्हें यह बताने में कि उन्होंने कितनी शर्मनाक बात की है न्यायाधीश से आगे बढ़कर बात करेगा। वह अपने २३ वर्ष के अनुभव से उदाहरण दे देकर यह बतायेगा कि ऐसे ईमानदार हैं, जिन्हें चोरी करने या गबन करने का अवसर मिला, पर उन्होंने यह नहीं किया। यूरी ने इन लड़कियों को बड़ी कड़ाई से डांटा-फटकारा। वह समझ रहा था कि क्षमा-दान इस प्रभाव को समाप्त कर देगा। लड़कियों को क्षमा कर दिया गया और वे चली गईं लेकिन बाद के दिनों में उन लोगों ने कभी भी यूरी से मुलाकात के समय कोई खुशी नहीं दिखाई। उन लोगों ने इस पूरी उदारतापूर्ण कार्रवाई के लिये धन्यवाद भी नहीं दिया। उन लोगों ने उसकी उपेक्षा करने का भरसक प्रयास किया। वह आश्चर्य से स्तम्भित था। उसकी समझ में यह बात जरा भी नहीं आ रही थी। सम्भवतः यह बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी कि वे कैसे भयानक दण्ड से बच निकली हैं—लेकिन नहीं, वकील के दफ्तर में काम करने वाली लड़कियों को इस बात की अवश्य जानकारी होगी। वह स्वयं को नहीं रोक सका और उसने नीना के पास जाकर स्पष्ट शब्दों में यह बात पूछी कि क्या वह इस मामले के इस प्रकार से समाप्त हो जाने पर प्रसन्न नहीं है। "मैं इस बात से क्यों प्रसन्न होऊं," नीना ने उत्तर दिया। "अब मुझे यह काम छोड़ना होगा। मैं केवल अपनी तनख्वाह पर जीवित नहीं रह सकती।" इसके बाद उसने कात्या से कहा, जो इन दोनों में सुन्दर थी, कि वह उसके साथ सिनेमा चले। कात्या का उत्तर था, "नहीं। जब मैं आदमियों के साथ बाहर जाती हूं तो मुझे ईमानदार बना रहना ही पसन्द है। मैं तुम्हारी तरह

आचरण नहीं कर सकती ।"

तो अपने दौरे से वह यह पहेली अपने साथ वापस लाया था और अभी भी उसका मन इसी पहेली में उलझा हुआ था । उसे इन लड़कियों की कृतघ्नता से गहरी चोट पहुंची थी । वह जानता था कि उसे जीवन अपने पिता की तुलना में कहीं अधिक जटिल दिखाई पड़ता है क्योंकि उसका पिता स्पष्ट रूप से इन बातों के बारे अपना दृष्टिकोण रखता था । उसका दिमाग एक दिशा में चलता था पर इसके बावजूद यह भी स्पष्ट था कि जीवन कहीं अधिक जटिल है । यूरी को क्या करना चाहिए था ? उन्हें क्षमा करने से इन्कार कर देना चाहिए था ? अथवा उसे कुछ नहीं कहना चाहिए था और इस तथ्य को अनदेखा कर देना चाहिए थी कि टिकटों का दोबारा इस्तेमाल किया जा रहा है । लेकिन ऐसा करने पर क्या उसके काम की कोई तुक रह जाती ।

उसके पिता ने और सवाल नहीं पूछे और यूरी भी अपना मुंह बन्द रख कर बेहद चुप था ।

पावेल निकोलाएविच की नजरों में यह एक और विनाशकारी घटना थी, जिसके लिए उसके पुत्र का भोंदूपन जिम्मेदार था । अब अन्ततः वह इस बात से आश्वस्त हो गया था कि यदि बचपन में किसी के चरित्र में दृढ़ता नहीं आती तो फिर कभी भी दृढ़ता नहीं आ सकती । अपने ही पुत्र से नाराज़ बने रहना मुश्किल था । लेकिन वह अत्यधिक खिन्न था और उसके लिये चिन्तित भी ।

सम्भवतः वे लोग बहुत देर तक बाहर घूमते रहे थे । पावेल निकोलाए-विच के पांव में ठण्डक लगने लगी और उसके मन में बिस्तर पर लेट जाने की तीव्र इच्छा जगी । उसने यूरी को अपना चुम्बन दिया और उसे घर भेजकर वार्ड में वापस लौट आया ।

वार्ड में जबर्दस्त बहस चल रही थी । इसमें प्रत्येक व्यक्ति शामिल था । बस विशेषता यही थी कि प्रमुख वक्ता वाणीविहीन था । वह बड़ा प्रभावशाली दिखाई पड़ने वाला दार्शनिक था । वह एक सहायक प्रोफेसर था, जो कभी-कभी उनके पास वार्ड में आता था । अब उसके गले का आपरेशन हो चुका था । कुछ दिन पहले उसे सर्जीकल वार्ड से हटाकर पहली मंजिल पर एक्सरे वार्ड में भेज दिया गया था । उसके गले के अगले हिस्से में बाल कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य स्कार्फ में लगाये जाने वाले धातु के गोल छल्ले जैसा धातु का कोई उपकरण बड़े स्पष्ट रूप से लगा हुआ दिखाई पड़ता था । यह प्रोफेसर शिक्षित और पसन्द किये जाने योग्य व्यक्ति था और पावेल निकोलाएविच ने उसकी भावनाओं को चोट न पहुँचाने का हर सम्भव प्रयास किया था । उसने ऐसी नजर से उसके गले में लगे छल्ले को नहीं देखा था, जो बुरी लगे । बोलते समय वह दार्शनिक अपनी एक अंगुली इस छल्ले के ऊपर रख लेता था । इससे उसकी

आवाज़ थोड़ी बहुत सुनाई पड़ जाती थी। उसे बोलना पसन्द था, वस्तुतः वह बोलने का आदी था और अब आपरेशन के बाद वह उस क्षमता का फिर प्रयोग करने में बेहद प्रसन्न था, जो उसे फिर से प्राप्त हो गई थी।

वह वार्ड के बीच में खड़ा हुआ कोई किस्सा सुना रहा था। उसकी आवाज़ खोखली लेकिन फुसफुसाहट से ऊंची थी। "उसने कितना सामान जुटा लिया था उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते," वह कह रहा था। "एक कमरे में पीले रंग की मुलम्मा चढ़ी लकड़ी का फर्नीचर लगा है, इन कुर्सियों आदि की पीठ पर, सीट पर और हत्थों पर हल्के गुलाबी रंग की मखमल मढ़ी है। वह सोचता है कि वह कला वस्तुओं का गम्भीर संग्रह करता है, उसके पास ऐसी चार हत्थेदार कुर्सियां और एक सोफा है। मैं जानना चाहूँगा कि उसने कहां से ये चीजें उड़ाईं? शायद, लोवरे से!" दार्शनिक हंसा। वह इस बात से बड़ा ही प्रसन्न और उत्साहित था। "इसी कमरे में फर्नीचर का एक और सैट है। इसकी कुर्सी आदि की सीट कड़ी है और पीठ ऊंची। इनका रंग काला है। वह विएना से पियानो लाया है। उसके पास हाथी दांत की नक्काशी की एक मेज़ है। यह गेटे के वीमर में वर्णित मेज जैसी है और इसके बावजूद वह मेज के ऊपर नीले और सुनहरे रंग का एक मेजपोश रखता है जो फर्श तक लटकता रहता है। एक और मेज़ पर कांसे की एक मूर्ति रखी है यह मूर्ति एक सुन्दर वस्त्रहीन लड़की की है, जिसके हाथ में एक मशाल है। लेकिन इसके लैम्प नहीं जलते। यह मूर्ति कमरे के आकार को देखते हुए बहुत बड़ी है यह प्रायः छत को छूती रहती है। सम्भवतः यह किसी बगीचे के लिये बनाई गई थी। इसके अलावा उसके पास बड़ी घड़ियां हैं—दीवार घड़ियां, सामान्य घड़ियां। कुछ बेहद पुरानी, कुछ काफी की मेज के आकार की, कुछ छत जितनी ऊंची। इनमें से अधिकांश चलती नहीं। एक बहुत बड़ा कटोरा है, जो म्यूजीयम से लाया गया है। इसमें केवल एक संतरा रखा हुआ है। मैं केवल दो ही कमरों में गया लेकिन मैंने पांच शीशों की गिनती की। कुछ शीशे ओक की घुमावदार लकड़ी के फ्रेम के लगे थे, कुछ के संगमरमर के स्टैंड थे। इसके अलावा तस्वीरें थीं, समुद्र के दृश्य, पर्वतों के दृश्य, इटली की सड़कों के दृश्य..." दार्शनिक हंस रहा था।

"उसे यह सब चीजें कहां से मिलती हैं?" सिबकातोव ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, सदा की तरह उसके दोनों हाथ पीठ को सहारा दे रहे थे।

"इसमें कुछ युद्ध के समय लूटा हुआ माल है, कुछ चीजें पुराना सामान बेचने वाली दुकानों से खरीदी गई हैं। उसकी मुलकात एक ऐसी लड़की स हो गई थी जो ऐसी ही दुकान में काम करती थी। सबसे पहले वह इस दुकान पर उस लड़की से यह कहने गया था कि वह यह अनुमान लगाकर बताये कि उसके घर के फर्नीचर का क्या दाम होगा। लेकिन अन्त में उसने इसी लड़की से शादी

कर ली। उसके बाद तो उन दोनों ने मिलकर काम शुरू कर दिया और जो भी मूल्यवान चीज़ वहाँ आती वह अपने लिये ही सुरक्षित कर लेते।"

"लेकिन वह स्वयं कहां काम करता है?" अहमदजान ने जोर देते हुए पूछा।

"कहीं भी नहीं। उसे ४२ साल की उम्र में ही पेन्शन मिल गई थी लेकिन वह अभी भी खूब मोटा तगड़ा है। वह आदमी पेड़ काटने का काम बहुत अच्छा कर सकता है। उसकी सौतेली लड़की और पोती उसी के साथ रहते हैं और यह देखने ही लायक चीज़ है कि वह उन लोगों से कैसे बात करता है। "मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ।" वह कहता है। मैं यहां का मालिक हूँ! यह मेरा घर है, मैंने इसे बनाया है।" वह अपने ओवर कोट की जेबों में हाथ डालकर उस मकान में इस तरह घूमता है मानो कोई फील्ड मार्शल हो। उसका नाम, उसके पासपोर्ट के अनुसार येमेलयान है। लेकिन न जाने किस कारण से वह अपने घर पर सब लोगों को अपने को 'शासिक' नाम से पुकारने के लिये बाध्य करता है। पर क्या यह कहा जा सकता है कि वह इसी हालत में खुश है। नहीं, वह नहीं है। उसे इस बात का बड़ा दुःख है कि वह जिस सेना में काम करता था उसके जनरल का मकान किसलोवोदस्क[1] में है। उस मकान में दस कमरे हैं, दो कारें हैं और उसका अपना आदमी है जो पानी उबालने के लिये निरन्तर आग जलाये रखता है। शासिक के पास यह सब नहीं है"

वे सब हंसे।

पावेल निकोलाएविच को यह किस्सा बेतुका और पूरी तरह से नीरस लगा।

शुलुबिन भी नहीं हंसा था। वह दूसरे लोगों की तरफ इस तरह देख रहा था मानो कह रहा हो कि मुझे कुछ देर सो लेने दो।

"ठीक है! हो सकता है, यह किस्सा दिलचस्प हो," कोस्तोग्लोतोव ने चित्त लेटे हुए ही कहा। "लेकिन यह कैसे हुआ..."

स्थानीय अखबार में एक लेख था। यह कब निकला था? कुछ दिन पहले, वार्ड में किसी ने अपनी स्मृति को ताजा करते हुए कहा। यह लेख ऐसे आदमी के बारे में था, जिसने सरकारी पैसे से अपने लिये विशाल भवन का निर्माण कराया। और फिर यह बात खुल गई तो तुम जानते हो, फिर क्या हुआ? उसने स्वीकारोक्ति की कि उससे "गलती" हो गई है। उस भवन को बालगृह बनाने के लिये सौंप दिया और उसकी केवल सरकारी तौर पर ही भर्त्सना की गई। उसे पार्टी तक से निष्कासित नहीं किया गया।"

"हां, यह ठीक है।" सिबकातोव को भी यह मामला पूरी तरह से

---

१. उत्तर काकेशस का एक फैशनेबल स्थान।

याद था। "अरे भर्त्सना ही क्यों ? उसके ऊपर मुकदमा क्यों नहीं चलाया गया ?"

दार्शनिक ने यह लेख नहीं पढ़ा था और यह समझाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने को तैयार नहीं था कि उसके ऊपर मुकदमा क्यों नहीं चलाया गया। यह बात रूसानोव के लिये छोड़ दी गई। "कामरेडो" वह बोला, "यदि उसने पश्चाताप प्रगट किया, अपनी गलती महसूस की और उस भवन को बाल-गृह के लिगे सौंप दिया तो अतिवादी कार्रवाई क्यों की जाये। हम लोगों को मानवीय आचरण करना चाहिये, यह हमारे···का बुनियादी तत्व है···"

"ठीक है यह किस्सा दिलचस्प है।" कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बात को घसीटते हुए कहा, "लेकिन आप दार्शनिक दृष्टिकोण से इस बात को किस प्रकार समझायेंगे—मेरा कतलब है शासिक और उसके भवन की बात को ?"

प्रोफेसर ने अपने एक हाथ को घुमाया और दूसरे हाथ से अपना गला थामे रहा। "दुर्भाग्यवश" वह बोला, "अभी भी बुर्जुआ मनोवृत्ति के अवशेष बचे हैं।"

"बुर्जुआ क्यों ?" कोस्तोग्लोतोव शिकायत करता हुआ बोला।

"क्यों, तुम्हारी राय में और यह क्या हो सकता है?" वादिम ने अपना ध्यान उस ओर देते हुए कहा। वह पढ़ना चाहता था लेकिन अब जैसा कि स्पष्ट था पूरा वार्ड इस जबर्दस्त बहस में बुरी तरह उलझ चुका था।

कोस्तोग्लोतोव ने अपने आपको ऊपर की ओर उठाया, अपना सिर तकिए के ऊपर रख लिया ताकि वादिम को और दूसरे लोगों को भी अच्छी तरह देख सके।

"और क्या ? क्यों, यह तो मनुष्य का लालच है। यह यही है, बुर्जुआ मनोवृत्ति नहीं। बुर्जुआ वर्ग की उत्पत्ति से पहले ही लालची लोग थे। और बुर्जुआ वर्ग की समाप्ति के बाद भी लालची लोग रहेंगे।"

अभी तक रूसानोव लेटा नहीं था। उसने अपने बिस्तर के पास कोस्तोग्लोतोव के ऊपर तीखी नजर डाली और बड़े विवेचरात्मक ढंग से बोला, "यदि तुम ऐसे मामलों की गहराई में जाओगे तो तुम्हें हमेशा यह देखने को मिलगा कि इन लोगों का सम्बन्ध बुर्जुआ वर्ग से रहा है।"

कोस्तोग्लोतोव ने अपने सिर को इस प्रकार झटका दिया मानो वह थूक रहा हो। "यह तो एक दम मूर्खतापूर्ण बात है। सामाजिक उद्गम की बात।"

"तुम्हारा "मूर्खतापूर्ण बात" कहने का क्या अभिप्राय है ?" रूसानोव की बगल में अत्यन्त तीखा दर्द हुआ और उसने अपने हाथ से वह हिस्सा थाम लिया। उसने इस प्रकार के प्रत्यक्ष ढीटता मेरे प्रहार की अपेक्षा नहीं की थी, "हड्डीचूस" तक से नहीं।

"हां, तुम्हारा "मूर्खतापूर्ण बात" कहने से क्या अभिप्राय है।" वादिम

ने अपनी घनी भवें आश्चर्य से ऊपर उठाते हुए कहा।

"मैं जो कह रहा हूं मेरा अभिप्राय वही है," कोस्तोग्लोतोव गुर्राया वह थोड़ा और सीधा हुआ और इस प्रकार अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया "यह बिल्कुल मूर्खतापूर्ण बातें हैं जो तुम्हारे दिमागों में भर दी गई हैं।"

"तुम्हारा भर दी गई हैं कहने से क्या अभिप्राय है ? क्या तुम जो बातें कह रहे हो उनकी जिम्मेदारी लेने को तैयार हो ?" रूसोनोव ने चीखते हुए ये शब्द कहे और उसकी शक्ति अप्रत्याशित रूप से वापस लौट आई थी।

"किन के दिमागों में भर दिया गया है ?" वादिम ने अपनी पीठ को सीधा करते हुए और अपनी पुस्तक को एक टांग पर रखते हुए पूछा।

"तुम्हारे ?"

"हम मशीनी आदमी नहीं है," वादिम ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "हम किसी भी बात को वैसे ही नहीं मान लेते।"

"तुम्हारा 'हम' कहने का क्या अभिप्राय है ?" कोस्तोग्लोतोव गुर्राया। उसके बालों का गुच्छा अब उसके चेहरे पर लटक रहा था।

"मेरा अभिप्राय है हम, हमारी पीढ़ी।"

"तो तुम सामाजिक उद्गम वाली ये सब बातें क्यों निगल जाते हो ? यह मार्क्सवाद नहीं है। यह जातीयवाद।"

"तुमने क्या कहा ?" रूसानोव चिल्लाया, वह अपने दर्द के कारण प्रायः दहाड़ रहा था।

"ठीक वही जो तुमने सुना है।" कोस्तोग्लोतोव ने अपना उत्तर उसके मुंह पर दे मारा।

"यह सुनिए ! ज़रा यह सुनिए !" रूसानोव चिल्लाया। वह लड़खड़ा रहा था और अपनी बाहें इस प्रकार हिला रहा था मानो वह वार्ड के प्रत्येक व्यक्ति को उसके चारों ओर जमा होने के लिये बुला रहा हो। "मैं आप लोगों को गवाहों के रूप में बुलाता हूँ। मैं आप लोगों को गवाह बनाता हूं। यह सैद्धांतिक तोड़फोड़ है।"

"कोस्तोग्लोतोव ने बड़ी तेजी से अपनी टांगें बिस्तर के नीचे लटकाईं। उसने अपनी दोनों कोहनियां हिलाते हुए रूसानोव की ओर अत्यधिक अभद्र इशारा किया और इसके साथ ही उस सब गन्दे शब्दों का उच्चारण भी किया, जो दीवारों पर लिखा हुआ दिखाई पड़ता है जाओ और···तुम और तुम्हारे सैद्धांतिक तोड़-फोड़ ! तुमने अपने भीतर अच्छी आदत डाली है। तू ने मादर···जब कभी कोई व्यक्ति तुम से सहमत नहीं होता तुम इसे सैद्धांतिक तोड़-फोड़ कहने लगते हो।

"इस विवेकहीन गुण्डे से इस प्रकार आहत और अपमानित होकर उसके अभद्र इशारों और गन्दी भाषा से अपमानित होकर रूसानोव का गला ही रुंध

गया और उसने अपने फिसलते हुए चश्मे को सीधा करने का प्रयास किया। अब कोस्तोग्लोतोव इतने जोर से चिल्ला रहा था कि उसके शब्द केवल पूरे वार्ड में ही नहीं बल्कि बाहर बरामदे में भी सुनाई पड़ रहे थे। (जोया ने दरवाजे से घूम कर भीतर देखा।) :"तुम एक ओझा की तरह सामाजिक उद्गमों के बारे में क्यों टर्राते रहते हो ? तुम्हें मालूम है कि १९२० के बाद के वर्षों में वे लोग क्या कहा करते थे ? "हमें अपने हाथ की ठेठ, अपने हाथ के घट्टे दिखाओ। तुम्हारे हाथ इतने सफेद और मुलायम क्यों हैं ?" बस वही मार्क्सवाद था।

"मैंने श्रमिक के रूप में काम किया है, मैंने श्रम किया है !" रूसानोव चिल्लाया। पर वह अपने ऊपर प्रहार करने वाले कोस्तोग्लोतोव को मुश्किल से ही देख पा रहा था क्योंकि उसका चश्मा सही स्थान पर नहीं लग पा रहा था।

"मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास करता हूं।" कोस्तोग्लोतोव ने बड़ी कर्कश आवाज़ से घोषणा की। मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास करता हूँ। तुमने शनिवार के काम के दिन लकड़ी के लट्ठे तक उठाना शुरू कर दिया था।[1] बस तुम बीच में ही रुक गये। ठीक है, हो सकता है कि मैं एक व्यापारी का लड़का है, तृतीत श्रेणी का व्यक्ति, लेकिन मैंने जीवन पर्यन्त खूब पसीना बहाया है। यह देखो मेरे हाथ में पड़े घट्टे देखो। तो मैं क्या हूँ ! क्या मैं बुर्जुआ हूँ ! क्या मेरे पिता ने मेरे रक्त में भिन्न प्रकार के लाल और श्वेत कण भर दिये थे ? यही कारण है कि मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारा दृष्टिकोण वर्ग दृष्टिकोण नहीं है बल्कि जातीय दृष्टिकोण है। तुम जातीयवाद के हामी हो !"

"क्या ! मैं क्या हूँ ?"

"तुम एक जातीयवादी हो !" कोस्तोग्लोतोव ने उसे समझाते हुए बड़ी स्पष्टतः से इस शब्द का उच्चारण किया और बिस्तर से कूद कर तन कर खड़ा हो गया।

अनुचित रूप से अपमानित रूसानोव की बारीक आवाज एक चीख में बदल गई थी। वादिम भी बोल रहा था, तेजी से और क्रोध से। लेकिन वह अपने बिस्तर से नहीं उठा और किसी की समझ में यह नहीं आया कि वह क्या कह रहा था। दार्शनिक अपना बड़ा, सुघड़ सिर शिकायत के रूप में हिला रहा था, जिसके ऊपर अच्छे बालों वाली एक टोपी रखी थी। लेकिन इस शोरगुल

---

१. स्वेच्छा से, बिना मजदूरी का शारीरिक श्रम कम्युनिस्ट शिक्षा का एक अंग था और यह प्रत्येक व्यक्ति पर, जिसमें लिखाई-पढ़ाई का काम करने वाले अफसर भी शामिल थे, लागू होता था। (अनुवादक की टिप्पणी)

में उसकी रोगग्रस्त आवाज़ कौन सुन सकता था ?

दार्शनिक अब कोस्तोग्लोतोव के पास आया, उसे सांस लेने देने तक प्रतीक्षा की और किसी प्रकार फुसफुसाहट के स्वर में यह कह सका। तुमने "वंशानुगत सर्वहारा" अभिव्यक्ति सुनी होगी ?

"इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारे दस दादा सर्वहारा थे। यदि तुम स्वयं मजदूर नहीं हो तो तुम सर्वहारा नहीं हो," कोस्तोग्लोतोव ने यथा सम्भव ऊंची आवाज़ में कहा। "वह सर्वहारा नहीं है, वह तो कुतिया का पिल्ला है। उसे अगर किसी बात की चिन्ता है तो विशेष पेन्शन की। मैंने स्वयं उसे यह बात कहते हुए सुना है," उसने देखा कि रूसानोव का मुंह खुला का खुला रह गया है। अतः उसने यह निश्चय किया कि अब उसके ऊपर प्रबलतम प्रहार करेगा। "तुम्हें अपने देश से प्यार नहीं है, तुम्हें अपनी पेन्शन से प्यार है और जितनी जल्दी तुम्हें पेन्शन मिल सके बेहतर है। क्यों नहीं तभी पेन्शन मिल जाये जब तुम ४५ वर्ष के भी न हो और एक मैं हूँ वोरोनेभ्र में घायल हुआ और मेरे पास क्या है—टुक्कियां लगे जूतों का एक जोड़ा और रहने के लिये एक मांद। लेकिन मैं अपने देश से प्यार करता हूँ ! पिछले दो महीनों से मुझे बीमारी के भत्ते के रूप में एक छदाम भी नहीं मिला है लेकिन मैं फिर भी अपने देश से प्यार करता हूँ।" उसने अपनी लम्बी-लम्बी बाहें जोर से हिलाईं और वह प्रायः रूसानोव तक पहुँच गई। अब वह अत्यधिक क्रुद्ध हो उठा था और एक बार फिर उसी तरह बहस में उलझ गया था जिस तरह दर्जनों बार जेल में उलझा था। उसके दिमाग में अब उन वाक्यों और तर्कों की बाढ़ आ गई थी जो उसने उन लोगों से सुने थे जो शायद आज जीवित नहीं थे।

इस बहस के कारण उसके मन में जो भावावेश और क्रोध पैदा हुआ था उसके कारण वार्ड का दृश्य उसके लिये बदल गया था। लोगों से भरा, यह बंद कमरा, जिसमें बिस्तरों और लोगों की भरमार थी, जेल की कोठरी का रूप धारण कर चुका था, जिसके कारण उसके लिये गन्दी भाषा का प्रयोग करना आसान हो गया था और यदि हाथापाई शुरू हो जाये तो वह उसके लिये भी तैयार था।

अब कोस्तोग्लोतोव ऐसी मनः स्थिति में पहुँच चुका था कि उसके लिए रूसानोव के मुंह पर एक घूंसा जमा देना मुश्किल नहीं था। रूसानोव यह बात भांप गया था और इस प्रहार की भयंकरता को देखते हुए दुम दबा कर भाग निकला और चुप हो गया। लेकिन उसकी आंखें अभी भी क्रोध से जल रही थीं।

"मुझे किसी पेन्शन की जरूरत नहीं है," कोस्तोग्लोतोव चिल्लाया वह अपनी बात पूरी कर रहा था। "मेरे पास एक दाना भी नहीं है और मुझे इस बात का गर्व है। मैं कोई चीज़ हासिल करने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ, मुझे

मोटी तनख्वाह नहीं चाहिये। मुझे ऐसी चीजों से नफरत है।

"च···च···च दार्शनिक ने आवाज निकाली और उसे रोकने की कोशिश की। समाजवाद में भिन्न वेतनक्रमों की व्यवस्था है।"

"भाड़ में जाये तुम्हारा यह भेद, यह भिन्नता !" कोस्तोग्लोतोव पहले की तरह ही पूरे हठ से चिल्ला रहा था। "तुम यही सोचते हो न कि जब हम लोग साम्यवाद की स्थापना के प्रयास में लगे हैं उन लोगों के विशेषाधिकारों में वृद्धि होनी चाहिये, जिन्हें अन्य लोगों की तुलना में अधिक सुख सुविधाएं प्राप्त हैं ? तुम्हारा यह अभिप्राय है कि समान बनने के लिये पहले हमें असमान बनना चाहिये। क्या मै सही कह रहा हूं ? तुम इसे द्वन्द्वात्मकता कहते हो, क्यों कहते हो न ?" वह चिल्ला रहा था। लेकिन उसकी चिल्लाहट उसके वक्ष से बड़ी पीड़ा से प्रतिध्वनित हो रही थी। उसका स्वर इस पीड़ा से कांप रहा था।

वादिम ने कई बार हस्तक्षेप करने की कोशिश की लेकिन कोस्तोग्लोतोव सदा अपनी संचित शक्ति से प्रहार करने में सफल रहा। वह निरन्तर तर्कों की बौछार करता रहा और वादिम के पास इस बौछार से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

"ओलेग !" वादिम चिल्लाया और उसे रोकने का प्रयास करते हुए बोला, "ओलेग ! एक ऐसे समाज की आलोचना करना जो अभी भी स्वयं को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करने में लगा हो, संसार में सबसे आसान बात है। लेकिन तुम्हें यह याद रखना चाहिये कि यह समाज केवल ४० वर्ष पुराना है, अभी इसे ४० वर्ष भी नहीं हुए हैं।"

"मेरी उम्र भी इससे अधिक नहीं है।" कोस्तोग्लोतोव ने तीखा प्रतिवाद किया, "मैं सदा इस समाज से छोटा ही रहूँगा। तुम मुझ से क्या अपेक्षा रखते हो, जीवन भर चुप रहूँ ?"

एक बार फिर दार्शनिक ने अपने हाथ के इशारे से उसे रोकने की कोशिश की। वह याचना कर रहा था कि उसके कटे हुए गले पर रहम करे। उसने राष्ट्रीय उत्पादन में विभिन्न लोगों के उत्पादन और अंशदान के बारे में कुछ उचित और तर्कसंगत बातें कहीं। और यह भी बताया कि उसे उन लोगों के बीच अन्तर करना होगा जो अस्पताल के फर्श पर पोंछा लगाते हैं और जो स्वास्थ्य सेवा के संचालक होते हैं।

कोस्तोग्लोतोव तभी उत्तर के रूप में कुछ असंगत बात उगलने जा रहा था कि अचानक शुलुबिन, जिसे प्रत्येक व्यक्ति भूल गया था, दरवाजे के पास के कोने से उनकी ओर आगे बढ़ने लगा। वह उनकी ओर बड़े भद्दे ढंग से चलता हुआ आ रहा था। वह सदा की तरह उदास और अस्त-व्यस्त दिखाई पड़ रहा था। उसका ड्रेसिंग गाउन इतना अधिक अव्यवस्थित था कि उसे देख

कर यह लग रहा था कि कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिसे अर्द्ध रात्रि को नींद से जगा दिया गया हो। उन सब लोगों ने उसकी ओर नजर उठाई और बड़े आश्चर्य से उसे देखा। वह दार्शनिक के सामने जा कर खड़ा हो गया, उसने अपनी अंगुली उठाई और कमरे के सब लोगों के चुप होने तक प्रतीक्षा करता रहा। "क्या तुम्हें अप्रैल के महीने के प्रतिपादनों[1] की जानकारी है?" उसने पूछा।

"क्यों, क्या हम लोग यह नहीं जानते?" दार्शनिक मुस्कराया।

"क्या तुम एक-एक करके उन्हें बता सकते हो?" शुलुबिन आगे कहता गया और बड़ी गहरी आवाज में उससे सवाल पूछता गया।

"आदरणीय महोदय, एक-एक करके उनके उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। अप्रैल के प्रतिपादनों में बुर्जुआ-लोकतंत्री क्रांति से समाजवादी क्रांति में संक्रमण के तरीकों पर विचार किया गया था। इस दृष्टि से..."

"मुझे एक बात याद है," शुलुबिन ने अपनी अस्वस्थ, थकी हुई, तम्बाकू के रंग की, लाल-लाल गोलाकर आंखों के ऊपर अपनी घनी भवों को हिलाते हुए कहा। "इसमें कहा गया है, किसी भी अफसर को एक अच्छे मजदूर के औसत वेतन से ऊंचा वेतन नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने इस रूप में क्रांति का समारम्भ किया था।"

"क्या ऐसा है?" प्रोफेसर ने आश्चर्य से कहा। "मुझे यह याद नहीं है।"

"घर जाओ और इसे एक बार फिर देखो। क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवा निदेशक को यहां काम करने वाले नेल्या से अधिक नहीं मिलना चाहिए।"

उसने दार्शनिक के चेहरे के सामने अपनी अस्वीकृति और असहमति के रूप में अंगुली हिलाते हुए कहा और फिर लड़खड़ाता हुआ अपने कोने में वापस लौट गया।

"आह, यह देखिए!" कोस्तोग्लोतोव बोला। उसे इस अप्रत्याशित समर्थन से बड़ा आनन्द मिला था। उसे किसी ऐसे ही तर्क की तलाश थी और इस वृद्ध ने उसे समय पर सहायता पहुंचाई थी। "यह तो आपका ही पाइप है, कश लगाओ।"

दार्शनिक ने अपने गले में लगे छल्ले को सीधा किया। अब क्या कहे, उसके दिमाग में नहीं आ रहा था। "नेल्या अच्छी श्रमिक है, तुम यह बात नहीं कहोगे, क्यों" वह अन्ततः बोला।

"ठीक है, उस अरदली के बारे में आपकी क्या राय है जो चशमा लगाती

---

१. वह क्रांतिकारी कार्यक्रम, जिसका प्रतिपादन लेनिन ने स्विटजरलैंड से रूस वापस लौटने पर अप्रैल १९१७ में किया था।

है, इन सबको समान वेतन मिलता है।"

रूसानोव बस चुपचाप बैठा हुआ था। वह इस बहस से अलग हो चुका था। अब वह कोस्तोग्लोतोव की शक्ल तक बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह अत्यधिक जुगुप्सा से कांप रहा था। लेकिन कोस्तोग्लोतोव की लम्बी बांहों और कसी हुई मुट्ठियों का यह स्पष्ट अर्थ था कि रूसानोव उसके खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही का साहस नहीं कर सकता था। जहां तक उस कोने वाले घृणित उल्लू का सवाल था शुरू से ही उसके प्रति घृणा का भाव पैदा होना सही बात ही सिद्ध हुई। जरा कल्पना तो कीजिए कि स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक और फर्श पर पोंछा लगाने वाले को समान वेतन मिले। क्या वह इससे अधिक कोई चतुरतापूर्ण बात नहीं सोच सकता था? अब कहने को रह ही क्या गया था।

अचानक पूरी बहस समाप्त हो गई और कोस्तोग्लोतोव ने देखा कि अब ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे वह बहस कर सके। कुछ भी हो वह जो कुछ कहना चाहता था जी भरकर कह चुका था। इसके अलावा इस प्रकार चिल्लाने के बाद उसका मन भीतर से दुःखी हो गया था। अब उसके लिए बोलना कष्टप्रद हो चुका था।

इसी समय वादिम ने, जो इस बहस के दौरान अपने बिस्तर से नहीं उठा था कोस्तोग्लोतोव को इशारे से अपने पास बुलाया। वादिम ने उसे बैठने को कहा और बड़ी शांति से उसे समझाने लगा। "ओलेग, तुम मूल्यों का गलत पैमाना इस्तेमाल करते हो। तुम्हारी गलती यह है कि तुम वर्तमान की तुलना भविष्य के आदर्श से करते हो। तुम्हें इसकी तुलना उन निरन्तर बहते नासूरों से करनी चाहिए, जिनसे रूस का इतिहास सन् १९१७ से पहले आक्रान्त था।"

"उस समय मैं जीवित नहीं था।" मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। कोस्तोग्लोतोव ने जम्हाई लेते हुए कहा।

"इसके लिए तुम्हें उस समय जीवित होने की जरूरत नहीं है। तुम आसानी से ये बातें जान सकते हो। साल्तीकोव-शचेन्द्रिन[1] को पढ़ो। बस वही एक मात्र ऐसी पाठ्य पुस्तक है, जिसकी तुम्हें आवश्यकता है। अथवा अपने देश की तुलना पश्चिम के उन दिखावटी लोकतंत्रों से करो, जहां व्यक्ति को कभी भी अपना अधिकार या न्याय नहीं मिल सकता, जहां वह एक सामान्य मानवीय जीवन तक नहीं बिता सकता।"

कोस्तोग्लोतोव ने बड़ी उकताहट से एक और जम्हाई ली। जिस क्रोध ने उसे अभिभूत कर लिया था और वह इस प्रकार फट पड़ा था। अब वह शांत

---

१. १९ वीं शताब्दी का सर्वाधिक विख्यात रूसी व्यंग्यकार (१८२६-८९)।
(अनुवादक की टिप्पणी)

हो गया था। अपने फेफड़ों के इस प्रकार इस्तेमाल के कारण उसके पेट पर बेहद जोर पड़ा था और उसकी रसौली दुखने लगी थी। उसे इतनी जोर से चिल्ला-चिल्ला कर नहीं बोलना चाहिए था।

"क्या तुम सेना में थे, वादिम?"

"नहीं, मैं नहीं था। क्यों?"

"तुम क्यों नहीं थे?"

"हम विश्वविद्यालय में अफसरों का प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा कर रहे थे।"

"ओह, ठीक है...मैंने सेना में एक हवलदार के रूप में सात वर्ष तक काम किया है। इस सेना को श्रमिकों और किसानों की सेना कहा जाता था। सेक्शन कमाण्डर को २० रूबल मासिक वेतन मिलता था जबकि प्लाटून कमाण्डर को ६०० रूबल दिये जाते थे। और मोर्चे पर अफसरों को खास राशन दिया जाता था: बिस्कुट, मक्खन और डिब्बा बन्द खाने की चीजें। ये लोग कहीं ऐसी जगह छिप कर ये चीजें खाते थे, जहां हम दूसरे सैनिक उन्हें न देख सकें। स्थिति यह थी कि वे लोग यह काम इसलिए करते थे क्योंकि वे अपने इस कार्य के लिए शर्मिन्दा थे। और हमें अपने रहने की जगह बनाने से पहले अफसरों के लिए जगह बनानी पड़ती थी। मैं हवलदार था, क्यों मैंने तुम्हें यह बात बताई है न?"

वादिम गुर्राया। उसे ये सब बातें मालूम नहीं थीं। लेकिन इन सब बातों का कोई न कोई उचित स्पष्टीकरण होगा ही।

"तुम मुझे यह क्यों बता रहे हो?"

"क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूं कि बुर्जुआ मनोवृत्ति कहां आती है। बुर्जुआ मनोवृत्ति किसकी है?"

इस टिप्पणी के बिना भी ओलेग आज आवश्यकता से अधिक कह चुका था। उसे यह सोचकर बड़ी कटु राहत मिल रही थी कि उसके पास खाने के लिए प्राय: कुछ नहीं है।

उसने जोर से एक और जम्हाई ली और अपने बिस्तर पर वापस लौट गया। उसने फिर जम्हाई ली और जम्हाई लेता रहा।

उसे थकान के कारण जम्हाई आ रही थी या बीमारी के कारण! अथवा इसका कारण यह था कि ये तर्क, जवाबी तर्क, पारिभाषिक शब्द, कटु और क्रोधपूर्ण नजरें अचानक ऐसी लगने लगीं मानो दलदल में चलना पड़ रहा हो? इसमें से किसी बात की भी तुलना उस रोग से नहीं की जा सकती थी, जिससे वे ग्रस्त थे। मृत्यु से भी उसकी तुलना सम्भव नहीं थी जो हर समय उनके सिर पर मंडराती रहती थी।

अब ओलेग के मन में किसी भिन्न, किसी पवित्र और अटूट वस्तु से

सम्पर्क की लालसा बलबती होने लगी।

लेकिन उसे यह सब कहाँ से मिलेगा, ओलेग को मालूम नहीं था।

उसी दिन सुबह उसे कादमिन दमपत्ती का एक पत्र मिला था। अन्य बातों के अलावा, निकोलाई आइवानोविच ने उसे कोमल शब्दों, कठोर शब्दों का उद्भव बताया था। उसे यह बताया था कि इस कहावत का समारम्भ कैसे हुआ कि कोमल शब्द आपकी हड्डियां तोड़ देंगे। यह बात १५ वीं शताब्दी के एक रूसी भाषा के उपदेशात्मक संग्रह में कही गई थी। यह संग्रह हस्तलिखित ही था। इस पुस्तक में कितोव्रास के बारे में एक कहानी थी। (निकोलाई आइवानो-विच को पुरानी बातों के बारे में सब जानकारी रहती थी।) कितोव्रास एक सुदूर रेगिस्तान में रहता था। वह केवल सीधी रेखा में ही चल सकता था। राजा सोलोमन ने उसे बुलाया और चालाकी से उसे एक जंजीर में बंधवा दिया। इसके बाद वे उसे पत्थर तोड़ने के लिए ले गये। अब क्योंकि कितोव्रास केवल एक सीधी लाइन में ही चल सकता था तो जेरुसलम की गलियों से ले जाते समय उन्हें वे मकान तोड़ने पड़े जो उसके रास्ते में पड़ते थे। इनमें से एक मकान एक विधवा का था। विधवा ने रोना शुरू किया और कितोव्रास से यह प्रार्थना करने लगी कि वह उसके इस मामूली से घर को नष्ट न करे। उसके आंसुओं ने कितोव्रास का दिल छू लिया और वह इस बात पर राजी हो गया। कितोव्रास उस समय तक बायीं और दाहिनी ओर मुड़ता-तुड़ता रहा जब तक कि उसकी एक पसली नहीं टूट गई।

मकान जैसे का तैसा खड़ा रहा। पर कितोव्रास बोला, "कोमल शब्द आपकी हड्डियां तोड़ सकते हैं, कठोर शब्द आपका क्रोध जगाते हैं।"

ओलेग ने इस कहावत और किस्से पर विचार करना शुरू कर दिया। हम कितोव्रास और १५ वीं शताब्दी के उन लेखकों की तुलना में निश्चय ही क्रोधान्ध भेडिये हैं। आज ऐसा कौन-सा व्यक्ति है, जो कुछ कोमल शब्दों की खातिर अपनी एक पसली तोड़ने को तैयार हो जाये!

पर कादमिन दम्पति का पत्र इसी किस्से से शुरू नहीं हुआ था। ओलेग ने अपने बिस्तर के बराबर लगी मेज पर इस पत्र को टटोला और वह उसे मिल गया। उन्होंने लिखा था:

प्रिय ओलेग,

"हम लोग बेहद दुःखी हैं। बीटल मारा गया है।

"ग्राम परिषद् ने दो शिकारियों को गलियों में चक्कर लगाने और कुत्तों को गोली मार देने के लिए नियुक्त किया था। वे लोग गलियों में कुत्तों को उड़ाते हुए घूम रहे थे। हमने तोबिक को छिपा लिया लेकिन बीटल रस्सी तुड़ा कर भाग निकला और उन्हें देखकर भौंकने लगा। जब कभी तुम कैमरे का लैन्स भी उसकी ओर करते थे तो वह भयभीत हो उठता था। उसे अपने

अन्त का पूर्वाभास था। उन्होंने उसकी आंख पर गोली मारी। वह सिंचाई नाली के पास गिर गया और उसका सिर नाली के सिरे के ऊपर लटकता रहा। जब हम उसके पास पहुँचे तो वह तड़फड़ा रहा था। इतना बड़ा शरीर और यह तड़फड़ा रहा था। उसे इस स्थिति में देखना बड़ा भयावह था।

अब घर खाली सा लगता है। हम बीटल की मृत्यु के लिए स्वयं को दोषी अनुभव करते हैं। उसे घर के भीतर बन्द न रख पाने के लिए, उसे छिपा न पाने के लिए स्वयं को दोषी पाते हैं।

"हमने उसे ग्रीष्म घर के पास एक कोने में दफना दिया है।"

ओलेग बीटल की कल्पना करता हुआ लेटा रहा। लेकिन उसकी आंखों के सामने आंख पर गोली लगे मृत बीटल के खून से भरे और सिंचाई नाली पर लटकते हुए सिर की तस्वीर नहीं आ रही थी। उसे दो पंजे और एक विशाल, दया और स्नेहपूर्ण सिर दिखाई पड़ रहा था। जिसके भालू जैसे कान ओलेग की झोंपड़ी की नन्हीं-सी खिड़की के ऊपर पर्दों की तरह लटकते रहते थे। वह जब कभी ओलेग की झोंपड़ी पर पहुँचता था और दरवाजा खुलवाना चाहता था तो इसी प्रकार खिड़की पर खड़ा हो जाता था।

तो अब उन लोगों ने कुत्ते को भी मार डाला।

क्यों ?

९. वृद्ध डाक्टर

अपने ७५ वर्ष के जीवन और आधी शताब्दी के रोगों की चिकित्सा के काल में डा० ओरेश चेन्कोव अपने लिए पत्थरों का कोई विशाल भवन नहीं बना सके। लेकिन उन्होंने बीस के दशक में अपने लिए एक मंजिल का लड़की का मकान खरीदा था, जिसमें एक छोटा-सा बगीचा था। वह तभी से इसी मकान में रह रहे थे। यह मकान एक शान्त सड़क पर था। यह सड़क वृक्षों से ढकी एक चौड़ी सड़क थी और पैदल चलने वालों के लिए बहुत चौड़ा रास्ता छोड़ा गया था। इसकी वजह से सड़क और मकानों के बीच अच्छी १५ मीटर की जगह बच जाती थी। पिछली शताब्दी में पैदल रास्ते पर मोटे तनों वाले वृक्ष उग आए थे। गर्मियों में इन वृक्षों के ऊपरी हिस्से एक-दूसरे से मिल जाते थे और पूरी सड़क पर एक हरी छत-सी छा जाती थी। प्रत्येक पेड़ की जड़ के चारों ओर गड्ढा खोदा गया था। जगह को साफ किया गया था और हिफाजत के लिए चारों ओर ढले हुए लोहे की सुन्दर जाली लगा दी गई थी।

धूप चाहे कितनी भी तेज़ क्यों न होती इस रास्ते पर चलने वाले लोगों को धूप की तेजी जरा भी महसूस न होती। सिंचाई के काम का ठण्डा पानी इस पैदल रास्ते के बराबर टाइल लगे गड्ढे में बहता रहता था। धनुषाकार यह सड़क नगर के सर्वाधिक ठोस और आकर्षक हिस्से के चारों ओर चक्कर लगाती थी और यह स्वयं भी इस नगर की सुन्दरतम वस्तु थी। (पर नगर परिषद् अब यह शिकायत करने लगी थी कि यह एक मंजिले मकान पर्याप्त पास-पास नहीं हैं और इस वजह से गन्दे पानी की निकासी आदि की लाइनें बिछाने पर बहुत व्यय आता है। उनके अनुसार अब समय आ गया था कि इन मकानों को गिराकर पांच मंजिले फ्लैट बना दिए जायें।)

बस ओरेश चेन्कोव के मकान के पास नहीं रुकती थी अतः लुदमिला अफानासएवना पैदल ही वहां गई। उस रोज शाम को मौसम पर्याप्त गरम था। वर्षा नहीं थी और अभी तक गोधूली का समय भी नहीं हुआ था। और वह स्पष्ट रूप से यह देख पा रही थी कि वृक्ष स्वयं को बसन्त के लिए तैयार कर रहे हैं। पत्तियों के पहले कोमल अंकुर शाखाओं पर दिखाई देने लगे थे। कुछ पेड़ों पर अंकुर घने थे तो कुछ पर कम घने। लेकिन अभी भी लपट की शक्ल के पोपलार वृक्षों पर हरियाली नहीं आई थी। लेकिन दोन्तसोवा ऊपर

नहीं बल्कि अपने पांवों की ओर देख रही थी। इस वर्ष बसन्त ऋतु उसके लिए हर्ष और खुशी नहीं लाई थी। जहां तक उसका सम्बन्ध था खुशी स्थगित हो चुकी थी और उसी को मालूम नहीं था कि लुदमिला अफानासएवना का क्या होगा जबकि ये पेड़ अंकुरित होंगे, पत्तियां पीली पड़ेंगी और अन्तत: पेड़ छायादार होकर झड़ जायेंगे। अपनी बीमारी से पहले भी वह इतनी अधिक व्यस्त रही थी कि उसे कहीं रुककर खड़े होने, अपना सिर ऊपर उठाने और अपनी आंखें सिकोड़कर प्रकृति की छटी को देखने का समय ही नहीं मिलता था।

डा० ओरेश चेन्कोव के मकान का मुख्य द्वार लकड़ी और सलेट का बना हुआ था। इसके बराबर ही एक पुरानी किस्म का द्वार था, जिसमें पीतल का हैंडल लगा था और जिसके तख्ते भारी और पिरामिड की शक्ल के थे। ऐसे मकानों में पुराने दरवाजों को कीलें ठोककर सामान्यतया बन्द कर दिया गया था और घर के अन्दर एक नये दरवाजे से प्रवेश किया जाता था। लेकिन यहां उन दो सीढ़ियों पर जो पुराने दरवाजे के सामने बनी थी घास और काई नहीं जमी थी। दरवाजे पर ताम्बे की एक तख्ती लगी थी, जिस पर तिरछे सुलेख में लिखा था, "डा० डी० टी० ओरेश चेन्कोव"। यह नेमप्लेट उसी प्रकार चमकदार पालिस से चमक रही थी जिस प्रकार पुराने दिनों में चमकती थी बिजली की घंटी एक छोटे से कप में लगी थी। ऐसा नहीं लगता था कि इसका इस्तेमाल नहीं होता था। लुदमिला अफानासएवेना ने बटन दबाया। उसने पदचाप सुनी और स्वयं ओरेश चेन्कोव ने दरवाजा खोला। उसने एक काफी पुराना कत्थई रंग का सूट (किसी समय यह बढ़िया सूट रहा होगा) पहन रखा था और सामने से खुला एक कमीज भी।

"अहा लुदोचका!" उन्होंने अपने होठों के सिरों को जरा-सा उठाते हुए कहा। लेकिन यह उनकी अधिकतम हंसी थी। "भीतर आ जाओ। मैं तुम्हारी ही प्रतिक्षा कर रहा था। मुझे तुम्हें देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं खुश भी हूं और नहीं भी। यदि सब कुछ अच्छा होता तो तुम इस बुड्ढे से मिलने न आतीं।"

उसने डा० ओरेश चेन्कोव को टेलीफोन किया था और मिलने आने की अनुमति मांगी थी। वह उन्हें टेलीफोन पर ही बता सकती थी कि मुलाकात का क्या कारण था। लेकिन यह बात बहुत विनम्रतापूर्ण न होती। अब वह एक दोषी की तरह उन्हें इस बात से आश्वस्त करने का प्रयास कर रही थी कि वह तो उनसे मिलने आती ही चाहे वह संकट में होती अथवा नहीं। और वे उसे स्वयं अपना कोट उतारने देने को तैयार नहीं थी। "नहीं कृपया मुझे इसका अवसर दो," डा० ओरेश चेन्कोव बोले। "मैं अभी तक इतना अधिक बुड्ढा नहीं हुआ हूं।"

उन्होंने उसका कोट उतार कर एक खूंटी पर टांग दिया, जो एक

लम्बे, काले रंग के पालिशदार कोट टांगने के रेक पर लगी थी। इस रेक पर इतनी अधिक खूँटियां लगी थीं और इन पर कितने ही कोट टांगे जा सकते थे। इसके बाद वे दोन्तसोवा को लेकर लकड़ी के हमवार रोगनदार फर्श के पार चले। बरामदे के अन्त में वे मकान के सबसे अधिक रोशनीदार और सर्वोतम कमरे में पहुंचे। इसमें एक विशाल पियानो रखा हुआ था और उस पर संगीत की धुनों के कागज लगाने का ऊंचा स्टैंड भी लगा था धुनों के पृष्ठ खुले थे और खुशनुमा दिखाई पड़ रहे थे ओरेश चेन्कोव की सबसे बड़ी पोती इसी कमरे में रहती थी। ये लोग इस कमरे को पार कर खाने के कमरे में पहुंचे। इसकी खिड़कियों पर अंगूर की सूखी बेलें लटक रही थीं और इसका दरवाजा आंगन में खुलता था। इस कमरे में बड़ा और कीमती रेडियोग्राम रखा था। इसके बाद ये लोग परामर्श कक्ष में आ गये, जिसकी दीवारों पर पुस्तकों की अलमारियां लगी थीं, पुराने किस्म की एक भारी मेज़, एक पुराना सोफा और कुछ आरामदेह हत्थेदार कुर्सियां रखी थीं।

"दोर्मीदोन्त तिखोनोविच" दोन्तसोवा ने दिवारों पर नजर दौड़ाते हुए और अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए कहा। "ऐसा लगता है कि अब आप के पास पहले से भी ज्यादा किताबें हैं।"

"ओह, नहीं, नहीं तो," ओरेश चेन्कोव ने अपना सिर नाम मात्र को हिलाते हुए उत्तर दिया। ऐसा लगता था मानो उनका सिर किसी धातु से ढला हुआ हो। उन्होंने इसे जरा सा हिलाया। उनके समस्त हाव-भाव इसी प्रकार बड़े सूक्ष्म होते थे। "वैसे यह बात सच है। मैंने हाल ही में लगभग दो दर्जन किताबें खरीदी हैं और तुम जानती ही हो कि मैंने किस से ये किताबें खरीदी होंगी।" उन्होंने दोन्तसोवा की ओर प्रसन्नता से, जरा सी और अधिक प्रसन्नता से देखा। डा० ओरेश चेनकोव के मनोभावों और भंगिमा में इन जरा जरा से परिवर्तनों को देख और समझ पाने के लिये यह जरूरी था कि आप उन्हें जानते हों। "मैंने ये पुस्तकें काबनाचाएव से प्राप्त की हैं। उसने अवकाश ग्रहण कर लिया है। वह हाल में साठ साल का हुआ है, तुम जानती हो हो। और उसके अवकाश प्राप्त करने के दिन ही यह बात स्पष्ट हुई कि वह दिल से कतई रेडियो लाजिस्ट नहीं था। वह अपने जीवन का एक भी और दिन चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं बिताना चाहता था। सदा से उसकी इच्छा मधुमक्खी पालक बनने की रही थी और अब केवल मधुमक्खियों में ही वह दिलचस्पी लेगा। तुम्हारी राय में ऐसी बातें क्यों कर होती हैं ? यदि आप वस्तुत: मधुमक्खी पालक हैं, तो आप किसी और काम में अपबे जीवन के सर्वोतम वर्ष क्यों नष्ट करते हैं ? ठीक है, ठीक है। अब यह बताओ कि तुम कहां बैठना पसन्द करोगी, लुदोचका ? वह सफेद बालों वाली दादी बन चुकी थी। लेकिन वह उससे इसी तरह बातें करते थे जैसे किसी छोटी लड़की से

करते। स्वयं उन्होंने ही उसकी ओर से निर्णय लिया। "तुम इस हत्थेदार कुर्सी पर बैठ जाओ, यहां तुम्हें आराम मिलेगा।"

"मैं अधिक देर नहीं रुकूंगी। दोर्मीदोन्त तिखोनोविच, मैं तो एक मिनट के लिये ही आई हूं" दोन्तसोवा बोली। वह अभी भी प्रतिवाद कर रही थी। पर अब तक उस मुलायम आरामदेह कुर्सी पर बैठ चुकी थी। तुरन्त उसे बड़ी शांति का अनुभव हुआ। उसने यह अनुभव किया कि केवल यही एक ऐसा कमरा है, जहां सर्वोतम निर्णय लिये जा सकते हैं। स्थाई उत्तरदायित्व का भार, प्रशासन का भार, यह चुनने का भार कि उसे अपने जीवन के सम्बन्ध में क्या निर्णय लेना चाहिये, उसके कन्धे से उसी प्रकार उतर गया था, जिस प्रकार बरामदे में लगे कोट रेक पर अपना ओवरकोट टंग जाने के बाद कोट का भार उतर गया था। अब वह बड़े आराम से इस गहरी हत्थेदार कुर्सी पर बैठ चुकी थी और उसकी समस्याएं अन्ततः समाप्त हो गई थीं। बड़े शान्त और आश्वस्त भाव से उसने धीरे-धीरे अपनी नजर पूरे कमरे में घुमाई, जिसे वह पुराने समय से जानती थी। कोने में लगा पुराना संगमरमर के पत्थर का वाशबेसिन देखकर उसे बड़ा अच्छा लगा। यह आधुनिक वाशबेसिन नहीं था बल्कि पुराने किस्म का एक एसा वाशबेसिन था, जिसके नीचे बाल्टी रखी हुई थी। पर यह पूरी तरह से ढका था और बहुत साफ-सुथरा भी था।

उसने ओरेश चेन्कोव की ओर देखा और उसे यह अनुभव कर प्रसन्नता हुई कि वे जीवित थे और इस कारण भी कि उनकी मौजूदगी उसकी समस्त चिन्ताएं अपने ऊपर ले लेगी। वे अभी भी खड़े थे। वे बिल्कुल सीधे तन कर खड़े हुए थे। उनकी पीठ, कन्धों और सिर में जरा सा भी झुकाव नहीं था। उनके कन्धे और सिर सदा की तरह बड़े दृढ़ और सीधे दिखाई पड़ रहे थे। उनमें सदा आत्मविश्वास का यह भाव दिखाई देता था। ऐसा लगता था मानो दूसरों की चिकित्सा करते समय उन्हें इस बात का पूर्ण निश्चय हो कि स्वयं वे कभी बीमार नहीं होंगे। एक छोटी, बहुत सफाई से कटी चांदी सी सफेद दाढ़ी उनकी ठोडी के मध्य भाग से लटक रही थी। उनका सिर गंजा नहीं था, सब बाल पूरी तरह सफेद भी-नहीं हुए थे और इतने लम्बे अरसे में भी उनके बाल काढ़ने का तरीका भी बिल्कुल नहीं बदला था। उनका चेहरा ऐसा था जिस पर भावावेश दिखाई नहीं पड़ता। चेहरे की प्रत्येक रेखा स्पष्ट, शान्त और यथास्थान कायम थी। बस उनमें अपनी भवों को ऊपर धनुषाकार उठाने की आदत जरूर थी। पर यह काम बड़े नामालूम तरीके से होता था। केवल उनकी भवें ही उनके मनोभावों को पूरी तरह प्रकट करती थीं।

"यदि तुम क्षमा करो, लुदोचका" वे बोले, "मैं अपनी मेज पर बैठूंगा। यह कारण नहीं है कि मैं इसे एक औपचारिक भेंट बनाना चाहता हूं। बस इसका कारण यही है कि मैं वहां बैठने का आदी हूं।"

यह बात वस्तुतः आश्चर्यजनक होती यदि वे वहां न बैठते। इसी कमरे में उनके मरीज परामर्श के लिये आया करते थे। पहले अक्सर, प्रायः हर रोज और फिर कभी-कभी। लेकिन वे अभी भी आते हैं, आज भी आते हैं। कभी-कभी ये लोग उन लम्बे-लम्बे वार्तालापों में समय बिताते, जिसके ऊपर उनका समस्त भविष्य निर्भर करता था। जैसे-जैसे वार्तालाप अपना रुख बदलता जाता था, मेज के ऊपर लगा हरे रंग का कपड़ा, जो गहरे कत्थई रंग की ओक वृक्ष की लड़की के चौखटे में मढ़ा हुआ था जीवन भर के लिये अपनी छाप उनकी स्मृति पर छोड़ देता था। इसी प्रकार पुराने लकड़ी के कागज काटने के चाकू, निकिल की पालिश वाले गले का मुआइना करने के स्पातुला, पन्नेदार छोटे कलेंडर, पीतल के ढक्कन से ढकी दवात अथवा अत्यधिक कड़ी चाय जो वे पीते रहते थे—जिसका रंग बड़ा गहरा होता था और जो गिलास में पड़ी-पड़ी ठण्डी होती जाती थी, उनकी स्मृति पर अपनी अमिट छाप छोड़ देती थी। डाक्टर महोदय अपनी मेज पर बैठते, बीच-बीच में उठकर खड़े होते। वाशबेसिन अथवा किताबों की अलमारियों की ओर जाते ताकि मरीज को उनकी नजर के सामने से कुछ क्षण दूर हो जाने के कारण राहत मिले और वह सब बातों पर विचार कर सके। डाक्टर ओरेश चेन्कोव अकारण ही दूसरी ओर नजर नहीं घुमाते थे। उनकी आंखों से वह निरन्तर बना रहने वाला ध्यान प्रगट होता था, जो वे मरीज और अपने मुलाकाती दोनों की ओर देते थे। वे अपने परीक्षण के दौरान एक क्षण भी बर्बाद नहीं जाने देते थे। वे कभी भी खिड़की के पास जाकर नहीं खड़े होते थे अथवा मेज या कागज की ओर नहीं देखते रहते थे। उनकी आंखें ऐसा प्रमुख उपकरण थीं, जिनके द्वारा वे अपने मरीजों और विद्यार्थियों का अध्ययन किया करते थे और अपने निर्णय अथवा इच्छाएं प्रगट करते थे।

दोर्मीदोन्त तिवोनोविच ने अपने जीवन में अनेक बार अत्याचारों का कष्ट भोगा था: सन् १६०२ में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण जब उन्होंने और कुछ दूसरे विद्यार्थियों ने लगभग एक सप्ताह का समय जेल में बिताया था; आगे चलकर इस कारण से क्योंकि उनके स्वर्गीय पिता एक पादरी थे; और फिर इस वजह से कि पहले साम्राज्यवादी युद्ध[1] के दौरान उन्होंने एक ब्रिगेड के मैडिकल अफसर के रूप में काम किया था। (केवल इस कारण ही नहीं कि वे एक मैडिकल अफसर थे कुछ गवाहों के बयानों के अनुसार वे उस समय एक घोड़े पर सवार हो गये जब उनकी रेजीमेंट घबरा कर पीछे हट रही थी। उन्होंने रेजीमेंट के सैनिकों को डटकर मोर्चा लेने के लिये ललकारा

१. सोवियत संघ में पहले विश्वयुद्ध के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। (अनुवादक की टिप्पणी)

और इसे जर्मन श्रमिकों के साम्राज्यवादियों द्वारा संहार में हिस्सा लेने के लिये वापस घसीट लाये।) सर्वाधिक उग्र और लम्बे अरसे तक जारी अत्याचार उनकी इस हठ के कारण हुआ कि उन्हें निरन्तर अधिक कठोर होती जा रही पाबन्दियों के बावजूद अपनी निजी चिकित्सा जारी रखने का अधिकार है। वे जो कर रहे थे उसे निजी व्यापार और स्वयं को अमीर बनाने का एक साधन बताकर पाबन्दी लगा दी गई थी। ऐसे प्रत्येक कार्य को ईमानदारी पर आधारित श्रम से विमुख बात बताया जाता था और इसे बुर्जुआ वर्ग के उद्भव की भूमि भी कहा जाता था। ऐसे भी वर्ष आये थे जब उन्हें अपने बाहर के दरवाजे पर लगी अपनी नेम प्लेट उतारनी पड़ी थी और प्रत्येक मरीज को वापस लौटाना पड़ा था। चाहे वह उनके समक्ष कितना भी क्यों न गिड़गिड़ाते अथवा कितना भी गम्भीर रूप से बीमार क्यों न होते। इसका कारण यह था कि कार्यालय के जासूसों से यह मोहल्ला भरा पड़ा था। इन जासूसों में वेतनभोगी और स्वेच्छा से काम करने वाले दोनों शामिल थे। और यह बात भी थी कि स्वयं मरीज भी ये बातें करने से न चूकते। इसके परिणामस्वरूप डाक्टर के समक्ष हर काम से वंचित हो जाने का खतरा था, अपना मकान तक खो बैठने का भय था।

लेकिन निजी तौर पर रोगियों का इलाज करने के अपने इस अधिकार को वे अपने पेशे की सबसे अधिक मूल्यवान बात समझते थे। दरवाजे पर लगी नेम प्लेट के बिना ऐसा लगता कि गैर कानूनी ढंग से अथवा किसी दूसरे नाम से रह रहे हों। उन्होंने सिद्धान्त के आधार पर अपने स्नातकोत्तर अथवा डाक्टरेट की शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि शोध प्रबन्ध इस बात का कोई आभास नहीं देता कि डाक्टर को दिन-प्रति-दिन की चिकित्सा में कोई सफलता मिली है अथवा नहीं। उनका यह भी विचार था कि एक ऐसे डाक्टर से चिकित्सा कराना जो प्रोफेसर हो, मरीज को घबराहट में डाल देता है और जो समय शोध प्रबन्ध तैयार करने में लगता है उसका बेहतर उपयोग चिकित्सा की किसी नई शाखा के बारे में ज्ञानार्जन से किया जा सकता है। स्थानीय मेडिकल कालेज में ओरेश चेन्कोव ने तीस वर्ष का जो समय बिताया था और जो उनकी अन्य नियुक्तियों के अलावा था, उन्होंने सामान्य चिकित्सा की और अस्थिरोग, शल्यक्रिया, महामारी, यूरो-लाजिकल और यहां तक कि नेत्ररोग विभागों में भी काम किया। इसके बाद ही वे एक्स-रे चिकित्सा विशेषज्ञ बने। वे सम्मानित वैज्ञानिकों के बारे में अपनी राय जाहिर करने के लिए अपने होंठों को बस एक मिलीमीटर दबाते थे। उनका दावा था कि यदि अपने जीवनकाल में ही एक आदमी को वैज्ञानिक कहकर पुकारा जाये और इतना ही नहीं सम्मानित वैज्ञानिक कहकर पुकारा जाये तो बस डाक्टर के रूप में तो उसका अन्त ही हुआ समझो। यह सम्मान

ग्रौर प्रशंसा रोगियों की चिकित्सा के मार्ग में उसी प्रकार बाधक बनेगी जिस प्रकार ग्रावश्यकता से ग्रधिक कपड़े व्यक्ति की हरकत के रास्ते में बाधा डालते हैं। यह सम्मानित वैज्ञानिक ग्रपने ग्रनुयायियों के दलों के साथ इधर-उधर घूमते हैं जैसे कोई नया ईसा-मसीह ग्रपने पैगम्बरों के साथ घूम रहा हो। ये लोग गलतियां करने के ग्रधिकार ग्रथवा किसी भी वस्तु के बारे में न जानने के ग्रधिकार से पूरी तरह वंचित हो जाते हैं, ये लोग किसी बात पर चिन्तन करने का समय प्राप्त करने का ग्रधिकार भी खो देते हैं। हो सकता हैं कि ऐसा ग्रादमी ग्रात्मतुष्ट हो, ग्रविकसित बुद्धि का हो ग्रौर समय से पिछड़ा हुग्रा हो ग्रौर सही तथ्यों को छिपाने की कोशिश कर रहा हो, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति उससे चमत्कारों की ग्रपेक्षा करेगा।

ग्रोरेश चेन्कोव स्वयं ग्रपने लिये ऐसी कोई बात नहीं चाहते थे। बस उन्हें यदि किसी चीज की ग्रावश्यकता थी तो दरवाजे पर एक नेम प्लेट की ग्रौर एक घंटी की, जिसे उधर से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति बजा सके।

ग्रोरेश चेन्कोव के लिये यह सौभाग्य का विषय था कि एक बार उन्होंने एक स्थानीय महत्वपूर्ण व्यक्ति के पुत्र को मौत के मुंह से बचा लिया। एक ग्रन्य ग्रवसर पर उन्होंने एक ग्रन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के प्राण बचाये। यह वही व्यक्ति नहीं था जिसके पुत्र का उन्होंने इलाज किया था फिर भी एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति था। इसके ग्रलावा कुछ ग्रन्य महत्वपूर्ण परिवारों के भी ऐसे ग्रनेक सदस्य थे, जिनका जीवन उन्हीं के कारण बच पाया था। ये सब घटनाएं इसी नगर में घटी थीं क्योंकि वह सदा यहीं रहते थे। इन घटनाग्रों के परिणामस्वरूप डा० ग्रोरेश चेन्कोव की ख्याति प्रभावशाली क्षेत्रों में ग्रच्छी तरह कायम हो गई ग्रौर उनके चारों ग्रोर एक सीमा तक संरक्षण का वातावरण निर्मित हो गया। एक शुद्ध रूसी नगर में सम्भवतः इसका लाभ न मिलता, यह संभव न हो पाता। लेकिन पूर्वी हिस्से में जीवन ग्रधिक सरल था ग्रौर वे इस बात को नजर ग्रन्दाज करने को तैयार थे कि ग्रोरेश चेन्कोव ने फिर ग्रपनी नेम प्लेट दरवाजे पर टांग दी है ग्रौर फिर रोगियों की चिकित्सा करने लगे हैं। युद्ध के बाद कभी भी उन्हें नियमित स्थायी नियुक्ति नहीं मिली। पर ग्रनेक ग्रस्पतालों में वे परामर्शदाता के रूप में काम करते रहे ग्रौर विज्ञान संस्थाग्रों की बैठकों में हिस्सा लेते रहे। इस प्रकार उन्हें पैंसठ वर्ष की उम्र के बाद उस प्रकार का हस्तक्षेपरहित जीवन बिताने का मौका मिला जिसे वे एक डाक्टर का ग्रधिकार मानते थे।

"तो, दोर्मीदोन्त तिखोनोविच, मैं ग्राप से यह कहने ग्राई हूं कि ग्राप हमारे ग्रस्पताल ग्रायें ग्रौर मेरे पेट ग्रौर ग्रांतों की जांच करें। जैसी ग्रापको सुविधा हो हम व्यवस्था कर लेंगे।"

उसका चेहरा सफेद पड़ गया था ग्रौर उसकी ग्रावाज लड़खड़ाती हुई

मालूम पड़ रही थी। ओरेश चेन्कोव उसे स्थिर दृष्टि से देख रहे थे। उनकी नजर एक क्षण को भी नहीं हटी और उनकी तीखी भवों ने अपनी नाम-मात्र की हरकत के द्वारा भी कोई आश्चर्य प्रगट नहीं किया।

"बिल्कुल ठीक है, लुदमिला अफानासएवना हम दिन तय कर लेंगे। लेकिन मैं यह चाहूँगा कि तुम मुझे अपने रोग के लक्षण बताओ और यह भी बताओ कि तुम स्वयं उनके बारे में क्या सोचती हो।"

"जहां तक लक्षणों का सवाल है मैं आपको सब कुछ अभी बताये देती हूँ लेकिन जहां तक इन लक्षणों के बारे में मेरे सोचने का सवाल है आप जानते ही हैं कि मैं इनके बारे में कुछ भी न सोचने की कोशिश करती हूँ। कहने का अभिप्राय: यह है कि मैं इनके बारे में आवश्यकता से अधिक सोचती हूँ और अब यह स्थिति आ गई है कि मुझे रात को नींद भी नहीं आती। सबसे अच्छी बात तो यह होती कि मुझे कुछ पता ही न चलता। मैं गम्भीरता से यह बात कह रही हूँ। आप यह निश्चय करें कि मुझे अस्पताल में भर्ती होना चाहिए अथवा नहीं। और मैं चली जाऊंगी। लेकिन मैं इसकी और कोई विस्तृत जानकारी नहीं चाहती। यदि मुझे आपरेशन ही कराना है तो भी मैं यह नहीं जानना चाहती कि वास्तव निदान क्या हुआ है। अन्यथा मैं आपरेशन की पूरी अवधि में यही सोचती रहूँगी, "न जाने अब वे मेरे साथ क्या कर रहे हैं? अब वे क्या चीज़ काट कर निकाल रहे हैं? आप समझ गए न।"

चाहे इसका कारण हत्थेदार कुर्सी का बड़ा आकार हो अथवा उसके कन्धों के नीचे झुकने का तरीका, लेकिन अब वह एक ऊंची तकड़ी स्त्री नहीं दिखाई पड़ रही थी। वह सिकुड़ गई थी।

"समझा गया? सम्भवतः मैं समझ गया हूँ, लुदोचका, लेकिन मैं तुम्हारी राय से सहमत नहीं हूँ। आखिर सबसे पहले तुम्हारे मन में आपरेशन की बात क्यों आई?"

"हमें तैयार तो···"

"तुम यहां इससे पहले क्यों नहीं आईं?"

"बात यह है, दोर्मीदोन्त तिखोनोविच···" दोन्तसोवा ने आह भरते हुए कहा। "जीवन ऐसा ही है। एक के बाद एक भंवर। वस्तुतः मुझे पहले आना चाहिए था। लेकिन आप यह न सोचिए कि मैंने रोग को बहुत अधिक बढ़ने दिया है।" वह स्वयं अपने प्रति जबर्दस्त प्रतिवाद प्रकट कर रही थी अन्य किसी के प्रति नहीं। अब वह फिर बहुत तेजी से यथार्थवादी तरीके से अपने खास लहजे में बोलने लगी थी। "आखिर इस अन्याय की क्या गुंजाइश थी? मुझे एक कैन्सर विशेषज्ञ को कैन्सर क्यों होना चाहिए था जबकि मैं कैन्सर का हर रूप जानती हूँ। जबकि मैं इसके समस्त सम्बन्धित प्रभावों, परिणामों और जटिलताओं से परिचित हूँ?"

"इसमें कोई अन्याय निहित नहीं है," उन्होंने उत्तर दिया। उनकी ऊंची भारी आवाज बहुत संतुलित और बहुत आश्वासनदायक थी। "इसके विपरीत, यह तो उच्चतम कोटि का न्याय है। यह तो एक डाक्टर की सर्वाधिक सच्ची परीक्षा है कि वह उसी रोग से ग्रस्त हो जिसका वह विशेषज्ञ हो।

(इसमें न्याय क्या है? यह ऐसी सच्ची परीक्षा क्यों है? वह ऐसी बातें केवल इसलिये कर रहा है क्योंकि स्वयं बीमार नहीं है।)

"क्या तुम्हें उस नर्स पान्या फयोदोरोवा की याद है?" वे आगे बोले। "वह कहा करती थी, ओह डीयर, मैं रोगियों से इतना कड़ा और भद्दा व्यवहार क्यों करती हूँ? अब शायद समय आ गया है कि मैं खुद बीमार पड़कर अस्पताल में भर्ती होऊं।"

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि रोग मुझे इतना भयावह और आघात-जनक लगेगा," दोन्तसोवा अपनी अंगुलियां चटकाते हुए बोली।

पर इन कुछ मिनटों में ही उसने पिछले सप्ताहों की तुलना में कहीं कम दुःख का अनुभव किया था।

"तो तुमने क्या लक्षण देखे हैं?"

दोन्तसोवा ने उसे सामान्य रूपरेखा बतानी शुरू की लेकिन वह सूक्ष्म विवरण चाहते थे।

दोर्मीदोन्त तिखोनोविच में आपकी शनिवार की पूरी शाम बर्बाद नहीं करना चाहती। यदि आप मेरी एक्स-रे परीक्षा के लिये आने वाले है तो..."

"ठीक है, पर तुम जानती ही हो कि मैं कैसा अविश्वासी हूँ, क्यों जानती हो न? तुम जानती हो कि मैंने एक्स-रे के इलाज से २० वर्ष पहले चिकित्सा कार्य किया है। और तुमने वे निदान देखे हैं जो मैंने किये हैं। यह ऐसी बात है कि जब आपके पास जांच उपकरण हों तो आप अपनी आंख से रोग की व्यापकता का ठीक-ठीक मूल्यांकन करने की क्षमता खो बैठते हैं। आपका मूल्यांकन का स्वाभाविक गुण समाप्त हो जाता है। लेकिन जब आपके पास यह उपकरण नहीं होते तो जल्दी ही यह गुण आपके भीतर उत्पन्न हो जाता है।"

दोन्तसोवा ने विस्तार से समझाना शुरू किया। उसने विभिन्न लक्षणों को वर्गीकृत किया और उनकी भिन्नता बताई। उसने इस बात का पूरा ध्यान रखने की कोशिश की कि ऐसी किसी बात को छोड़ न जाये जो भयंकर निदान की ओर संकेत कर सकती हो। (इस प्रयास के बावजूद वह ऐसे ही एक लक्षण का उल्लेख न कर सकी। उसकी इच्छा ये शब्द सुनने की थी, "यह गम्भीर बात नहीं है लुदोचका यह कुछ भी नहीं है।") उसने उन्हें अपने रक्त की स्थिति के बारे में बताया जो अच्छी नहीं थी और रक्त कणों की गणना भी

जो बहुत ऊंची थी। पहले वे उसे बीच में टोके बिना ही सुनते रहे और फिर उन्होंने कुछ सवाल पूछे। कभी-कभी उन्होंने अपना सिर हिलाया। इसका यह अभिप्राय था कि यह बात आसानी से समझ में आने वाली है और अक्सर यह लक्षण देखा जाता है लेकिन उन्होंने एक बार भी यह नहीं कहा, "यह कुछ भी तो नहीं है।" दोन्तसोवा के मन में अचानक यह विचार कौंध गया कि डाक्टर ओरेश चेन्कोव अपने निदान पर पहुंच चुके हैं और यह एक्सरे की प्रतीक्षा किये बिना ही उनसे यह सीधा सवाल पूछ सकती है। लेकिन यह भयावह था। तुरन्त उनसे यह प्रश्न पूछने और इसका उत्तर पाने का विचार भयावह था चाहे यह उत्तर सही होता अथवा गलत या अस्थायी ही। उसे इसे टालना था। वह कुछ दिन की प्रतीक्षा से इस प्रहार की प्रखरता को कम करना चाहती थी।

वे लोग इस तरह बातें कर रहे थे जैसे किसी वैज्ञानिक सम्मेलन में मित्र बातें करते हैं। लेकिन बीमार होने की स्वीकारोक्ति करना किसी अपराध की स्वीकारोक्ति करने जैसी बात थी···तुरन्त उनके बीच वह समानता समाप्त हो गई थी जो उन्हें एक समय प्राप्त थी। नहीं, सम्भवत: समानता नहीं, स्वयं उसके और उसके शिक्षक के बीच कभी भी समानता नहीं थी। यह इससे कहीं अधिक दूरगामी बात थी। उसने अपनी स्वीकारोक्ति के द्वारा स्वयं को चिकित्सकों की गरिमापूर्ण स्थिति से अलग कर दिया था और स्वयं को टैक्स चुकाने वाले और डाक्टरों पर निर्भर रोगियों की स्थिति में डाल दिया था।

यह सच है कि ओरेश चेन्कोव ने तुरन्त यह नहीं कहा था कि जहां दर्द होता है वह उस जगह की जांच करना चाहते हैं। वे उससे एक मेहमान की तरह बातें करते रहे। ऐसा लगता था कि वे उसके साथ एक सहयोगी चिकित्सक और एक रोगी दोनों रिश्तों से बातें कर रहे हैं। लेकिन वह बुरी तरह कुचल गई थी, उसका पहले का आत्म विश्वास समाप्त हो गया था।

"सच बात तो यह है कि बेरोचका गैंगार्त अब इतना अच्छा निदान करने लगी है कि सामान्य तथा मुझे उसके निदान पर पूरा विश्वास कर लेना चाहिए था।" दोन्तसोवा ने उसी रफ्तार से बोलते हुए कहा, जो उसे अपने अत्यधिक व्यस्तता भरे काम के दिनों में अपनानी पड़ती थी। "लेकिन आपके रहते दोर्मीदोन्त तिखोनोविच, मैंने सोचा कि मैं···"

"यदि मैं स्वयं अपने विद्यार्थियों को ही वापस लौटा दूं तो मैं कैसा आदमी होऊंगा," ओरेश चेन्कोव ने उसकी ओर स्थिरता से देखते हुए उत्तर दिया। इस क्षण दोन्तसोवा उन्हें साथ-साथ नहीं देख पा रही थी। लेकिन पिछले दो वर्षों में उसने उनकी स्थिर दृष्टि में निरपेक्षता की कुछ झलक देखनी शुरू कर दी थी। यह अन्तर उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद आया था। यदि तुम्हें बीमारी की छुट्टी लेनी ही पड़ी तो क्या बेरोचका तुम्हारी जगह काम

करेगी ?"

("बीमारी की छुट्टी") उन्होंने मृदुतम शब्द चुने थे। क्या इसका यह अर्थ था, क्या इसका यह अर्थ था कि कोई खास गड़बड़ नहीं है।"

"हां, वह करेगी। अब वह एक अनुभवी विशेषज्ञ बन चुकी है। उसमें विभाग चलाने की पूरी क्षमता है।"

ओरेश चेन्कोव ने अपना सिर हिलाया। उन्होंने अपनी पतली दाढ़ी अपने हाथ में थाम ली। "हाँ," वे बोले, "हो सकता है कि वह अनुभवी विशेषज्ञ बन गई हो। लेकिन वह विवाह क्यों नहीं कर रही है।"

दोन्तसोवा ने अपना सिर हिला दिया।

"मेरी पोती भी ऐसी ही है," ओरेश चेन्कोव बोलते रहे, उनकी आवाज फुसफुसाहट में बदल गई थी, जो अनावश्यक था। "उसे अपने लिए कोई भी उपयुक्त आदमी नहीं मिलता। यह बड़ा कठिन काम है।"

उनकी भवों के कोण में चिन्ता प्रदर्शित करने के लिए जरा-सा परिवर्तन आया।

उन्होंने जोर देकर यह बात कही कि अब विलम्ब नहीं होना चाहिए वे सोमवार को ही दोन्तसोवा की जांच करेंगे।

(वह इतनी जल्दी में क्यों है ?)

इसके बाद मौन का वह दौर आया जिसमें सम्भवत: उसे "धन्यवाद" कह कर विदा होने की अनुमति मांगनी चाहिए थी। वह उठ खड़ी हुई लेकिन ओरेश चेन्कोव ने इस बात पर जोर दिया कि वह उसके साथ एक गिलास चाय जरूर पिये।

"सचमुच, मैं चाय की जरूरत महसूस नहीं कर रही हूँ," लुदमिला अफानासएवना ने उनसे कहा।

"मैं कर रहा हूँ। यह मेरी चाय का वक्त है।" वे इस बात का निश्चित प्रयास कर रहे थे कि लुदमिला अफानासएवना को अपराधपूर्ण तरीके से बीमार की कोटि से निकाल कर असहाय रूप से स्वस्थ की कोटि में ले आयें।

"क्या बच्चे घर पर ही हैं ?" उसने डाक्टर ओरेश चेन्कोव से पूछा।

ये बच्चे उसी उम्र के थे जिस उम्र के लुदमिला अफानासएवना के थे।

"नहीं, वे लोग नहीं हैं। मेरी पोती भी यहाँ नहीं है। मैं अकेला हूं।"

(इसके बावजूद उसने लुदमिला अफानासएवना से एक डाक्टर के रूप में अपने परामर्श कक्ष में ही बीतचीत की थी। केवल यहीं वह अपनी समस्त बातों के सच्चे महत्व को प्रगट कर सकते थे)।

"तो क्या तुम मेरे लिए मेजबान की भूमिका निभाओगे ?" वह बोली। "मैं तुम्हें यह नहीं करने दूंगी।"

"नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। मेरे पास थरमस भरी चाय मौजूद

है। उस छोटी अलमारी में कुछ केक और उनके लिए प्लेटें भी मौजूद हैं। यदि चाहो तो उन्हें उठा लाओ।"

वे लोग भोजन के कमरे में चले गये और ओक वृक्ष की लड़की की चौकार मेज के कोने पर चाय पीने के लिए बैठ गए। वह मेज इतनी बड़ी थी कि एक हाथी भी इसके ऊपर नाच सकता था और इस मेज को किसी भी हालत में इस कमरे से बाहर नहीं निकाला जा सकता था क्योंकि कोई भी दरवाजा इतना बड़ा नहीं था। दीवार घड़ी, जो नई नहीं थी, दर्शा रही थी कि अभी काफी समय नहीं हुआ है।

दोर्मीदोन्त तिखोनोविच ने अपनी पोती के बारे में बात करना शुरू कर दिया जो उसकी प्रिय थी। हाल ही में उसने एक कंजरवेटोयर से एक पाठ्यक्रम पूरा किया था। वह बहुत अच्छा पियानो बजाती थी और वह बुद्धिमान (जो संगीतज्ञों में बड़ी दुर्लभ बात होती है) और सुन्दर थी। उन्होंने लुदमिला अफानासएवना को उसका एक नया चित्र दिखाया। लेकिन आज उन्होंने उसके बारे में आवश्यकता से अधिक बातचीत नहीं की, उन्होंने इस बात पर जोर नहीं दिया कि लुदमिला अफानासएवना उनकी पोती की ओर पूरा ध्यान दे। इसका कारण यह नहीं था कि वह किसी भी वस्तु पर आधा ध्यान देती। कारण यह था कि उसका ध्यान हो चुका था और अब कभी इसे नहीं जोड़ा जा सकेगा। यह कितना विचित्र था कि एक ऐसे व्यक्ति के साथ बैठकर बिना किसी चिन्ता के चाय पी जाये यह अच्छी तरह से जानता हो कि खतरा कितना बढ़ चुका है और सम्भवत: जिसे इस बात का भी पूर्वाभास हो कि बीमारी किस प्रकार बढ़ेगी। फिर भी वह वहां बैठा था और एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। बस उसने बिस्कुट ही पेश किये।

लुदमिला अफानासएवना को भी किसी के बारे में बातचीत करनी थी अपनी तलाक दी हुई पुत्री के बारे में नहीं। यह विषय बहुत पीड़ादायक था—पर अपने पुत्र के बारे में वह बात कर सकती थी। स्कूल में आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उसने अचानक यह घोषणा की कि वह अब इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका है कि आगे पढ़ने की कोई तुक नहीं है। न तो उसका पिता और न ही उसकी माता एक भी ऐसा तर्क पेश कर सके जो उसके इस निर्णय को बदल सके। हर सम्भव तर्क निरर्थक जाता। कोई भी बात उसके भेजे में न घुसती। "तुम्हें शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए।"—"मैं क्यों शिक्षा प्राप्त करूं।"—"शिक्षा और संस्कृति जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं।"—"जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु आनन्द मनाना है।"—"लेकिन तुम्हें शिक्षा के बिना कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी।"—"मुझे इसकी जरूरत नहीं है।"—"तुम यह कहना चाहते हो कि एक साधारण मजदूर बन कर तुम्हें खुशी होगी?"—"नहीं तुम मुझे एक गधे की तरह काम करते

हुए नहीं देखोगी।"—"तो तुम खाओगे क्या?"—"मुझे हमेशा कुछ न कुछ मिलता रहेगा। बस थोड़ी-सी जानकारी और अक्ल चाहिए।" वह कुछ अत्यधिक संदिग्ध चरित्र वाले लोगों के साथ उठता-बैठता था और लुदमिला अफानासएवना चिंतित थी।

ओरेश चेन्कोव के मुख पर जो भाव था उससे यह लग रहा था कि उन्होंने पहले भी ऐसे किस्से सुने थे। वे बोले, "एक समस्या यह है कि हमारे युवक अपने एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक से वंचित हो गये हैं। यह है उनके परिवार का डाक्टर। १४ वर्ष की लड़कियों और १६ वर्ष के लड़कों को एक डाक्टर से बात करने की जरूरत पड़ती है—एक कक्षा में नहीं, जहाँ एक साथ ४० मौजूद होते हैं। यद्यपि आज यह भी नहीं होता।" और स्कूल में डाक्टर के कमरे में भी नहीं जहाँ हर तीन मिनट पर लोग आते जाते रहते है। इसे वही "अंकल" होना पड़ेगा, जिसने उस समय उनके गलों का मुआइना किया जब वे छोटे-छोटे बच्चे थे और जो उनके घर चाय के लिए आता था। अब यह कल्पना कीजिये कि यही सहृदय, कठोर, पक्षपात रहित "अंकल" डाक्टर, जो बच्चों के माता-पिता की तरह उनकी नाराजगी के समक्ष नहीं झुकता और अचानक किसी बच्चे को अपने कक्ष में ले जाता है, दरवाजा बन्द कर देता है और बहुत कोमलता से एक ऐसा अस्पष्ट-सा वार्तालाप शुरू करता है जिसे सुनकर कुछ शर्म भी आती है और दिलचस्पी भी पैदा होती है और फिर स्वयं लड़के या लड़की के सर्वाधिक कठिन प्रश्नों को भांप लेता है और स्वयं उनका उत्तर देता है। और वह उन्हें दूसरी बार भी ऐसी ही बातचीत करने के लिए आमंत्रित करता है? स्पष्ट है कि ये बातें बच्चों को गलतियां करने, बुरी भावनाओं के समक्ष झुकने अपने शरीरों को हानि पहुंचाने के प्रति सजग ही करेंगी। यह बातचीत उनके संसार के प्रति दृष्टिकोण को स्वच्छ और सही बना देगी। एक बार बच्चों की प्रमुख चिन्ताओं और इच्छाओं को समझ लेने के बाद वे इस कल्पना में नहीं खोये रहेंगे कि अन्य दृष्टियों से भी उनको समझ पाना इतना कठिन है। बस इसी क्षण से उन्हें अपने माता-पिता के तर्क कहीं अधिक प्रभावशाली लगने लगेंगे।"

लुदमिला अफानासएवना ने अपने पुत्र की बात बता कर उन्हें इस बातचीत के लिये प्रेरित किया था। अभी तक उसके पुत्र की समस्याएं सुलझ नहीं पाईं थीं। अतः यह ज़रूरी था कि वह ध्यान से ओरेश चेन्कोव की बात सुनती और इस बात पर गौर करती कि किस तरह इन्हें उसके मामले में लागू किया जा सकता है। जब ओरेश चेन्कोव बोल रहे थे तो उनकी आवाज़ हर दृष्टि से पूर्ण और सुखद आवाज़ लग रही थी, जिसमें उम्र के साथ कोई अंतर नहीं पड़ा था। उनकी आंखें स्वच्छ, चमकदार और उत्साहपूर्ण थीं और इस कारण से उनके शब्दों में आत्मविश्वास झलकता हुआ दिखाई पड़ता था।

लेकिन दोन्तसोवा ने यह अनुभव किया कि जैसे-जैसे समय गुजर रहा था वह उस सांत्वन्तदायक शांति से वंचित होती जा रही थी, जिसने उसे परामर्श कक्ष की हत्थेदार कुर्सी में तरोताजा कर दिया था। उसकी छाती के भीतर एक असुखद अनुभूति जग रही थी। कुछ खो देने का भाव पैदा हो रहा था। उस समय भी उसे किसी वस्तु से वंचित हो जाने का आभास मिल रहा था जब वह सुविचारित भाषण सुन रही थी। उसके मन में उठ खड़े होने और भाग निकलने की इच्छा जगी थी यद्यपि उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि वह कहां भाग निकले, क्यों भाग निकले अथवा किस उद्देश्य से भाग निकले।

"आप ठीक कहते हैं," वह सहमत हो गई। "हम लोगों ने यौन शिक्षा की उपेक्षा की है।"

"हम यह सोचते हुए दिखाई पड़ते हैं कि बच्चों को जानवरों की तरह ही स्वत: यह बातें सीख लेनी चाहियें। और यही कारण है कि वे ठीक उसी तरह—जानवरों की तरह यह करते हैं। हम यह सोचते हुए लगते हैं कि बच्चों को विकृत मनोवृति के प्रति सजग करना आवश्यक है। क्योंकि हम इस मान्यता के आधार पर काम करते है कि एक स्वस्थ समाज में सब बच्चे सामान्य होंगे। अत: उन्हें एक दूसरे से यह सीखना पड़ता है और वे जो कुछ सीखते हैं वह अस्वस्थ और विकृत होता है। अन्य सब क्षेत्रों में हम यह अनिवार्य मानते हैं कि हमारे बच्चों का मार्गदर्शन हो। केवल इसी क्षेत्र में मार्गदर्शन को "लज्जाजनक" समझा जाता है। यही कारण है कि कभी-कभी आपकी मुलाकात ऐसी बड़ी औरतों से हो जाती है, जिन्होंने कभी भी पूर्ण आवेग का अनुभव नहीं किया, जिसका सीधा-सादा कारण यह है कि पुरुष को यही मालूम नहीं था कि वह पहली रात को स्त्री के साथ कैसा व्यवहार करे।"

"हां, हां," दोन्तसोवा बोली।

"हां, यह बिल्कुल सही है, ओरेश चेन्काव ने दृढ़ता से कहा। उन्होंने दोन्तसोवा के चेहरे पर क्षणिक, चिन्ताग्रस्त, उलझन से भरा और व्यग्रतापूर्ण भाव देख लिया था। अब क्योंकि वह अपने रोग का स्वरूप जानने के लिये उत्सुक नहीं थी तो शनिवार की रात को रोग के लक्षणों का क्यों उल्लेख किया जाये जबकि उसे सोमवार को ही एक्सरे की मशीन के पीछे खड़ा होना है? यह ओरेश चेन्कोव का काम था कि बातचीत के द्वारा उसका ध्यान दूसरी ओर ले जाये और डाक्टरों के लिये बातचीत का और बेहतर विषय क्या हो सकता है?

"मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है," वह बोले, "पारिवारिक डाक्टर हमारे जीवन का सबसे अधिक सांत्वनादायक व्यक्ति होता है और अब उसको जड़ से उखाड़ कर फैंका जा रहा है। परिवार का डाक्टर एक ऐसा व्यक्ति होता है, जिसके बिना विकसित समाज में परिवार का अस्तित्व कायम

नहीं रह सकता। वह परिवार के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता जानता है। ठीक उसी तरह जैसे मां, उनके स्वाद को जानती है। उससे ऐसी मामूली शिकायतों के बारे में बातचीत लज्जाजनक नहीं होती जिनके बारे में आप किसी अस्पताल में जाकर परामर्श नहीं करेंगे। क्योंकि अस्पताल में स्वयं को दिखाने के लिये जाने का अर्थ निश्चित समय के लिये कार्ड प्राप्त करना और अपनी बारी की प्रतीक्षा करना होता है और जहां डाक्टर को एक घण्टे में अनिवार्यत: नौ मरीज देखने पड़ते हैं। और यह स्पष्ट है कि जिन छोटी-मोटी शिकायतों की उपेक्षा की जाती है वह आगे चलकर बड़ी बीमारियों का रूप धारण कर लेती हैं। क्या तुम यह अनुमान लगा सकती हो कि इस क्षण उन वयस्क लोगों की संख्या कितनी है जो भय से आक्रान्त पर अपना मुँह बन्द किये हुए इधर-उधर दौड़ रहे हैं और जिनकी यह कामना है कि किसी प्रकार उन्हें एक डाक्टर मिल जाता, एक ऐसा सहृदय व्यक्ति मिल जाता जिसके ऊपर वे अपने वे समस्त भय प्रकट कर देते, जिन्हें उन्होंने गहराई से छिपा रखा है अथवा जिनके उल्लेख को वे लज्जाजनक तक समझते रहे हैं? एक सही डाक्टर की तलाश एक ऐसी बात है जिसके बारे में कोई मित्र आपको सलाह नहीं दे सकता। आप अखबार में भी इसके लिये विज्ञापन नहीं निकाल सकते। वस्तुतः यह बुनियादी तौर पर वैसा ही व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण मामला है जैसे एक पति अथवा पत्नी की तलाश। लेकिन आजकल एक अच्छी पत्नी प्राप्त करना एक ऐसे डाक्टर को प्राप्त करने से कहीं आसान है जो आपकी उस समय तक व्यक्तिगत रूप से देखभाल करने को तैयार हो जब तक आप उसकी आवश्यकता अनुभव करें और जो आपकी हर बात को पूरी तरह और सच्चे अर्थों में समझता हो।

लुदमिला अफानासएवना गुर्राई। ये अमूर्त विचार थे। इस बीच उसका सिर अधिकाधिक लक्षणों की कल्पना से चकरा रहा था और ये लक्षण स्वयं को सबसे बुरे रूप में व्यवस्थित करते जा रहे थे।

"यह तो बिलकुल सही है लेकिन इस कार्य के लिये आपको कितने पारिवारिक डाक्टरों की आवश्यकता होगी? यह बात एक निःशुल्क, राष्ट्रीय और सबके लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सेवा की प्रणाली से मेल नहीं खाती।"

"यह बात सबके लिये उपलब्ध राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा से मेल खा सकती है। लेकिन यह निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा से मेल नहीं खा सकती।" ओरेश चेन्कोव ने शब्दों को खींचते हुए और अपने मुद्दे पर बड़े विश्वास से डटे रहकर यह बात कही।

"लेकिन यह हमारी महानतम उपलब्धि है। यह तथ्य कि यह सेवा निःशुल्क है।"

"क्या वस्तुत: यह एक ऐसी ही उपलब्धि है? नि:शुल्क का क्या अर्थ है? तुम जानती ही हो कि डाक्टर मुफ्त काम नहीं करते। इसका केवल यही अर्थ है कि उन्हें राष्ट्रीय बजट से पैसा दिया जाता है और बजट के लिये धन रोगियों से ही जुटाया जाता है। यह मुफ्त इलाज नहीं है। यह एक ऐसा इलाज है जिसमें व्यक्तिगत सम्पर्क का अभाव है। यदि रोगी वह धन अपने पास रखे जो वह अपने इलाज के लिये देता है तो वह उन दस रूबलों को अपनी मुट्ठी में कसे रहेगा और बार-बार उनके बारे में विचार करेगा। वह यदि आवश्यकता हुई तो पांच बार डाक्टर के पास जायेगा।"

"लेकिन वह इसके लिये इस सेवा के लिये पैसा नहीं चुका सकेगा।"

"वह कहेगा, जहन्नुम में जायें नये पर्दे और नए जूते। यदि मैं स्वस्थ नहीं हूं तो उनका क्या लाभ? आज जो स्थिति है क्या वह किसी भी रूप में बेहतर है? आप डाक्टर के यहां उचित व्यवहार और ध्यान के लिये क्या कुछ देने के लिये तैयार नहीं हो जायेंगे। लेकिन ऐसा कोई डाक्टर है ही नहीं जिसे यह पैसा दिया जा सके। इन डाक्टरों के अपने निर्धारित कार्यक्रम होते हैं रोगियों का जाँच का निश्चित कोटा है और यही कारण है कि रोगी की अच्छी तरह से जांच पड़ताल किये बिना ही, कृपया अगले रोगी को भेजिए, की आवाज लगा दी जाती है। जहां तक विशेष अस्पतालों का सवाल है उनमें फीस ली जाती है। यहां अन्य अस्पताल की तुलना में रोगियों को और भी तेजी से देखा जाता है। वहां लोग क्यों जाते हैं? क्योंकि लोगों को कागज का एक पुरजा चाहिये अथवा प्रमाणपत्र चाहिये अथवा बीमारी की छुट्टी चाहिये या अपंग का पेन्शन कार्ड चाहिये। वहां डाक्टर का काम ऐसे लोगों को पकड़ना होता है, जो इन सुविधाओं के सचमुच अधिकारी नहीं होते। वहां रोगी और डाक्टर एक-दूसरे के शत्रु होते हैं। क्या तुम इसे ही चिकित्सा व्यवस्था कहती हो? अथवा, उदाहरण के लिये दवाइयों का ही मामला लो। बीस के दशक में सब दवाइयां मुफ्त थीं। तुम्हें याद है न?"

"क्यों ऐसा था क्या? हां, शायद ऐसा ही था। मुझे ठीक से याद नहीं रहा।"

"क्या तुम सचमुच भूल गई हो, क्या सचमुच? सब दवाइयां मुफ्त दी जाती थीं। लेकिन हमें यह तरीका छोड़ना पड़ा। तुम जानती हो, क्यों?"

"मैं समझती हूं शायद सरकार के लिये यह बहुत व्ययसाध्य काम रहा हो," दोन्तसोवा ने थोड़ी देर के लिये अपनी आंख बन्द करते हुए बड़े प्रयास के साथ कहा।

बात केवल यह नहीं थी इसका कारण यह भी था कि इसमें बेहद बर्बादी होती थी। किसी भी दवा का दाम देना न पड़ने के कारण मरीज अधिक से अधिक दवाइयां बटोरना चाहता था। और इसका परिणाम यह

होता था कि वह आधी दवाइयां फेंक देता था। मैं यह नहीं कहता कि मरीज को हर चिकित्सा का पैसा देना चाहिये। आरम्भिक इलाज के लिये यह होना चाहिये यदि डाक्टर मरीज को अस्पताल में भर्ती होने अथवा ऐसा इलाज कराने की सलाह देता है, जिसके लिये जटिल उपकरणों की आवश्यकता हो तो यह उचित ही है कि यह चिकित्सा निःशुल्क हो। लेकिन इस स्थिति में भी किसी भी अस्पताल को लीजिए—ऐसा क्या होता है कि दो सर्जन ऑपरेशन करते हैं और अन्य तीन उनका मुंह ताकते खड़े रहते हैं? क्योंकि उन लोगों को वेतन तो मिलता ही रहता है, तो वे चिन्ता किस बात की करें? यदि उन्हें मरीजों से पैसा मिलता होता तो स्पष्ट है कि कोई भी मरीज उनके पास न फटकता उस स्थिति में तुम्हारा हालमोहम्मदोव और तुम्हारी पान्तयोखीना बस अन्धाधुन्ध दौड़ लगाते हुए ही दिखाई देते, क्यों नहीं, क्या? लुदोचका चाहे किसी भी रूप में इस बात पर विचार करो डाक्टर को उस प्रभाव पर निर्भर करना चाहिये जो वह अपने रोगियों पर डालता है। उसे अपनी लोकप्रियता पर ही निर्भर करना चाहिये। आज वह अपनी लोकप्रियता पर निर्भर नहीं है।"

"यदि हमें एक-एक मरीज पर निर्भर करना पड़े तो बस हमारा भगवान ही मालिक है। उदाहरण के लिये झूठी अफवाहें फैलाने वाली उस पोलीना जावोद चिकोवा को ही लीजिए..."

"नहीं, हमें उस पर भी निर्भर करना चाहिये।"

"यह तो एकदम अपमानजनक स्थिति है!"

"क्या यह स्थिति वरिष्ठ डाक्टर पर निर्भर करने से अधिक बुरी है!" क्या यह किसी अन्य नौकरशाह की तरह सरकार से तनख्वाह वसूलने से कम ईमानदारी की बात है?"

"लेकिन उनमें से कुछ रोगी हर ब्यौरे में गहराई से जानना चाहते हैं—उदाहरण के लिए राविनोविच और कोस्तोग्लोतोव। ये लोग सैद्धांतिक सवाल पूछ-पूछकर आपको थका डालते हैं। क्या हमसे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने की अपेक्षा की जाती है?"

ओरेश चेन्कोव के ऊंचे मस्तक पर एक भी रेखा नहीं पड़ी। वे दा से लुदमिला दोन्तसोवा की सीमाओं से परिचित थे—ये सीमाएं बहुत संकसर्ण भी नहीं थीं। वह जटिलतम मामलों पर एकदम अकेले अपने आप विचार करने और इलाज करने की क्षमता रखती थी। उसने चिकित्सा सम्बन्धी पत्रिकाओं में लगभग जो दो सौ लेख प्रकाशित किये थे वे सर्वाधिक कठिन निदानों के उदाहरण थे और उसने इस सम्बन्ध में कोई शेखी भी नहीं बघारी थी जबकि निदान चिकित्सा का सबसे अधिक कठिन पहलू होता है। ओरेश-चेन्कोव उससे और अधिक अपेक्षा क्यों कर रहे थे?

"यह ठीक है," वे बोले, "तुम्हें हर एक सवाल का जवाब देना चाहिए ?"

"ठीक है, पर हमारे पास समय कहां है ?" दोन्तसोवा ने तर्क के लिए अपनी आवाज तेज करते हुए आपत्ति उठाई। "उनके लिये अपने कमरे में स्लीपर पहनकर इधर-उधर चक्कर लगाते समय यह बात कहना बड़ा आसान है। क्या आपको इस बात का आभास है कि आजकल चिकित्सा संस्थाओं में कितना अधिक काम होता है ? आपके जमाने में भिन्न स्थिति थी। जरा यह तो सोचिए कि प्रत्येक डाक्टर के पीछे कितने अधिक रोगी हैं।"

"आरम्भिक चिकित्सा की सही व्यवस्था होने पर," ओरेश चेन्कोव ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा, "बहुत कम रोगी अस्पतालों में पहुंचेंगे और उनमें से कोई भी रोगी ऐसा नहीं होगा जिसकी बीमारी उपेक्षा के कारण बढ़ गई हो। आरम्भिक चिकित्सा करने वाले डाक्टर के पास उससे अधिक रोगी नहीं होंगे जितने वह अपनी स्मृति और व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर देख सकता है और चिकित्सा कर सकता है। इस स्थिति में वह प्रत्येक रोगी की चिकित्सा अपने एक व्यक्तिगत विषय के रूप में करेगा। अलग से रोगों के इलाज का काम फेल्दशेर[1] स्तर का है।"

"ओह !" दोन्तसोवा ने बड़ी थकान से आह भरते हुए कहा मानो उनके व्यक्तिगत वार्तालाप के कारण कोई पर्याप्त महत्वपूर्ण परिणाम निकल सकता था ! "यह एक भयावह विचार है, प्रत्येक रोगी को एक अलग विषय मान कर उसकी चिकित्सा करना।"

ओरेश चेन्कोव ने भी अनुभव किया कि अब इस बातचीत को बन्द करने का समय आ गया है। लफ्फाजी एक ऐसी बुराई थी जो वृद्धावस्था में उनके भीतर पैदा हो गई थी।

"पर रोगी की शरीर रचना यह नहीं जानती की हमारा ज्ञान विभिन्न शाखाओं में विभाजित है। शरीर रचना विभाजित नहीं है। जैसाकि वाल्टेयर ने कहा था," डाक्टर लोग ऐसी दवाइयां देते हैं, जिनके बारे में वे कुछ नहीं जानते और ये दवाइयां एक ऐसी शरीर रचना के लिए दी जाती हैं जिसके बारे में वे और भी कम जानते हैं।" हम लोग रोगों को एक अलग विषय कैसे समझ सकते हैं ? आखिरकार जो शरीर रचना विशेषज्ञ चित्र बनाता है वह शवों पर शल्यक्रिया करता है; जीवित मनुष्य उसकी विषय वस्तु नहीं होती। क्यों होते हैं, क्या ? ऐक्स रे से चिकित्सा करने वाला एक विशेषज्ञ टूटी हुई हड्डियों, के बारे में नाम कमाता है लेकिन पेट और आन्तों के रोग उसके क्षेत्र से बाहर

---

१. एक सहायक डाक्टर जो पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं होता और जो सोवियत संघ के देहाता इलाकों में चिकित्सा कार्य करता है। (अनुवादक की टिप्पणी)

होते हैं क्यों नहीं क्या ? रोगी गेंद की तरह एक "विशेषज्ञ से दूसरे" विशेषज्ञ के बीच ठोकरें खाता रहता है। यही कारण है कि एक डाक्टर अपने समस्त कार्यकाल में मधुमक्खी पालन में गहरी दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति बना रह सकता है। यदि तुम एक रोगी को एक अलग विषय के रूप में समझना चाहोगी तो तुम्हारे लिए अन्य कार्यों, अन्य लगावों के लिए कोई स्थान नहीं रह जायेगा। स्थिति यही है। डाक्टर को भी एक अलग विषय होना चाहिए। डाक्टर को चिकित्सा के हर पहलू का माहिर होना चाहिये।"

"डाक्टर को भी ?" यह शिकायत भरी कराह का स्वर था। यदि वह अपना मनोबल ऊंचा रख पाती और उसके दिमाग में उलझनें न भरी होतीं तो उसे यह विस्तृत विचार दिलचस्प लगता। लेकिन उस समय जो परिस्थितियां थीं इन बातों ने उसके मनोबल को और अधिक तोड़ डाला। उसके लिए अपना ध्यान केन्द्रित कर पाना बेहद कठिन हो उठा।"

"हां, लुदोचका, और तुम ठीक एक वैसी ही डाक्टर हो, तुम्हें अपनी कीमत घटा कर नहीं लगानी चाहिए। इन बातों में कुछ भी नया नहीं है। क्रांति से पहले म्युनिसपेलिटी के हम सब डाक्टरों को यह सब करना पड़ता था। हम लोग चिकित्सा विशेषज्ञ थे, प्रशासक नहीं। आजकल जिले के अस्पताल का वरिष्ठ डाक्टर इस बात पर अड़ा रहता है कि उसके अस्पताल में दस विशेषज्ञ होने चाहिए अन्यथा वह काम नहीं करेगा।"

अब यह बात उनकी समझ में आ रही थी कि बातचीत समाप्त करने का समय हो गया है। लुदमिला अफानासएवना का पस्त चेहरा और तेजी से झपकती हुई आंखें यह बता रही थीं कि उसका ध्यान दूसरी ओर करने के लिए जो बातचीत शुरू की गई थी उससे उसे कोई लाभ नहीं पहुंचा है। तभी बरामदे की ओर से दरवाजा खुला और कोई भीतर आया⋯यह कुत्ते जैसा दिखाई पड़ रहा था लेकिन यह जीव इतना बड़ा, ऊष्मापूर्ण और अविश्वासनीय था कि यह एक ऐसा आदमी दिखाई पड़ता था जो किसी कारण से अपने चारों हाथ पांव जमीन पर टिका कर खड़ा हो गया हो। लुदमिला अफानासएवना के मन में सबसे पहले भय का संचार हुआ कि कहीं वह उसे काट न ले। लेकिन उसे एक बुद्धिमान और उदास आंखों वाले मनुष्य से अधिक डरने की जरूरत नहीं थी।

वह बहुत आहिस्ता से चलता हुआ कमरे को पार कर गया। मानो वह गहरे विचारों में खोया हुआ हो और जिससे इस बात का किंचितमात्र भी आभास न हो कि घर में मौजूद कोई व्यक्ति उसके इस प्रकार प्रवेश करने से आश्चर्य में पड़ सकता है। उसने अपनी शानदार झबरी सफेद पूंछ उठाई। हेलो कहने के लिए इसे एक बार हिलाया और फिर नीचे कर लिया दो बड़े-बड़े झुके काले कानों के अलावा उसका रंग अदरखी और सफेद था। ये दोनों

रंग बड़े विचित्र और जटिल नमूने में उसके बालों में एक के बाद एक दिखाई पड़ रहे थे। उसकी पीठ पर सफेद कपड़ा बंधा हुआ था। लेकिन उसकी दोनों ओर पसलियों के ऊपर का रंग गहरा अदरखी था और पिछला हिस्सा प्रायः नारंगी रंग का। वह लुदमिला अफानासएवना के पास तक आया और उसके घुटनों को सूंघा। लेकिन उसने यह काम आक्रामक रवैया अपनाये बिना ही किया। यह मेज के बराबर रखी अपनी नारंगी रंग की पिछली टांगों पर नहीं बैठा जैसी की एक कुत्ते से आशा की जा सकती थी। उसने ऊपर मेज पर अपने सिर के बराबर रखी खाने की चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। वह बस वहां अपने चारों पांवों पर खड़ा रहा। और उसकी बड़ी-बड़ी कत्थई रंग की तरल आँखें मेज के ऊपर आध्यात्मिक निष्क्रियता से देख रही थीं।

"ओह अद्भुत है। यह कौन सी नस्ल है," लुदमिला अफानासएवना इतनी आश्चर्यचकित थी कि उस रोज शाम को पहली बार ऐसा अवसर आया कि वह स्वयं अपने रोग को और अपने दर्द को पूरी तरह भूल गई।

"वह एक सेन्ट बर्नार्ड है," ओरेश चेन्कोव ने कुत्ते की ओर उत्साहवर्द्धक दृष्टि से देखते हुये कहा "बस उसके कान बहुत लम्बे हैं वर्ना और सब कुछ बिलकुल ठीक है। इसे खाना खिलाते समय मान्या गुस्से से नफरत से पागल हो उठती है। "क्या मैं तुम्हारे कानों को रस्सी से ऊपर बांध दूं ?" वह कहती है। "तेरे कान रकाबी में लटकते रहते हैं!"

लुदमिला अफानासएवना ने कुत्ते को ऊपर से नीचे तक देखा और प्रशंसा के भाव से अभिभूत हो उठी। भीड़ भरी सड़कों पर ऐसे कुत्ते के लिए कोई स्थान नहीं था। वे बस या ट्राम वगैरा में ऐसे कुत्ते को नहीं ले जाने देंगे। यदि हिमालय ही एकमात्र ऐसा स्थान है, जहां हिम मानव रह सकता है तो इस कुत्ते के लिये भी एकमात्र स्थान इसी एक मंजिले मकान का बगीचा ही हो सकता था।

ओरेश चेन्कोव ने केक का एक टुकड़ा काटा और उसे कुत्ते को दिया लेकिन उन्होंने यह टुकड़ा उस तरह नहीं फेंका, जिस तरह कुछ लोग आनन्द के लिए अथवा कुछ किस्मों के कुत्तों पर दया दिखाने के लिये फेंकते हैं! ताकि वह उन्हें अपनी पिछली दो टांगों पर खड़े होकर अथवा कूद कर दांत किटकिटाते हुए टुकड़ा लेते हुए देख सकें। यदि यह कुत्ता अपनी पिछली टांगों पर खड़ा होगा तो कुछ मांगने के लिये नहीं बल्कि मनुष्य के कन्धों पर मित्रता के चिह्न स्वरूप अपने पंजे रखने के लिये खड़ा होगा। ओरेश चेन्कोव ने एक बरावरी वाले की तरह केक का टुकड़ा उसे दिया और उसने एक बराबरी के दर्जे के व्यक्ति की तरह ही इस टुकड़े को लिया। उसने अपने दांतों से बड़ी शान्ति और जल्दबाजी के बिना डाक्टर की हथेली के ऊपर से इस प्रकार उठा लिया मानो किसी प्लेट के ऊपर से उठाया हो। हो सकता है कि वह भूखा भी न हो

उसने यह टुकड़ा अपनी विनम्रता दर्शाने भर के लिए स्वीकार कर लिया हो।
इस शान्त, विचारशील कुत्ते के आगमन ने न जाने कैसे लुदमिला अफानासएवना को तरोताजा बना दिया और वह प्रसन्न हो उठी। वह यह सोचते हुए मेज से उठ खड़ी हुई मानो उसकी स्थिति उतनी बुरी न हो। ऐसा लग रहा था मानो वह सोच रही हो कि चाहे उसे आपरेशन ही क्यों न कराना पड़े पर उसकी हालत इतनी अधिक खराब नहीं है। उसने दोर्मीदोन्त तिखोनोविच की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया था।

"मैं पूरी तरह से विवेकहीन बन गई हूँ," वह बोली। "मैं यहां आकर आपसे अपनी तकलीफ और अपनी पीड़ा के बारे में ही बात करती रही और आपसे यह भी नहीं पूछा कि आप कैसे हैं। आपकी तबियत कैसी है?"

ओरेश चेन्कोव उसके सामने खड़े थे। उनकी पीठ एकदम सीधी थी और वे कुछ भारी बदन के भी लग रहे थे। उनकी आंखों से पानी बहना शुरू नहीं हुआ था। उनके कान हर आवाज सुन सकते थे। यह विश्वास कर पाना असम्भव था कि उनकी उम्र उससे २५ वर्ष अधिक थी।

"अभी तक तो बिल्कुल ठीक है।" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा। यह एक अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति की मुस्कराहट थी। लेकिन इसमें गर्मजोशी नहीं थी मैंने यह निश्चय कर लिया था कि अपनी मृत्यु से पहले मैं कतई बीमार नहीं पड़ूंगा। जैसी कि कहावत है बस में ऐसे ही चोला छोड़ दूंगा।"

वे उसे बाहर तक बिदा देने गये। भोजन के कमरे में वापस लौटे और काली मुड़ी हुई लकड़ी और पीले बेंत की झुलने वाली कुर्सी पर आराम से बैठ गए। इस कुर्सी की पीठ लम्बे वर्षों के इस्तेमाल से घिस चुकी थी। उन्होंने उसे ज़रा सा झटका दिया और फिर उसकी हरकत को अपने आप रुक जाने दिया। इसके बाद उन्होंने फिर इसे धक्का नहीं दिया। वे ऐसी विचित्र मुद्रा में बैठे रहे जो झूलने वाली कुर्सी पर बैठने वाले प्रत्येक व्यक्ति की होती है। कुर्सी प्रायः संतुलन खो चुकी थी। फिर भी हिलने डुलने के लिए स्वतन्त्र थी। काफी देर तक वे एक प्रस्तर प्रतिमा की तरह निःस्पन्द भाव से एक ही मुद्रा में रुके रहे।

आजकल उन्हें बार-बार आराम की ज़रूरत पड़ती थी। उनका शरीर अपनी शक्ति को फिर बटोरने के लिए इसकी मांग करता था। और इसी प्रकार उनका अन्तर्मन मौन चिन्तन का आग्रह करता था, जो बाहरी आवाजों, वार्तालाप, काम की चिन्ता, और उन समस्त बातों से मुक्त हो जो उन्हें एक डाक्टर बनाती हैं। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद से उनके अन्ततम में, उनकी अन्तर चेतना में, चिन्तन की निर्मलता का आग्रह बड़ा प्रबल हो उठा था। इस प्रकार की मौन निस्पन्दता, जो हर प्रकार के सुचिन्तित अथवा यहां तक कि आकस्मिक विचारों तक से मुक्त होती थी, उन्हें पवित्रता और पूर्णता

का आश्वासन प्रदान करती थी।

ऐसे क्षणों में अस्तित्व का समग्र अर्थ उनके मन में पूरी तरह स्पष्ट हो जाता था। अपने लम्बे अतीत में स्वयं अपने अस्तित्व का और छोटे से भविष्य में भी अस्तित्व का, अपनी स्वर्गीय पत्नी के अस्तित्व का, अपनी युवती पौत्री और संसार के प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व का अर्थ स्पष्ट हो जाता था। ऐसे क्षणों में वे इसे किसी कार्य अथवा गतिविधि में साकार नहीं देखते थे, जिनमें ये लोग व्यस्त रहते थे, जिन्हें ये लोग अपने जीवन का केन्द्र बिन्दु मानते थे और जिसके द्वारा उन्हें दूसरे लोग जानते थे, जिन्हें ये लोग जानते थे, पहचानते थे। अस्तित्व का अर्थ था उस अनन्तता, उस शून्य के पवित्र, अविभाजित और अविकृत स्वरूप को अक्षुण्णा बनाये रखना, जिसे यथा सम्भव लेकर प्रत्येक व्यक्ति पैदा होता है।

एक शान्त, निःस्पन्द तालाब में प्रतिबिम्बित रूपहले चांद की तरह।

१०. बाजार की मूर्तियां

उसके भीतर एक आन्तरिक तनाव पैदा हो गया था—पस्त कर डालने वाला तनाव नहीं बल्कि प्रसन्नता देने वाला तनाव। वह उस स्थान का भी अनुभव कर सकता था जहां यह तनाव पैदा हो गया था, उसकी छाती में सामने की ओर, हड्डियों के नीचे। तनाव उसके भीतर इस प्रकार हल्का-सा दबाव डाल रहा था जिस प्रकार गर्म हवा एक गुब्बारे के भीतर दबाव डालती है। इसके परिणाम स्वरूप उसे एक सुखद पीडा का अनुभव हो रहा था। न जाने कैसे इस पीडा की आवाज़ भी वह सुन सकता था। बस अन्तर केवल इतना था कि यह आवाज़ इस पृथ्वी की आवाज़ नहीं थी, यह एक ऐसी आवाज़ नहीं थी, जिसे कान सुनते हैं।

यह उस अनुभूति से भी भिन्न अनुभूति थी, जिसने उसे हाल के सप्ताहों की उन शामों को जोया के पीछे दौड़ाया था। वह अनुभूति उसकी छाती के भीतर नहीं थी। यह उसके शरीर के एक भिन्न भाग में थी।

वह इस तनाव को अपने भीतर संजोये रहा, इसे दुलारता रहा, और इसकी आवाज़ निरन्तर सुनता रहा। अब उसे स्मरण आया कि एक युवक के रूप में भी इससे परिचित था और तभी अचानक इसे पूरी तरह से भूल गया था। यह कैसी अनुभूति थी? कितनी चिरस्थायी? क्या यह भ्रमकारी तो नहीं है? क्या यह पूरी तरह उस स्त्री पर निर्भर थी, जिसने इसे जन्म दिया है? क्या यह उस रहस्य पर भी निर्भर है जो उस स्त्री का उस समय तक आदी न हो पाने के कारण अथवा उससे घनिष्ठता न होने के कारण था? क्या यह आगे चलकर पूरी तरह अन्तर्धान नहीं हो सकती?

लेकिन अब "उससे घनिष्ठता" का उसके लिये कोई अर्थ नहीं रह गया था।

क्या इसका कोई अर्थ था? अब उसके पास एकमात्र आशा उसकी छाती के भीतर संजोई हुई यह अनुभूति ही थी और यही कारण था कि वह इतनी सावधानी से इसे संजोये हुए था। यह उसके जीवन की प्रमुख परिणति, उसके जीवन का प्रमुख अलंकार बन गई थी। जो कुछ हुआ था उस पर उसे बड़ा अचरज था—वेगा की मौजूदगी पूरे कैन्सर वार्ड को दिलचस्प और रंगीन बना देती है। यदि कोई वस्तु कैन्सर वार्ड को गलने-सड़ने से रोके हुए है तो

वह यह तथ्य है कि वह आज भी···मित्र हैं। आज भी, ओलेग अक्सर उसे यदा-कदा ही देख पाता था और वह भी बहुत थोड़ी देर के लिए। कुछ दिन पहले उसने एक बार फिर खून चढ़ाया था। उन लोगों की एक और अच्छी बातचीत हुई थी। यद्यपि यह बातचीत उतने मुक्त वातावरण में नहीं हुई थी क्योंकि इस बार एक नर्स वहाँ मौजूद थी।

उसने अस्पताल से छुट्टी के लिये हर सम्भव प्रयास किया था। लेकिन अब जब कि छुट्टी का दिन करीब आ रहा था उसे यहां से जाने की बात पर उदासी होती थी उशतेरेक में वह वेगा को नहीं देख सकेगा। तब क्या होगा?

आज रविवार था और यह एक ऐसा दिन था जब वह उसे देखने की आशा नहीं कर सकता था। वह गरम और धूप भरा दिन था। हवा शान्त थी। यह गर्म होने और बेहद गर्म होने के लिये तैयार थी। आलेग अस्पताल के मैदान में घूमने के लिये बाहर निकल गया। उसने घनीभूत होती हुई ऊष्मा में सांस लिया, जो उसके शरीर को गूँदती हुई मालूम पड़ रही थी। उसने यह कल्पना करने की कोशिश की कि वह किस प्रकार अपना रविवार बिता रही होगी! वह क्या कर रही होगी?

अब वह पहले की तरह चुस्ती से नहीं चल पाता था। अब वह पहले की तरह एक सीधी रेखा में जिसे वह अपनी कल्पना से खींच लेता था लम्बे डग भरता हुआ नहीं चलता था और जहां कहीं इस रेखा का अन्त होता था पीछे लौट पड़ता। अब उसके कदम कमजोर और सावधानी से भरे होते थे। बीच-बीच में यह रुक जाता था और किसी बैंच पर बैठ जाता था। यदि वहां और कोई न होता तो वह बैंच पर लेट जाता था।

आज भी ऐसा ही हुआ। वह अहने आपको घसीट रहा था। उसका ड्रेसिंगगाउन सामने से खुला था और उसके कन्धों पर झूल रहा था। उसकी पीठ झुकी हुई थी। वह अक्सर रुक जाता, अपने सिर को पीछे की ओर झटकता और ऊपर पेड़ों की ओर नज़र उठाता। कुछ पेड़ों पर आधीपत्तियां निकल आई थीं, कुछ चौथाई पत्तियों से भरे थे पर ओक वृक्षों पर अभी अंकुर फूटना शुरू नहीं हुआ था। सब कुछ ऐसा ही था···अच्छा!

चुपचाप और किसी का ध्यान गये बिना ही एक तेज गहरे रंग की घास का टुकड़ा ऊपर तक चढ़ आया था। किसी-किसी जगह घास इतनी ऊंची थी कि इसे पिछले साल की ही घास समझ लिया जाता यदि यह इतनी हरी न होती।

एक धूप भरे रास्ते पर आलेग ने शुलुबिन को देखा। वह एक रद्दी बिना पीठ की बहुत संकरी बैंच पर बैठा हुजा था। वह अपनी जांघों के बल पर टिका हुआ था। वह इस प्रकार मुडा हुआ था कि एक साथ आगे और पीछे दोनों ओर मुड़ा हुआ दिखाई पड़ता था। उसकी बांहें पूरी फैली हुई थीं और

उसकी अंगुलियों ने घुटनों के बीच की जगह को कसकर थाम रखा था। इस एकाकी बैंच पर सिर झुकाकर इस प्रकार तीखे प्रकाश और छाया के मध्य बैठा हुआ शुलुबिन अनिश्चितता के क्षण की प्रतिमूर्ति दिखाई पड़ रहा था।

ओलेग उसके पास बैंच पर बैठ जाने को तैयार था। अभी तक वह उससे खुलकर बात नहीं कर पाया था। पर वह यह बातचीत करना चाहता था क्योंकि शिविरों ने उसे यह सिखाया था कि जो लोग कुछ नहीं कहते वे अपने भीतर कुछ छिपाये रहते हैं। इसके अलावा ओलेग की सहानुभूति और दिलचस्पी भी इस कारण से बढ़ गई थी कि उस दिन की बहस में शुलुबिन ने उसका समर्थन किया था।

पर उसने आगे निकल जाने का निश्चय किया। शिविरों ने उसे यह भी सिखाया था कि प्रत्येक व्यक्ति का यह पवित्र अधिकार होता है कि वह अपनी इच्छानुसार एकान्त प्राप्त कर सके। उसने इस अधिकार का सम्मान किया था और इसका उल्लंघन करने को तैयार नहीं था।

वह उसके आगे से निकला जा रहा था लेकिन धीरे-धीरे चलते हुए अपने जूतों से बजरी को कुचल रहा था। उसे रोकना कोई समस्या न होती। शुलुबिन ने जूतों को देखा और उसकी आंखें यह देखने के लिये धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठीं कि ये जूते किसके हैं। उसने ओलेग की ओर उदासीनता से देखा। उसकी आंखों में पहचानने भर के अलावा अन्य कोई भाव नहीं था। मानो वे कह रही हों "हम एक ही वार्ड के हैं, क्यों हैं न ?" ओलेग दो और खुले हुए कदम उठा चुका था और तभी शुलुबिन ने उसे अर्द्ध प्रश्न के रूप में सुझाव देते हुए कहा, "क्या आप बैठेंगे ?"

शुलुबिन ऊंची बाड़ वाले घर के भीतर पहनने के जूते पहने हुए था। ये अस्पताल के साधारण स्लीपर नहीं थे जिनमें मुश्किल से ही आपकी अंगुलियां फंस पाती हैं। ये ऐसे जूते थे कि वह इन्हें पहन कर बाहर टहलने जा सकता था और बाहर बैठ सकता। उसका सिर नंगा था। सिर के ऊपर सफेद बालों के कुछ गुच्छे यहां वहां दिखाई पड़ रहे थे।

ओलेग बैंच की ओर मुड़ा और बैठ गया। वह ऐसा जता रहा था मानो उसके लिये वहां बैठ जाना अथवा आगे बढ़ जाना दोनों समान बातें थीं। लेकिन यदि गहराई से सोचा जाये तो बैठना बेहतर होता।

खैर, उनकी बातचीत शुरू हुई और अब वह यह जानता था कि वह शुलुबिन से एक महत्वपूर्ण सवाल पूछ सकता है औरउसका उत्तर इस आदमी को पूरी तरह समझने की कुंजी प्रदान करेगा। लेकिन इसके स्थान पर बस उसने यही पूछा ! "तो परसों ही यह होगा, अलेक्सेई फिलयोबिच ?"

यह जानने के लिए उसे उत्तर की आवश्यकता नहीं थी कि परसों ही होगा। वार्ड का प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि उस दिन शुलुबिन का

ग्रापरेशन होने जा रहा है। पर महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसने उसे अलेक्सेई फलिपोविच कह कर पुकारा था। अभी तक वार्ड में किसी ने भी मूक शुलुबिन को इस संबोधन से नहीं पुकारा था। यह ऐसा संबोधन था मानो एक सैनिक दूसरे सैनिक को सम्बोधित कर रहा हो।

शुलुबिन ने सिर हिलाया। "थोड़ो-सी धूप तापने का यह मेरा अन्तिम अवसर है।"

"ओह नहीं, अन्तिम नहीं," कोस्तोग्लोतोव बोल उठा।

पर अपनी कनखियों से शुलुबिन को देखते हुए उसके मन में यह बात आई कि शायद यह अन्तिम मौका ही हो। शुलुबिन बहुत कम खा रहा था। भूख से भी कम। खाने के बाद उसे जो पीड़ा होती उससे बचने के लिए वह कम से कम खाता था। लेकिन इससे उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। कोस्तोग्लोतोव को अब तक यह पता चल चुका था कि शुलुबिन की बीमारी क्या है। "तो अब निर्णय हो चुका है, क्यों? वे लोग बगल से मल निकालने की व्यवस्था करेंगे?" उसने पूछा।

शुलुबिन ने अपने होंठ इस तरह भींचे मानो उन्हें कुचलने जा रहा हो। पर फिर अपना सिर भर हिला दिया। वे दोनों कुछ देर चुपचाप बैठे रहे।

"चाहे आप कुछ भी कहें कैन्सर और कैन्सर में फर्क है," शुलुबिन ने ओलेग की ओर न देखकर आगे की ओर देखते हुए घोषणा की। एक ऐसा कैन्सर होता है जो अन्य हर प्रकार के कैन्सर को मात चढ़ा देता है। चाहे आप कितनी भी भयंकर स्थिति में क्यों न हों सदा ऐसा कोई न कोई व्यक्ति होगा जो और बुरी हालत में हो। मेरा मामला ऐसा है जिसके बारे में आप दूसरे लोगों से विचार विमर्श नहीं कर सकते, जिसके बारे में आप दूसरों से सलाह नहीं मांग सकते।

"मेरा मामला भी ऐसा ही है। मैं यही सोचता हूँ।"

"नहीं, मेरा मामला अधिक बुरा है। चाहे आप किसी भी तरीके से इस बात पर विचार करें। मेरी बीमारी विशेष रूप से अपमानजनक, विशेष रूप से कष्टप्रद है। इसके परिणाम भयावह हैं। यदि मैं जीवित रहता हूं··· और "यदि" यह बहुत बड़ा है—मेरे पास खड़ा होना अथवा बैठना, जैसे तुम इस समय बैठे हुए हो बहुत अरुचिकर होगा। प्रत्येक व्यक्ति मुझसे दो कदम दूर रहने का ही भरसक प्रयास करेगा, "हर समय मैं यही सोचूंगा, वह मुश्किल से ही मुझे बर्दाश्त कर पा रहा है। वह मुझे भला बुरा कह रहा है। मुझे कोस रहा है।"

इसका यह अर्थ होता है कि मैं मनुष्यों की संगति से वंचित हो जाऊंगा। कुछ देर तक कोस्तोग्लोतोव हल्के से सीटी बजाते हुए इस बात पर विचार करता रहा। वह अपने होठों से नहीं बल्कि कड़ाई से भींचे हुए अपने दान्तों के बीच से

सीटी बजा रहा था और अनजाने ही दांतों के बीच से हवा निकल रही थी।
"हां, यह निर्णय कर पाना बड़ा कठिन है कि हम दोनों में से किसकी बुरी स्थिति है," वह बोला। "यह अपनी उपलब्धियों अथवा असफलताओं के बारे में होड़ लगाने से भी कहीं अधिक कठिन कार्य है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना संकट सर्वाधिक बुरा होता है। उदाहरण के लिए, मैं यह निष्कर्ष निकाल सकता हूं कि मैंने असाधारण रूप से दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बताया है। लेकिन मैं यह निश्चयपूर्वक कैसे कह सकता हूं? हो सकता है तुम्हारा जीवन और भी दुर्भाग्यपूर्ण रहा हो। मैं बाहर से, ऊपर से कैसे इस नतीजे पर पहुँच सकता हूँ?"

"निर्णय न दो, क्योंकि इस स्थिति में तुम निश्चय ही गलत सिद्ध होओगे," शुलुबिन ने उत्तर दिया और अन्ततः उसने अपना सिर घुमाया और अपनी विचलित कर देने की सीमा तक अभिव्यक्तिपूर्ण, गोल-गोल और रक्त रंजित आंखों से ओलेग की ओर गौर से देखा। "जो लोग समुद्र में डूब जाते हैं अथवा जमीन की खुदाई करते हैं अथवा रेगिस्तान में पानी की तालाश करते हैं उन का जीवन कठोरतम नहीं होता। सर्वाधिक कठोर जीवन उस व्यक्ति का होता है जो हर रोज अपने घर से बाहर निकलता है और उसका सिर दरवाजे की चौखट से टकराता है क्योंकि यह बहुत ऊंचा नहीं है। जहां तक मैं समझ पाया हूं तुमने युद्ध में हिस्सा लिया और फिर तुम श्रम शिविरों में रहे, क्या यही बात है?"

"हां, और कुछ और बातें भी: उच्च शिक्षा नहीं, अफसर का कमीशन नहीं, सदा के लिये निष्कासन" —ओलेग ने बहुत विचारशीलता से इन बातों का उल्लेख किया और उसके स्वर में कोई शिकायत भी नहीं थी—"और हां, एक और चीज़ कैन्सर"

खैर जहां तक कैन्सर का सवाल है इस बात में हम बराबर हैं। जहां तक अन्य बातों का सवाल है नौजवान···

"जहन्नुम में जाये यह शब्द, यह नौजवान कौन है। तुम समझते हो कि मैं जवान हूं क्योंकि मेरा अभी भी यह पुराना सिर मेरे कन्धों पर कायम है अथवा मुझे नई खाल चढ़वाने की आवश्यकता नहीं पड़ी?"

जहां तक अन्य बातों का सवाल है मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ। तुम्हें बहुत अधिक झूठ नहीं बोलना पड़ा, तुम्हारी समझ में यह बात आई? कम-से-कम तुम्हें इतना नहीं गिरना पड़ा, तुम्हें इस बात के महत्व को समझना चाहिये। तुम लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन हम लोगों को तुम्हारे भण्डाफोड़ के लिये भेड़ बकरियों की तरह सभाओं में एकत्र किया गया। उन्होंने तुम जैसे लोगों को गोली से उड़ाया। लेकिन उन्होंने हम लोगों को अपने इन मृत्युदण्डों के निर्णयों का ताली बजाकर स्वागत करने के लिये बाध्य किया। उन लोगों न हमें केवल निर्णय की प्रशंसा कर देने के बाद ही छुट्टी नहीं दे दी

बल्कि उन लोगों ने हमें बाध्य किया कि हम गोली से उड़ाने वाले दस्तों की नियुक्ति की मांग करें। क्या तुम्हें याद है कि वे अखबारों में क्या लिखते थे। "समस्त सोवियत राष्ट्र अमुक व्यक्ति के कल्पनातीत और जघन्य अपराधों की बात सुनकर एक व्यक्ति की तरह उठ खड़ा हुआ। क्या तुम जानते हो कि इस 'एक आदमी' का हमारे लिये क्या अर्थ था। हम लोग अलग-अलग अस्तित्व वाले व्यक्ति थे और तभी अचानक हम सब एक आदमी बन गये। जब हम तालियां बजाकर प्रशंसा प्रगट करते थे तो हमें अपने बड़े-बड़े सशक्त हाथ ऊपर हवा में उठाकर रखने पड़ते थे ताकि हमारे आस-पास के लोग और मंच पर बैठे लोग भी इन्हें देख सकें क्योंकि आखिर कौन व्यक्ति जीवित नहीं रहना चाहता। कौन तुम्हारे समर्थन में आगे आया ? आखिर कब किसने आपत्ति उठाई ? अब वे कहां हैं। मैं एक को जानता था—दीमा ओलीतस्की—उसने समर्थन में हाथ नहीं उठाया। वह इसका विरोध नहीं कर रहा था, नहीं, कदापि नहीं ? उद्योग पार्टी[1] के सदस्यों को गोली से उड़वाने का निर्णय लेने के लिये जब मतदान हुआ तो वह उसमें शामिल नहीं हुआ। "इसका स्पष्टीकरण दो ?" वे लोग चिल्लाए 'स्पष्टीकरण दो' वह उठ खड़ा हुआ। उस का मुल्क रेगिस्तान की तरह सूखा हुआ था। "मेरा विश्वास है," वह बोला, "कि क्रांति के बाद बारहवें वर्ष में हमें दमन के वैकल्पिक तरीके निकालने चाहिएं।"..."अहा, बदमाश कहीं का! सह अपराधी। शत्रु का जासूस! अगले दिन सुबह उसे जी पी यू[2] से सम्मान मिला और फिर शेष जीवन वह वापिस नहीं लौटा।"

शुलुबिन ने अपनी गर्दन घुमाई और अपने खास तरीके से बड़े विलक्षण ढंग से गर्दन को इधर-उधर गोलाकार घुमाने लगा। आगे और पीछे दोनों ओर एक साथ झुका हुआ वह एक विशाल पक्षी की तरह उस बैंच पर बैठा हुआ था जो बैठने के इस स्थान का आदी न हो।

कोस्तोग्लोतोव ने यह प्रयास किया कि शुलुबिन ने जो बातें कहीं हैं उनसे प्रसन्नता का अनुभव न करे। "अलेक्सेई फिलपोविच," वह बोला, "यह सब उस संख्या पर निर्भर करता है जो आपके नाम निकल आती है। यदि स्थिति

---

१. नवम्बर १९३० में अनेक प्रमुख सोवियत वैज्ञानिकों और अर्थशास्त्रियों को क्रांति विरोधी उद्योग पार्टी का सदस्य बताकर और उनके ऊपर अर्थव्यवस्था का 'विध्वंस' करने का अभियोग लगा कर मृत्युदण्ड दिया गया था। वस्तुतः इस पार्टी का अस्तित्व ही नहीं था। इनका मुकदमा भावी महाशुद्धि अभियान का पूर्वाभास था।
(अनुवादककी टिप्पणी)

२. "प्रमुख राजनीतिक प्रशासन" सोवियत सुरक्षा पुलिस के उन अनेक नामों में से एक जो इसे दिए गए थे। (अनुवादक की टिप्पणी)

इससे विपरीत होती : आप लोग बलिदानी होते हैं और हम समय का लाभ उठाने वाले। लेकिन एक और मुद्दा भी है : तुम्हारे जैसे लोगों को जिन्होंने यह समझ लिया था कि वास्तव में क्या हो रहा है, जिनकी समझ में यह बात पर्याप्त जल्दी आ गई थी, उन्हें भयंकरतम पीड़ा की यातना भोगनी पड़ी। लेकिन उनके बारे में आप क्या कहेंगे, जिन्हें इन बातों पर विश्वास था। ऐसे लोगों को कोई संकट नहीं था। इनके हाथ रक्त रंजित थे लेकिन एक दूसरी दृष्टि से यह खून से रंगे हुए नहीं भी थे क्योंकि वे स्थिति को उसके सही रूप में नहीं समझ पा रहे थे।"

वृद्ध ने अपनी तिरछी बेधक दृष्टि डाली। "ऐसे लोग कौन हैं, वे जो इन बातों पर विश्वास करते थे ?" उसने पूछा।

"मैं ही विश्वास करता था। फिनलैंड के खिलाफ युद्ध के समय तक मैं इन बातों पर विश्वास करता रहा।"[1]

"लेकिन ऐसे लोगों की संख्या है ही कितनी। जो इन बातों पर विश्वास करते थे, ऐसे लोग जो वास्तविकता से अनभिज्ञ थे। मैं जानता हूं एक छोटे लड़के से आप अधिक आशा नहीं कर सकते। लेकिन मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि हमारे समस्त देशवासी अचानक ही इतने बुद्धिहीन हो उठे कि उनकी समझ में कोई बात ही नहीं आ रही थी। मैं यह विश्वास नहीं कर सकता, मैं इस बात पर विश्वास नहीं करूंगा। पुराने जमाने में किसी विशाल भवन का स्वामी अपने मुख्य द्वार पर खड़े होकर अनेक मूर्खतापूर्ण बातें करता था। लेकिन किसान चुपचाप उसकी उन बातों पर हंसते भी रहते थे। यह जमींदार उन्हें इस प्रकार मुस्कराते हुए देखता भी था और उसके कारिन्दे भी यह देखते थे और जब सलाम करने का वक्त आता तो सच है कि वे सलाम करते थे सब-के-सब "एक आदमी की तरह।" पर क्या इसका यह मतलब है कि किसान अपने इस जमींदार की बातों का विश्वास करते थे ? इन बातों पर विश्वास करने के लिए आपको कैसा आदमी बनने की जरूरत होती है ? शुलुबिन निरन्तर अधिकाधिक क्रोधित होता जा रहा था। उसका ऐसा चेहरा था, जो तीव्र मनोभावों के कारण बड़े उग्र रूप से बदलता और विकसित होता है और जिसका एक भी नक्श शान्त नहीं रह पाता। हम कैसे आदमी के बारे में बात कर रहे हैं।" उसने अपनी बात आगे जारी रखते हुए कहा। "अचानक समस्त प्रोफेसर और इंजीनियर विध्वंसकारी कार्रवाई करने वाले बन गए और वह आदमी यह विश्वास कर लेता।" गृह-युद्ध के समय के सर्वोत्तम डिवीजनल

---

१. यह युद्ध १९३९-४० की सर्दियों में हुआ था और इससे लाल सेना की तैयारी के अभाव की भयंकर जानकारी मिली थी। इसके परिणामस्वरूप स्तालिन के शासन के प्रति अनेक लोगों का मोह भंग हो गया था। (अनुवादक की टिप्पणी)

कमांडर जर्मनी और जापान के जासूस बन गए और वे इस बात पर विश्वास कर लेता है। "लेनिन के सबके सब पुराने सहयोगी दुष्टतापूर्ण प्रतिगामी दर्शाये गये और वह इस बात पर विश्वास कर लेता है। स्वयं उसके मित्रों और परिचितों को जनता के शत्रु के रूप में बेनकाब किया जाता है और वह विश्वास कर लेता है! पता चलता है कि लाखों रूसी सैनिकों ने अपने देश के साथ विश्वासघात किया और वह विश्वास कर लेता है: समस्त जातियां, वृद्ध पुरुष और मासूम बच्चे मशीनगनों से भून दिये जाते हैं और वह विश्वास कर लेता है! तो वह कैसा आदमी है? क्या मैं पूछ सकता हूं? वह गधा है। लेकिन क्या एक पूरा राष्ट्र केवल गधों का हो सकता है? नहीं यह नहीं हो सकता। इसके लिये आप मुझे क्षमा करेंगे। लोग पर्याप्त समझदार हैं। बस बात केवल इतनी थी कि वे जीवित रहना चाहते थे। बड़े राष्ट्रों का एक कानून है—बर्दाश्त करो और इस प्रकार जीवित रहो। जब हम में से प्रत्येक व्यक्ति मरता है और इतिहास उसकी कब्र पर खड़ा होकर पूछता है, वह कौन था?" तब केवल एक उत्तर ही सम्भव होगा, पुष्किन का।

हमारे बुरे जमाने में,
आदमी था अपने स्वभाव के अनुरूप,
वह अत्याचारी था अथवा देशद्रोही अथवा कैदी।"

ओलेग अचम्भे में आ गया। वह इन पंक्तियों से परिचित नहीं था। लेकिन इन पंक्तियों में वेधक सूक्ष्मता थी। कवि और सत्य प्रायः एकाकार हो उठे थे।

शुलुबिन ने अपनी बड़ी अंगुली उसकी ओर हिलाते हुए कहा। "कवि के पास अपनी इस पंक्ति में 'गधे' के लिए कोई स्थान नहीं था। यद्यपि वह जानता था कि संसार में गधे होते ही हैं। नहीं, यथार्थ यह है कि केवल तीन संभावनाएं हैं और क्योंकि मुझे यह स्मरण है कि मैं कभी भी जेल नहीं गया और क्योंकि मैं यह भी निश्चयपूर्वक जानता हूं कि मैं कभी भी अत्याचारी नहीं रहा। तो इसका अर्थ होगा··· शुलुबिन मुस्कराया और फिर खांसने लगा, इसका यही अर्थ होगा···

खांसते समय वह अपनी जांघों के बल आगे-पीछे झूल रहा था।

"तो क्या तुम समझते हो कि ऐसा जीवन तुम्हारे जीवन से आसान था, बेहतर था? अपने समस्त जीवन भर मैं भयभीत रहा, लेकिन अब मैं तुम्हारे से अपना स्थान बदलने को तैयार हूं।"

शुलुबिन की तरह ही कोस्तोग्लोतोव भी उस सकरी बेंच पर बैठा हुआ आगे पीछे को हिलता हुआ झूल रहा था। मानो कोई बड़ी कलगीदार चिड़िया किसी पेड़ की शाखा पर बैठी हुई झूल रही हो।

उनकी टांगें उनके नीचे पीछे की ओर मुड़ी हुई थीं और उनकी तिरछी

काली छायाएं उनके सामने जमीन पर स्पष्ट दिखाई पड़ रही थीं।

"नहीं, अलेक्सेई फिलपोविच, तुम्हारा कहना गलत है। यह बेहद व्यापक भर्त्सना है, यह बहुत कठोर है। मेरे विचार में देशद्रोही वे थे, जिन्होंने लोगों के ऊपर झूठे अभियोग लगाये अथवा जिन्होंने झूठी गवाहियां दीं। ऐसे लोगों की संख्या भी लाखों में है। दो या तीन कैदियों के पीछे एक मुखबिर की मौजूदगी का अनुमान लगाया जा सकता है। इसका अर्थ यह होता है कि इनकी संख्या लाखों में थी लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही करार कर देना बहुत कठोर और बिना सोचे समझे दिया गया निर्णय है। पुष्किन ने भी बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग किया, बहुत कठोर निर्णय दिया। तूफान पेड़ों को तोड़ डालता है पर घास को केवल झुका पाने में ही कामयाब होता है क्या यह अर्थ है कि घास ने पेड़ों के साथ विश्वासघात किया ? प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन होता है। जैसाकि तुमने स्वयं कहा है कि राष्ट्र का नियम अपना अस्तित्व बनाए रखना होता है।

शुलुबिन ने अपने चेहरे को सिकोड़ा और वह इस सीमा तक अपने चेहरे को सिकोड़ता गया कि उसकी आंखें नदारद हो गई और उसके मुंह की एक हल्की रेखा ही शेष रह गई। एक क्षण पहले ही उसकी बड़ी-बड़ी गोल-गोल आंखें वहां मौजूद थीं और दूसरे ही क्षण वे गायब हो गई थीं और चकत्तेदार, निर्जीव-सी त्वचा शेष रह गई थी।

उसने अपने चेहरे को ढीला छोड़ दिया। उसकी आंखों के बीच का हिस्सा तम्बाकू के गहरे कत्थई रंग का था और पुतलियों का सफेद भाग उसी प्रकार लाल था। लेकिन अब उसकी नजर भी धुंधली पड़ गई थी। वह बोला, "ठीक है तो हम इसे समुदाय में सुरक्षा ढूंढने की भावना जैसे बेहतर शब्द से सम्बोधित कर सकते हैं। इसे अलग-थलग पड़ जाने वाले समुदाय से बाहर रह जाने के भय की संज्ञा दे सकते हैं। इसमें कोई नई बात नहीं है। १६वीं शताब्दी में ही फ्रांसिस बेकन ने अपने मूर्तियों के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। उसने कहा था कि लोग शुद्ध अनुभव के आधार पर जीवित नहीं रहना चाहते, कि उनके लिए अनुभव को पूर्वाग्रहों से दूषित करना आसान होता है। ये पूर्वाग्रह ही मूर्तियां हैं। "एक जाति की मूर्तियां," बेकन ने उनके बारे में कहा था, "गुफा की मूर्तियां..."

जब उसने, "गुफा की मूर्तियां" कहा तो ओलेग के मन में एक वास्तविक गुफा का चित्र आ गया जो धुएं से भरी थी, जिसके बीच में आग जल रही थी, जंगली आदमी गोश्त भून रहे थे जबकि गुफा की गहराई में प्रायः अलक्षित ही, एक नीले से रंग की मूर्ति खड़ी थी।"

"ये...नाट्यशाला की मूर्तियां...यह मूर्ति कहां मिलेगी ? बीथी में ? पर्दों के ऊपर ? नहीं संभवतः अधिक उपयुक्त स्थान नाट्यशाला के बाहर

के चौक में, सामने के बगीचे के बीच में होगा।

"नाट्यशाला की मूर्तियां क्या हैं ?"

"नाट्यशाला की मूर्तियां दूसरे लोगों के वे अधिकारिक विचार हैं, जिन्हें एक आदमी उस समय अपने मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करना चाहता है जब वह ऐसी किसी बात की व्याख्या करता है, जिसका उसने स्वयं अनुभव नहीं किया।"

"ओह, लेकिन यह अक्सर होता है।"

"लेकिन कभी-कभी यह भी होता है कि वस्तुतः उसने इसका अनुभव किया हो, केवल विश्वास न करना उसने जो कुछ देखा हो उस पर विश्वास न करना कभी-कभी अधिक सुविधाजनक होता है।"

"मैंने ऐसे मामले भी देखे हैं..."

"नाट्यशाला की एक और मूर्ति विज्ञान के तर्कों के साथ सहमत हो जाने की हमारी आवश्यकता से अधिक तत्परता है। इसे हम संक्षेप में दूसरे लोगों की गलतियों को स्वेच्छा से स्वीकार करना कह सकते हैं।"

"यह सही है," ओलेग बोला, उसे यह विचार बहुत पसन्द आया। "दूसरे लोगों की गलतियों को स्वेच्छा से स्वीकार करना। बात यही है।"

"अन्त में बाजार की मूर्तियां होती हैं।"

इसकी कल्पना करना सबसे आसान था : किसी बाजार के चौक में भीड़ के ऊपर खड़ी अलाबास्टर की एक विशाल मूर्ति।

"बाजार की मूर्तियां वे गलतियां हैं, जो मनुष्य के एक-दूसरे से सम्पर्क और सम्बन्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं। ये ऐसी गलतियां हैं, जिन्हें व्यक्ति इसलिए करता है क्योंकि एक खास शब्दावली, एक खास लहजे का इस्तेमाल करने का रिवाज हो गया है यद्यपि यह शब्दावली, ये बातें तर्क और औचित्य का हनन करती हैं, उदाहरण के लिए "जनता का शत्रु।" "यह हम में से नहीं!" "देशद्रोही!" किसी भी व्यक्ति को इनमें से किसी एक नाम से पुकारो और हर आदमी उसकी भर्त्सना करने लगेगा।"

शुलुबिन ने इनमें से प्रत्येक वाक्यांश को जोर देकर उच्चारित किया और पहले अपना एक हाथ और फिर दूसरा हाथ भी ऊपर उठा लिया। अब वह फिर एक ऐसा विशालकाय पक्षी दिखाई पड़ रहा था, जिसके पर काट दिए गये हों और जो उड़ने का निष्फल, भद्दा प्रयास कर रहा हो।

वसन्त ऋतु में धूप में जितनी तेजी होनी चाहिए उससे भी अधिक तेजी थी और यह उनकी पीठ जलाये डाल रही थी। पेड़ों की शाखायें अभी तक तानाबाना नहीं बुन पाई थीं। प्रत्येक शाखा अभी भी अपनी हरियाली लिये अलग-थलग खड़ी थी और उनसे किसी को साया नहीं मिल रहा था। दक्षिणी सूर्य ने अभी आकाश को अपनी प्रखरता से पीला नहीं कर डाला था। दिन के

समय आने वाले बादल के छोटे-छोटे सफेद टुकड़ों के बीच अभी भी इसकी नीलिमा बनी हुई थी। शुलुबिन ने यह नहीं देखा था अथवा उसने जो कुछ देखा उस पर विश्वास नहीं कर रहा था। उसने एक अंगुली अपने सिर के ऊपर उठाई और उसे हिलाते हुए बोला : "और समस्त मूर्तियों के ऊपर भय का आकाश है, सुरमई रंग के बादलों से भरा भय का आकाश। तुम जानते ही हो कि किसी-किसी शाम को भारी और नीचे तक झुके हुए बादल इकट्ठा हो जाते हैं, काले और सुरमई रंग के बादल यद्यपि तूफान की आशंका नहीं होती। अन्धकार और उदासी अपने उस समय से पहले ही सामने आ खड़े होते हैं। सारा संसार आपको अस्थिर कर डालता है और आपके मन में बस यही विचार आता है कि ईंटों के किसी मकान की छत के नीचे जाकर अपने आपको छिपा लें और अंगीठी के पास अपने परिवार के लोगों सहित छिप कर बैठे रहे। मैं २५ वर्ष तक एक ऐसे ही आकाश के नीचे रहा हूं। मैं अपने आपको केवल इस लिए बचा सका क्योंकि मैं झुक गया और मैंने अपनी जबान पर ताला लगाये रखा। मैंने २५ वर्ष तक अपना मुंह बन्द रखा—और हो सकता है यह अवधि अट्ठाइस वर्ष हो, तुम खुद ही गिन लो। पहले मैंने अपनी पत्नी के लिए जबान पर ताला लगाये रखा और फिर अपने बच्चों के लिए और फिर स्वयं अपने इस पापमय शरीर की रक्षा के लिए। लेकिन मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई और मेरा शरीर मल से भरा एक थैला भर है। वे इसमें एक ओर छेद करने भी जा रहे हैं। और मेरे बच्चे इतने अधिक निर्मम हो गए हैं कि यह बस कल्पना से बाहर की बात है। और जब अचानक मेरी लड़की ने मुझे पत्र लिखने शुरू कर दिये—पिछले दो वर्षों में उसने तीन पत्र भेजे, यहां नहीं, घर के पते पर—तो यह पता चला कि ये पत्र इसलिए लिखे गए क्योंकि उसके पार्टी संगठन ने यह मांग की थी कि वह अपने पिता से सम्बन्धों को सामान्य बनाये, तुम्हारी समझ में यह बात आई ? लेकिन उन्होंने यह अनुरोध मेरे पुत्र से नहीं किया..."

शुलुबिन ओलेग की ओर मुड़ा और अपनी घनी भवें तरेरीं। उसका शरीर उसकी वेशभूषा पूरी तरह अव्यवस्थित थे। ओलेग को अचानक लगा कि वह उसे पहचान गया है। वह जलपरी (मर्मेड)[1] का पागल चक्की वाला है ! "मैं", मैं चक्की वाला ? मैं चक्की वाला नहीं हूँ, मैं तो एक काला कौआ हूँ!"

"मुझे और कुछ याद नहीं है। हो सकता है कि मैंने केवल इन बच्चों का सपना ही देखा हो। हो सकता है कि यथार्थ में उनका कभी भी अस्तित्व न रहा हो !...मेरी बात सुनो क्या तुम समझते हो कि एक आदमी एक लकड़ी का लट्ठा बन सकता है ? एक लकड़ी के लट्ठे को इस बात की चिन्ता

---

१. दागो माइझक्की का रूसी भाषा में लिखित गीति नाट्य जिसका अक्सर प्रदर्शन होता था। (अनुवादक की टिप्पणी)

नहीं होती कि वह अकेला अलग-थलग पड़ा है अथवा दूसरे लट्ठों के ढेर के साथ जिस तरह मैं रहता हूं, यदि मेरी चेतना समाप्त हो जाये, मैं फर्श पर गिर कर दम तोड़ दूं तो अनेक दिनों तक किसी को भी इस बात का पता नहीं चलेगा, मेरे पड़ोसियों तक को भी नहीं। लेकिन सुनो!" उसने ओलेग का कन्धा कस कर पकड़ लिया मानो वह उस आशंका से भयभीत हो कि ओलेग उसकी बात नहीं सुनेगा। "मैं आज भी उसी तरह सतर्क रहता हूं, जैसे पहले रहता था, मैं अभी भी अपनी पीठ के पीछे मुड़-मुड़ कर देखता रहता हूँ। मैं जानता हूँ कि वार्ड में मैंने कुछ बातें कहीं थीं। लेकिन मैं ऐसी कोई बात कोकन्द में अथवा अपने काम की जगह कहने का साहस नहीं कर सकता। जहां तक उन बातों का सम्बन्ध है, जिन्हें अब तुमसे कह रहा हूँ इसका एक मात्र कारण यह है कि क्योंकि वे उस छोटी पहियेदार मेज को तैयार कर रहे हैं जिस पर लेटा कर मुझे आपरेशन के लिए ले जाया जायेगा। आज भी मैं ये बातें न कहता यदि कोई तीसरा व्यक्ति मौजूद होता। नहीं, कभी नहीं! स्थिति यही है। इन लोगों ने मुझे असहाय बना दिया है!…मैंने कृषि अकादमी से डिग्री ली। इसके बाद ऐतिहासिक और द्वन्द्वात्मक भौतिकतावाद का उच्च अध्ययन किया। मैं कई विषयों का विश्वविद्यालय में व्याख्याता रहा और वह भी मास्को में लेकिन तभी बड़े-बड़े स्तम्भ गिरने लगे। कृषि अकादमी में मुरातोव का पतन हुआ, दर्जनों की तादाद में प्रोफेसरों को गिरफ्तार किया जा रहा था। हम लोगों से यह अपेक्षा की जा रही थी कि हम लोग अपनी गलतियों की स्वीकारोक्ति करेंगे। मैंने स्वीकारोक्ति की। हमसे यह आशा की जाती थी कि हम उनकी निन्दा करेंगे। मैंने निन्दा की! कुछ लोग जीवित रहने में सफल रहे, क्यों सफल रहे न? मैं इन कुछ लोगों में था। मैंने शुद्ध जीव विज्ञान के अध्ययन का आश्रय लिया मैंने अपने लिये एक शान्त और सुरक्षित आश्रय स्थल ढूंढ निकाला लेकिन तभी वहां भी शुद्धि अभियान चालू हो गया और यह शुद्धि अभियान था भी कैसा? जीव विज्ञान विभाग के प्रोफेसरों का तो मानो झाड़ू लगाकर ही सफाया कर दिया गया हो हमसे लैक्चर न देने की आशा की जाती थी। ठीक है मैंने लैक्चर देना छोड़ दिया मैं और पीछे हटा, एक साहब बन गया, मैं एक छोटा आदमी बनने के लिए सहमत हो गया।"

वह वार्ड में इतना अधिक मौन रहता था और अब इस असाधारण सहजता से बोल रहा था। उसके मुंह से शब्दों की इस प्रकार बौछार हो रही थी मानो सार्वजनिक भाषण करना उसका दैनिक व्यवसाय हो।

"वे लोग महान वैज्ञानिकों की लिखी हुई पाठ्य पुस्तकों को नष्ट कर रहे थे वे लोग पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर रहे थे। ठीक है मैं उस पर भी सहमत हो गया। हम लोग पढ़ाने के लिए नई किताबों का इस्तेमाल करेंगे। उन लोगों ने सुझाव दिया कि हम शरीर रचना विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान

और मस्तिष्क रोग निदान विज्ञान में इस प्रकार परिवर्तन करें ताकि ये एक अज्ञानी कृषि विज्ञानी और एक कुशल बागवानी विशेषज्ञ के सिद्धान्तों से पूरी तरह मेल खा जायें।[1] शाबाश ! मैं सहमत हो गया ! मैंने इसके पक्ष में अपना मत दिया।" "नहीं, यह पर्याप्त नहीं है। क्या आप मेरहबानी करके अपना सहायक का पद भी छोड़ देंगे।" "ठीक है मैं तर्क नहीं करता। मैं स्कूलों में जीव विज्ञान पढ़ाने के तरीकों के सम्बन्ध में काम करूंगा।" लेकिन नहीं, इस बलिदान को स्वीकार नहीं किया गया। मुझे इस काम से भी बर्खास्त कर दिया गया। "ठीक है, मैं सहमत होता हूँ। एक पुस्तकालयाध्यक्ष बन जाऊंगा, सुदूर कोकन्द में एक पुस्तकालयाध्यक्ष।" मैं बहुत-बहुत पीछे हटा। मैं आज भी जीवित हूँ और मेरे बच्चे विश्वविद्यालय से डिग्रियां प्राप्त कर सके। तभी पुस्तकालयाध्यक्षों को अधिकारियों से गुप्त निर्देश मिलते हैं। इस अथवा उस लेखक की पुस्तकों को नष्ट कर डालने के निर्देश ठीक है यह हमारे लिए कोई नई बात नहीं थी। क्या मैंने २५ वर्ष पहले द्वन्द्वात्मकता भौतिकवाद के प्रोफेसर की कुर्सी से भाषण करते हुए यह घोषणा नहीं की थी कि सापेक्षता सिद्धान्त क्रान्ति विरोधी और पुरातनपंथी है ? अत: मैं एक दस्तावेज़ तैयार करता हूँ, मेरे पार्टी संगठन का सचिव और विशेष शाखा का प्रतिनिधि इस पर हस्ताक्षर करता है और हम पुस्तकों को चूल्हे में झोंक देते हैं। आपका समस्त प्रजनन विज्ञान, वामपंथी सौन्दर्य शास्त्र, नैतिक शास्त्र, गणित,...सब चूल्हे में झोंक दिया जाता है।"

वह अभी भी हंस पा रहा था, वह पागल कौआ !

"सड़कों पर इन पुस्तकों की होली क्यों जलाई जाये ? निरर्थक नाटकीयता। हमें यह काम किसी शान्त कोने में करना चाहिए, हमें पुस्तकों को चूल्हें में झोंक देना चाहिए। यह चूल्हा हमें गरम बनाये रखेगा। मुझे चूल्हे के ऊपर ही धकेल दिया गया था, मुझे धकेल कर चूल्हे तक पहुंचा दिया गया था...और इसके बावजूद मैं अपने परिवार का लालन-पालन कर सका और मेरी लड़की एक प्रान्तीय समाचारपत्र की सम्पादिका है। उसने एक छोटी कविता लिखी है—

---

१. 'अज्ञानी कृषि विज्ञानी' से उसका अभिप्राय त्रोफिम लाइसेंको से है। लाइसेंको वह वैज्ञानिक है जो १९६४ में ख्रुश्चेव के पतन पर सोवियत जीव विज्ञान पर पूरी तरह छाया रहा और जिसने सुरक्षा पुलिस से शिकायत कर, झूठे अभियोग लगाकर अपने अनेक विरोधियों को समाप्त किया। 'बागवानी विशेषज्ञ' आइविन मिचुरिन है, जो फलों के वृक्षों की नई किस्में तैयार करने का विशेषज्ञ है और जिसके नाम का लाइसेंको ने दुरुपयोग किया। (अनुवादक की टिप्पणी)

नहीं, मैं पीछे नहीं हटना चाहती !
क्षमा याचना भी मेरे लिये सम्भव नहीं है,
यदि हमें लड़ना है, तो हम लड़ते हैं !
जहां तक मेरे पिता का सवाल है—
वह मेज के नीचे हैं !"

उसका ड्रेसिंग गाउन दो असहाय पंखों की तरह झूल रहा था।

"हां—हां···, मैं सहमत हूँ।" कोस्तोग्लोतोव बस इतना ही कह सका। "तुम्हारा जीवन भी मुझसे अधिक आसान नहीं रहा।"

"यह सही है," जोर-जोर से सांस लेता हुआ शुलुबिन बोला। वह कुछ और आराम से बैठा और फिर अधिक शांति से बोलने लगा। "मुझे अचरज होता है कि इतिहास के बदलते हुए इन युगों की क्या पहेली है ? केवल दस वर्ष की अवधि में ही एक समस्त जाति अपना सामाजिक आवेग और साहस का भाव खो बैठती है अथवा यह कहा जा सकता है कि यह भाव सकारात्मक से बदलकर नकारात्मक हो जाता है। यह वीरता से बदल कर कायरता बन जाता है। तुम्हें मालूम है मैं सन् १९१७ से बोलशेविक हूँ। मुझे याद है कि हम ने ताम्बोव में किस प्रकार धावा बोलकर समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी और मेनशेविक पार्टी की स्थानीय परिषद् को भंगकर दिया था। यद्यपि हमारे पास जो हथियार थे वे केवल दो अंगुलियां भर थीं, जिन्हें हम अपने मुंह में डाल कर सीटी बजा सकते थे। मैं गृहयुद्ध में लड़ा हूँ। तुम जानते ही हो कि हमने अपने जीवन को बचाने के लिये कुछ नहीं किया। हम लोग विश्व क्रांति के लिये सहर्ष अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार थे। फिर हमें न जाने क्या हो गया ? हम किस प्रकार इस तरह घुटने टेक सके ? वह प्रमुख बात क्या थी, जिसने हमें झुका दिया ?

"भय ? बाजार की मूर्तियां ? नाट्यशाला की मूर्तियां ? ठीक है। मैं एक छोटा आदमी हूं। लेकिन नादएझदा कोन्स्तातीनोवना क्रुप्सकाया के बारे में आप क्या कहेंगे।[1] क्या उसकी समझ में यह बात नहीं आई। क्या उसने यह अनुभव नहीं किया कि चारों ओर क्या हो रहा है ? उसने अपनी आवाज क्यों नहीं उठाई। उसका केवल एक वक्तव्य हमारे लिए क्या मायने रखता है। चाहे इसकी कीमत उसे अपने प्राणों से ही क्यों न चुकानी पड़ती, कौन जानता है, हम बदल जाते, हम डट कर खड़े हो जाते और स्थिति को और अधिक न बिगड़ने देते। इतना ही नहीं आप ओर्दझोनिकदझे के बारे में क्या कहेंगे।[2] वह सच्चा मर्द था,

---

१. लेनिन की विधवा।

२. एक पुराना बोलशेविक, जिसके ऊपर ३० के दशक में सोवियत संघ में उद्योगीकरण का भार था। उसने १९३७ में आत्महत्या कर ली थी। (अनु० की टिप्पणियां)।

क्या नहीं था, वे लोग उसे शूलेसवर्ग के किले में बन्द कर अथवा कठोर परिश्रम के लिये साइबेरिया में भेज कर नहीं झुका सके। पर ऐसा व्यक्ति एक बार भी स्तालिन के खिलाफ आवाज़ क्यों नहीं उठा सका ? उसे क्या बात रोके रही ? लेकिन नहीं, उन लोगों ने रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मरना अथवा आत्महत्या करना ही पसन्द किया। क्या यह साहस है ? क्या आप मुझे बतायेंगे क्या आप मेहरबानी करके मुझे बतायेंगे ?"

"मैं आपको कैसे बता सकता हूँ ? अलेग्सेई फिलपोविच। मैं कैसे बता पाऊंगा ? आप ही मुझे समझायें।"

शुलुविन ने आह भरी और बेंच के ऊपर जरा-सा रुख बदलने की कोशिश की लेकिन वह चाहे किसी भी तरीके से क्यों न बैठता उसे तकलीफ होती ही थी।

"अन्य किसी बात में मुझे दिलचस्पी नहीं है। तुम अपना ही मामला लो। तुम्हारा जन्म क्रांति के बाद हुआ लेकिन उन्होंने तुम्हें जेल में डाल दिया। और क्या समाजवाद में तुम्हारा विश्वास समाप्त हो गया है अथवा तुम अपना विश्वास खो बैठे हो ?"

कोस्तोग्लोतोव अस्पष्टता से मुस्कराया।

"मुझे नहीं मालूम। वहां स्थिति इतनी कठोर है कि आप कभी-कभी उससे भी आगे बढ़ जाते हैं जितना आगे आप बढ़ना चाहते हैं और यह काम आप क्रोध के वशीभूत होकर करते हैं।"

शुलुबिन ने अपना वह हाथ उठाया जिसका इस्तेमाल वह स्वयं को बेंच के ऊपर थामे रखने के लिए कर रहा था। इस हाथ से उसने जो रोग के कारण कमजोर पड़ गया था, ओलेग के कन्धे को दबोच लिया। "नौजवान," वह बोला, "कभी भी यह गलती न करना। कभी भी उन यातनाओं और उन क्रूर वर्षों के लिए जिन्हें तुमने भोगा है, समाजवाद को दोष न देना। चाहे तुम इसके बारे में कुछ भी क्यों न सोचो, एक बात निश्चित है कि इतिहास ने सदा सर्वदा के लिए पूंजीवाद को ठुकरा दिया है।"

"वहां, वहां शिविरों में, हम लोग यह तर्क किया करते थे कि निजी व्यापार में बहुत सी अच्छाईयां हैं। इससे जीवन आसान हो जाता है। आपको सदा चीजें मिलती रहती हैं। आपको पता होता है कि कौन चीज कहां मिलेगी।"

"यह तर्क का उचित तरीका नहीं है। यह सच है कि निजी व्यापार अत्यधिक लचकीला होता है। लेकिन बहुत सीमित रूप में ही यह अच्छा है। यदि निजी व्यवसाय को लोहे के शिकंजे में कस कर न रखा जाये तो यह ऐसे लोगों को जन्म देता है जो पशुओं से बेहतर नहीं होते। शेयर बाजारों में काम करने वाले इन लोगों का लालच किसी भी सीमा को किसी भी अंकुश को नहीं

मानता। पूंजीवाद बहुत समय पहले ही, आर्थिक दृष्टि से अभिशक्त होने से पहले नैतिक दृष्टि से अभिशक्त हो गया था।"

"ईमानदारी की बात तो यह है," ओलेग ने अपने माथे पर सलवटें डालते हुए कहा, "मैंने स्वयं अपने समाज में ऐसे लोगों को देखा है, जिनका लालच किसी सीमा को किसी अंकुश को नहीं मानता। और मेरा अभिप्राय राज्य से लाइसेंस प्राप्त कारीगर अथवा मिस्तरियों से नहीं है। उदाहरण के लिए ये मेलयान-साशिक को लीजिये..."

"यह सच है!" शुलुबिन बोला और उसका हाथ ओलेग के कन्धे पर निरन्तर और अधिक भार डाले जा रहा था। "लेकिन क्या इसके लिए समाजवाद को दोष दिया जा सकता है?" हम लोगों ने बहुत जल्दी ही उल्टी कूद लगाई है। हम लोगों ने सोचा कि उत्पादन के तरीके में परिवर्तन करना काफी है और लोग इसके साथ तुरन्त बदल जायेंगे। लेकिन क्या वे बदले? इन लोगों ने सर्वनाश किया। ये लोग किंचितमात्र भी नहीं बदले। मनुष्य जीव-विज्ञान की सीमाओं में बंधा है। उसे बदलने में हजारों वर्ष लगते हैं।

"तो क्या इस स्थिति में समाजवाद कायम हो सकता है?"

"क्या वास्तव में हो सकता है? यह एक पहेली है, क्यों नहीं है क्या? वे लोग "लोकतंत्री" समाजवाद की बात करते हैं। लेकिन यह केवल सतह की बात है, यह समाजवाद की जड़ तक नहीं पहुंच सकता। यह केवल उस स्वरूप का संकेत करता है जिसमें समाजवाद का समावेश होता है, समारम्भ होता है। उस राज्य के ढांचे से इसका अभिप्राय होता है जो इसे लागू करता है। यह केवल इस आशय की घोषणा है कि लोगों के सिर नहीं काटे जायेंगे। लकिन यह इस सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहता कि समाजवाद की स्थापना किस आधार पर होगी। आप भौतिक वस्तुओं की बहुतायत के आधार पर समाजवाद का निर्माण नहीं कर सकते क्योंकि कभी-कभी लोग भैंसों की तरह व्यवहार करते हैं। वे इन वस्तुओं को कुचल डालते हैं, इन्हें खूंद कर जमीन के भीतर पहुंचा देते हैं। और इसी प्रकार आप एक ऐसा समाजवाद भी कायम नहीं कर सकते जो सदा घृणा का ढोल बजाता है क्योंकि सामाजिक जीवन का निर्माण घृणा की नींव पर नहीं किया जा सकता। जब कोई व्यक्ति वर्षों तक घृणा की आग में जलता रहता है तो वह किसी एक दिन यह घोषणा नहीं कर सकता "बस यह पर्याप्त है! आज से मैं घृणा का त्याग कर रहा हूँ, आज से मैं केवल प्रेम ही करूंगा।" नहीं, यदि वह घृणा करने का अभ्यस्त हो चुका है तो वह घृणा करता रहेगा। वह अपने आस-पास कोई व्यक्ति ढूंढ निकालेगा, जिससे वह घृणा करेगा। क्या तुम हेरवेध की इस कविता से परिचित हो[1]?

---

१. जार्ज हेरवेध (१८१७-७५) जर्मन क्रांतिकारी कवि थे और एज समय कार्ल मार्क्स के मित्र भी थे। (अनुवादक की टिप्पणी)।

जब तक हमारा हाथ जल कर राख नहीं हो जाता,
यह तलवार की मूठ नहीं छोड़ेगा !

ओलेग ने आगे की पंक्तियां दोहराईं :

"हमने अरसे तक प्यार किया है;
अब, अन्त में, हम घृणा करना चाहते हैं।

हां मैं इसे जानता हूँ। हमने इसे स्कूल में याद किया था।"

"यह ठीक है, तुमने इसे स्कूल में याद किया था। यही बात इतनी भयकारी है। उन लोगों ने तुम्हें उस समय स्कूल में यह कविता याद कराई जब उन्हें इसके विपरीत तुम्हें यह याद कराना चाहिये था, जहन्नुम में जाये तुम्हारी घृणा, अब अन्त तक हम प्यार करना चाहते हैं। समाजवाद वस्तुतः यही होना चाहिये।"

"तुम्हारा अभिप्राय ईसाई समाजवाद से है, क्यों ?" ओलेग ने अनुमान लगाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"इसे "ईसाई" कह कर पुकारना बहुत आगे बढ़ जाना है। ऐसे समाजों में जो हिटलर और मुसोलनी के शासनकाल से छुटकारा पा सके हैं। ऐसी राजनीतिक पार्टियां हैं जो स्वयं को ईसाई समाजवादी कहती हैं। लेकिन मैं यह कल्पना नहीं कर पाता कि किन लोगों को साथ लेकर वे यह समाजवाद कायम करना चाहते हैं। पिछली शताब्दी के अन्त में तोलस्तोय ने व्यवहारिक ईसाइयत का किसी संस्था के माध्यम से करने का निश्चय किया था। लेकिन उनके समकालीनों के लिये उनके आदर्श ग्रहण कर पाना असम्भव सिद्ध हुआ। उनके उपदेशों का यथार्थ से कोई सम्बन्ध नहीं था। मैं कहना चाहूंगा कि विशेष कर रूस के लिए जहां हमारे पश्चाताप, स्वीकारोक्तियां और विद्रोहों की परम्परा है, जहां हमारे दोस्तोएवस्की, तोलसतोय और प्रोपोतकिन हैं केवल एक प्रकार का समाजवाद ही सच्चा समाजवाद हो सकता है और वह है नैतिक समाजवाद। यह बात पूरी तरह से यथार्थवादी है।"

कोस्तोग्लोतोव ने अपनी आंखें कुछ भींचीं। "लेकिन यह" नैतिक समाजवाद, हम इसकी परिकल्पना कैसे करेंगे। "यह कैसा होगा ?"

"इसकी कल्पना कर पाना बड़ा कठिन नहीं है," शुलुबिन बोला। अब उसकी आवाज़ फिर जीविन्त हो उठी थी और उसके चेहरे पर अंकित "चक्की वाले कौए" का अचरज भरा भाव अन्तर्धान हो गया था। यह प्रसन्नतापूर्ण जीवन्तता थी। स्पष्ट था कि वह कोस्तोग्लोतोव को अपने विचारों से सहमत करने के लिए उत्सुक है। वह बड़ी स्पष्टता से बोल रहा था। वह इस तरह बोल रहा था जैसे एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाता है। "हमें संसार के समक्ष एक ऐसे समाज को पेश करना चाहिए जिसमें सब सम्बन्ध, बुनियादी सिद्धांत और कानून नैतिकता पर ही प्रत्यक्ष रूप से आधारित होंगे

और नैतिकता ही इनकी एकमात्र आधार होगी। नैतिकता की मांगों को ही समस्त बातों का औचित्य निर्धारित करना होगा : बच्चों का लालन-पालन कैसे करें, उन्हें किस बात के लिये प्रशिक्षण दें, वयस्कों के कार्य की दिशा और लक्ष्य क्या होना चाहिये। और उनके अवकाश का समय किस प्रकार गुजारना चाहिए। जहां तक वैज्ञानिक अनुसंधान का सम्बन्ध है इसे वहीं किया जाना चाहिये, जहां इससे नैतिकता को क्षति न पहुँचती हो। सब से पहले जहां स्वयं शोधकर्ता को ही क्षति न पहुंचाता हो। यही बात विदेश नीति पर भी लागू होनी चाहिये। जब कभी सीमाओं का सवाल उठे, तब हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह अथवा वह कार्रवाई हमें कितना अधिक धनी अथवा शक्तिशाली बनायेगी अथवा इससे हमारा सम्मान कैसे बढ़ेगा। हमें केवल एक मानदण्ड को ही अपने समक्ष रखना चाहिये यह कहां तक नैतिक है ?"

"हां, लेकिन यह मुश्किल से ही सम्भव है। कम-से-कम अगले दो सौ वर्षों तक ?" कोस्तोग्लोतोव गुर्राया। "लेकिन ज़रा ठहरिये। मैं एक बात पर सहमत नहीं हूँ। आपकी इस योजना का भौतिक आधार कहां है ? आखिरकार एक अर्थव्यवस्था की आवश्यकता होगी, क्यों नहीं क्या ? यह बात अन्य सब बातों से पहले आती है।"

"क्या आती है ? यह कुछ अन्य बातों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए व्लादिमिर सोलोक्योव[1] बड़े आश्वासनदायक तरीके से तर्क देता है कि एक अर्थव्यवस्था का निर्माण आर्थिक आधार पर किया जा सकता है और किया जाना चाहिये।"

"वह क्या है ? नैतिकता पहले और अर्थशास्त्र बाद में ?" कोस्तोग्लोतोव आश्चर्यचकित दिखाई पड़ रहा था। "ठीक यही बात है ? सुनो, तुम एक रूसी हो, लेकिन मैं शर्त लगाता हूं कि तुमने व्लादिमिर सोलोक्योव की एक पंक्ति भी नहीं पढ़ी है, क्यों पढ़ी है क्या ?"

कोस्तोग्लोतोव ने 'नहीं' की मुद्रा में अपने होंठ सिकोड़े।

"ठीक है, कम से कम तुमने उसका नाम तो सुना है ?"

"हां, जब मैं भीतर था, शिविर में था।"

"तुमने कम से कम प्रोपोतकिन का एक आध पृष्ठ तो पढ़ा ही है ? उसकी 'मनुष्यों के बीच पारस्परिक सहायता' शीर्षक लेख ?

"कोस्तोग्लोतोव ने अपने होंठों को फिर उसी तरह बिचका दिया।

"ठीक है उसके विचार गलत हैं तो उसे क्यों पढ़ा जाये ? माइखेलोवस्की

---

१. एक रूसी धार्मिक विचारक (१८५३—१९००), जिसके विचार आज रूस के भीतर आधुनिक गैर-मार्क्सवादी विचारधारा को प्रभावित कर रहे हैं।

के बारे में तुम क्या कहोगे ?[1] नहीं, तुमने उसे भी नहीं पढ़ा है। उसका प्रतिवाद किया गया था। उसकी रचनाओं पर पाबन्दी लगाई गई थी और उसकी पुस्तकों को पुस्तकालयों से हटा लिया गया था।

"मैं ये पुस्तकें कब पढ़ सकता था ? मैं कौन-सी पुस्तकें पढ़ सकता था ?" कोस्तोग्लोतोव ने क्रोध से पूछा। "जीवन भर मैं खून पसीना एक करता रहा और फिर भी लोग मुझसे पूछते हैं क्या तुमने वह पढ़ा है क्या तुमने उसे पढ़ा ?" जब मैं सेना में था मेरे हाथ से फावड़ा एक क्षण को भी नहीं छूटता था। शिविरों में भी यही हाल था और मैं एक निष्कासित व्यक्ति हूँ तो भी यही हाल है। बस अन्तर केवल इतना है कि अब मेरे हाथ में हेंगी है। मुझे पढ़ने का समय कब मिला ?"

लेकिन शुलुबिन का चेहरा, अपनी गोल आंखों और घनी भवों सहित उस जानवर की उत्तेजना से चमक रहा था जो अपने शिकार को धर दबोचने की स्थिति में आ गया हो। "बस यही बात है।" वह बोला। "नैतिक समाजवाद यही है। हमें किसी को सुख की ओर भी मार्ग नहीं दिखाना चाहिये क्योंकि सुख भी बाजारकी एक मूर्ति भर है। उन्हें एक दूसरे से प्यार करने की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए। अपने शिकार को खाने वाला एक जानवर भी सुखी हो सकता है। लेकिन मनुष्य ही एक दूसरे के लिये स्नेह का अनुभव कर सकते हैं और उनके लिये यही महानतम उपलब्धि हो सकती है।"

"ओह नहीं, मैं सुख चाहता हूँ और मुझे तो बस सुख के लिये छोड़ दो," ओलेग ने जोर देते हुए कहा। "मृत्यु से पहले मेरे पास जो थोड़े-से महीने शेष हैं मुझे उनके लिये सुख दो। अन्यथा अन्य सब बातें जायें जहन्नुम में..."

"सुख मृगतृष्णा है।" शुलुबिन ने बड़े प्रभावशाली ढंग से अपनी सारी शक्ति लगाते हुए कहा। उसका चेहरा काफी पीला पड़ गया था। मैं "अपने बच्चों को पालते समय बड़ा खुश था लेकिन उन लोगों ने मेरी आत्मा पर ही थूक दिया। इस सुख को कायम रखने के लिये मैंने उन पुस्तकों को चूल्हे में झोंक दिया जो सच्चाई से भरी हुई थीं। जहाँतक 'भावी पीढ़ियों के' इस तथाकथित 'सुख' का सवाल है यह तो और भी बड़ी मृगतृष्णा है। इसके बारे में किसे क्या जानकारी है ? किसने इन भावी पीढ़ियों से बात की है ? कौन जानता है कि ये किन मूर्तियों की पूजा करेंगे ? विभिन्न युगों में सुख की धारणा अत्यधिक बदलती रही है। जब हमारे पास सफेद रोटी के इतने टुकड़े हो जायेंगे कि हम उन्हें अपने पांव तले कुचल सकें, जब हमारे पास

---

१. पापुलिस्ट समाजवाद का एक प्रमुख सिद्धांतकार (१८४०—१६०४)।

(अनुवादक की टिप्पणी)

आवश्यकता से अधिक दूध हो जायेगा तब भी हम जरा भी सुखी नहीं होंगे। लेकिन यदि हम हर चीज को बांटकर खाते हैं तो हमारे पास कुछ भी आवश्यकता से अधिक नहीं होता। हम आज सुखी हो सकते हैं। यदि हम केवल 'सुख' की ओर सन्तानोत्पत्ति की ही चिन्ता करते रहें तो हम इस पृथ्वी पर मनुष्यों की विवेकहीन भरमार कर डालेंगे और एक भयावह समाज का निर्माण करेंगे···तुम जानते ही हो, मेरी तबीयत अच्छी नहीं है···अब मुझे भीतर जाकर लेट जाना चाहिये···"

शुलुबिन का चेहरा लगातार पस्त दिखाई पड़ रहा था। ओलेग ने यह ध्यान नहीं दिया था कि उसका चेहरा कितना अधिक पीला, कितना अधिक मृतप्राय हो गया था।

"तो चलिये अलेकसेई फिलपोविच, चलिए। मैं आपकी बांह थामता हूँ।"

शुलुबिन जिस तरह बैठा था उस स्थिति से उठना उसके लिए आसान नहीं था। वे लोग बहुत धीरे-धीरे स्वयं को घसीटते हुए चलते रहे। उनके चारों ओर बसन्त ऋतु का हल्कापन छाया हुआ था। लेकिन गुरुत्वाकर्षण इन दोनों व्यक्तियों को नीचे की ओर खींच रहा था। उनकी हड्डियां, मांस का शेष भाग उनके कपड़े, उनके जूते, यहां तक कि धूप तक उनके ऊपर भार बनी हुई थी और उन्हें दबाये डाल रही थी।

वे चुपचाप चलते रहे। वे चुपचाप चलते रहे। वे बातचीत से ऊब चुके थे।

जब वे पोर्च की सीढ़ियों के पास पहुंचे और कैन्सर वार्ड के साये में खड़े हुए तो शुलुबिन फिर बोला। वह अभी भी ओलेग का सहारा लिये हुआ था। उसने पोपलार वृक्षों और स्वच्छ आकाश के टुकड़े को देखने के लिये अपना सिर ऊपर उठाया। वह बोला, "बस यही चाहता हूं कि आपरेशन के समय मेरी मृत्यु न हो। मैं भयभीत हूं···चाहे आपका जीवन कितना भी लम्बा क्यों न हो अथवा यह जीवन कितना भी दुखपूर्ण क्यों न हो तुम फिर भी जीवित रहना चाहते हो···"

वह लोग भीतर अस्पताल के गलियारे में चले गये। यह गरम था और इसकी हवा भी साफ नहीं थी। बहुत धीरे-धीरे एक-एक कदम बढ़ाते हुए उन्होंने सीढ़ियां चढ़नी शुरू कीं।

तभी ओलेग ने उससे पूछा, "मुझे यह बताइये कि उन २५ वर्षों में जब तुम अपना सिर झुकाये हुए थे और अपने विश्वासों का त्याग कर चुके थे तब भी यह बातें सोचते थे।"

शुलुबिन ने उत्तर दिया, उसकी आवाज भावनाहीन और निर्जीव-सी थी और यह अधिकाधिक क्षीण होती जा रही थी। "हां मैं सोचता था। मैंने

हर चीज़ का त्याग कर दिया। पर मैं सोचता रहा। मैंने सोचना जारी रखा। मैंने पुरानी पुस्तकों को चूल्हे में झोंक दिया और मैं सब बातों पर निरन्तर विचार करता रहा। क्यों नहीं? क्या मैंने इतने कष्टों और अपने आदेशों के साथ विश्वासघात कर कुछ सोचने का अधिकार प्राप्त नहीं किया था?"

११. सिक्के का दूसरा पहलू

दोन्तसोवा ने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि वह जिस वस्तु को इतनी अच्छी तरह जानती है, जिसका सूक्ष्मतम विवरण भी उससे छिपा नहीं है वही इस सीमा तक बदल जायेगी कि उसके लिये पूरी तरह नई और अपरिचित बन जायेगी। ३० वर्ष तक उसने दूसरे लोगों के रोगों की चिकित्सा की थी और कोई २० वर्ष का समय एक्स-रे मशीन की स्क्रीन के सामने बैठ कर बिताया था। उसने स्क्रीन का अध्ययन किया था। फिलम का अध्ययन किया था, मरीजों की विकृत और याचना भरी आंखों को देखा था, समझा था। उसने जो कुछ देखा उसकी तुलना पुस्तकों और अन्य विवरणों से की थी, लेख लिखे थे और सहयोगियों तथा रोगियों से तर्क किये थे। इस अवधि में उसने स्वयं अपने लिये बुनियादी तौर पर जो कुछ निष्कर्ष निकाला था वह अधिकाधिक विवाद के ऊपर उठ चुका था और उसके मस्तिष्क में चिकित्सा सम्बन्धी सिद्धान्त निरन्तर और स्पष्ट तथा सार्थक होते जा रहे थे। रोग के उद्भव का कारण, उसका विश्लेषण, लक्षण, निदान, रोग का क्रम, चिकित्सा, रोकथाम और परिणाम की कल्पना ये सब पर्याप्त वास्तविक थे। डाक्टर के मन में रोगी के प्रतिरोध, सन्देह और भय के प्रति सहानुभूति हो सकती है। ये समझे जाने योग्य मानवीय कमजोरी थीं। लेकिन उस समय इनका कोई महत्त्व नहीं होता था जब यह निर्णय लिया जाता कि चिकित्सा का कौन-सा तरीका अपनाया जाना चाहिए। तर्क के समक्ष ऐसी भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं था।

अब तक सब मनुष्यों के शरीर समान रूप से निर्मित थे। इनका विवरण शरीर रचना विज्ञान की मानक चित्रावलियों में होता है। शारीरिक प्रक्रिया और समवेदना की प्रक्रिया भी इसी प्रकार समान थीं। उस प्रत्येक बात को अधिकृत पुस्तकों में दी गई तार्किक शब्दावली के माध्यम से समझाया जा सकता था, जो सामान्य होती थीं अथवा सामान्य से अलग होती थीं।

तभी अचानक, कुछ ही दिनों के भीतर, स्वयं उसका शरीर इस महान्, व्यवस्थित प्रणाली से विमुख हो गया। यह सामान्य और मामूली बन गया और एक ऐसा असहाय थैला बन गया, जिसमें विभिन्न अंग भरे पड़े थे—वे अंग जो किसी भी क्षण पीड़ाग्रस्त हो सकते थे और दर्द के कारण

चिल्लाना शुरू कर सकते थे।

कुछ ही दिनों के भीतर हर बात उलटी हो गई थी। उसका शरीर, पहले ही की तरह उन अंगों से निर्मित था, जिनका उसे अच्छी तरह ज्ञान था। लेकिन समग्र रूप में यह अज्ञात और भयावह था।

जब उसका पुत्र छोटा था वह लोग एक साथ तस्वीरें देखा करते थे। वह घर की मामूली चीजों को—जैसे एक केतली, तक चम्मच या कुर्सी को उस समय नहीं पहचान पाता था। जब इन्हें किसी असामान्य कोण से बनाया जाता। उसके अपने रोग का क्रम और चिकित्सा प्रणाली में उसका नया स्थान भी अब उसके लिये इसी प्रकार अनजाने, बिन पहचाने बन गए थे। आज से वह चिकित्सा की तर्क सम्मत मार्गदर्शक शक्ति नहीं रह गई थी। वह अब तर्क न करने वाला, पदार्थ का प्रतिरोधक टुकड़ा भर रह गई थी। जिस क्षण उसने यह स्वीकार किया कि रोग मौजूद है, वह इसके भार के नीचे उसी प्रकार कुचल गई थी जैसे पांव तले दबा कोई मेंढक। स्वयं को रोग के अनुरूप ढालना पहले असह्य लगा। उसकी दुनिया उलट गई थी। उसके अस्तित्व की समस्त व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी। वह अभी तक मरी नहीं थी। लेकिन फिर भी उसे अपने पति, अपने पुत्र, अपनी पुत्री, अपने पोते और अपने चिकित्सा कार्य को त्याग देना था। यद्यपि यह उसका अपना काम था जो अब एक अत्यधिक शोर मचाती हुई रेलगाड़ी की तरह उसके ऊपर से गुजरेगा। एक ही दिन के भीतर उसे हर चीज़ त्यागनी पड़ी और पीड़ा भोगनी पड़ी। वह अब एक छाया भर रह गई थी, जिसे लम्बे अरसे तक यह जानकारी नहीं होगी कि उसे अनिवार्यतः मौत के मुंह में जाना है अथवा स्वस्थ होकर फिर सामान्य जीवन बिता सकती है।

एक बार उसे ऐसा लगा था कि उसके जीवन में रंगीनी, प्रसन्नता और खुशी का अभाव है—यह बस काम और चिन्ता, काम और चिन्ता से ही भरी है। लेकिन अब यह पुराना जीवन कितना अद्‌भुत लग रहा था। इससे अलग होना उसके लिए इतना अकल्पित था कि उसका मन करता कि वह ज़ोर-ज़ोर से चीखे, ज़ोर-ज़ोर से रोये।

पहले ही यह रविवार अन्य रविवारों से कितना अधिक भिन्न सिद्ध हुआ था—इस दिन उसे अगले दिन एक्स-रे से जांच के लिए अपनी आंतों को तैयार करना था।

सोमवार को सवा नौ बजे, जैसा कि तय हो चुका था, दोर्मीदोन्त तिखोनोविच, वेरा गैंगार्त और एक अन्य नए डाक्टर ने एक्सरे कक्ष की रोशनी बुझा दी और स्वयं को अन्धकार का अभ्यस्त बनाने लगे। लुदमिला अफानाएवना ने अपने कपड़े उतारे और एक्स-रे स्क्रीन के पीछे चली गई। एक अरदली ने उसे बेरियम के घोल का पहला गिलास दिया। गिलास थामते समय उसने

थोड़ा-सा घोल नीचे गिरा दिया। जो हाथ यह गिलास थामे हुए था मरीजों के पेट को ज़ोर-ज़ोर से दबाने का अभ्यस्त था। इसी कमरे में, रबर के दस्ताने के नीचे वह यह कार्य करता था लेकिन आज वही हाथ कांप रहा था।

उन लोगों ने सामान्य और परिचित कार्य किए। उसे छू कर देखा। उसे दबाया, उसे घुमाया, उसे अपनी बांहें ऊपर उठाने को और लम्बे-लम्बे सांस लेने को कहा। इसके बाद उन्होंने कैमरा नीचे उतारा, उसे मेज पर लेटा दिया और विभिन्न कोणों से उसके चित्र लिए। उन्हें बेरियम घोल को पाचन नाल में फैल जाने के लिए समय देना पड़ा। हां इस बीच एक्स-रे के यन्त्र को निरर्थक खड़ा नहीं रहने दिया गया। नई डाक्टर अपने और रोगियों का मुआइना कर रही थी। लुदमिला अफानासएवना उठकर बैठ तो गई और कई बार मदद करने की भी कोशिश की लेकिन वह अपने विचार केन्द्रित नहीं कर पा रही थी और उसका कोई खास उपयोग नहीं था। अब फिर स्क्रीन के पीछे जाने का समय आ गया। फिर बेरियम घोल पीने, मेज़ पर लेटने और चित्र लेने का समय आ गया।

यह अन्य जांचों की तरह ही एक जांच थी। बस यह सदा की तरह चुप्पी के वातावरण में नहीं हो रही थी। बीच-बीच में डाक्टर लोग आदेश देते जाते थे। ओरेश चेन्कोव अपने युवा सहायकों से हंसी मजाक कर रहे थे उनकी खिल्ली उड़ा रहे थे वे लुदमिला अफानासएवना और स्वयं अपनी ही मजाक उड़ा रहे थे। उन्होंने उन लोगों को बताया कि जब वे विद्यार्थी थे तब उन्हें किस प्रकार मास्को कला थियेटर से बुरे व्यवहार के कारण बाहर निकाल दिया गया था। उन दिनों मास्को कला थियेटर बना ही था। उस रोज अन्धकार की शक्ति[1] नाटक का पहला प्रदर्शन हो रहा था। आकिम अपनी नाक साफ कर रहा था और इतने यथार्थ ढंग से अपनी पट्टियां खोल रहा था कि दोर्मीदोन्त और उसके एक दोस्त ने सीटी बजानी शुरू कर दी। इसके बाद, उन्होंने बताया कि वे जब कभी भी मास्को कला थियेटर जाते तो उन्हें इसी बात का डर लगा रहता कि कहीं उन्हें फिर पहचान न लिया जाए और बाहर न निकाल दिया जाए। ये लोग मौन परीक्षण की घड़ियों के बीच के कष्टप्रद समय को आसान बनाने के लिए यथासम्भव बातचीत कर रहे थे। लेकिन दोन्तसोवा यह पहचान पा रही थी कि गैंगार्त का गला सूखा हुआ है और वह बड़े प्रयास से ही बोल पा रही है। वह उसे इतनी घनिष्ठता से जानती थी कि उसे उस बात पर कोई संदेह नहीं हो सकता था। लेकिन लुदमिला अफानास-एवना इसी तरह अपनी परीक्षा कराना चाहती थी। उसने बेरियम घोल पिया। अपना मुंह पोंछा और बोली, "नहीं मरीज को हर बात नहीं जाननी

---

१. कृषक जीवन के बारे में तोलसतोय का नाटक। (अनुवादक की टिप्पणी)

चाहिए। सदा मेरा यही विचार रहा है और आज भी है। जब आप लोग विचार करेंगे मैं कमरे से बाहर चली जाऊंगी।"

उन लोगों ने इस व्यवस्था को स्वीकार किया। जब कभी डाक्टर लोग परामर्श करना चाहते लुदमिला अफानासएवना बाहर चली जाती और एक्स-रे प्रयोगशालाओं के सहायकों का हाथ बंटाने की कोशिश करती अथवा मरीजों के रोगों का विवरण लिखने में मदद करने की कोशिश करती। बहुत से काम करने को थे। लेकिन आज उसे लग रहा था कि वह कोई भी काम पूरा नहीं कर सकती। वह जब कभी उसे भीतर बुलाते वह धड़कते हुए दिल से अंदर जाती और यह आशा करती रहती कि वे उसे कोई अच्छी खबर सुना कर बधाई देंगे। कि वेरोचका गैंगार्त उसे अपनी बांहों में भर लेगी और उसे बधाई देगी। लेकिन यह नहीं हुआ। केवल और निर्देश दिए गए। और अधिक घुमाया फिराया गया तथा और चित्र लिये गये।

लुदमिला अफानासएवना प्रत्येक नए आदेश का पालन करते समय स्वयं को सोचने से नहीं रोक पाती थी और ऐसे प्रत्येक आदेश का स्पष्टीकरण ढूंढ़ती थी। "मैं जानती हूं कि तुम क्या तलाश कर रहे हो, तुम्हारे इन तरीकों से मैं सब कुछ जान गई हूं।" उसने आखिर ये शब्द कह ही डाले।

जैसा कि वह अनुमान लगा पा रही थी उन्हें पेट अथवा ड्योडीनम की रसौली का नहीं बल्कि ओसोफेगस की रसौली का सन्देह था। वह सर्वाधिक कठिन प्रकार का रोग था क्योंकि इसके ऑपरेशन के लिए छाती की गुहा को आंशिक रूप से खोलना पड़ता है।

"सुनो, लुदोचका," ओरेश चेन्कोव ने अन्धकार को चीरती हुई ऊंची आवाज़ से कहा, "पहले तो तुम जल्दी-से-जल्दी निदान चाहती हो और तुम यह कहती हो कि तुम्हें हमारे तरीके पसन्द नहीं हैं। क्या तुम तीन महीने या इससे कुछ और ज्यादा समय तक इन्तजार करोगी। तब हम तुम्हें इसका निष्कर्ष स्पष्ट बता देंगे।"

"नहीं, धन्यवाद! मैं तीन महीने की प्रतीक्षा के बिना अपना काम चला सकती हूं?" उसने एक्स-रे की बड़ी और सबसे महत्त्वपूर्ण तस्वीर को भी देखने से इंकार कर दिया जो उन्हें दिन के अन्त में प्रयोगशाला से प्राप्त हुई थी। उसके निर्णायक मर्दाना तौर-तरीके समाप्त हो गये थे और बिजली के तेज़ प्रकाश में वह एक कुर्सी पर उत्साहहीन बैठी थी और ओरेश चेन्कोव के अंतिम शब्दों की प्रतीक्षा कर रही थी—उसे उसके शब्दों और निर्णय की प्रतीक्षा थी, उसके निदान की नहीं।

"अच्छा, सुनिए मेरी सम्मानित सहयोगी," ओरेश चेन्कोव ने बड़े कृपा भाव से शब्दों को घसीटते हुए कहा। "प्रमुख डाक्टरों की राय विभाजित है।"

यह कहते समय उनकी आंखें अपनी तीखी भवों के नीचे से बड़े गौर से

दोन्तसोवा के चेहरे पर नज़र लगाये हुई थीं। वे देख रहीं थीं कि वह कितनी उलझन में है। दृढ़ संकल्प वाली और न झुकने वाली दोन्तसोवा से यह अपेक्षा की जा सकती थी कि ऐसी परीक्षा की घड़ी में वह अधिक शक्ति का परिचय देगी। उसके अचानक इस प्रकार घुटने टेक देने से ओरेश चेन्कोव के इस मत को पुष्टि हुई कि आधुनिक व्यक्ति मौत का सामना होने पर असहाय हो जाता है, उसके पास मृत्यु का सामना करने के लिये कोई हथियार नहीं है।

"आप लोगों में से कौन सबसे बुरी स्थिति की कल्पना कर रहा है?" दोन्तसोवा ने मुस्कराने का प्रयास करते हुए कहा।

(मैं आशा करता हूं कि वह ओरेश चेन्कोव नहीं है!)

ओरेश चेन्कोव ने अपना सन्देह दर्शाने के लिए अपने एक हाथ की अंगुलियां फैलाईं। "तुम्हारी पुत्रियां सर्वाधिक बुरी स्थिति समझती हैं," वे बोले, "देखो तुमने इनका किस प्रकार लालन-पालन किया है? मैं अधिक आशावादी हूं।"

उनके होठों के कोने थोड़े से बक्र हुए, जो अच्छे स्वभाव और कृपा भावना का चिह्न था। गैंगार्त वहां बैठी थी। वह एकदम पीली पड़ गई थी मानो स्वयं उसके भाग्य का ही निबटारा हो रहा हो।

"अच्छा, धन्यवाद।" दोन्तसोवा ने कुछ बेहतर महसूस किया। "तो अब आगे क्या होगा?"

न जाने कितने रोगी एक मिनट की राहत के बाद इसी प्रकार उसका निर्णय सुनने के लिए बठे रहते थे? अनिवार्यतः निर्णय विज्ञान और आंकड़ों के आधार पर होता था। इस निष्कर्ष की दोहरी जांच की जाती थी और तार्किकता के आधार पर इस पर पहुँचा जाता था। वह सोच रही थी कि कितनी भयानक बातें इस राहत की घड़ी में छिपी होती हैं!

"बात यह है, लुदोचका," ओरेश चेन्कोव ने उसे आश्वस्त करने के तरीके से कहा, "यह एक अन्यायपूर्ण संसार है, यह बात तुम जानती ही हो। यदि तुम हमारे में से एक न होतीं तो हम तुम्हें कोई वैकल्पिक निदान सहित सर्जनों के हवाले कर देते। वे तुम्हारे शरीर का कोई हिस्सा काटते और शल्य-क्रिया की इस प्रक्रिया में कोई छोटा-मोटा टुकड़ा काट कर अलग फैंक देते। तुम जानती ही हो कि वे कैसे जीव हैं। पेट को काट कर खोलने के बाद वे उसमें से स्मरण चिह्न के रूप में कुछ-न-कुछ निकाले बिना नहीं मानते। वे आपको काट कर खोल देते हैं और तब यह प्रगट होता है कि हम में से कौन सही था। लेकिन आखिरकार तुम हम में से ही हो और हमारे मित्र लेनोचका और सेरयोझा मास्को की एक्सरे चिकित्सा संस्था में हैं। अतः हमने यही निश्चय किया है कि तुम वहां जाओ। ठीक है? हम तुम्हारे बारे में जो लिख

कर देंगे वे उसे पढ़ेंगे और तुम्हारी परीक्षा करेंगे इस प्रकार हमें और राय भी मिल जायेगी। इसके अलावा यदि आपरेशन की जरूरत भी हुई तो वे वहां बेहतर आपरेशन कर सकेंगे। वस्तुतः वहां हर काम बेहतर हो सकेगा, क्यों नहीं क्या ?"

उन्होंने कहा था, "यदि आपरेशन कराना ही पड़े।" क्या वह यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि शायद यह आवश्यक न हो ? अथवा उनका यह अभिप्राय था कि···नहीं यह बात इससे भी बुरी होनी चाहिये···

"आपका अभिप्राय है," दोन्तसोवा ने अनुमान लगाते हुए कहा, "कि आपरेशन इतना जटिल है कि आप उसे यहां करने का साहस नहीं कर पाते।"

"ओह, नहीं बिल्कुल नहीं," ओरेश चेन्कोव ने गुर्राते हुए और अपनी आवाज थोड़ी-सी ऊंची करते हुए कहा। "मैंने जो कुछ कहा है तुम्हें उसके पीछे कोई छिपा अर्थ नहीं ढूंढना चाहिए। हम लोग एक ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं···इसे क्या कहते हैं ?···तुम्हारे लिए कुछ अतिरिक्त 'सुविधा' की व्यवस्था कर रहे हैं। यदि तुम हमारा विश्वास नहीं करतीं—उन्होंने मेज की ओर इशारा करते हुए कहा—"वह फिलम उठा लो और स्वयं देख लो।"

यह बड़ी सीधी सादी बात थी, क्यों थी न ? उसे बस अपना हाथ बढ़ा कर यह फिलम उठाना भर थी और स्वयं अपना विश्लेषण करना था।

"नहीं, नहीं" दोन्तसोवा ने अपने और उस एक्स-रे प्लेट के बीच एक काल्पनिक रेखा खींचते हुए कहा। मैं उसे नहीं देखना चाहती।

और इस प्रकार यह निर्णय ले लिया गया। उन लोगों ने वरिष्ठ डाक्टर से बातचीत की और इसके बाद दोन्तसोवा गणराज्य के स्वास्थ्य मन्त्रालय में गई। यह बड़ी विचित्र बात थी कि वहां कोई विलम्ब नहीं हुआ। उन्होंने उसे एक छुट्टी का पास दे दिया और मास्को के एक अस्पताल में भर्ती की परची भी। अचानक यह स्पष्ट हो गया था कि अब उसे उस नगर में और अधिक रखने का कोई कारण नहीं था, जहां उसने पिछले २० साल काम किया था।

दोन्तसोवा यह जानती थी अपना दर्द प्रत्येक व्यक्ति से छिपाते समय वह क्या कर रही है। बस आप एक-दूसरे व्यक्ति से कह दीजिए और फिर तूफान शुरू हो जाता है और कोई भी बात आपके बस में नहीं रहती।

जीवन के वह सम्बन्ध जो इतने सशक्त और स्थायी दिखाई पड़ते थे, अब ढीले और टूटते हुए मालूम पड़ रहे थे और यह कुछ दिनों में ही नहीं बल्कि कुछ घंटों की अवधि में ही हो गया।

अस्पताल और घर पर उसकी स्थिति विलक्षण थी और उसके अभाव को भरा नहीं जा सकता था। लेकिन अब उसके बिना काम चलाने की व्यवस्था हो रही थी।

हम इस पृथ्वी से इस कदर जुड़े होते हैं और फिर भी हम इसे पकड़े रहने में कितने असहाय होते हैं।

अब विलम्ब की कोई तुक नहीं थी। बुधवार को उसी सप्ताह उसने गैंगार्त के साथ वार्डों का अन्तिम चक्कर लगाया। वह एक्सरे चिकित्साविभाग का प्रशासन उसे सौंप रही थी।

राउंड सुबह के समय शुरू हुए और दोपहर के भोजन के समय तक चलते रहे। दोन्तसोवा ब्रेरोचका गैंगार्त पर भरोसा करती थी जिसे उसके समस्त रोगियों की जानकारी थी। लेकिन उन रोगियों के बिस्तरों के पास से गुजरते समय और यह जानते हुए भी कि वह कभी वापस लौट सकी तो कम-से-कम उसमें एक महीने का समय लगेगा। उसने कई दिनों में पहली बार अपने विचारों को स्पष्ट पाया और अपने भीतर कुछ अधिक शक्ति का अनुभव किया। काम में फिर उसकी दिलचस्पी वापस लौट आई और तर्क करने की उसकी क्षमता भी। सुबह उसका यह इरादा था कि वह अपने सब काम निपटायेगी और जिन अन्तिम कागजों पर हस्ताक्षर करना ज़रूरी होगा उन पर यथा सम्भव तेजी से हस्ताक्षर करेगी। उसके बाद घर वापस लौट जायेगी और यात्रा की तैयारी करेगी। लेकिन अब यह योजना बेकार हो गई थी। हर काम को अपने हाथ में लेने की वह इतनी अधिक आदी थी कि आज भी वह एक भी रोगी के बारे में अगले एक महीने की स्थिति की बात सोचे बिना वहां से नहीं चल सकी। उसे रोग के क्रम की पूर्व कल्पना करनी ही थी और यह भी बताना था कि क्या इलाज और आपत्कालीन कार्यों की आवश्यकता हो सकती है। वह प्राय: सदा की तरह वार्डों में घूमती रही। इससे उसे राहत के वे कुछ घंटे मिले जिनसे वह पिछले कुछ दिनों में वंचित रही थी।

वह अपने दुर्भाग्य की अभ्यस्त होती जा रही थी।

लेकिन फिर भी वार्डों से गुजरते समय उसे यह लग रहा था मानो एक डाक्टर के रूप में वह अपने अधिकारों से वंचित हो गई हो, मानो किसी अक्षम्य कार्य के कारण उसे अयोग्य घोषित कर दिया गया हो। सौभाग्यवश अभी तक इस बात की जानकारी रोगियों को नहीं दी गई थी। उसने रोगियों की जांच की, दवाइयां लिखीं और निर्देश दिये और प्रत्येक रोगी की ओर एक झूठे भविष्यवक्ता की तरह देखती रही, जबकि स्वयं वह भय से ग्रस्त थी। अब उसके पास अन्य लोगों के बारे में जीवन अथवा मृत्यु का निर्णय देने की सत्ता नहीं रह गई थी। कुछ ही दिनों के भीतर वह एक अस्पताल के बिस्तर पर पड़ी होगी। इन्हीं रोगियों की तरह असहाय और मूक, अपने बनाव सिंगार की उपेक्षा करते हुए, पीड़ा से भयभीत, सम्भवत: इस बात पर पश्चाताप करते हुए कि वह आखिर इस अस्पताल में भर्ती ही क्यों हुई। उसके मन में यह सन्देह भी जग सकता है कि वह उसका सही इलाज भी कर रहे हैं या नहीं।

और उसके मन में अस्पताल का पायजामा निकालकर शाम के समय उसी प्रकार अपने घर वापस लौट जाने की इच्छा भी जग सकती है, जिस प्रकार अधिकांश लोग अपने घरों को लौटते हैं मानों यही संसार का सबसे बड़ा सुख हो।

यह विचार उसे सता रहे थे और उसके सामान्य दृढ़ संकल्प को, उसके मनोबल को कमजोर बना रहे थे।

इस बीच वेरा कोर्निलएवना एक ऐसा हर्षहीन भार अपने ऊपर ले रही थी, जिसे वह इतनी बड़ी कीमत चुका कर लेने को तैयार नहीं थी। वस्तुतः वह किसी भी प्रकार यह भार नहीं चाहती थी।

वे उसे 'मां' कहकर पुकारते थे और वेरा के लिये यह कोई थोथा शब्द नहीं था। स्वयं वेरा ने ही तीनों डाक्टरों में से सब से बुरा निदान किया था उसे लगता था कि लुदमिला अफानासएवना को एक बहुत विस्तृत आपरेशन कराना होगा, जिसके दौरान उसके प्राण तक जाने की आशंका है, क्योंकि एक्सरे किरणों के हानिप्रद प्रभाव से उत्पन्न पुरानी बीमारी से वह पहले ही कमजोर हो चुकी थी। वार्डों में उसके साथ-साथ चलते उसे यह लग रहा था कि यह अन्तिम राउंड भी हो सकता है कि उसे हर रोज इन बिस्तरों के बीच घूमते हुए वर्षों का समय बिताना पड़ सकता है और उसे हर समय बड़े दुख से उस औरत की याद आती रहेगी, जिसने उसे डाक्टर बनाया था।

उसने आहिस्ता से एक अंगुली उठाई और अपना एक आंसू पोंछ दिया।

लेकिन आज पहले के समस्त दिनों की अपेक्षा वेरा के पूर्वानुमानों को अधिक सही होना था। अब वह एक भी महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने की उपेक्षा नहीं कर सकती थी क्योंकि आज के बाद से पहली बार इन लगभग पचास रोगियों के जीवन की जिम्मेदारी बिल्कुल उसके ऊपर होगी। अब ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा वह जिस का मुंह जोह सके अथवा जिससे सलाह मांग सके।

और इस प्रकार, उदास और चिंतित, डाक्टर आधे दिन तक राउंड लगाती रही। पहले वह स्त्रियों के वार्डों में गई और इसके बाद उन मरीजों को देखा जिनके बिस्तर सीढ़ियों के चौड़े हिस्से या बरामदे में लगे थे। जैसा कि स्वाभाविक था वे काफी समय तक सिबगातोव के पास ठहरी।

इन लोगों ने इस शान्त तातार का जीवन बचाने के लिये हर सम्भव प्रयास किया था और इसके बावजूद इन लोगों को बस अन्तिम क्षण को कुछ महीने टालने में ही सफलता मिली थी और ये महीने कितने कष्टप्रद थे—सीढ़ियों के कोने में अंधियारे में दयनीय रूप स जीवन यापना अब उसका सैक्रम (त्रिकास्थि) इस स्थिति में था कि वह खड़ा नहीं हो सकता था। वह अपनी दो सशक्त बांहो से अपनी पीठ थामकर ही सीधा खड़ा हो सकता था। उसका एकमात्र व्यायाम

बराबर के वार्ड में जाकर, किसी के पलंग पर बैठकर बातचीत सुनना था। दूर की एक खिड़की से जो हवा आती थी, बस वही हवा उसे किसी तरह मिल रही थी। उसका एकमात्र आकाश सीढ़ियों की छत थी।

लेकिन यह भयानक पीड़ादायक जीवन, जो चिकित्सा, अरदलियों के झगड़े, अस्पताल के भोजन और शतरंज के खेल और पीठ के भयानक घाव सहित उसकी पीड़ाग्रस्त आंखों के लिए पर्याप्त अच्छा था, जो डाक्टरों के प्रत्येक राउंड के समय उनके प्रति आभार से चमक उठती थीं।

इस बात से दोन्तसोवा ने यह अनुभव किया कि यदि वह स्वयं अपना मानदण्ड छोड़ दे और सिबगातोव का मानदण्ड अपना ले तो स्वयं को इस स्थिति में भी भाग्यशाली मान सकती है।

न जाने कैसे सिबगातोव ने पहले ही यह सुन लिया था कि यह लुदमिला अफानासएवना का यहां आखिरी दिन है।

वे दोनों एक-दूसरे की ओर मौन रहकर देखते रहे। वे पराजित लेकिन कट्टर सहयोगी थे, वे अच्छी तरह से जानते थे कि विजेता का चाबुक बहुत जल्दी ही उन्हें संसार के दो भिन्न कोनों पर पहुँचा देगा।

"तुम जानते हो, शराफ," दोन्तसोवा की आंखें कहती हुई लग रही थीं "मैंने हर सम्भव उपाय किया है। लेकिन अब मैं घायल हो गई हूं और मैं जल्दी ही नीचे गिर पड़ूंगी।"

"मैं यह जानता हूं, हां मां," तातार की आंखों ने उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति ने मुझे जन्म दिया, उसने भी आपसे अधिक मेरे लिए कुछ नहीं किया और एक मैं हूं, मैं आपको बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकता।"

अहमदजान के मामले में उन लोगों को जबर्दस्त सफलता मिली थी। उसके रोग की उपेक्षा नहीं हुई थी। उन लोगों ने एकदम सिद्धान्त के अनुसार हर कार्य किया था और परिणाम भी ठीक वैसा ही निकला था, जैसा निकलना चाहिए था। इन लोगों ने यह गणना की कि उसे कितना रेडियो विकिरण दिया जा चुका है और लुदमिला अफानासएवना ने घोषणा की, "हम तुम्हें छुट्टी दे रहे हैं।"

इन लोगों को उसे सुबह ही यह बता देना चाहिए था, ताकि वह मेट्रन से यह कह पाता और कपड़ों के गोदाम से उसकी वर्दी मंगाई जा सकती। फिर भी वह अपनी बैसाखियों के इस्तेमाल की परवाह न करते हुए मीता से मिलने सीढ़ियां उतर कर नीचे जा पहुँचा। आवश्यकता से अधिक एक भी रात यहां बिताने का विचार असह्य था। उसी रात उसके मित्र पुराने शहर में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

वादिम भी यह जानता था कि दोन्तसोवा विभाग का कार्यभार सौंपकर मास्को जा रही है। यह इस प्रकार हुआ। पिछली शाम उसकी मां का एक

तार आया था जो लुदमिला अफानासएवना और स्वयं उसके नाम भेजा गया था। इसमें कहा गया था कि रेडियो सक्रिय सोना अस्पताल को भेजा जा रहा है। वादिम तुरन्त लड़खड़ाता हुआ नीचे पहुंचा। दोन्तसोवा स्वास्थ्य मन्त्रालय गई हुई थी, लेकिन वेरा कोर्निलएवना ने यह तार पहले ही देख लिया था। उसने उसे बंधाई दी और वहीं अपने रेडियोलाजिस्ट इल्या राफाइलोवना से उसका परिचय कराया, जिसका काम यह होता कि एक्सरे चिकित्सा के कमरे में सोना पहुँचते ही इलाज शुरू कर देती। तभी दोन्तसोवा आई और उसने तार पढ़ा। वह बहुत पस्त और पराजित-सी दिखाई पड़ रही थी। फिर भी उसने वादिम को देखकर उत्साहवर्द्धक तरीके से मुस्कराने की कोशिश की।

पिछली रात वादिम खुशी से इतना अभिभूत था कि उसे नींद न आ सकी लेकिन सुबह होते-होते उसके मन में दूसरे विचार उठने लगे। न जाने सोना कब आएगा? यदि वे मम्मी को यह सोना दे देते, तो आज सुबह ही सोना यहां पहुंच सकता था। क्या इसमें तीन दिन लगेंगे या एक सप्ताह? वादिम ने डाक्टरों के पहुंचते ही यह सवाल पूछा। "इसमें कुछ दिन लगेंगे बस थोड़े से ही दिन," लुदमिला अफानासएवना ने उसे बताया। (लेकिन वह जानती थी कि 'दिन' कैसे होते हैं। उसे एक मामला याद आया, जब मास्को की एक संस्था ने कोई दवा रियाजन के एक अस्पताल को भेजने को कहा था। लेकिन इस दवा के साथ जो चिट्ठी भेजी गई, उस पर दफ्तर में काम करने वाली लड़की ने "कज्जाक" लिख दिया और पार्सल को अलमाअता[1] भेज दिया गया।)

अच्छा समाचार मनुष्य के लिए बहुत कुछ कर सकता है। वादिम की काली आंखें, जो इधर बेहद उदासी से भर गई थी, अब आशा से चमक रही थीं। आगे को निकले हुए वे होंठ, जिनके ऊपर अमिट धारियां पड़ी रहती थीं, अब फिर हमवार और युवा हो उठे थे। वादिम ने मूंछ दाढ़ी नहीं रख रखी थी। वह साफ-सुथरा, संयमी और विनम्र था। वह इस तरह चहक रहा था मानो यह उसका जन्मदिन हो और आंख खुलते ही उसने अपने चारों ओर जन्म दिन के उपहार रखे हुए पा लिए हों।

वह इतना उदास, इतना पस्त कैसे हो सकता था? उसने अपनी इच्छा शक्ति को पिछले दो सप्ताहों में इस तरह क्यों गिर जाने दिया? आखिरकार उसकी इच्छा शक्ति ही उसकी मुक्ति का माध्यम है, उसकी इच्छा शक्ति ही सब कुछ है और अब फिर दौड़ शुरू हो गई थी? केवल एक बात का महत्व था: सोने को तीन हजार किलोमीटर की दूरी को उससे अधिक तेजी से तय

---

१. कजाकिस्तान की राजधानी। कजाकिस्तान सोवियत संघ का एक गणराज्य है। (अनुवादक की टिप्पणी)

करना था, जितनी तेजी से दूसरे दौर की रसौलियां तीस सेंटीमीटर का फासला तय करने में लेंगी। इसके बाद सोना उसकी उस संधि को साफ कर देगा और उसके शेष शरीर की रक्षा करेगा। जहां तक टांग का सम्बन्ध था, ठीक है, उसकी कुरबानी देनी ही होगी, अथवा यह भी हो सकता है कि रेडियो सक्रिय सोना नीचे की ओर भी बढ़ जाए (आखिरकार विज्ञान विश्वास को पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकता) और उसकी टांग को भी पूरी तरह चंगा कर दे ?

आखिरकार, यह केवल तर्कसम्मत और उचित ही था कि बचने वालों में वह भी शामिल हो। मृत्यु को स्वीकार करना, काले बाघ को स्वयं को चीर डालने की, टुकड़े-टुकड़े कर डालने की अनुमति देना, मूर्खतापूर्ण, कमजोरी का लक्षण और पूरी तरह से अनुपयुक्त बात थी। अपनी प्रतिभा के कारण वह इस बात पर अधिकाधिक विश्वास करता जा रहा था कि उसका जीवन बच जायेगा, चाहे कुछ भी हो उसके प्राण बच जायेंगे। उसके भीतर जो खुशी का तूफान उठा हुआ था उसके कारण वह आधी रात तक सो न सका। वह शीशे के उस डिब्बे की कल्पना कर रहा था, जो अपने भीतर सोना संजोये आ रहा था। क्या यह डिब्बा माल के डिब्बे में रखा है ? क्या यह हवाई अड्डे जा रहा है ? क्या यह विमान पर पहुंचाया जा चुका है ? उसकी आंखें रात के अंधियारे से ग्रस्त तीन हजार किलोमीटर की दूरी पर लग गई और वह अपनी समस्त इच्छा शक्ति से उस सोने को जल्दी से जल्दी वहां खींच लाने का प्रयास करने लगा। वह अपनी सहायता के लिए देव दूतों तक को भी बुलाता, यदि देव दूतों का अस्तित्व होता।

लेकिन राउंड के दौरान वह डाक्टरों को बड़े सन्देह से देख रहा था कि वे क्या करते हैं। उन्होंने कोई भी बुरी बात नहीं कही। वस्तुतः वे अपने चेहरे से कुछ भी प्रकट न करने का हर सम्भव प्रयास कर रही थीं। लेकिन उन्होंने उसके शरीर को अंगुलियों से जोर-जोर से दबा कर देखा। हां यह सच है कि उन्होंने उसका जिगर ही नहीं देखा। उन्होंने कई कई स्थानों पर उसे दबा-दबा कर देखा और कुछ सामान्य बातें एक-दूसरे से कीं। वादिम यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि वह अन्य स्थानों की तुलना में उसके जिगर को अधिक दबा-दबा कर तो नहीं देख रही हैं।

(वे यह समझ गई थीं कि रोगी कितना तनावग्रस्त है और कितना अधिक ध्यान हर बात पर दे रहा है। अतः उन्होंने एकदम अनावश्यक होते हुए भी उसकी तिल्ली के ऊपर भी अपनी अंगुलियां घुमाईं। लेकिन उनकी कुशलतापूर्ण जांच का वास्तविक लक्ष्य यह था कि जिगर में कोई परिवर्तन तो नहीं हुआ है।)

रूसानोव से आगे चुपचाप निकल जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। वह अफसर होने के कारण विशेष ध्यान दिए जाने की अपेक्षा करता था। इधर वह इन डाक्टरों को पसन्द करने लगा था। यह सच था कि ये डाक्टर सम्मानित

वैज्ञानिक अथवा प्रोफेसर नहीं थीं लेकिन यह तथ्य तो कायम था ही कि उन्होंने उसे अच्छा कर दिया था। अब उसकी गर्दन की रसौली ढीली-ढाली लटकी रहती थी, उसकी सूजन समाप्त हो गई थी और अब यह छोटी भी पड़ गई थी। सम्भवत: आरम्भ में ही इतना खतरा नहीं था, जितना बड़ा खतरा उन्होंने दर्शाया था।

"आपको कुछ मालूम है, कामरेडो," उसने डाक्टरों के समक्ष घोषणा की। "मैं इन इंजेक्शनों से ऊब गया हूँ। मुझे २० से अधिक इंजेक्शन लगे हैं। क्या यह पर्याप्त नहीं है ? यदि जरूरी हो तो मैं घर पर शेष इलाज पूरा कर सकता हूं।"

वस्तुत: उसके रक्त की स्थिति अच्छी नहीं थी। यद्यपि उन्होंने चार बार उसे खून चढ़ाया था। वह थोथा, पस्त और झुर्रीदार दिखाई पड़ रहा था। छोटी टोपी भी, उसके सिर के लिए बहुत बड़ी दिखाई पड़ रही थी।

"डाक्टर, मेरा कहने का यह अभिप्राय है कि मुझे सचमुच आपका धन्यवाद करना चाहिए। यह सच है कि मैं आरम्भ में गलती पर था" रूसानोव ने बड़ी उदारता से दोन्तसोवा से कहा। उसे अपनी गलतियां स्वीकार करने में बड़ा आनन्द आता था। "आपने मुझे स्वस्थ कर दिया है और मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।"

दोन्तसोवा ने अस्पष्टता से अपना सिर हिलाया। उसने विनम्रता अथवा उलझन के कारण यह नहीं किया। इसका कारण यह था कि वह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। उन्हें अभी भी उसकी ग्रन्थियों में रसौलियां निकलना शुरू हो जाने की आशंका थी। और यह बात रसौलियां निकलने की गति पर निर्भर करती थी कि वह इस पूरे वर्ष जीवित भी रह सकेगा या नहीं।

वस्तुत: दोन्तसोवा और रूसानोव एक ही स्थिति में थे।

दोन्तसोवा और गैंगार्त ने काख और हंसुली के आस-पास बहुत जोर-जोर से दबाकर देखा। उन्होंने उसे इतनी जोर से दबाया कि वह तिलमिला उठा।

"मैं ईमानदारी से कहता हूं, यहां कुछ नहीं है।" रूसानोव ने उन्हें आश्वस्त किया। अब तह पर्याप्त स्पष्ट था कि वह उसे बीमारी से भयभीत करने का ही प्रयास करती रही थीं। लेकिन उसने अपना साहस नहीं छोड़ा और आसानी से बच निकला। उसे अपने चरित्र की इस नवप्राप्त शक्ति पर विशेष रूप से गर्व हो रहा था।

"यह बड़ी अच्छी बात है। लेकिन तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिए और अपना अच्छी तरह ध्यान रखना चाहिए, कामरेड रूसानोव," दोन्तसोवा ने उसे चेतावनी दी। "हम आपको एक या दो और इंजेक्शन देंगे और शायद इसके बाद आपको अस्पताल से छुट्टी दे दें। लेकिन आपको हर महीने जांच के

लिए आना होगा। और यदि आपको स्वयं कुछ दिखाई पड़े, तो तुरन्त यहां आ जाइएगा।"

लेकिन प्रसन्न रूसानोव स्वयं अपने अनुभव से जानता था कि ये अनिवार्य जांच केवल कागज का पेट भरने के लिए होती है। ऐसी बात होती हैं जिसके आधार पर सम्बन्धित कर्मचारी उपयुक्त कालम में आवश्यक निशान लगा सकेंगे। वह अपने परिवार को यह अच्छा समाचार सुनाने के लिए तुरन्त टेलीफोन करने चल पड़ा।

अब कोस्तोग्लोतोव की बारी थी। वह मिश्रित भावनाओं से डाक्टरों की प्रतीक्षा कर रहा था। एक दृष्टि से उन लोगों ने उसे बचा लिया था। दूसरी दृष्टि से उन्होंने उसे समाप्त कर डाला था। उन लोगों ने तेल और पानी बराबर-बराबर मात्रा में दिया था और इसके परिणामस्वरूप जो सम्मिश्रण तैयार हुआ था वह न तो पीने के लिए उपयुक्त था और न ही पहियों को चिकनाने के लिए।

जब वेरा कोर्निलएवना स्वेच्छा से उसके पलंग के पास आई तो वह वेगा बन गई थी। अपनी ड्यूटी के समय वह चाहे उसे कुछ भी कहे, उसके लिए कोई भी दवा निर्धारित करे, वह उसकी ओर देखता रहेगा और उसके दर्शन से उसे प्रसन्नता मिलेगी। पिछले एक सप्ताह से, उसने वेगा को उसके शरीर को क्षति पहुंचाने की अपनी भूमिका के लिए क्षमा कर दिया था। वह अब यह विश्वास करने लगा था कि उसके शरीर पर वेगा का किसी न किसी प्रकार का अधिकार है और इस विश्वास से उसे एक अजीब सांत्वना मिलती थी। वह जब कभी अपने राउंड के समय उसे देखने आती, उसके मन में उसके छोटे-छोटे हाथों को थपथपाने अथवा एक कुत्ते की तरह उन पर अपना मुंह रगड़ने को मन करता।

लेकिन अब वे वहां दो थीं। डाक्टरों की एक टोली, जो अपने नियमों से बंधी होती हैं और ओलेग अपने को आश्चर्य और क्षति के भाव से मुक्त नहीं कर सका।

"तुम कैसे हो?" दोन्तसोवा ने उसके बिस्तर पर बैठते हुए पूछा।

वेगा बराबर में खड़ी रही। वह उसे देखकर बहुत क्षीण-सी हंसी हंसी। स्वभावत: ही अथवा किसी आवश्यकता के कारण, उसने उसे देखकर फिर मुस्कराना शुरू कर दिया था। चाहे वह बहुत हल्का-सा ही क्यों न मुस्कराती। लेकिन आज सुबह उसकी मुस्कराहट किसी आवरण से ढंकी हुई दिखाई पड़ रही थी।

"बहुत अच्छा नहीं है।" कोस्तोग्लोतोव ने बड़ी थकान से नीचे झूलते हुए सिर को ऊपर उठा कर तकिए के ऊपर रखते हुए कहा। "मुझे यहां अपने डायाफ्राम में एक प्रकार का दबाव महसूस होता हैं। जब कभी मैं चलता

हूं, मुझे ऐसा लगता है कि आवश्यकता से अधिक इलाज से मुझे मार डाला गया है। मैं चाहता हूं कि आप मुझे यहां से चले जाने की इजाजत दे दें।"

उसने अपने पुराने क्रोध और भावावेश से छुट्टी की इस मांग को नहीं दुहराया। वह बड़ी उदासीनता से बोल रहा था। मानो यह समस्या स्वयं उसकी अपनी न हो और हल भी इसका इतना स्पष्ट हो कि उसे दोहराने की ज़रूरत ही न हो।

वस्तुतः दोन्तसोवा ने भी इसे दोहराने का कष्ट नहीं उठाया। इसके अलावा वह थकी हुई भी थी। "यह निर्णय तो तुम्हें करना है," वह बोली; "तुम जो चाहो सो करो। लेकिन इलाज अभी पूरा नहीं हुआ है।"

उसने उसकी त्वचा के उन हिस्सों का मुआयना शुरू किया, जहां एक्स किरणें डाली गई थीं। वस्तुतः त्वचा यह चिल्ला-चिल्ला कर कहती हुई लग रही थी कि इलाज अब रोक दिया जाना चाहिए। एक्स किरणों से चिकित्सा बन्द कर देने के बाद भी त्वचा पर यह प्रतिक्रिया और बढ़ सकती थी।

"अब हम दिन में दो बार उसे विकिरण नहीं दे रहे हैं क्यों नहीं न?" दोन्तसोवा ने पूछा।

"नहीं, अब एक बार दिया जाता है," गैंगार्त ने उत्तर दिया।

(उसने अपनी दुबली पतली गर्दन को आगे की ओर करते हुए "अब एक बार दिया जाता है" जैसे सीधे सादे शब्दों का उच्चारण किया। उसकी ध्वनि ऐसी लग रही थी, मानों हृदय छू लेने के लिये वह कोई बहुत कोमल घोषणा कर रही हो।)

विचित्र जीवन्त धागों ने, स्त्री के लम्बे बालों जैसे धागों ने, उसे इस रोगी के साथ जोड़ दिया था, उसके साथ उलझा दिया था। उसे इन धागों को खींचे जाने के समय अथवा टूटते समय पीड़ा का अनुभव होता था। ओलेग को कोई दर्द महसूस नहीं होता था आस-पास का कोई भी व्यक्ति यह नहीं देख पा रहा था कि क्या हो रहा है। जिस दिन वेरा ने उसके ज़ोया के साथ रात्रि के क्रिया कलापों के बारे में सुना था उसे लगा था मानो उसके सिर से बालों का एक गुच्छा खींचकर उखाड़ लिया गया हो। संभवतः इसे वहीं समाप्त कर देना बेहतर होता। धागों को उखाड़ने की प्रक्रिया उसे इस नियम का स्मरण दिलाती थी कि पुरुषों को हमउम्र स्त्रियों की कोई ज़रूरत नहीं होती। उन्हें उन औरतों की ज़रूरत होती है, जो उनसे कम उम्र होती हैं। उसे यह नहीं भुलाना चाहिये कि उसका समय बीत चुका है, बीत चुका है।

लेकिन इसके बाद वह उससे एकदम खुल्लम खुल्ला बरामदों में टकराने लगा। उसके बाद एक-एक शब्द को पकड़ने लगा, उससे बातचीत करने लगा और उसकी ओर इतने अच्छे तरीके से देखने लगा कि वे बाल, वे धागे एक-एक कर फिर अलग होने लगे और फिर दूसरी बार आपस में उलझने लगे।

ये धागे क्या थे ? इनका कोई स्पष्टीकरण सम्भव नहीं था और ये असुविधाजनक भी थे। उसे यहां से रवाना होकर कहीं और जाना होगा और उसे वहां रोके रखने के लिये कोई प्रबल आकर्षण होगा। वह तभी वापस आएगा जब बहुत बीमार हो चुका होगा, जब मौत उसे ज़मीन तक झुका चुकी होगी। वह जितना ही अधिक स्वस्थ होगा, वह उतना ही कम यहां आयेगा। शायद वह कभी आये ही नहीं।

"हमने उसे कितना साइनेस्ट्रोल दिया है ?" लुदमिला अफानासएवना ने पूछा।

"पर्याप्त से भी अधिक," वेरा कोर्निलएवना बोल पाये, इससे पहले ही कोस्तोग्लोतोव ने बड़े आक्रामक ढंग से उत्तर दिया। वह उसकी ओर बहुत गम्भीरता और उदासी से देख रहा था। "जीवन भर के लिये पर्याप्त।"

यदि कोई अन्य अवसर होता, तो लुदमिला अफानासएवना उसे इस अशिष्ट उत्तर के बाद इस तरह बच निकलने नहीं देती। वह उसे अच्छी तरह सीधा करती। लेकिन अब उसका मनोबल कमजोर पड़ चुका था। वह अपना राउंड भी मुशिकल से पूरा कर पा रही था। अपनी इस ड्यूटी के दायरे के बाहर, जिससे वह अब विदा ले रही थी, वह वस्तुत: कोस्तोग्लोतोव के प्रति भी आपत्ति नहीं उठा सकती थी। यह सब सच था कि यह चिकित्सा वर्बर थी।

"मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहती हूं," वह बोली वह उसे खुश करने के लिये यह बात कह रही थी और इतने धीमे स्वर में बोल रही थी, ताकि दूसरे रोगी न सुन सकें। "तुम्हें एक परिवार के सुख की प्राप्ति की आशा नहीं करनी चाहिये। सामान्य पारिवारिक जीवन का सुख प्राप्त करने के लिये तुम्हें अभी कई और वर्षों का समय लगेगा···" यहां कोर्निलएवना ने अपनी आंखें नीचे झुका लीं "···क्योंकि तुम्हारा रोग उपेक्षा के कारण बहुत बढ़ चुका था। तुम हमारे पास बड़े विलम्ब से आये थे।"

कोस्तोग्लोतोव यह जानता था कि स्थिति बुरी है। लेकिन इस बात को इतनी स्पष्टता से दोन्तसोवा से सुनकर वह आश्चर्यचकित और अवाक रह गया 'हूं, हां,' वह बुदबुदाया। इसके बाद स्वयं को आश्वस्त करने के लिए उसके मन में एक विचार आया "मैं यह कहने का साहस कर सकता हूं कि अधिकारी यह वैसे भी न होने देते।"

"उसे तेजान और पेन्टाक्सिल देती रहना, वेरा कोर्निलएवना। लेकिन तुम्हें आराम के लिए भी उसे कुछ समय देना होगा। मैं तुम्हें बताती हूं कि हम क्या करेंगे, कोस्तोग्लोतोव। हम तुम्हें तीन महीने के साइनेस्त्रोल देने की सिफारिश करेंगे। यह कैमिस्टों की दुकानों पर उपलब्ध है। तुम इसे खरीद सकते हो। इसे अपने साथ घर लेते जाना। यदि वहां इन्जेक्शन लगाने वाला कोई न हो तो इसकी गोलियां ले लेना।"

कोस्तोग्लोतोव उसे यह स्मरण दिलाने के लिये अपने होंठ फड़फड़ाने लगा कि पहली बात तो यह है कि उसका कोई 'घर' ही नहीं है। दूसरी बात यह है कि उसके पास पैसा नहीं है और तीसरी बात यह है कि वह इतना मूर्ख नहीं है कि धीरे-धीरे आत्महत्या करता रहे।

लेकिन वह बहुत दुर्बल दिखाई पड़ रही थी। वह पस्त थी। उसने इस बात का ध्यान रखा और कुछ नहीं बोला और इस प्रकार राउण्ड समाप्त हो गया।

अहमदजान दौड़ता हुआ भीतर आया। सब व्यवस्था हो चुकी थी। वह उसकी वर्दी लेने भी जा चुके थे। उसी रोज शाम को वह अपने मित्रों के साथ शराब पीता होगा। कल वह अपने आवश्यक कागज लेने वापस आयेगा। वह बहुत अधिक उत्तेजित था। वह उससे कहीं अधिक तेजी से और जोर से बोल रहा था। जितना इससे पहले उसे बोलते किसी ने नहीं सुना था। वह इतने सशक्त और निर्णायिक कदमों से चल रहा था कि ऐसा लगता कि वह शायद कभी भी बीमार नहीं था, कि उसने इस वार्ड में दो महीने का समय उनके साथ बिताया ही नहीं था। उसके सिपाहियों जैसे काले घने बाल और कोयले जैसी काली भवें थीं। इन भवों के नीचे एक शराबी की आंखों की तरह उसकी आंखें दहकती रहती थीं और यह अनुभव कर कि अस्पताल की चौखट के बाहर नया जीवन उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, उसके शरीर में स्फुर्ण होने लगा। वह अपनी चीजें लेने के लिए तेजी से आगे बढ़ा, फिर बीच में ही रुका और फिर दौड़ता हुआ आगे बढ़ गया (उसे विशेष अनुमति प्राप्त करनी थी) ताकि पहली मंजिल के रागियों के साथ अपना लंच ले सके।

कोस्तोग्लोतोव को एक्स-रे विकिरण के लिये बुलाया गया। वह अपनी बारी की प्रतीक्षा करता रहा और फिर मशीन के नीचे लेट गया। इसके बाद वह यह देखने के लिए बाहर निकला कि आज मौसम इतना उदास क्यों है।

पूरा आकाश तेजी से उड़ रहे सुरमई रंग के बादलों से भरा था। उनके पीछे गहरे बैंगनी रंग का बादल धीरे-धीरे चला आ रहा था, जिससे वर्षा की निश्चितता प्रकट होती थी। लेकिन बेहद गर्मी थी। यह वसन्त ऋतु की ही बौछार होगी।

यह समय बाहर टहलने जाने का नहीं था। अतः वह सीढ़ियां चढ़कर अपने वार्ड में वापस लौट आया।

बरामदे में चलते समय उसे उत्तेजित अहमदजान की आवाज सुनाई पड़ रही थी। वह ऊंचे स्वर से एक कहानी सुना रहा था। "अरे मरने भी दो," वह कह रहा था, "वे उन लोगों को सैनिकों से बेहतर भोजन देते हैं। कम से कम, उनसे बुरा भोजन तो नहीं दिया जाता। राशन एक दिन के लिए बाहर सौ ग्राम होता है। उन लोगों को तो टट्टी खाने को दी जानी चाहिये।

काम! कोई काम नहीं करते हम उन लोगों को निकाल कर बाहर काम के क्षेत्र में ले जाते हैं, वे भाग निकलते हैं, छिप जाते हैं और दिन भर सोते रहते हैं।"

बड़ी शांति से कोस्तोग्लोतोव ने चौखट के भीतर पांव रखा। अहमदजान अपने सामान का बंडल लिये बिस्तर के बराबर खड़ा था, जिसके ऊपर अब चादर और तकिये के गिलाफ नहीं थे। उसके सफेद दांत चमक रहे थे। वह अपनी एक बांह हिला रहा था और वार्ड के लोगों को बड़े आत्मविश्वास से अपनी अन्तिम कहानी सुना रहा था।

वार्ड पूरी तरह बदल गया था। फेदेरो जा चुका था और दार्शनिक भी। और शुलुबिन भी। पर यह बड़ा विचित्र था कि ओलेग ने अहमदजान को वार्ड के पुराने रोगियों को यह किस्सा सुनाते हुए कभी नहीं सुना था।

"तो वे कोई भी निर्माण कार्य नहीं करते?" कोस्तोग्लोतोव ने शांति से पूछा। तो इस क्षेत्र में कोई भी निर्माणकार्य नहीं हो पाता? क्या यह सही है?"

"हां वे बनाते हैं," अहमदजान ने अचानक इन प्रश्नों का सामना हो जाने से भौंचक्का होते हुए कहा। "लेकिन वे बुरा काम करते हैं।"

"तो तुम उनकी मदद कर सकते थे···" कोस्तोग्लोतोव ने और अधिक शांति से कहा मानो उसकी शक्ति उसका साथ छोड़ रही हो।

"मेरा काम—राईफल—उनका काम—फावड़ा।" अहमदजान ने प्रसन्नता से उत्तर दिया।

ओलेग ने अपने इस साथी रोगी के चेहरे की ओर देखा। उसे लगा कि वह पहली बार उसे देख रहा है और फिर भी उसने उसे वर्षों तक देखा है। भेड़ की खाल का कोट पहने हाथ में स्वचालित राईफल लिये इस व्यक्ति को उसने देखा है। अहमदजान अशिक्षित था, वह पासे का छोटा मोटा खेल जानता था। लेकिन वह निष्ठावान और स्पष्टवादी था।

यदि दर्शकों तक निरन्तर सच्चाई को प्रकट न किया जा सके, तो व्यक्ति का मस्तिष्क दिगभ्रमित हो जाता है और उसे सही रास्ते पर लाने का कोई मार्ग दिखाई नहीं पड़ता। स्वयं उसके अपने देशवासी बेहद अजनबी लगने लगते हैं। ऐसा लगने लगता है, मानो मंगलग्रह के निवासियों को समझ पाना आसान है, अपने देशवासियों को समझ पाना मुश्किल।

कोस्तोग्लोतोव ने बात यहीं नहीं छोड़ी। "तुम्हारा इस सम्बन्ध में क्या विचार है?" वह बोला। "मनुष्यों को टट्टी खिलाना? तुम मजाक कर रहे थे, क्यों मजाक कर रहे थे न?"

"मैं मज़ाक नहीं करता? वे मनुष्य नहीं। वे कोई मनुष्य नहीं!" अहमदजान ने बड़ी उत्तेजना से जोर देते हुए कहा।

उसे कोस्तोग्लोतोव को आश्वस्त कर देने की आशा थी कि वार्ड के दूसरे लोगों की तरह वह भी इस बात पर विश्वास कर लेगा। वह जानता था कि ओलेग निष्कासित है। लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि वह शिविरों में भी रह चुका है।

कोस्तोग्लोतोव ने कनखियों से रूसानोव के बिस्तर की ओर देखा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रूसानोव अहमदजान का पक्ष लकर क्यों नहीं बोल रहा है। पर रूसानोव वार्ड में नहीं था।

"और जरा यह कल्पना तो करो। मैं तुम्हें एक सैनिक समझता था?" कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बात बढ़ाते हुये कहा। "तुम किस की सेना में थे, मैं जानना चाहूँगा? तुम बेरिया[1] की सेना में थे, क्यों यही बात है न?"

"मैं कोई बेरिया नहीं जानता!" अहमदजान बोला। वह क्रोधित हो उठा था और उसका चेहरा लाल हो गया था। "ये ऊपर के लोग—इनसे मेरा क्या मतलब। मैं कसम से कहता—मैं सेवा करता। वे मजबूर करते—तुम सेवा करते...।"

---

१. अनेक वर्षों तक लावरेंती बेरिया स्तालिन के शासनकाल में सोवियत रूस के आंतरिक मामलों का अध्यक्ष था और इस प्रकार उसके ऊपर करोड़ों लोगों को बलातश्रम शिविरों में डालने की जिम्मेदारी थी। (अनुवादक की टिप्पणी)

१२. सुखद अन्त

उस दिन का समारम्भ वर्षा से हुआ था। पूरी रात भी वर्षा पड़ी थी तेज हवा भी चल रही थी, और हवा निरन्तर अधिक सर्द होती जा रही थी। बृहस्पतिवार की सुबह तक यह बर्फ और वर्षा का सम्मिश्रण बन गया था। और अस्पताल में जिन लोगों ने वसन्त ऋतु के आगमन की भविष्यवाणी कर दी थी और खिड़कियों को खोल दिया था उनमें कोस्तोग्लोतोव भी था। अब उन्हें यह अनुभव हो रहा था मानो उनके मुँह पर किसी ने किसी मोटे कपड़े का गीला टुकड़ा दे मारा हो। बृहस्पतिवार को तीसरे पहर बर्फ रुक गयी। वर्षा भी अचानक रुक गई और हवा भी बन्द हो गई। मौसम शान्त, सर्द और अन्धियारा हो गया।

लेकिन सूरज छिपने के साथ ही आकाश का पश्चिमी छोर प्रकाशमान हो उठा और यह सोने की एक पतली पट्टी जैसा दिखाई पड़ने लगा।

शुक्रवार की सुबह रूसानोव को अस्पताल से छुट्टी दी जानी थी। उस रोज आसमान खुल गया और बादल छट गए। सुबह के सूरज ने कोलतार की सड़कों पर भरे पानी के गड्ढों को सुखाना शुरू कर दिया और कच्चे रास्तों को भी जो घास के मैदान के आर-पार जाते थे।

प्रत्येक व्यक्ति ने यह अनुभव किया कि अब वसन्त ऋतु का सच्चा और न बदलने वाला समारम्भ हो गया है। उन लोगों ने खिड़कियों की दरारों पर चिपकाये हुए कागजों को उखाड़ना शुरू कर दिया। बोर्ड निकाल डाले और दोहरी खिड़कियों के भीतरी शीशे खोल दिये। सूखी पट्टी के टुकड़े फर्श पर गिरे और अरदलियों का सफाई का काम बढ़ गया।

पावेल निकोलाएविच ने अपना सामान गोदाम में नहीं रखवाया था। उसने अस्पताल से कोई कपड़ा भी नहीं लिया था और इस कारण से वह दिन में किसी भी समय वहां से चल पड़ने के लिये स्वतन्त्र था। जलपान के तुरन्त बाद उसका परिवार उसे लेने के लिये कार लेकर आया।

और यह भी कैसी आश्चर्य की बात थी। लावरिक कार चला रहा था। एक दिन पहले ही उसे अपना ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त हुआ था।

स्कूल की छुट्टियां भी एक दिन पहले ही शुरू हुई थी। लावरिक के लिए पार्टियों और माइका के लिए लम्बी सैर की व्यवस्था हो गई थी—उसके

छोटे बच्चे बहुत अधिक उत्साहित थे। कैपीतोलीना मात्र एवना केवल दो बच्चों को साथ लेकर ही आई थी और बड़े बच्चों को घर छोड़ आई थी। लावरिक ने अपनी मां को इस बात के लिये राजी कर लिया था कि वह बाद में अपने मित्रों को कार में घुमाने जा सकेगा। अब उसे यह दर्शाना था कि वह बहुत अच्छी तरह से गाड़ी चला सकता था। यूरी के बिना भी।

उलटी चल रही फिल्म की तरह, यह सारी प्रक्रिया फिर दोहराई जा रही थी। बस केवल अन्तर इतना था कि इस बार प्रसन्नता अधिक थी। पावेल निकोलाएविच सीढ़ियों के नीचे बने मैट्रिन के छोटे से कमरे में पायजामा पहने घुसा और अपना सलेटी रंग का सूट पहने बाहर निकला। लावरिक बेहद प्रसन्न था। यह खूबसूरत और खेलकूद का शौकीन युवक नीला सूट पहने था। यदि वह माइका के साथ नीचे लावी में मूर्खतापूर्ण काम न करता तो काफी वयस्क दिखाई पड़ता। वह बड़े गर्व से कार की चाबी अपनी अंगुली पर घुमा रहा था।

"क्या तुमने सब दरवाजे बन्द कर दिये हैं ?" माइका उससे पूछे जा रही थी।

"हां, सब बन्द कर दिए।"

"और तुमने सब खिड़कियां भी बन्द कर दीं ?"

"ठीक है, तुम खुद जाकर देख लो।" माइका अपने काले घुंघराले बालों को झटका देकर तेजी से दौड़ी और तुरन्त वापस लौट आई। "हां, बिलकुल ठीक है।" वह बोली। लेकिन तभी उसने फिर बेहद चिन्ता दिखाने का नाटक रचा। "लेकिन क्या तुमने डिक्की भी बन्द कर दी है ?"

"जाओ खुद देख आओ।"

वह फिर दौड़ी

अभी भी आदमी पीला तरल भरे ज़ार लेकर प्रयोगशाला की ओर जाते हुऐ दिखाई पड़ रहे थे। दूसरे लोग भी थे, व्यक्तित्वहीन और पस्त। वे लोग किसी बिस्तर के खाली होने की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। उनमें से एक बेंच पर लम्बा लेटा हुआ था। पावेल निकोलाएविच एक प्रकार के कृपाभाव से यह सब देख रहा था। उनसे स्वयं को एक साहसी व्यक्ति सिद्ध किया था। उसने स्वयं को परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली प्रमाणित किया था।

लावरिक ने अपने पिता का सूटकेस उठा रखा था। अपने हलके रंग के वसन्त ऋतु के उपयुक्त कोट में और ताम्बे के रंग के बालों में कापा खुशी से और अधिक कम उम्र लग रही थी। उसने ज़रा सा सिर हिला कर मैट्रिन को रफा दफा किया, अपने पति की बांह पकड़ी और उसके बराबर चलने लगा माइका अपने पिता की दूसरी बांह पकड़ कर लटक गई।

तुमने उसका नया हुड देखा है? जरा देखो, एकदम नया है! इस

पर बारियां भी हैं !"

"पाशा ! पाशा !" पीछे से कोई चिल्लाया। वह पीछे घूमी।

चाली सर्जीकल बरामदे के बाहर से निकल रहा था। वह बहुत प्रसन्न और स्वस्थ दिखाई पड़ रहा था। वह ज़रा भी दुर्बल नहीं लग रहा था वह एक मरीज है इस बात का आभास उसके अस्पताल के पायजामें और स्लीपरों से ही लग रहा था।

पावेल निकोलाएविच ने बड़े उत्साह से उसके साथ हाथ मिलाया, "देखो कापा," वह बोला, "यह हमारे अस्पताल के मोर्चे का हीरो है। मैं इससे तुम्हारा परिचय कराना चाहता हूँ। उन लोगों ने इसके पेट को काट कर टटोल डाला है। लेकिन वह केवल मुस्कराता भर है।"

जब उसका परिचय कापीतोलीना मात्रेएवना से कराया गया तो चाली ने बड़ी गरिमा से अपनी एड़ियाँ टकराईं और अपना सिर एक ओर को झुका लिया कुछ मजाक में और कुछ सम्मान प्रकट करने के लिये। "पाशा, तुम्हारा टेलीफोन नम्बर, मुझे अपना टेलीफोन नम्बर दो," चाली ने जोर देते हुए कहा।

पावेल निकोलाएविच ने ऐसा नाटक रचा मानो वह दरवाजे की चौखट में अटका रह गया हो और उसने यह सवाल ही न सुना हो। चाली एक अच्छा आदमी था लेकिन ये दोनों भिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित थे, उनके भिन्न विचार थे और उसके साथ सम्बन्ध बढ़ाना बहुत सम्मानजनक न होगा। उसने टेलीफोन नम्बर देने से इनकार करने का कोई नम्र तरीका तलाश करने की कोशिश की।

वे बाहर पोर्च में निकल आये और चाली की नजर तुरन्त मोस्कविच[1] पर पड़ी। लावरिक ने इसे घुमा लिया था और आगे बढ़ने के लिये तैयार था। चाली ने एक नजर कार के ऊपर डाली। उसने यह नहीं पूछा कि "क्या यह तुम्हारी है ?" बस उसने इतना कहा, "कितना चुकाया ?"

"१५ हजार से कुछ कम।"

"तो टायर इतने क्यों घिसे हैं ?"

"बात यह है कि हमें अच्छा सेट नहीं मिला···मजदूर लोग इन्हें बनाते ही इतना बुरा हैं···"

"मैं तुम्हें कुछ टायर दिलवा सकता हूँ ?"

"सचमुच ? मेक्सिम, यह बढ़िया बात है ?"

"तुम अपनी जिन्दगी की शर्त लगा लो मैं दिलवा सकता हूं। कोई दिक्कत नहीं है। अपना नम्बर लिखो और जाओ !" उसने रूसानोव की

---

१. रूस की एक छोटी लोकप्रिय कार। (अनुवादक की टिप्पणी)

छाती पर एक अंगुली गड़ाते हुए कहा। "जैसे ही मुझे यहां से छुट्टी मिलेगी। मैं गारन्टी देता हूं उसके बाद एक सप्ताह के भीतर तुम्हें टायर मिल जायेंगे।"

"अब कोई बहाना तलाश करने की कोई जरूरत नहीं थी। पावेल निकोलाएविच ने अपनी नोटबुक से एक पन्ना फाड़ा और अपने दफ्तर तथा घर के टेलीफोन नम्बर लिख दिये।

"ठीक है, तो यह तय रहा, मैं तुम्हें टेलीफोन करूंगा," मेक्सिम ने विदा स्वरूप कहा, माइका कूद कर अगली सीट पर चढ़ गई और माता-पिता पिछली सीट पर जा बैठे।

"हम लोग मित्र बने रहेंगे?" मेक्सिम ने चलते समय उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा। दरवाजे जोर की आवाज़ से बन्द हो गये।

"हमारा अच्छा समय कटेगा?" मेक्सिम चिल्लाया और उसने 'लाल मोर्चे' के सलाम की मुद्रा में अपनी मुट्ठी ऊपर उठा ली।

"अब मुझे क्या करना है?" लावरिक ने माइका से पूछा। वह उसकी परीक्षा ले रहा था। "इगनीशन जलाऊं।"

"नहीं पहले यह देखो कि गाड़ी न्यूट्रल में है या नहीं?" माइका ने तुरन्त जवाब दिया।

गाड़ी आगे बढ़ चली और बीच-बीच में पानी से भरे गड्ढ़ों से गुजरते समय पानी के छतराने की तेज आवाज़ आती। अस्थि रोग विभाग के कोने पर पहुंच कर गाड़ी मुड़ी। वहां एक सलेटी रंग के ड्रेसिंग गाउन और फौजी बूटों वाला एक लम्बा दुबला पतला रोगी कोलतार की सड़क के बीचोंबीच चला जा रहा था। वह सैर का आनन्द लेते हुए धीरे-धीरे चल रहा था।

"इसके पीछे जोर से हार्न बजाओ! इसे तेज आवाज़ से चौंका दो।" पावेल निकोलाएविच ने उस पर नजर पड़ते ही कहा।

लावरिक ने हार्न की कुछ क्षण के लिए तीखी आवाज़ की। यह लम्बा आदमी तेजी से एक ओर हटा और उसने पीछे मुड़ कर देखा। लावरिक ने एक्सीलेटर दबाया और तेजी से आगे निकल गया। गाड़ी उसके पास से मुश्किल से १० सेंटीमीटर के फासले से ही गुजरी।

"मैं उसे 'हड्डीचूस' कहता हूं। यह सचमुच एक बेढंगा, और जलने वाला आदमी है। काश तुम उसे जानतीं। कापा तुमने उसे देखा है न?"

"इससे तुम्हें आश्चर्य क्यों होता है, पासिक?" कापा ने आह भरी। जहां कहीं सौभाग्य होता है वहां ईर्ष्या अवश्य देखने को मिलती है। सदा ऐसे लोग होते हैं जो आपको सुखी देख कर ईर्ष्या करेंगे।"

"वह एक वर्गशत्रु है," रूसानोव शिकायत भरे स्वर में बुदबुदाया। "काश आज परिस्थितयां भिन्न होतीं..."

"तो मुझे इसे कुचल ही डालना चाहिए था। आपने मुझे सिर्फ हार्न

बजाने को ही क्यों कहा ?'' लावरिक हंसा और उसने एक क्षण पीछे मुड़कर देखा ।

''गाड़ी चलाते समय पीछे मुड़कर देखने का साहस कभी न करना ।'' कैपीतोलीना मात्रेएवना भयभीत होकर चिल्लाई ।

और यह बात सही थी, कार लड़खड़ा गई थी ।

''पीछे मुड़ कर देखने की हिम्मत न करना !'' माइका ने जोर से हंसते हुए दोहराया । ''लेकिन मैं पीछे मुड़ कर देख सकती हूं क्यों देख सकती हूँ न मम्मी ।''

उसने उन्हें देखने के लिये अपना सिर पीछे की ओर घुमाया । पहले बायीं ओर फिर दाहिनी ओर ।

''मैं उसे अपनी सहेलियों को गाड़ी में नहीं ले जाने दूंगी, तभी इसे सबक मिलेगा ।'' कैपीतोलीना मात्रेएवना बोली ।

जैसे ही वे लोग अस्पताल की इमारत से बाहर निकले कापा ने खिड़की नीचे उतारी और कुछ कूड़ा सड़क पर फेंक दिया । ''जगह का सत्यानाश हो, मैं आशा करती हूँ कि हमें यहां कभी नहीं लौटना पड़ेगा ?'' वह बोली । ''कोई भी पीछे मुड़ कर न देखे !''

कोस्तोग्लोतोव ने इन लोगों को लम्बी चौड़ी गालियां दीं और जी भर कर गालियां देता रहा ।

वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि वे सही थे । उसे सुबह ही छुट्टी ले लेनी चाहिये थी । बीच दिन में छुट्टी लेना असुविधाजनक होगा जब हर रोगी को छुट्टी दी जाती है । उसके बाद बाहर कुछ भी कर पाना सम्भव न होगा ।

उन्होंने अगले दिन उसे छुट्टी देने का वायदा किया था ।

उस दिन अच्छी धूप थी और गर्मी बढ़ रही थी । हर चीज तेजी से सूखती जा रही थी । गर्मी को जज्ब करती जा रही थी । उशतेरेक में भी वे लोग निश्चय ही अपने बगीचे खोद रहे होंगे और सिंचाई के लिए तैयार किए गये गड्ढों को साफ कर रहे होंगे ।

वह घूमता रहा और उसने अपने विचारों को उन्मुक्त छोड़ दिया ।

वह कितना भाग्यशाली था । पिछली सर्दियों में भयंकर पाले के समय वह उशतेरेक से रवाना हुआ था मरने के लिये । अब वह बसन्त ऋतु के बीच वहां वापस लौटेगा । वह अपने छोटे से बगीचे में पौधे लगा सकेगा । जमीन में कुछ गाढ़ना और उसे उगते हुए देखना बड़ा सुखदायक होता है ।

बस अन्तर केवल इतना है कि बगीचों में जोड़े काम करते हैं और वह अकेला ही था ।

वह कुछ और आगे तक गया और उसके मन में एक विचार आया ।

वह वापस जाकर मैट्रिन से मिलेगा। उस दिन को काफी अरसा बीत चुका है जब मीता ने उसका रास्ता रोक लिया था और यह बात जोर देकर कही थी कि अस्पताल में कोई जगह खाली नहीं है।

अब वह काफी समय से एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं।

मीता सीढ़ियों के नीचे बनी बिना खिड़की की अपनी मांद में बैठी हुई थी। वहाँ केवल बिजली के बल्ब का ही प्रकाश होता था। बाहर खुले मैदान में घूम कर लौटने के बाद यह जगह उसके फेफड़ों और आंखों को असह्य लग रही थी। नीता रेकार्ड के कार्डों को लगातार तरतीबवार लगाने के प्रयास में जुटी थी।

कोस्तोग्लोतोव इस निचले दरवाजे के भीतर घुसने से पहले रुका। "मीता," वह बोला, "मैं आपसे एक विशेष कृपा चाहता हू। बड़ी महत्वपूर्ण बात है।"

मीता ने अपना लम्बा और तीखे नक्शों वाला चेहरा ऊपर उठाया। उसके चेहरे के नक्शों में उचित संतुलन नहीं था। जन्म से ही उसकी यह हालत थी। ४० वर्ष तक कोई भी व्यक्ति इस चेहरे की ओर इतना आकर्षित नहीं हुआ कि इसका चुम्बन करता अथवा इसे अपने हाथ से थपथपाता। उस कोमलता को जो उस चेहरे को जीवन्त बना सकती थी कभी प्रकट होने का अवसर ही नहीं मिला। बस मीता सामान ढोने वाला एक खच्चर भर बन गई थी।

"क्या बात है ?" उसने पूछा।

"ये लोग मुझे कल छुट्टी दे रहे हैं।"

"मुझे इस बात की बड़ी खुशी है ?" मीता एक सहृदय स्त्री थी। केवल पहली नजर में ही वह कठोर लगती थी।

"लेकिन यह बात इसके बारे में नहीं है। शाम को शहर से रवाना होने से पहले मुझे दिन में कुछ काम पूरे करने होंगे। लेकिन वे लोग गोदाम से बहुत देर से हमारे कपड़े लाते हैं। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते, मितोचका—मेरी चीजें आज ही निकलवा लो, उन्हें कहीं छिपा दो। और मैं पौ फटते ही यहां आ जाऊंगा, अपने कपड़े बदल लूंगा और चला जाऊंगा।"

"ओह, नहीं, यह सचमुच असम्भव है," मीता ने कहा। "यदि निजामुद्दीन को पता चल गया…"

"उसे पता नहीं चलेगा ! मैं जानता हूं कि यह बात नियमों के विरुद्ध है। लेकिन तुम जानती हो मितोचका, तुम नियम तोड़ कर ही जीवित रह सकते हो।"

"लेकिन अगर वे तुम्हें कल छुट्टी न देने का निर्णय ले लेते हैं तो क्या होगा ?"

"यह निश्चित है।" वेरा कोर्निलएवना ने मुझ से कहा है।

"लेकिन मुझे स्वयं उससे यह जानकारी मिलनी चाहिए।"

"ठीक है मैं अभी जाता हूँ और उससे इस सम्बन्ध में मिलता हूं।"

"क्या तुमने खबर सुनी है ?"

"नहीं, कौन सी खबर ?"

"वे लोग कह रहे हैं कि हम सबको वर्ष के अन्त तक रिहा कर दिया जायेगा। वे लोग निश्चयपूर्वक यह बात कहते हैं।"

इस अफवाह की चर्चा करते समय उसका आकर्षणहीन चेहरा सुन्दर हो उठा था।

"तुम्हारा 'हम' से क्या अभिप्राय है[1] क्या तुम्हारा अभिप्राय 'तुम' से है ?"

"इसका अभिप्राय हम और तुम सबसे है ! क्या तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं होता।" वह उसकी राय सुनने के लिये बड़े संशय से प्रतीक्षा करती रही।

ओलेग ने अपना सिर खुजाया और अपने चेहरे को बड़ा लम्बा खींच लिया उसने अपनी एक आंख बिल्कुल बन्द कर ली। "यह सम्भव है," वह बोला। "मेरा अभिप्राय है कि यह पूरी तरह असम्भव नहीं है। बस बात केवल इतनी है कि मैंने इतनी झूठी अफवाहें सुनी हैं कि अब मेरे कान इन बातों पर भरोसा करने को तैयार नहीं होते।"

"लेकिन इस बार यह निश्चित है। वे कहते हैं कि यह शतप्रतिशत निश्चित है।" वह इस बात पर इस कदर विश्वास करना चाहती थी कि इस बात से इनकार करना असम्भव था।

ओलेग ने अपना ऊपर का होंठ नीचे के होंठ पर चढ़ाया और एक क्षण तक सोचता रहा। सचमुच कोई ऐसी बात सुनाई तो पड़ रही थी। सर्वोच्च न्यायालय के सब सदस्यों को बर्खास्त कर दिया गया है। लेकिन ये सब बातें बहुत धीमी गति से हो रही हैं। इसके बाद एक महीने तक और कुछ नहीं हुआ। उसके भीतर फिर अविश्वास जाग उठा था। इतिहास हमारे जीवन की दृष्टि अथवा हमारी इच्छाओं की तुलना में बहुत धीमी गति से आगे बढ़ता है।

"ठीक है, यदि ईश्वर ने चाहा तो," उसने कहा। अधिकांशतः इस कथन का उद्देश्य मीता को प्रसन्न करना था। "इसके बाद तुम क्या करोगी ?

---

१. मीता भी निष्कासित है क्योंकि वह जर्मन जाति की है। यद्यपि वह कोस्तोग्लोतोव से भिन्न क्षेणी में है, जिसे एक खास व्यक्तिगत कारण से निष्कासित किया गया है। (अनुवादक की टिप्पणी)

क्या तुम यहां से चली जाग्रोगी ?"

"मुझे नहीं मालूम," मीता ने अत्यधिक धीमी ग्रावाज़ से, प्रायः बिना ग्रावाज़ के ही यह बात कही। उसके बड़े-बड़े नाखून करीने से लगे कार्डों के ऊपर फैले हुए थे। वे इन कार्डों से ऊब चुकी थीं।

"तुम सालस्क के ग्रास-पास की हो न ?"

"हां।"

"ठीक है, क्या तुम्हारी राय में वहां बेहतर स्थिति है ?"

"इसका ग्रर्थ है ग्राजादी," उसने फुसफुसाहट के स्वर में कहा।

ग्रथवा यह भी हो सकता था ग्रौर जिसकी ग्रधिक संभावना थी कि उसे ग्रभी भी यह ग्राशा थी कि संसार के उस हिस्से में जहां कि वह रहने वाली थी ग्रपने लिए पति ढूंढ निकालेगी।

ग्रोलेग वेरा कोर्निलएवना को ढूंढने के लिए चल पड़ा। शुरू में उसे कामयाबी नहीं मिली। उन लोगों ने उसे बताया कि वह एक्स-रे के कमरे में है ग्रौर इसके बाद यह कहा गया कि वह सर्जनों के साथ है। ग्रन्त में उसने देखा कि वह लेव लियोनिदोविच के साथ बरामदे में चली ग्रा रही है। वह तेजी से उनकी ग्रोर बढ़ा।

"वेरा कोर्निलएवना, क्या ग्राप मुझे एक मिनट का समय दे सकती हैं।"

यह बड़ा भला लग रहा था कि वह उसे सम्बोधित करने की स्थिति में था ग्रौर केवल उसे ही। उसने देखा कि वह वेरा के लिए जिस ग्रावाज़ का इस्तेमाल कर रहा है उस ग्रावाज़ का इस्तेमाल दूसरे लोगों के लिए नहीं करता।

वेरा ने पीछे घूम कर देखा। उसके हाथों की मुद्रा से यह स्पष्ट था कि वह दिन उसके लिए कितना व्यस्त दिन रहा था। उसके चेहरे से भी व्यस्तता झलक रही थी ग्रौर उसके शरीर के झुकाव से भी।

लेकिन वह सदा प्रत्येक व्यक्ति की ग्रोर ध्यान देती थी। वह रुक गई। "हां ?"

उसने इस शब्द के साथ 'कोस्तोग्लोतोव' नहीं जोड़ा। जब कभी वह डाक्टरों या नर्सों से उसका उल्लेख करती थी तभी इस प्रकार नाम लेती थी। ग्रन्यथा वह उसे सीधे ही जवाब देती थी सम्बोधित करती थी।

वेरा कोर्निलएवना, मैं ग्राप से एक बहुत महत्वपूर्ण बात पूछना चाहता हूं। क्या ग्राप मीता से यह कह सकती हैं कि मुझे कल निश्चय ही छुट्टी दे दी जायेगी ?"

"क्यों ?"

"यह जरूरी है। बात यह है कि मुझे कल शाम को ही नगर से रवाना

होना होगा और इसका अर्थ है…"

"अच्छा तो लेव तुम आगे चलो। मैं अभी एक मिनट में आती हूं।"

लेव लियोनिदोविच आगे बढ़ गया। उसका शरीर आगे की ओर झुका हुआ था और वह दायें और बायें ओर झूलता हुआ सा चल रहा था। उसके दोनों हाथ सफेद कोट की सामने की जेबों में धंसे हुए थे और उसकी पीठ का झुकाव डोरियों को तोड़े डाल रहा था। "मेरे दफ्तर में आओ।" वेरा कोर्निलएवना ने ओलेग से कहा।

वह उसके आगे-आगे चली। वह बेहद हल्कापन अनुभव कर रही थी।

वह एक्स-रे कक्ष में प्रवेश कर गईं। यह वही स्थान था जहां उसकी दोन्तसोवा से लम्बी बहस हुई थी। वह उसी मेज पर बैठ गई, जिस पर अच्छी तरह रन्दा नहीं किया गया था और उसे भी अपने पास इशारे से बैठ जाने के लिए कहा लेकिन वह खड़ा ही रहा। कमरे में और कोई नहीं था। सूरज की रोशनी भीतर आ रही थी। जिस स्थान पर धूप पड़ रही थी वहां धूल के छोटे-छोटे कण सुनहरी रेखा में नाच रहे थे। और एक्स-रे मशीन के पालिशदार हिस्सों से धूप परावर्तित हो रही थी। यहां वातावरण इतना प्रसन्नतादायक और प्रकाशमान था कि आपके मन में अपनी आंखें बन्द कर लेने की इच्छा जगती।

"लेकिन अगर मुझे कल तुम्हें छुट्टी देने का समय न मिले? तुम जानते हो कि तुम्हारा एपी विवरण लिखना होगा।"

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अफसराना ढंग से बात कर रही थी या उसे केवल चिढ़ा रही थी। "आपने किस शब्द का इस्तेमाल किया। एपी, क्या, आपने क्या कहा?"

"एपी क्राइसिल—यह पूरे इलाज का विवरण होता है। यह विवरण तैयार हुए बिना तुम्हें छुट्टी नहीं दी जा सकती।"

उन नाजुक कन्धों पर काम का न जाने कितना भार डाल दिया गया था। सर्वत्र लोग उसे पुकार रहे थे, उसके लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। एक बार फिर उसने उसे उलझन में डाल दिया था। उसे अभी उसके इलाज का पूरा विवरण लिखना था।

लेकिन वह वहां बैठी हुई थी और लग रहा था मानो वस्तुतः स्वयं प्रकाशमान हो उठी हो। वह केवल वेरा नहीं लग रही थी, महत्व केवल उसकी सहृदय और कोमल नजरों का नहीं था। बल्कि उसके चारों ओर तेज परावर्तित प्रकाश छाया हुआ था और स्वयं उसके शरीर से विकरित होता हुआ दिखाई पड़ रहा था। "तुम क्या चाहते हो? क्या तुम तुरन्त चले जाना चाहते हो?"

"इस बात का कोई महत्व नहीं है कि मैं क्या चाहता हूं। मैं यहां

रहकर भी प्रसन्न रहूँगा। लेकिन मेरे पास ऐसी कोई जगह नहीं है जहां मैं रात बिता सकूं। मैं एक और रात रेलवे स्टेशन पर नहीं बिताना चाहता।"

"हां, यह तो ठीक है, वे तुम्हें होटल में जगह नहीं देंगे।" वह बोली और उसने अपना सहमतिसूचक सिर हिलाया। वह गुर्राई भी।

"बड़ी मुसीबत है। वह बूढ़ी अरदली जो मरीजों को अपने फ्लैट में टिका लेती हैं आज काम पर नहीं है। वह बीमारी की छुट्टी पर है। हम इस सम्बन्ध में क्या कर सकते हैं।" उसने अपना ऊपर का होंठ नीचे के दांतों पर फेरते हुए ये शब्द कहे और अपने सामने रखे कागज पर अनजाने ही कुछ रेखा-चित्र खींचती रही। यह वस्तुत: एक-दूसरे को काटते हुए दो छोटे-छोटे दायरे थे। "ठीक है···ऐसा कोई कारण नहीं है कि तुम···मेरे घर पर नहीं ठहर सकते।"

यह क्या बात थी? वस्तुत: उसने क्या कहा था? शायद उसने ठीक से नहीं सुना। क्या उसे यह बात फिर दोहराने का अनुरोध करना चाहिए?

उसके गाल स्पष्ट रूप से लाल हो उठे थे और वह पहले की तरह ही अपनी नजरें उसकी नजरों से बचा रही थी। उसने यह बात बड़े सीधे-सादे ढंग से कही थी। मानो यह रोजमर्रा की बात हो। मानो यह बड़ी साधारण बात हो कि एक रोगी डाक्टर के फ्लैट में रात बिताये। "कल का दिन मेरे लिये एक असामान्य दिन होगा," उसने आगे कहा। "मैं अस्पताल में केवल दो घंटे ही रहूँगी सुबह के समय। और शेष समय में घर पर ही रहूँगी। फिर चार बजे के बाद मैं फिर बाहर जाऊंगी··मैं आसानी से रात अपने मित्रों के साथ गुजार सकती हूं···"

इसके बाद उसने ओलेग की ओर देखा। उसके गाल लाल हो उठे थे। लेकिन उसकी आंखें स्वच्छ, चमकदार और निर्दोष दिखाई पड़ रही थीं। क्या उसने वेरा की बात ठीक से समझ ली है? क्या वह उस बात के योग्य है, जो उससे कही जा रही है?

बस यह बात ओलेग की समझ में आ ही नहीं रही थी। कोई आदमी एक औरत को उस समय कैसे समझ सकता है जब उसने कोई ऐसी बात कह डाली हो?···यह बात पृथ्वी को झकझोर देने जैसी हो सकती है अथवा इससे बहुत कम महत्व की। लेकिन उसने यह नहीं सोचा। सोचने के लिए समय ही नहीं था।

उत्तर की प्रतीक्षा करते समय वेरा के चारों ओर गरिमा की आभा दिखाई पड़ रही थी।

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद," वह किसी प्रकार बोला। "सचमुच··· यह तो बड़ी अद्‌भुत बात होगी।" वह उस बात को पूरी तरह भुला चुका था जब न जाने कितने समय पहले उसके बचपन में उसे यह बताया गया था कि

किस प्रकार उसे आचरण करना चाहिए और नम्रता से उत्तर देना चाहिए। "यह अद्भुत है। लेकिन मैं आपको आपके···वंचित नहीं करना चाहता। मैं यह नहीं करना चाहूँगा।"

"तुम इस बात की चिन्ता न करो," वेगा ने आश्वासनदायक मुस्कराहट से कहा "और यदि तुम्हें दो या तीन दिन और भी ठहरना हो तो हम उसकी व्यवस्था का कोई तरीका निकालेंगे। क्या तुम्हें नगर छोड़ते समय कष्ट होगा ?"

"हां, सचमुच मुझे खेद है···लेकिन और बात भी है। यदि मैं यहां रुका रहता हूं तो आपको मेरे अस्पताल से छुट्टी के प्रमाण पत्र पर कल की नहीं परसों की तारीख डालनी होगी अन्यथा कोमिन्दातुरा यह जानना चाहेगा कि मैं शहर से गया क्यों नहीं। वह मुझे फिर जेल में डाल सकते हैं।"

"ठीक है हम सब जगह धांधली करेंगे। तो मुझे मीता से आज यह कहना है कि वह कल तुम्हें छुट्टी दे और तुम्हारे प्रमाण-पत्र पर परसों की तारीख डाले ? तुम कैसे जटिल आदमी हो।"

लेकिन उसकी आंखें इन जटिलताओं से जरा भी चिन्तित नहीं थीं, वह हंस रही थी।

"जटिल मैं नहीं हूं, वेरा कोर्निलएवना, जटिल तो यह व्यवस्था है। और मुझे दो प्रमाण-पत्रों की ज़रूरत होगी एक की नहीं। जैसे और सबको दिया जाता है।"

"क्यों ?"

"कोमिन्दातुरा एक प्रमाण-पत्र मेरी यात्रा की अनुमति देने के लिए अपने पास रखेगा दूसरा प्रमाण-पत्र मैं अपने पास रखूंगा।" (वह कोमिन्दातुरा को उसकी प्रति न देने का भरसक प्रयास करेगा। वह चिल्लायेगा, कसम खायेगा कि केवल यही प्रमाण-पत्र उसके पास है। आखिरकार एक अतिरिक्त प्रति से उसे कोई हानि भी तो न होगी। आखिरकार उसने प्रमाण-पत्र के लिए अस्पताल में इतने समय तक कष्ट भी तो भोगा है, क्यों नहीं क्या ?)"

"तो तुम्हें एक तीसरी प्रति रेलवे स्टेशन के लिये ज़रूरी होगी।" वह बोली। उसने कागज के पुरजे पर कुछ शब्द लिख दिये। "यह मेरा पता है। क्या मैं तुम्हें समझाऊं कि वहां किस तरह पहुंचा जा सकता है ?"

"मैं इसे ढूंढ लूंगा।" वेरा कोर्निलएवना। (क्या वह गम्भीर थी ? क्या वह सचमुच उसे आमंत्रित कर रही थी।)

"और···" उसने कागज के कुछ आयताकार टुकड़े उठाये और उनमें से एक को अपने पते के साथ जोड़ दिया···ये वे नुस्खे हैं जिनकी बात लुदमिला अफानासएवना ने कही थी। "इनकी अनेक प्रतियां हैं ताकि तुम थोड़ी-थोड़ी करके दवा खरीद सको।

"नुस्खे उफ् नुस्खे।"

उसने उन नुस्खों का इस प्रकार उल्लेख किया था मानो ये उसके पते की मामूली महत्वहीन पूरक बातें हों। इलाज के दो महीनों में उसने एक बार भी इस विषय का उल्लेख नहीं किया था।

इसे ही चतुरता कहते हैं।

वह उठ खड़ी हुई। वह दरवाजे की ओर बढ़ रही थी।

उसे अपने काम पर जाना था, लेव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था...

और तभी अचानक वहां फैले हुए प्रकाश में जो पूरे कमरे को भर रहा था ओलेग ने उसे इस प्रकार देखा मानो पहले कभी न देखा हो। वह प्रकाशमान थी और उसकी कमर दुबली-पतली थी। वह दूसरे की कठिनाइयों को इस सीमा तक समझती थी, वह एक मित्र थी। उसे उसकी बेहद ज़रूरत थी। ऐसा लग रहा था मानो ओलेग ने उसे पहले कभी न देखा हो।

इस बात से वह प्रसन्न हो उठा। वह स्पष्ट बात करना चाहता था वह बोला, "वेरा कोर्निलएवना, आप इतने समय तक मुझ से क्यों नाराज रहीं।"

वेरा ने उस प्रकाश से जो उसे घेरे हुए था उसकी ओर देखा। वह मुस्कुराई। यह एक प्रकार की बुद्धिमत्तापूर्ण मुस्कराहट थी। "तुम्हारा मतलब है कि तुम ऐसी कोई बात नहीं सोच पाते जो तुमने गलत की हो?"

"नहीं।"

"कोई भी नहीं?"

"एक भी बात नहीं।"

"सोचने की कोशिश करो।"

"मैं कोई भी बात नहीं सोच पा रहा। कम-से-कम मुझे थोड़ा-सा संकेत तो दो।"

"मुझे जाना है..."

उसके हाथ में चाबी थी। उसे दरवाजे का ताला बन्द करना था और फिर वहां से जाना था। उसके साथ रहना कितना अद्भुत था। काश वह दिन भर उसके साथ रह पाता।

बरामदे में जाते समय वह बहुत छोटी-सी दिखाई पड़ रही थी। वह खड़ा-खड़ा उसे देखता रहा।

इसके तुरन्त बाद वह फिर टहलने के लिए बाहर निकल गया। वसन्त ऋतु आ गई थी और स्वच्छ हवा से उसका मन भी नहीं भर रहा था। वह दो घंटे तक निरुद्देश्य इधर-से-उधर घूमता रहा और जी भर कर स्वच्छ हवा में सांस लेता रहा। वातावरण की ऊष्मा को अपने भीतर समेटता रहा। उसे यह बगीचा छोड़कर जाने का खेद होने लगा था। जहां वह कैदी की तरह

रहा था। वह इस बात से उदास था कि जब जापानी एकासिया पर फूल खिलेंगे और ओक वृक्षों की देर से निकलने वाली पहली पत्तियां अंकुरित होंगी तो वह यहां नहीं होगा।

न जाने किस कारण से वह आज मितली महसूस नहीं कर रहा था। उसे कमजोरी भी नहीं थी। वह बगीचे में कुछ खुदाई करना पसन्द करता। वह कुछ चाहता था, कुछ चाहता था पर क्या यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। उसने देखा कि उसका अंगूठा अपने आप उसकी तरजनी की ओर आगे बढ़ रहा है, एक सिगरेट की चाह वह कर रहा है। चाहे सिगरेट पीने की बात उसके मन में कितनी भी अधिक क्यों न आये वह सिगरेट पीना छोड़ चुका था और यहीं यह बात समाप्त हो जाती थी।

वह काफी घूम चुका था। अब वह मीता से मिलने के लिए भीतर चला गया। मीता बहुत अच्छी औरत थी। उसका किट बैग गोदाम से मंगवाया जा चुका था और बाथरूम में छिपा दिया गया था। बाथरूम की चाबी वृद्ध अरदली के पास होगी जो शाम के समय ड्यूटी पर आती है। काम के घंटे समाप्त होने से पहले उसे बाहर के रोगियों के विभाग में जाकर अपने सब प्रमाण-पत्र लेने होंगे।

अस्पताल से उसकी छुट्टी ऐसी दिखाई पड़ रही थी, जिससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता था। वह सीढ़ियों पर चढ़ा। यह अन्तिम मौका नहीं था। पर प्रायः अन्तिम मौका था जब वह इन सीढ़ियों पर चढ़ सकेगा।

सीढ़ियों के ऊपर उसे जोया मिली।

"क्यों, क्या हालचाल है, ओलेग ?" जोया ने बिना किसी भावना के कहा।

उसका बोलने का तरीका आश्चर्यजनक सीमा तक सहज, वस्तुतः पर्याप्त सहज लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उनके बीच कभी कुछ नहीं हुआ था—उन्होंने एक-दूसरे को कोयल सम्बोधनों से नहीं पुकारा था, दि ट्रेम्प के नाच की चर्चा नहीं हुई थी, आक्सीजन का गुब्बारा नहीं फुलाया गया था।

और हो सकता है जोया सही हो। ये सब विचार हर समय उसके मन में क्यों आते रहे? इन्हें क्यों याद रखा जाये? क्यों सदा इनकी सीमा में ही बंधकर रहा जाये?

एक रात को जब वह ड्यूटी पर थी वह उसके पास जाने के बजाये सो गया था। एक दूसरी शाम को वह इनजैक्शन लेकर उसके बिस्तर पर आई थी मानो यह संसार का सबसे अधिक सामान्य कार्य हो। उसने करवट ले ली थी और जोया को इनजैक्शन लगाने दिया था। उन दोनों के बीच जो कुछ विकसित हुआ था, जो आक्सीजन के उस गुब्बारे की तरह कसा तना था जिसे

उन्होंने एक साथ मिलकर उठाया था अचानक धीरे-धीरे नीचे बैठने लगा था और अन्ततः उसका कोई चिन्ह शेष नहीं रह गया था। यदि कुछ शेष रह गया था तो उसका मित्रतापूर्ण अभिवादन। क्यों क्या हाल-चाल है ओलेग ?

वह एक कुर्सी का सहारा लेकर आगे की ओर झुक गया और उसने अपनी लम्बी बाहें अपने सामने बांध रखी थीं। बालों का गुच्छा उसके माथे पर लटक रहा था। रक्त के श्वेत कणों की गणना—२८००, वह बोला "कल से कोई एक्स-रे नहीं। मुझे कल छुट्टी दी जा रही है।"

"कल !" वह अपनी सुनहरी पलकें जल्दी-जल्दी झपकती हुई बोली। "बहुत अच्छा, गुड लक! बधाई!"

"ऐसी क्या बात है, जिसके लिये तुम मुझे बधाई दे सकती हो?"

"कृतघ्न कहीं के!" जोया ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"अस्पताल में अपने पहले दिन को सोचने की कोशिश करो। वहां सीढ़ियों पर उस चौड़ी जगह पर जहां तुम चढ़े थे। तुम्हें यह आशा नहीं थी कि तुम एक सप्ताह से अधिक जीवित रह सकोगे? क्यों थी क्या?"

यह बात भी सच थी।

नहीं सचमुच वह बढ़िया लड़की थी जोया—प्रसन्न कठोर परिश्रम करने वाली निष्ठावान। उसने अपने सही विचार ही व्यक्त किये थे। बस एक बार अपने बीच की उलझन से मुक्ति पा लेने के बाद इस भावना से मुक्ति पा लेने के बाद कि उन्होंने एक दूसरे को धोखा दिया है और फिर शुरू से नए सम्बन्धों का समारम्भ कर देने के बाद कोई ऐसा कारण था कि वह मित्रों की तरह नहीं रह सकते थे?

"हां, यह बात है।" वह मुस्कुराया।

"हां, यह बात है।" वह मुस्कुराई।

उसने ओलेग को मोलिनेत की याद नहीं दिलाई।

तो स्थिति यह थी। सप्ताह में चार बार वह अस्पताल में ड्यूटी पर आयेगी। वह अपनी आंखें पाठ्य पुस्तकों पर गड़ायेगी। कभी-कभी वह कसीदा-कारी भी करेगी। शहर लौटने पर वह नाच पर जायेगी और इसके बाद किसी अंधियारी जगह किसी आदमी के साथ खड़ी होगी···

आप उसके २२ वर्ष की होने और स्वस्थ होने के कारण नाराज नहीं हो सकते थे, हर दृष्टि से स्वस्थ होने, एक-एक कोशिका के, रक्त की एक-एक बूंद के स्वस्थ होने के कारण आप उससे नाराज नहीं हो सकते।

"गुड लक !" वह बिना किसी खीझ के बोला।

वह आगे बढ़ चला था कि तभी उसे पुराने सीधे-सादे और सहज स्वर में जोया की यह आवाज सुनाई पड़ी, "ए ओलेग !"

उसने पीछे मुड़कर देखा।

"क्या तुम्हारे पास रात बिताने के लिये कोई जगह है? मेरा पता लिख लो।" (क्या? वह भी?)

ओलेग ने अचम्भे से उसकी ओर देखा। यह बात एकदम उसकी कल्पना से बाहर थी।

"वहां पहुंचना बड़ा आसान है। एकदम ट्राम के स्टाप के पास है। बस हम दो ही रहते हैं, नानी और मैं। पर हमारे पास दो कमरे हैं।"

"तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद," उसने कागज का छोटा-सा पुरजा पकड़ते हुए बड़ी उलझन से कहा। "लेकिन मैं नहीं जानता…देखो तब क्या स्थिति होती है…"

"कौन जाने?" वह मुस्कराई।

तैंगा के घने जंगलों में रास्ता ढूंढ निकालना आसान है। लेकिन आप को यह पता लगाना मुश्किल होता है कि औरतों के समक्ष आपकी क्या स्थिति है। वह दो कदम आगे बढ़ा और उसने देखा कि सीढ़ियों के एक अंधियारे कोने में सिबगातोव सख्त तख्तों के पलंग पर बुरी हालत में पड़ा था। आज का तेज सूरज भी एक मद्धिम परावर्तित प्रतिबिम्ब के रूप में ही उसके पास पहुंच सकता था। उसकी आंखें ऊपर को उठी थीं वह छत देख रहा था। पिछले दो महीनों में वह बहुत कमजोर हो गया था।

कोस्तोग्लोतोव कड़े तख्तों के पलंग पर बैठ गया।

"शराफ,ऐसी अफवाहें चल रही हैं कि सब निष्कासितों को रिहा कर दिया जायेगा। दोनों वर्गों के निष्कासितों को, विशेष और प्रशासनिक"

शराफ ने अपना सिर ओलेग की ओर नहीं घुमाया। केवल अपनी आंखें घुमाईं। ऐसा लग रहा था कि ओलेग की आवाज़ की ध्वनि के अलावा अन्य कोई बात उसकी समझ में नहीं आई।

क्या तुमने सुना है? इसका अर्थ है तुम और मैं दोनों। इस बार यह बात पूरे विश्वास से कही जा रही है।

लग रहा था सिबगातोव की समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

"क्या तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं होता? क्या तुम घर जाओगे?"

सिबगातोव की आंखें फिर छत पर लग गईं। बड़ी अनिच्छा से उसके होंठ खुले अब मेरे लिये इसका उपयोग नहीं। यह पहले होना चाहिए था।

ओलेग ने अपना एक हाथ उसके हाथ पर रख दिया। उसने जो हाथ पकड़ा था वह उसकी छाती पर इस प्रकार रखा था मानो वह मुर्दा हो।

नेल्या उनके पीछे से बहुत तेजी से वार्ड के भीतर गई। "क्या यहां कोई प्लेट बची है?" वह चिल्लाई। इसके बाद वह उसकी ओर मुड़ी। "ए तुम झबरे, आज तुम अपना लंच क्यों नहीं खा रहे हो। जल्दी करो, मुझे प्लेट वापस ले जाना है मैं तुम्हारी इन्तजार क्यों करूं?"

अविश्वसनीय। कोस्तोग्लोतोव ने अपना लंच नहीं लिया था। और उसे इस बात का ध्यान तक नहीं आया था। ज़रूर उसका सिर चकरा रहा होगा। एक भी बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। "क्यों, तुम्हारा प्लेटों से क्या ताल्लुक है?" उसने नेल्या से पूछा।

"क्या मतलब? अब मैं भोजन की अरदली हूं। अब मैं ही भोजन देती हूं?" नेल्या ने गर्व से घोषणा की, "मेरा नया कोट देखो, क्यों क्या यह साफ नहीं है?"

ओलेग उठ खड़ा हुआ और अस्पताल का आखिरी लंच खाने चल पड़ा। एक्स किरणों ने चुपचाप, अदृश्य रूप से बिना किसी आवाज के उसकी भूख को जला डाला था। लेकिन कैदी के रूप में उसने जो कुछ सीखा था उसके कारण से प्लेट में कुछ भी बाकी छोड़ना असम्भव था।

"जल्दी करो, चलो, जल्दी करो!" नेल्या ने हुक्म दिया।

उसका कोट ही नया नहीं था। उसने अपने बालों को भी दूसरे तरीके से घुंघराला करवाया था।

"अब कोई तुम्हें देखे।" कोस्तोग्लोतोव ने अचरज से कहा।

"ठीक है, मेरा कहने का मतलब यह है कि ३५० रूबल तनख्वाह पर फर्श पर घुटने के बल रेंग-रेंग कर पोंछा लगाने का काम स्वीकार करना मेरी कितनी बड़ी मूर्खता थी ओह कैसा काम था! और खाने को भी कुछ मुफ्त नहीं मिलता था...।"

१३. ...और एक कुछ कम सुखी

अब मेरे लिए यहां से चल देने का समय आ गया है। एक ऐसे वृक्ष की तरह जो अपने समकालीनों से अधिक समय तक जीवित रहा हो और जिसे अपने भीतर उदासी भरा खोखलापन अनुभव होता हो, कोस्तोग्लोतोव ने उस रोज शाम को यह अनुभव किया कि वार्ड अब उसका घर नहीं रहा है। यद्यपि सब बिस्तर भरे थे और बही पुराने मरीज फिर वही पुराने सवाल पूछ रहे थे। मानो इससे पहले कभी ये सवाल न पूछे गये हों। "क्या यह कैन्सर है ? क्या यह कैन्सर नहीं है ? क्या वे मुझे स्वस्थ कर सकेंगे अथवा नहीं ? और दूसरी ऐसी क्या दवायें हैं जो कुछ सहायक बन सकती हों।"

वादिम वहां से जाने वाला अन्तिम व्यक्ति था। वह दिन के अन्त में गया। सोना आ गया था और उसे रेडियोलोजिकल वार्ड में भेजा जा रहा था।

ओलेग अकेला रह गया था। बिस्तरों पर नजर घुमाने के लिए, यह सोचने के लिए कि पहले इन बिस्तरों पर कौन-कौन था और उनमें से कितनों की मृत्यु हो गई थी। यह बात सामने आई कि बहुत अधिक लोग नहीं मरे थे।

वार्ड के भीतर इतनी घुटन थी और बाहर का वातावरण इतना गर्म था कि कोस्तोग्लोतोव खिड़की आधी खुली छोड़कर ही सो गया। वसन्त ऋतु की हवा खिड़की की सिल को पार कर उसके ऊपर बहती रही। वसन्त ऋतु की ताज़ा और जीवन्त आवाजें पुराने मकानों के छोटे-छोटे आंगनों से सुनाई पड़ रही थीं। ये मकान अस्पताल की दीवार के उस ओर एक दूसरे से बहुत पास-पास बने हुए थे। वह यह नहीं देख सकता था कि ईंट की दीवार के पीछे छोटे-छोटे आंगनों में क्या हो रहा है लेकिन आवाजें स्पष्ट सुनाई पड़ती थीं। दरवाजों का जोर से बन्द होना, बच्चों का चिल्लाना, शराबियों का शोर मचाना, ग्रामोफोन के रेकार्डों की तीखी आवाज़ और फिर बत्तियां बुझ जाने के बाद गहरी शक्तिशाली आवाज़ में गाती हुई एक औरत के गीत की कुछ पंक्तियां, कौन कह सकता था कि वह यह गीत पीड़ा से भर कर गा रही थी अथवा आनन्द से :

"तो इस युवा और सुन्दर खनिक को
वह अपने साथ अपने घर ले गई..."

सब गीत एक ही विषय के बारे में थे और इसी प्रकार सब लोगों के

विचार भी इसी विषय पर केन्द्रित थे। लेकिन ओलेग को अपना मन दूसरी ओर लगाने की आवश्यकता थी।

इस रात को, अन्य सब रातों की तुलना में ओलेग को नींद न आ सकी जबकि उसे अगले दिन सुबह जल्दी उठना था और अपनी ताकत को फिजूल खर्च होने से बचाना था। उसके मन में विचारों का निरन्तर क्रम चल रहा था। ये विचार निरर्थक और महत्वपूर्ण दोनों प्रकार के थे : रूसानोव से उसकी बहस की उचित परिणति न होना ; बे बातें जो शुलुबिन उसे नहीं बता सका; वे तर्क जो वह वादिम से बातचीत के दौरान पेश कर सकता था; मार डाले गये बीटलका सिर; कादमिन दमपती के चेहरे, जो पेराफिन लैम्प की सीधी रोशनी में जीवन्त दिखाई पड़ रहे थे। वह कादिम दमपती को शहर के अपने लाखों अनुभव बता रहा था और उन्होंने उसे आल की खबरें सुनाई थीं, और उन संगीत गोष्ठियों की भी जानकारी दी थी, जो उन्होंने उसके चले जाने के बाद रेडियो पर सुनी थीं। वे तीनों यह अनुभव करेंगे मानो वह छोटी-सी नीची छत वाली झोंपड़ी ही समस्त ब्रह्माण्ड हो। वह अपने बिस्तर पर पड़ा-पड़ा १८ बरस की किन्नास्त्रोन के सतही अन्य मनस्क भाव की कल्पना कर रहा था अब उसके पास जाने का ओलेग साहस नहीं करेगा। और वे दो निमन्त्रण ही तो हैं जो दो अलग औरतों ने उसे अपने घरों पर रात बिताने के लिये दिये हैं। यह एक ऐसी नई बात थी जिस पर उसके लिए अपना सिर धुनना आवश्यक था। वह उनके इन निमन्त्रणों की क्या व्याख्या करे, उनका क्या निष्कर्ष निकाले ?

वह क्रूर संसार, वह संवेदनाशील संसार, जिसने ओलेग की भावनाओं को उनका वर्तमान रूप दिया था उसमें "सहज सहृदयता के लिए कोई स्थान नहीं था।" वह यह भूल चुका था कि ऐसी किसी बात का भी अस्तित्व होता है। सहज सहृदयता उसे इन निमन्त्रणों का सबसे अधिक असम्भावित स्पष्टीकरण दिखाई पड़ता था।

तो उनके मन में क्या है ? और उसे क्या करना चाहिए ? उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह करवटें बदलता रहा और फिर अपनी पीठ के बल सीधा लेट गया। और उसकी अंगुलियां लगातार एक अदृश्य सिगरेट को लपेट कर तैयार कर रही थीं।

ओलेग उठ खड़ा हुआ और स्वयं को बाहर टहलने के लिए घसीट ले गया।

सीढ़ियों के चौड़े हिस्से पर अर्द्ध अन्धकार था। दरवाजे के बराबर सदा की तरह सिबगातोव टब में बैठा हुआ था और अपने सैक्रम (त्रिकास्थि) को बचाने के लिये संघर्ष कर रहा था। वह सब्र से काम ले रहा था और अब

उसे कोई आशा नहीं रह गई थी। निराशा ने अपनी छाप उसके ऊपर लगा दी थी।

ड्यूटी नर्स की मेज़ पर सिवगातोव की ओर पीठ किये एक छोटे कद की, कम चौड़े कन्धों वाली स्त्री सफेद कोट पहने लैम्प के नीचे झुकी हुई बैठी थी। वह कोई नर्स नहीं थी। आज रात तुरगुन की ड्यूटी थी और शायद वह अब तक बैठक के कमरे में सो चुका था। यह विलक्षण रूप से सुसंस्कृत चश्मा लगाने वाली एलिजावेता एनातोलएवना थी। वह शाम के अपने सब काम खत्म कर चुकी थी और वहां बैठी हुई पढ़ रही थी।

ओलेग ने जो दो महीने का समय अस्पताल में बिताया था उसमें उसने देखा था कि वह तीव्र बुद्धि वाली अरदली अक्सर फर्श पर पोंछा लगाने के लिए उनके पलंगों के नीचे झुकती थी जबकि वे ऊपर लेटे रहते थे। वह सदा कोस्तोग्लोतोव के फौजी बूट एक ओर उठाकर रख देती थी, जिन्हें वह पलंग के नीचे अंधेरी जगह पर छिपाकर रखता था और कभी भी इन जूतों के लिए बुरा भला नहीं कहती थी। वह दीवार के निचले हिस्से को साफ करती थी, थूकदान साफ करती थी और उन पर उस समय तक पालिश करती रहती थी जब तक वे चमक न उठते थे। वह लेबल लगे जार रोगियों को देती थी। ऐसी प्रत्येक भारी असुविधाजनक अथवा गन्दी चीज जिन्हें छूने की नर्सों से आशा नहीं की जा सकती थी, वह उठाती थी और इधर-उधर ले जाती थी।

वह बिना शिकायत किये जितना अधिक काम करती थी वे लोग उसकी ओर उतना ही कम ध्यान देते थे। जैसा कि दो हजार वर्ष पुरानी कहावत में कहा गया है आंखें होते हुए भी तुम नहीं देख सकते।

लेकिन कठोर जीवन दृष्टि को बेहतर बना देता है। वार्ड में कुछ ऐसे लोग थे जो तुरन्त एक-दूसरे को पहचान लेते थे, वे यह जान जाते थे कि वास्तव में वे कौन हैं। यद्यपि वर्दी, कन्धे पर लगे बिल्ले या बाजू पर लगी हुई पट्टी नहीं होती थी फिर भी वे एक-दूसरे को बड़ी आसानी से पहचान लेते थे। मानो उनके माथों पर कोई चमकदार चिह्न बना हो अथवा उनके पांवों और हथेलियों पर कोई कूट चिह्न बना हो। (वस्तुत: बहुत से सूत्र मिल जाते थे: किसी समय यहां वहां कहा गया कोई शब्द; शब्द के उच्चारण का तरीका; शब्दों के बीच में होंठों को कस कर दबाना; उस समय मुस्कुराना जब अन्य लोग गम्भीर हों अथवा जोर-जोर से हंस रहे हों।) उजबेक और कराकालपाक लोगों को अपनी जाति के आदमियों को पहचानने में कठिनाई नहीं होती थी और न ही उन लोगों को जो कभी कांटेदार तारों की छाया में रह चुके हों।

कोस्तोग्लोतोव और एलिजावेता एनातोलएवना ने बहुत पहले ही एक-दूसरे को पहचान लिया था और वे बड़ी आत्मीयता से अभिवादन करते थे। यद्यपि उन्हें बात करने का मौका कभी नहीं मिला था।

ओलेग उसकी मेज के पास गया। वह अपने स्लीपरों से आवाज करता हुआ चल रहा था ताकि वह अचानक उसके आ जाने से चौंक न उठे। "गुड ईवनिंग एलिजावेता एनातोलएवना।"

वह चश्मा लगाये बिना ही पढ़ रही थी। उसने सामान्य से बिल्कुल अवर्णनीय ढंग से अपना सिर घुमाया मानो अपना कोई काम करने, किसी की बुलाहट पर काम करने के लिये तत्पर हो।

"गुड ईवनिंग।" वह एक निश्चित उम्र की एक महिला की गरिमा से मुस्कुराई, जो अपने घर पर किसी स्वागत योग्य मेहमान की अगवानी कर रही हो।

मित्रतापूर्ण भाव से और बड़े शान्त ढंग से उन्होंने एक दूसरे को देखा इस दृष्टि का यह अर्थ था कि वह सदा एक दूसरे की सहायता के लिये तत्पर रहे हैं।

लेकिन ऐसी कोई सहायता नहीं थी जो वे एक दूसरे को दे सकते थे।

ओलेग ने उस पुस्तक को और अच्छी तरह देखने के लिये अपना झबरा सिर आगे झुकाया। "फ्रांसीसी भाषा की एक और किताब?" उसने पूछा। "यह क्या है?"

"क्लाद फेरर," विचित्र अरदली ने "ल" अक्षर का बड़ी कोमलता से उच्चारण करते हुये उत्तर दिया।

"आपको यह फ्रांसीसी भाषा की किताबें कहां से मिल जाती हैं?"

"शहर में विदेशी भाषा का एक पुस्तकालय है और एक वृद्धा भी है मैं उससे भी ये किताबें पढ़ने के लिये लाती हूं।"

कोस्तोग्लोतोव ने पुस्तक की ओर इस तरह तिरछी नजर डाली जैसे कोई कुत्ता भूसा भरी चिड़िया का मुआइना करता है। "हमेशा फ्रांसीसी भाषा की पुस्तकें ही क्यों?" उसने सवाल किया।

उसकी आंखों और होंठों के पास कौवे के पंजों जैसी जो झुर्रियां पड़ी थीं उसकी उम्र बता रही थीं और उसकी बुद्धिमता और कष्टों की व्यापकता का भी आभास दे रहीं थीं।

"ये आपको इतनी पीड़ा नहीं पहुंचाती," उसने उत्तर दिया। वह कभी भी ऊंचे स्वर में नहीं बोलती थी। उसने प्रत्येक शब्द का बड़ा स्पष्ट और कोमल उच्चारण किया?

"पीड़ा से क्यों डरें?" ओलेग ने आपत्ति उठाई। उसके लिये बहुत देर तक खड़े रह पाना कठिन हो पा रहा था। उस अरदली ने यह देखा और एक कुर्सी उधर खींच लाई।

"कितने वर्ष हो गए हैं? शायद पिछले दो सौ वर्षों से हम रूसी ऊह, आह करते आ रहे हैं। "पेरिस! पेरिस!" यह आपके कानों के पर्दे फाड़

डालने के लिये पर्याप्त है," कोस्तोग्लोतोव गुर्राया। "हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम पेरिस की हर गली और हर छोटे से छोटे कैफे की जानकारी रखते हों मैं तो द्वेषवश ही पेरिस नहीं जाना चाहता।"

"यह बात नहीं है ?" वह हंसी और वह भी उसके साथ हंसा। "तुम एक निष्कासित होना अधिक पसन्द करोगे ?"

वे समान रूप से हंसे। यह एक ऐसी हंसी थी, जो शुरू होने के बाद विचित्र ढंग से घिसटती हुई दिखाई पड़ी।

"यह सच है," कोस्तोग्लोतोव ने शिकायत के स्वर में कहा। "ये लोग हमेशा चहकते रहते हैं, अनावश्यक क्रोध से भड़कते हैं और मामूली बातों पर बहस करते हैं। यह देखकर आपके मन में यह भाव उठता है कि इन्हें थोड़ा सा नीचे घसीट लाया जाये, हे, मित्रो, कठोर श्रम के समक्ष तुम्हारी क्या हालत होगी ? तुम काली रोटी पर बिना किसी गर्म भोजन के कैसे काम चला सकोगे ?"

"यह इन्साफ की बात नहीं होगी। मेरा अभिप्राय है कि उन लोगों ने काली रोटी से बच निकलने में सफलता पाई और इसका श्रेय उन्हें दिया जाना चाहिये।"

"ठीक है, हो सकता है, हो सकता है कि मेरे मन में ईर्ष्या हो। पर फिर भी मैं उन्हें थोड़ा बहुत नीचे जरूर खींचना चाहता हूं।"

कोस्तोग्लोतोव वहां बैठा हुआ बेचैनी से इधर-उधर हिल रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसका कद आवश्यकता से अधिक ऊंचा हो और यह उसके लिये भार बन गया हो। वार्तालाप के अन्तराल को भरने का प्रयास किये बिना ही उसने अचानक बड़े सहज और सीधे तरीके से सवाल किया, "क्या आपके पति के कारण···यह हुआ अथवा आपके कारण ही ?"

उसने यह प्रश्न इस तरह अचानक और प्रत्यक्ष रूप से पूछा था मानो वह उसकी रात की ड्यूटी के बारे में ही सवाल पूछ रहा हो, "पूरा परिवार ही। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि उसे किसे किसके कारण सजा मिली मुझे नहीं मालूम।"

"क्या अब आप सब लोग एक साथ हैं ?"

"नहीं, मेरी बेटी निष्कासन में ही मर गई। युद्ध के बाद हम लोग यहां चले आये और उन्होंने मेरे पति को दूसरी बार गिरफ्तार कर लिया। वे उन्हें शिविर में ले गये।"

"और अब तुम अकेली हो ?"

"नहीं मेरा एक छोटा सा लड़का है। उसकी उम्र आठ साल है।"

ओलेग ने उसके चेहरे की ओर देखा। यह दया याचना से कंपित नहीं हुआ था।

हो ही क्यों ? यह एक शुद्ध यथार्थ के धरातल पर वार्तालाप था। "दूसरी बार सन् ४९ में गिरफ्तारी हुई थी ?" ओलेग ने पूछा।

"हां।"

"यही आशा की जा सकती थी, कौन सा शिविर है ?"

"ताइशेक स्टेशन।"

एक बार फिर ओलेग ने सिर हिलाया। "मैं जानता हूँ," वह बोला "यह लेक शिविर होगा। हो सकता है कि वह लेना नदी के पास हो। पर डाक का पता ताइशेक ही रहता है।"

"तुम भी वहां रहे हो। क्यों ?" वह अपनी आशा को काबू में न रख पा कर बोल उठी।

"नहीं, मैंने केवल इसके बारे में सुना है। शिविरों में हर शिविर के आदमियों से मुलाकात होती ही रहती है।"

"उनका नाम दुजारस्की है। क्या वे तुम्हें कभी मिले ? वे तुम्हें कभी नहीं मिले ?"

वह अभी भी आशा लगाये हुये थी। कहीं उसकी मुलाकात उससे हुई होगी। वह उसके बारे में उसको बतायेगा। दुजारस्की···ओलेग ने अपने होंठ भींचे। नहीं वह उससे नहीं मिला। आपकी मुलाकात हरेक से नहीं हो सकती।

"उन्हें साल में दो पत्र लिखने की इजाजत है।" वह शिकायत के स्वर में बोली। ओलेग ने सिर हिला दिया। यह पुराना किस्सा था। "पिछले साल केवल एक पत्र ही आया मई में। उसके बाद मुझे पत्र नहीं मिला···"

देखिए वह एक धागे से लटक रही थी, आशा के एकमात्र धागे से। आखिरकार वह एक औरत ही थी।

"इसका कोई खास अर्थ नहीं है," कोस्तोग्लोतोव ने बड़े विश्वास से समझाया। "हर कैदी को साल में दो पत्र लिखने की ही इजाजत होती है और ये पत्र कितने हजार हो जाते हैं ? सेंसर करने वाले अफसर आलसी हैं। स्पास्की शिविर में जब एक कैदी गर्मियों में चूल्हे साफ कर रहा था तो उसने लगभग दो सौ बिना भेजे गये पत्र एक सेंसर अफसर के दफ्तर के कमरे के चूल्हे पर देखे। ये लोग इन्हें जलाना भूल गये थे।"

उसने बड़ी सहृदयता से इस बात को समझाने की कोशिश की। यह क्रम इतने लम्बे अरसे से चल रहा था कि अब तक उसे इस बात का आदी हो जाना चाहिए था। लेकिन वह अभी भी उसकी ओर बड़े वन्य और भयभीत तरीके से देख रही थी।

हां, निश्चय ही एक ऐसा समय आना चाहिये जब लोगों को किसी भी बात पर अचरज न हो। पर वे फिर भी अचरज करते ही रहते हैं।

"तो आपके पुत्र का जन्म निष्कासन में हुआ ?"

उसने सिर हिला दिया।

"और अब आपको उसका लालन पालन स्वयं अपने वेतन पर करना पड़ रहा है ? और कोई भी आपको बेहतर काम देने को तैयार नहीं है ? वे सर्वत्र आपके खिलाफ आपके रिकार्ड का इस्तेमाल करते हैं ? क्या तुम किसी गंदी कोठरी में रहती हो ?"

इन बातों को प्रश्न के रूप में कहा गया था। लेकिन इन प्रश्नों में जिज्ञासा का कोई तत्व नहीं था। ये सब बातें स्पष्ट थीं, इतनी स्पष्ट कि आप को मितली आने लगे। एलिजावेता एनातोलएवना के छोटे-छोटे हाथ जो कभी समाप्त न होने वाले पीछे और खौलते हुए पानी से कभी मुक्त न होते थे और जिन पर छोटे-मोटे अनेक घाव बन गये थे अब अच्छे आवरण वाली और छोटे सुन्दर आकार में विदेशी कागज पर छपी पुस्तक पर रखे हुए थे। इस पुस्तक के कोने खुरदरे हो गये थे क्योंकि इन्हें अनेक वर्ष पहले काटा गया था।

"काश एक गन्दी कोठरी में रहना ही मेरी एक मात्र समस्या होती ?" उसने कहा। "संकट यह है कि मेरा लड़का बड़ा हो रहा है। वह होशियार है और वह बहुत सी चीजों के बारे में सवाल पूछता है। मैं उसका लालन-पालन किस तरह करूं ? क्या मैं उसे समस्त सच्चाई के भार से कुचल डालूं ? यह सच्चाई एक व्यस्क को भी मार डालने के लिये पर्याप्त है, क्यों नहीं है क्या ? यह आपकी पसलियाँ तोड़ डालने के लिये पर्याप्त है। अथवा क्या मुझे सच्चाई छिपा लेनी चाहिये और उसे जीवन से समझौता करने के लिये तैयार करना चाहिये ? क्या यही सही रास्ता है ? उसके पिता क्या कहेंगे ? और क्या मुझे सफलता मिलेगी ? आखिरकार उस लड़के की अपनी आंखें हैं, वह देख सकता है।"

"उसके ऊपर सच्चाई प्रकट करो। उसे सब कुछ बताओ !" ओलेग ने बड़े आत्मविश्वास से घोषणा की और मेज के ऊपर रखे हुये शीशे पर उसने अपनी हथेली जोर से दबाते हुए वह बात कही। वह इस प्रकार बोल रहा था मानो उसने स्वयं अनेक बच्चों को पाला पोसा हो, मानो उसने स्वयं कभी एक भी गलती न की हो।

उस स्त्री ने अपना सिर ऊपर उठाया। अपनी दोनों कनपटियां अपने दोनों हाथों से थाम लीं, जिनके ऊपर एक स्कार्फ बंधा था। उसने भयभीत होकर ओलेग की ओर देखा। ओलेग ने उसकी दुखती रग छू ली थी।

"यह बड़ा कठिन है, पिता के बिना एक लड़के को पालना।" वह बोली। "लड़के को सदा किसी के ऊपर निर्भर करने की आवश्यकता होती है। उसे इस बात के संकेत की ज़रूरत होती है कि वह कहां जाये, क्यों नहीं

क्या ? और उसे यह कहां मिलेगा ? मैं सदा गलत बात करती रहती हूं मैं वे बातें करती रहती हूं जो मुझे नहीं करनी चाहियें…" ओलेग चुप था। यह पहला अवसर नहीं था जब उसने यह दृष्टिकोण सुना हो। लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था।

"यही कारण है कि मैं पुराने फ्रांसीसी उपन्यास पढ़ती हूँ। पर मैं केवल रात की ड्यूटी के समय ही यह पढ़ती हूं। मुझे नहीं मालूम कि ये फ्रांसीसी भी अधिक महत्वपूर्ण बातों के बारे में मौन थे, अथवा क्या हमारे जैसा क्रूर जीवन भी उनकी पुस्तकों की दुनिया के बाहर चल रहा था। मुझे संसार का कोई ज्ञान नहीं है। अतः मैं शांतिपूर्वक पढ़ती रहती हूं।"

"तुम नशीली दवा की तरह इसका सेवन करती हो ?"

"यह एक वरदान है," उसने अपना सिर दूसरी ओर घुमाते हुए कहा। उस सफेद स्कार्फ में यह सिर एक पादरिन के सिर जैसा दिखाई पड़ रहा था। "मुझे ऐसी किसी पुस्तक का ज्ञान नहीं है जो हमारे जीवन के समीप हो और आपके भीतर झुंझलाहट पैदा न करे। कुछ लेखक तो पाठकों को मूर्ख समझते हैं। दूसरे झूठ नहीं बोलते। हमारे लेखक इस उपलब्धि पर बड़ा गर्व करते हैं। वे लोग इस अनुसंधान में अपना बेहद समय बिताते हैं कि एक अमुक महान् कवि सन् १८००…में अमुक गली से गुजरा। अथवा अमुक पुस्तक के अमुक पृष्ठ पर उसका संकेत अमुक महिला की ओर था। इन सब बातों का पता लगाना, हो सकता है आसान बात न रही हो। लेकिन यह सुरक्षित था। हां, सुरक्षित था। उन लोगों ने आसान रास्ता चुना। लेकिन उन लोगों ने उनकी उपेक्षा की जो जीवित हैं और आज भी यातनायें भोग रहे हैं।"

जवानी में उसे लोग अवश्य 'लिली' कह कर पुकारते होंगे। तब उस की नाक के ऊपर चश्मे का निशान भी नहीं रहा होगा। बचपन में उसने आंखें मटकाईं होंगी और खिलखिलाई होगी। उसके जीवन में हलका गुलाबी रंग और लेस के वस्त्र रहे होंगे और प्रतीकवादी कवियों की कविता भी। और किसी जिप्सी ने कभी यह भविष्यवाणी नहीं की हो कि वह अपने जीवन के अन्तिम वर्ष एशिया में किसी स्थान पर झाड़ू पोंछा करने वाली एक औरत के रूप में बितायेगी।

"यह साहित्यक दुर्भाग्य उस दुर्भाग्य की तुलना में हंसने योग्य हैं, जिन्हें हमने भोगा है," एलिजावेता ने जोर देते हुए कहा। "एदा को अपने प्रियजनों के पास नीचे आने और वहीं अपने अन्तिम सांस तोड़ने की अनुमति दी गई। लेकिन हमें यह जानने की भी अनुमति नहीं है कि उनका क्या हो रहा है। यदि में लेक शिविर जाऊं…।"

"मत जाना इससे कोई लाभ नहीं होगा।"

"स्कूल में बच्चे अन्ना कैरेनीना के दुःखी, दुर्भाग्यपूर्ण अभिशप्त और

न जाने क्या-क्या जीवन के बारे में निबन्ध लिखते हैं। पर क्या अन्ना सचमुच दुःखी थी। उसने कामोद्वेग का रास्ता चुना और इसकी कीमत चुकाई···यह तो सुख है? वह स्वतन्त्र और गर्वीली थी। लेकिन उस स्थिति को आप क्या कहेंगे जब शांति काल में अनेक ओवरकोट धारी और फौजी टोपी लगाये लोग आपके उस घर में घुस आयें, जहां आपका जन्म हुआ था और जहां आप रह रहे थे, और पूरे परिवार को २४ घंटों के भीतर वह घर और शहर छोड़ कर चले जाने का हुक्म दें और अपने साथ केवल वे चीजें ले जाने की अनुमति हो जिन्हें आपके कमजोर हाथ उठा सकते हैं?"

उसकी आंखें वे सब आंसू बहा चुकी थीं जो बहाये जा सकते थे। अब उनसे एक बूंद भी नहीं झरेगी। पर शायद वह आज भी एक तीव्र और सूखी ज्वाला से प्रज्वलित हो उठ सकती हैं जो उसका इस संसार के लिये एक अंतिम अभिशाप होगा।

"आप अपने घर के दरवाजे खोल देते हैं। सड़क पर गुजरने वाले लोगों को भीतर बुलाते हैं और उनसे अपनी चीजें खरीदने को कहते हैं या यह कहिए कि आप उनसे कुछ पैसे फैंकने की याचना करते हैं ताकि आप रोटी खरीद सकें। इसके बाद काला बाजार के वे सौदागर आते हैं जो शायद इसके अलावा हर बात जानते हैं कि आखिर एक दिन उनके ऊपर भी गाज गिरेगा। अपने बालों में रिबन बांधे आपकी पुत्री अन्तिम बार मोजार्त की धुन बजाने के लिये पियानो पर बैठती है। लेकिन उसका सब्र के बांध टूट जाता है, उसके आंसू फूट निकलते हैं और वह भाग खड़ी होती है। तो मैं फिर अन्ना कैरेनीना क्यों पढ़ूं? शायद जो मैंने अनुभव किया है वह मेरे लिये पर्याप्त है। हमारे बारे में लोगों को कहां पढ़ने को मिलेगा? हमारे बारे में? सौ साल के बाद?"

अब वह प्रायः चिल्ला रही थी। लेकिन भय के वातावरण में इतने लम्बे अरसे तक जिन्दगी काटने का जो प्रशिक्षण उसे मिला था वह उसे अभी छोड़ नहीं पाया था। यह वास्तविक चिल्लाहट नहीं थी। वह चीखी नहीं थी। केवल कोस्तोग्लोतोव ही उसकी आवाज सुन सकता था।

और शायद अपने टब में बैठा हुआ सिबगातोव भी।

उसकी कहानी में बहुत से संदर्भ नहीं थे। फिर भी पर्याप्त थे। "लेनिनग्राद लेनिनग्राद?" ओलेग ने उससे पूछा। "१९३५?"

"तुम पहचान गए?"

"तुम किस सड़क पर रहती थीं?"

"फुर्श तादस्काया," एलिजावेता एनातोलएवना ने उत्तर दिया, उसके स्वर में शिकायत थी पर इस शब्द के उच्चारण से उसे कुछ सुख भी मिला था। "और तुम?"

"जखारएवस्काया। बस आपके बिल्कुल बराबर ही!"

"बस बिल्कुल बराबर ही…उस समय तुम्हारी क्या उम्र थी ?"
"चौदह।"
"क्या तुम्हें कुछ याद है ?"
"बहुत कम।"
"तुम्हें याद नहीं है ? यह एक भूचाल की तरह था। घरों के दरवाजे बिल्कुल खोल दिये गये थे। लोग भीतर घुसते। जो मन करता उठाते और चले जाते। कोई भी सवाल नहीं पूछता था। उन लोगों ने शहर की चौथाई आबादी को निष्कासित कर दिया था। क्या तुम्हें याद नहीं ?"

"हां, मुझे याद है। लेकिन शर्म की बात यह है कि उस समय मुझे संसार में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात नहीं दिखाई पड़ती थी। उन्होंने हमें स्कूल में समझाया था। यह करना क्यों आवश्यक था। इसकी क्यों आवश्यकता थी ?"

किसी लगाम वाली घोड़ी की तरह बड़ी उम्र की इस अरदली ने अपना सिर नीचे ऊपर को हिलाया। "प्रत्येक व्यक्ति घेरे की बात करता है ?" वह बोली। "वे इसके बारे में कविताएं लिखते हैं। इसकी अनुमति है। लेकिन वे ऐसा आचरण करते हैं मानो घेरे से पहले कुछ भी नहीं हुआ।"

हां उसे याद था। सिबगातोव सदा की तरह अपने टब में बैठा हुआ था। जोया उस कुर्सी पर बैठी थी और ओलेग अपनी कुर्सी पर। इसी मेज पर, इसी लैम्प की रोशनी के तले उन लोगों ने घेरे की बात की थी। वे लोग और बात कर भी क्या सकते थे ? क्या घेरे से पहले की बात ?

कोस्तोग्लोतोव वहां बैठा हुआ था और उसने अपना सिर एक ओर अपनी कोहनी पर झुका रखा था और बड़ी उदासी से एलिजावेता एनातोलएवना की ओर देख रहा था। "यह शर्मनाक है," उसने आहिस्ता से कहा। "हम इतने चुप क्यों हैं ? हम उस समय तक चुपचाप क्यों प्रतीक्षा करते रहे जब तक हमारे मित्रों, हमारे रिश्तेदारों और स्वयं हमारे ऊपर ही प्रहार नहीं हुआ ? मनुष्य का स्वभाव ऐसा क्यों है ?"

अचानक उसे इस बात पर अत्यधिक लज्जा का अनुभव हुआ कि उसने अपने दुखों को कितना अधिक बढ़ा-चढ़ाकर देखा था। एक औरत को एक आदमी से किस बात की अपेक्षा होती है ? उसकी न्यूनतम आवश्यकता क्या होती है ? वह इस तरह आचरण करता रहा था मानो कि इसी समस्या पर समस्त जीवन निर्भर करता है कि इसके अलावा उसके देश ने अन्य कोई कष्ट नहीं भोगा अन्य किसी सुख का आनन्द नहीं लिया। वह शर्मिंदा था। पर फिर भी उसके मन में अधिक शांति थी। एक-दूसरे व्यक्ति के कष्टों ने उसे सराबोर कर दिया था और ये कष्ट स्वयं उसके कष्टों को बहा ले गये थे।

"उससे कुछ वर्ष पहले," एलिजावेता एनातोलएवना ने अपनी याद

ताजा करते हुए कहा, "उन लोगों ने अभिजात वर्ग के समस्त सदस्यों को लेनिनग्राद से निष्कासित कर दिया था। मैं समझती हूं कि इनकी संख्या एक लाख थी। लेकिन क्या हमने इस ओर अधिक ध्यान दिया? ये लोग कैसे भूतपूर्व सामन्त थे। वे लोग जो जीवित रह गये थे। वृद्ध और बच्चे, असहाय लोग। हम यह जानते थे, हमने सब कुछ देखा और कुछ नहीं किया। बात यह थी कि इस अत्याचार का उस समय हम शिकार नहीं बने थे?"

"तुम लोगों ने उनके पियानो खरीदे?"

"हमने उनके पियानो चाहे खरीदे। हां सचमुच हमने उनके पियानो खरीदे।"

ओलेग अब यह देख पा रहा था कि इस औरत की उम्र अभी पचास वर्ष भी नहीं हुई थी लेकिन उसके पास से गुजरने वाला कोई भी आदमी यह कहता कि वह बूढ़ी औरत है। एक वृद्धा के सीधे सपाट बालों की लट, जिसे घुंघराला नहीं बनाया जा सकता, सफेद स्कार्फ के नीचे से दिखाई पड़ रही थी।

"लेकिन जब तुम्हें निष्कासित किया गया तो इसका क्या कारण था? क्या अभियोग लगाया गया था?"

"अभियोग की बात सोचने की चिन्ता कौन करे? सामाजिक दृष्टि से हानिकारक अथवा सामाजिक दृष्टि से खतरनाक तत्त्व—वे लोग यही नाम लेते थे। विशेष अध्यादेश जारी किये गये थे। अतः सब कुछ बड़ा आसान था, किसी मुकद्दमे की जरूरत नहीं थी।"

"और तुम्हारे पति का क्या हुआ? वे क्या करते थे?"

"वह कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं थे। वे फिलहारमोनिक वाद्यवृन्द में बांसुरी बजाते थे। दो चार पैग लगाने के बाद उन्हें उलटी-सीधी बातें करने का शौक था।"

ओलेग को अपनी स्वर्गीय मां की याद आई। वे भी इसी प्रकार समय से पहिले वृद्ध हो गईं थी। वे भी इसी तरह चतुर, होशियार महिला जैसी थीं अपने पति के अभाव में इसी प्रकार असहाय थीं।

यदि वे एक ही शहर में रहते होते तो वह इस स्त्री को, अपने पुत्र को सही रास्ते पर आगे बढ़ाने में मदद दे सकता था।

लेकिन यह तो ऐसे पतंगे थे जिन्हें अलग-अलग खानों में पिन लगाकर गाड़ दिया गया हो। प्रत्येक का अपना निर्धारित स्थान था।

"एक हमारा परिचित परिवार था···" वह कहती रही। बेचारी, इतने लम्बे अरसे से उसकी जबान पर ताला लगा था कि अब एक बार यह ताला टूट जाने पर वह निरन्तर बोलते रहने को तैयार थी सब कुछ कह डालना चाहती थी···"हमारे परिचय का एक परिवार था जिसमें बड़े बच्चे थे, एक पुत्र

और एक पुत्री। ये दोनों युवक कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े उत्साही सदस्य थे। अचानक पूरे परिवार को निष्कासन में भेजने का हुक्म सुना दिया गया। बच्चे भागे हुए युवक कम्युनिस्ट पार्टी के जिला कार्यालय में पहुंचे, हमें बचाओ।" वे बोले। "जरूर, हम तुम्हें जरूर बचाएंगे।" उनसे कहा गया। "बस इस कागज पर यह लिख दो···आज की तारीख से मैं यह चाहता हूं कि मुझे अमुक माता-पिता का पुत्र, अथवा पुत्री न समझा जाये। मैं सामाजिक दृष्टि से हानिप्रद तत्त्वों के रूप में उनका त्याग करता हूं और मैं वचन देता हूं कि भविष्य में उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखूंगा और उनके साथ किसी भी प्रकार सम्पर्क नहीं करूंगा।"

ओलेग आगे की ओर प्राय: गिर पड़ा। उसके दुर्बल कन्धे आगे की ओर झुक गए और उसका सिर नीचे की ओर लटक गया। "अनेक लोगों ने ऐसे पत्रों पर हस्ताक्षर किये हैं!"···वह बोला।

"लेकिन उस भाई और बहन ने कहा, हम इस बारे में सोचेंगे। वे घर वापस लौट आये, युवक कम्युनिस्ट पार्टी के अपनी सदस्यता के कार्ड चूल्हे में झोंक दिये और निष्कासन में जाने के लिये अपने बिस्तर बांधने लगे।"

सिबगातोव हिला। उसने बिस्तर का सिरा पकड़ा और स्वयं को बड़े प्रयत्न से टब से बाहर उठाने लगा। अरदली तेजी से उसके पास गई और टब ले लिया। ओलेग भी उठ खड़ा हुआ। अपने बिस्तर पर वापस लौटने के लिये उसे अनिवार्यत: उन्हीं सीढ़ियों से गुजरना था। बरामदे में वह उस कमरे के दरवाजे के सामने से गुजरा जहां द्योमा पड़ा था। इस कमरे का दूसरा रोगी सोमवार को मर गया था। उसका ऑपरेशन हुआ था। उसके स्थान पर उन्होंने ऑपरेशन के बाद शुलुबिन को रख दिया था।

दरवाजा अक्सर बन्द रहता था। लेकिन इस क्षण यह जरा-सा खुला था। भीतर अंधेरा था। अंधेरे में वह किसी की भारी सांस सुन पा रहा था कोई मुश्किल से ही सांस ले पा रहा था। आस-पास कोई नर्स भी नहीं दिखाई पड़ रही थी या तो वे और रोगियों के पास थीं या वे सो रही थीं।

ओलेग ने दरवाजा थोड़ा-सा और खोला और भीतर चला गया।

द्योमा सो रहा था। शुलुबिन ही मुश्किल से सांस ले पा रहा था और कराह रहा था। ओलेग सीधा कमरे के भीतर चला गया। दरवाजा थोड़ा-सा और खुल जाने पर दरवाजे से रोशनी भीतर आने लगी। "अलेक्सेई फिलपोविच···" वह बोला।

सांस की आवाज़ रुकी।

"अलेक्सेई फिलपोविच···क्या तुम्हारी तबीयत खराब है?"

"क्या?" एक दूसरी सांस के साथ यह शब्द बाहर आया।

"क्या तुम्हारी तबीयत खराब है? क्या तुम्हें दवाई चाहिये? क्या

मैं बत्ती जला दूं ?"

"कौन है ?" भयभीत होकर उसने एक और सांस लिया और फिर खांसने लगा। इसके बाद कराहट फिर शुरू हो गई क्योंकि खांसना बड़ा कष्ट-प्रद सिद्ध हुआ था।

"मैं कोस्तोग्लोतोव हूं। ओलेग।" अब वह बिल्कुल बिस्तर के पास खड़ा शुलुबिन के ऊपर झुका हुआ था। अब उसे तकिए के ऊपर रखा शुलुबिन का विशाल सिर कुछ साफ दिखाई पड़ रहा था। "मैं आपके लिए क्या लाऊं ? क्या किसी नर्स को बुलाऊं ?"

"कुछ नहीं।" शुलुबिन ने किसी प्रकार कहा।

वह फिर नहीं खांसा और कराहा भी नहीं। अब ओलेग को और अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था उसे तकिए के ऊपर बालों के छोटे-छोटे गुच्छे भी साफ दिखाई पड़ रहे थे।

"मेरा सब कुछ नहीं मरेगा" शुलुबिन ने फुसफुसाहट के स्वर में कहा। "मेरा सब कुछ नहीं मरेगा।"

वह सचमुच प्रलाप कर रहा होगा।

कोस्तोग्लोतोव ने कम्बल के ऊपर रखा उसका गर्म हाथ अपने हाथों में थाम लिया। उसने आहिस्ता से उसका हाथ दबाया। "अलेक्सेई फिलपो-विच," वह बोला, "आप जीवित रहेंगे ! हिम्मत से काम लो। अलेक्सेई फिलपोविच !"

"एक छोटा-सा टुकड़ा है, क्यों नहीं है क्या ?...एक बहुत छोटा-सा टुकड़ा," वह फुसफुसाहट के स्वर में बोलता रहा।

तभी ओलेग की समझ में आया कि शुलुबिन प्रलाप नहीं कर रहा था, कि उसने उसे पहचान लिया था और उसे ऑपरेशन से पहले के अपने अंतिम वार्तालाप की याद दिला रहा था। उसने कहा था, "कभी-कभी मैं बड़े स्पष्ट रूप से यह अनुभव करता हूं कि मेरे भीतर जो कुछ है वह मेरा समग्र भाग नहीं है। इसके अलावा भी कुछ है पवित्र, अनश्वर, ब्रह्माण्ड भावना का एक छोटा-सा हिस्सा। क्या तुम यह अनुभव नहीं करते ?"

---

१. पुश्किन की एक कविता का उद्धरण। (अनुवादक की टिप्पणी)

१४. सृष्टि का पहला दिन……

बहुत सुबह जब प्रत्येक व्यक्ति अभी सो ही रहा था, ओलेग चुपचाप उठा, अपना बिस्तर बनाया, कम्बल के खोल के चारों कोनों को बीच में तह करके रखा, जैसा कि नियम था और अपने भारी बूटों के पंजों के बल चलता हुआ वार्ड के बाहर निकल गया।

तुरगुन ड्यूटी नर्स की मेज पर सोया हुआ था। घने काले बालों वाला उसका सिर एक खुली पाठ्य पुस्तक के ऊपर रखी उसकी मुड़ी हुई बांह के ऊपर टिका हुआ था।

निचली मंजिल की वृद्ध अरदली ने ओलेग के लिये बाथरूम खोला। अब उसने जो कपड़े पहने, वे उसके अपने थे। लेकिन गोदाम में दो महीने रखे रहने के बाद वे उसे विचित्र लग रहे थे। उसकी पुरानी पतलून, उसकी सेना की घुड़सवारी की बिर्जिस, उसका सूत और ऊन मिला ब्लाउज और ओवरकोट। उन्होंने शिविरों में भी गोदाम में उसके ये कपड़े रखे थे। यही कारण था कि अभी भी इनमें कुछ दम बचा हुआ था। ये पूरी तरह से घिसे हुए नहीं थे। उसका सर्दी के मौसम का टोप, असैनिक था और वह उसने उशतेरेक में खरीदा था। यह उसके लिए आवश्यकता से अधिक छोटा था और वह किसी तरह अपना सिर इसके भीतर घुसेड़ लेता था। लग रहा था कि दिन गरम होगा। अतः ओलेग ने अपना टोप लगाने का ही निश्चय किया, क्योंकि यह टोप लगाकर वह खेत के धोखे जैसा दिखाई पड़ने लगता था। उसने अपनी पेटी ओवरकोट के बाहर नहीं बल्कि ओवरकोट के भीतर ब्लाउज के ऊपर बाँधी। एक सामान्य राहगीर को वह सेना से छटनी में निकाला गया सैनिक दिखाई पड़ता अथवा ऐसा लगता कि मानो कोई सैनिक गारद के कमरे से भाग निकला हो। उसने अपने पुराने किट बैग में अपना टोप रख लिया, जिसके ऊपर चिकनाई के दाग लगे थे, जिसमें तोप के गोले के किसी टुकड़े के कारण छेद बन गया था और जिसे बाद में सी दिया गया था। इसके अलावा जल जाने के कारण भी उसमें एक छेद था। उसके पास मोर्चे पर यही किट बैग था और उसने अपनी चाची से अनुरोध किया था कि जेल में इसका पार्सल बना कर लाये। वह कोई भी अच्छी चीज अपने साथ शिविर में नहीं ले जाना चाहता था।

वह अस्पताल में जो कपड़े पहनता था, उसके बाद ये कपड़े भी खुशनुमा लग रहे थे। इन वस्त्रों में वह स्वयं को स्वस्थ अनुभव कर रहा था।

कोस्तोग्लोतोव वहां से चल निकलने की जल्दी में था। उसे भय था कि कहीं आखिरी क्षण कोई ऐसी बात न हो जाये जिसके कारण उसे रुकना पड़े। वृद्ध अरदली ने बाहरी दरवाजे के हैंडल में लगी छड़ को निकाल दिया और उसे बाहर निकल जाने दिया।

वह बाहर पोर्च में आ गया और शान्त खड़ा हो गया। उसने लम्बी सांस ली। यह ताजा हवा थी, शान्त और स्थिर। उसने संसार की ओर देखा यह नया दिखाई पड़ रहा था और इसमें हरियाली छाती जा रही थी। उसने अपना सिर ऊपर उठाया, आकाश उसकी नजरों के सामने था और कहीं दूर, उस की आंखों से दूर सूरज निकलने के कारण आकाश का रंग गुलाबी हो रहा था। उसने अपना सिर और ऊपर उठाया। पूरे आकाश में विचित्र आकार के, छिद्रिल बादल भरे पड़े थे जो लगता था सदियों के कठोर परिश्रम और कारीगरी के कमाल के बल पर बनाये गए हों। लेकिन बादलों की यह आकृति इधर-उधर छितर जाने से कुछ क्षण पहले ही दिखाई पड़ती है और वे गिने चुने लोग ही इन्हें देख पाने में सफल होते हैं, जो किसी ऐसे क्षण अपना सिर ऊपर उठा कर आकाश की ओर देखें। सम्भवतः इस शहर के निवासियों में केवल ओलेग कोस्तोग्लोतोव ने ही इन्हें देखा था।

झालरों, कटावदार बढ़िया नमूनों, झाग जैसी आकृतियों वाले इन बादलों के बीच से वृद्ध चन्द्रमा का जटिल यान तैरता हुआ चला जा रहा था, जो इस समय भी अच्छी तरह दिखाई पड़ रहा था।

यह सृष्टिकी सुबह थी। संसार की एक बार फिर, केवल एक कारण से ही सृष्टी हुई थी कि उसे फिर ओलेग को वापस दिया जा सके। "बाहर जाओ और अपना जीवन जियो!" यह कहती हुई दिखाई पड़ रही थी।

लेकिन पवित्र शीशे सा चमकदार चन्द्रमा युवा नहीं था। यह वैसा चन्द्रमा नहीं था, जो प्रेमियों के ऊपर अपना आलोक बरसाता है।

उसका चेहरा प्रसन्नता विकरित कर रहा था। वह किसी आदमी की ओर देख कर नहीं केवल आकाश और चन्द्रमा की ओर देखकर मुस्करा रहा था। लेकिन वसन्त ऋतु के ऊषाकाल में जो हर्षोल्लास व्याप्त होता है वह वृद्धों और बिमारों तक को पुलकित कर देता है। वह अपनी पवित्र पगडंडियों से आगे बढ़ चला। रास्ते में उसे सड़कों पर झाड़ू लगाने वाला एक वृद्ध भी दिखाई पड़ा।

वह पीछे मुड़ा और उसने कैन्सर वार्ड पर नजर डाली। पिरामिडों जैसे विशालकाय पोपलार वृक्षों की विशाल शाखाओं के पीछे आधी छिपी, गहरे स्लेटी रंग की ईंटों की विशालकाय इमारत थी। केवल ईंटों से ही इस

इमारत का निर्माण हुआ था। ७० साल पुरानी हो जाने पर भी इसकी हालत बुरी नहीं थी।

ओलेग आगे बढ़ गया और उसने अस्पताल के पेड़ों से विदा ली। पापल वृक्षों की शाखाओं से कैटकिन लटक रहे थे, वन्य आलुबुखारे के वृक्षों पर पहले फूल दिखाई पड़ने लगे थे—फूलों का रंग सफेद था, लेकिन पत्तियों ने उन्हें थोड़ी सी हरी आभा प्रदान कर दी थी।

लेकिन कहीं भी खुमानी का एक भी पेड़ दिखाई नहीं पड़ रहा था। यद्यपि उसने सुना था कि खुमानी के पेड़ फूलने लगे होंगे। पुराने शहर में शायद उसे ऐसा कोई पेड़ दिखाई पड़े।

सृष्टि की प्रथम सुबह—ऐसे दिन कौन व्यक्ति तर्कसम्मत तरीके से काम कर सकता है। ओलेग ने अपनी सब योजनायें रद्द कर दीं। इसके स्थान पर उसने तुरन्त पुराने शहर जाने की पागलपन भरी योजना बनाई। वह सुबह के समय ही वहां जाना और खुमानी के फूलों से लदे पेड़ को देखना चाहता था।

वह उन फाटकों से होकर गुजरा, जिनसे गुजरने की पाबंदी थी और उस आधे खाली चौक में पहुंच गया, जहां ट्राम वापस मुड़ती थी। यह वही फाटक थे, जिनके भीतर उसने एक बार निराश, उदास और जनवरी की वर्षा से सराबोर व्यक्ति के रूप में प्रवेश किया था, जिसे केवल मृत्यु की ही आशा थी।

वह यह सोचते हुए अस्पताल पहुंचने के लिये संघर्ष करता हुआ, तीखी आवाज करती हुई झटके खा-खा कर चलती हुई बेहद भीड़ से भरी ट्रामों में सफर कर रहा था और इन ट्रामों ने उसे झकझोर कर प्रायः मार ही डाला था! लेकिन अब वह एक खिड़की के बराबर बैठा हुआ था और इस मशीन की गड़गड़ाहट की आवाज तक उसे अच्छी लगने लगी थी। ट्राम से सफर करना एक तरह की जिन्दगी थी, एक तरह की आजादी थी।

ट्राम नदी पर बने एक पुल को पार करती हुई आगे बढ़ती रही। नीचे कमजोर तनों वाले वलो वृक्ष झुके खड़े थे, उनकी शाखाएं तेजी से बहते हुए पानी को झुक-झुक कर छू रही थीं और प्रकृति पर विश्वास करती हुई ये शाखाएं हरी हो चुकी थीं।

पैदल रास्ते के बराबर लगे पेड़ भी हरे हो गए थे। लेकिन अभी इतने हरे नहीं हुये थे अपने पीछे खड़े मकानों को छिपा लें—ये मकान ठोस पत्थरों से बने एक मंजिले मकान थे। जिन लोगों ने इन्हें बनाया था, वे जल्दबाजी में नहीं थे। ओलेग ने इनकी ओर ईर्ष्या से देखा—जिन लोगों को इन मकानों में रहने का सौभाग्य मिला है, वे सचमुच भाग्यवान हैं! यह शहर का एक आश्चर्यजनक हिस्सा था जो ट्राम की खिड़की के सामने से तेजी से गुजरता जा रहा था। बहुत चौड़े पैदल रास्ते और विस्तृत छायादार सड़कें। लेकिन ऐसा

कौन सा नगर है, जो गुलाबी सुबह अद्भुत दिखाई नहीं पड़ता ?

धीरे-धीरे शैली में परिवर्तन आया। छायादार सड़कें समाप्त हुईं, सड़क के दोनों छोर सकरे होते हुए दिखाई पड़ने लगे और जल्दबाजी में बनाई गईं इमारतें बराबर से गुजरने लगीं। इन इमारतों के निर्माण में शैली अथवा मजबूती का कोई नाटक नहीं रचा गया था। सम्भवतः इन्हें युद्ध से पहले बनाया गया था। ओलेग ने सड़क का नाम पढ़ा; यह परिचित लगा।

तभी उसे याद आया कि यह नाम परिचित क्यों लगा था—यह वही सड़क थी, जिस पर जोया रहती थी।

उसने अपनी मोटे कागज की नोट बुक निकाली और नम्बर देखा। उसने फिर खिड़की के बाहर झांका और जब ट्राम धीमी हुई तो उसने इस मकान तक को पहचान लिया—दो मंजिला, अलग-अलग आकार की खिड़कियां, फाटक या तो स्थायी रूप से खुले या टूटे हुये। इमारत के अहाते में कुछ आउट हाउस भी थे।

वह यहां उतर सकता था, यहीं कहीं उतर सकता था।

वह इस शहर में पूरी तरह बेघर नहीं था। उसके पास एक निमन्त्रण था, और वह भी एक लड़की का निमन्त्रण।

वह अपनी सीट से नहीं हिला। वह वहीं बैठा रहा। उसे ट्राम के धक्कों और घर्र-घर्र की आवाज में प्रायः आनन्द ही आ रहा था। ट्राम अभी भरी नहीं थी। ओलेग के सामने चश्मा पहने एक वृद्ध उजबेक बैठा था—यह कोई मामूली उजबेक नहीं था, बल्कि एक ऐसा आदमी था जिसमें प्राचीन ज्ञान की गरिमा दिखाई पड़ती थी।

औरत कंडक्टर ने उस आदमी को एक टिकट दिया, जिसकी बत्ती बना कर उसने अपने कान पर रख ली। वे आगे बढ़ते रहे, लिपटा हुआ गुलाबी कागज उसके कान के ऊपर लगा रहा। यह एक ऐसी मौलिक बात थी, जिससे ओलेग और अधिक प्रसन्न हो उठा और पुराने शहर में प्रवेश करते समय वह स्वयं को बहुत हल्का अनुभव कर रहा था।

सड़कें और अधिक सकरी होती गईं। छोटे-छोटे मकान बहुत पास-पास बने थे। लग रहा था कि वह एक दूसरे से कन्धे से कन्धा सटाये खड़े हों। आगे चल कर तो खिड़कियां तक नदारद हो गईं। मिट्टी की ऊंची दीवारें सड़क के बराबर सीधी उठी हुई थीं। कुछ मकान इन दीवारों से भी ऊंचे बने थे। इनके पिछले हिस्से हमवार, खिड़की रहित थे और इन पर मिट्टी पोती गई थी। दीवारों में कुछ द्वार अथवा छोटी-छोटी सुरंगें जैसी थीं। वे इतनी नीची थीं कि उनमें घुसने के लिए आपको झुकना पड़ता। ट्राम के रनिंग बोर्ड से कूद कर पैदल रास्ते पर पहुंचा जा सकता था और एक और कदम भर कर आप पैदल रास्ता पार कर सकते थे। ऐसा लगता था कि पूरी सड़क ही ट्राम के

नीचे आ गई हो।

तो यही पुराना शहर होना चाहिए, जहां ओलेग पहुंचना चाहता था। लेकिन इन नंगी सड़कों पर कोई भी पेड़ नहीं उगा था, फूलों से लगा खुमानी का पेड़ तो दूर।

ओलेग सड़कों को अब इस तरह गुजर जाने देने के लिये तैयार नहीं था। वह नीचे उतर आया।

अब जो उसने देखा वह पहले जैसा ही दृश्य था। अन्तर केवल इतना था कि अब वह पैदल चल रहा था ट्राम की घरघराहट के बिना अब वह लोहे पर किसी चीज के टकराने की आवाज़ सुन रहा था। निश्चय ही वह यह आवाज सुन रहा था। एक क्षण बाद उसने अपनी चांद पर काली और सफेद छोटी टोपी रखे एक उजबेक को देखा। उसने रुई का लम्बा काला कोट पहन रखा था, जिसके ऊपर गुलाबी रंग की डोरी बंधी थी। वह सड़क के बीच में बैठा था और ट्राम की पटरी पर एक हेंगी पर हथौड़ा बरसा कर उसे गोलाकार बना रहा था।

ओलेग वहां खड़ा हो गया। इस दृश्य ने उसका हृदय छू लिया—हम सचमुच परमाणु युग में हैं! आज भी ऐसी और उशतेरेक जैसी जगहों में धातु एक ऐसी दुर्लभ वस्तु है कि एरन की तरह इस्तेमाल करने के लिये ट्राम की पटरी से अन्य कोई बेहतर वस्तु उपलब्ध नहीं होती। ओलेग यह देखने के लिए खड़ा रहा कि अगली ट्राम आने तक यह उजबेक अपना काम पूरा कर पाता है या नहीं। लेकिन वह जल्दी में नहीं था। यह बड़ी सावधानी से हथौड़े बरसा रहा था। जब आती हुई ट्राम ने अपना हूटर बजाया, वह आधा कदम एक ओर को हट गया, ट्राम गुजर जाने की प्रतीक्षा करता रहा और फिर पालथी मार कर बैठ गया।

ओलेग, उजबेक की शान्त पीठ और गुलाबी डोरी देख रहा था। (जिसने अब नीले आकश को, अपने पहले गुलाबीपन से मानो वंचित कर दिया हो)। वह उजबेक से दो बात भी नहीं कर सकता था। फिर भी उसके प्रति उसके मन में एक भाई जैसे साथी श्रमिक जैसी भावना थी।

वसन्त ऋतु की सुबह को एक हेंगी पर हथौड़े बरसाने का काम—यह जीवन की सच्ची पुनरस्थापना होगी, क्यों होगी न?

बहुत अच्छा!

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। वह निरन्तर यह सोचता जा रहा था कि आखिर सब खिड़कियां कहां गायब हो गई। वह दीवारों के पीछे झांककर देखना चाहता था, लेकिन दरवाजे या यों कहिए कि फाटक बन्द थे और उनके भीतर घुस जाना भद्दी बात होती।

अचानक ओलेग ने दीवार में बने एक रास्ते के भातर से रोशनी आती

हुई देखी। वह नीचे झुका और एक सीलन भरी सुरंग को पार कर एक अहाते में पहुंच गया।

अहाता अभी जागा नहीं था। पर यह स्पष्ट दिखाई पड़ता था कि वहां लोग रहते थे। एक पेड़ के नीचे जमीन में गड़ी एक बेंच खड़ी थी और एक मेज भी थी। कुछ खिलौने इधर-उधर फैले हुए थे। काफी आधुनिक खिलौने। जीवन को नमी प्रदान करने के लिये पानी का पम्प भी था और एक नहाने का टब भी। मकान के चारों ओर बहुत सी खिड़कियां दिखाई पड़ रही थीं। ये खिड़कियां इस दिशा में अहाते में खुलती थीं। एक भी खिड़की सड़क की तरफ नहीं खुलती थी।

वह सड़क पर कुछ और आगे बढ़ा और एक ऐसी सुरंग पार कर एक ऐसे ही अहाते में प्रवेश कर गया। सब कुछ वैसा ही था। लेकिन वहां एक उजबेक युवती भी थी, जो अपने छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल कर रही थी। वह हल्के गुलाबी रंग का शाल ओढ़े थी और उसके बाल कमर तक लम्बी पतली-पतली काली चोटियों में लटके हुए थे। उसने ओलेग को देखा और उसकी उपेक्षा कर दी। वह आगे बढ़ गया।

यह वातावरण पूरी तरह से गैर-रूसी था। सब रूसी गांवों और शहरों में रहने के कमरों की खिड़कियां सीधे सड़कों पर खुलती हैं, ताकि गृहणियां पर्दों और खिड़कियों के सामने बनी क्यारियों के फूलों के पीछे से, जंगल में घात लगाये सैनिकों की तरह, अपनी सड़क से गुजरते हुए किसी भी अजनबी को देख सकें और यह पता लगा सकें कि कौन किससे मिलने आता है और क्यों? फिर भी ओलेग ने पूरब का तरीका तुरन्त समझ लिया और इसे स्वीकार भी कर लिया। "मैं यह नहीं जानना चाहता कि आप कैसे रहते हैं। और तुम भी मेरे घर की तांक-झांक न करो।"

एक भूतपूर्व कैदी वर्षों का समय शिविरों में बिताने के बाद इससे बेहतर किस जीवन की कामना कर सकता है, क्योंकि उसने शिविरों में जो जीवन जिया, उसमें वह निरन्तर नजरों के सामने रहा, उसकी तलाशियां ली जाती रहीं, जांच होती रही और एक क्षण के लिये भी उसके ऊपर से नजर नहीं हटाई गई।

उसे पुराना शहर निरन्तर अधिकाधिक पसन्द आता जा रहा था।

इससे पहले उसने दो मकानों के बीच की खाली जगह में एक खाली चाय घर देखा था और जो आदमी इसे चलाता था वह अभी उठा ही था। अब उसे एक और चायघर सड़क से जरा सा ऊपर बने बरामदे में दिखाई पड़ा। वह इसके भीतर चला गया। खोपड़ी पर छोटी-छोटी टोपियां रखे, यहां कई आदमी बैठे थे। ये टोपियां बैंगनी या नीले रंग की थीं और कुछ कालीन के कपड़े की बनी थीं। एक आदमी ने रंगीन कसीदाकारी की सफेद पगड़ी भी पहन रखी थी। यहां एक भी औरत नहीं थी। ओलेग को याद आया कि उसने

कभी भी किसी चायघर में किसी औरत को नहीं देखा था। ऐसी कोई तख्ती नहीं लगी थी कि औरतों के प्रवेश पर पाबन्दी है। बस यही रिवाज था। वहां उनकी अपेक्षा नहीं रहती थी।

ओलेग ने इन सब बातों पर विचार किया। यह उसके नये जन्म का पहला दिन था। हर चीज नई थी और उसे हर चीज समझने की आवश्यकता थी क्या यह आदमी, औरतों से अलग इस प्रकार इकट्ठा होकर, यह दर्शाना चाहते हैं कि जीवन के सर्वोतम हिस्से का सम्बन्ध स्त्रियों से नहीं होता।

वह बरामदे की रेलिंग के पास बैठ गया। यह अच्छी जगह थी, जहां से वह सड़क पर नजर रख सकता था। सड़क पर चहल-पहल शुरू हो रही थी। लेकिन कोई भी व्यक्ति उस जल्दबाजी में नहीं दिखाई पड़ता था, जो शहरों की खासियत होती है। राहगीर विचारमग्न से चल रहे थे। चायघर में बैठे आदमी अनन्त मौन में खोये हुए थे।

यह कल्पना की जा सकती थी कि हवलदार कोस्तोग्लोतोव, अथवा कैदी कोस्तोग्लोतोव अपनी सजा काट चुका था, समाज को अपना ऋण अदा कर चुका था, अपनी बीमारी के कष्टों को उसने भोगा था और जनवरी में मर गया था। और अब कोई नया कोस्तोग्लोतोव, दो अनिश्चित टांगों पर लड़खड़ाता हुआ, अस्पताल से बाहर निकल आया था और वह "इतना सुन्दर और स्वच्छ था कि आप उसके आर-पार देख सकते थे, जैसा कि वे लोग शिविरों में कहा करते थे। वह पूर्ण जीवन जीने के लिये नहीं, बल्कि जीवन का एक अतिरिक्त भाग जीने के लिये, रोटी के उस टुकड़े की तरह जिसे वे वजन पूरा करने के लिये राशन के प्रमुख हिस्से के साथ चीड़की एक पतली टहनी से बांध देते थे, उत्पन्न हुआ था। रोटी का यह टुकड़ा राशन का ही हिस्सा होता था, पर फिर भी अलग।

अब जबकि वह अपना अतिरिक्त जीवन शुरू कर रहा था। ओलेग की कामना थी कि यह उस मुख्य भाग से भिन्न हो जिसे वह जी चुका है। वह कामना कर रहा था कि अब वह गलतियां करना बन्द कर देगा।

पर अब तक वह एक गलती कर चुका था। उसने यह गलती अपनी चाय के चुनाव में की थी। चालाक बनने की कोशिश करने के बजाए उसे वह सामान्य काली चाय चुननी चाहिए थी, जिससे वह परिचित था। लेकिन अपरिचित और अनजाने की तलाश में उसने कोक यानी हरी चाय को चुन लिया था। इस चाय में दम नहीं था। इससे उसे स्फूर्ति नहीं मिली। इसमें वस्तुतः चाय जैसा स्वाद ही नहीं था। और जब उसने चाय के कटोरे में थोड़ी-सी चाय उडेली तो यह पत्तियों से भर गया। वह पत्तियां नहीं निगलना चाहता था। वह इसे निथारेगा।

इस बीच दिन गरम होता जा रहा था और सूरज आकाश में ऊपर चढ़

रहा था। ओलेग कुछ खाना नापसन्द न करता। लेकिन चायघर में दो किस्म की गरम चाय के अलावा अन्य कुछ नहीं मिलता था। उनके पास चीनी तक नहीं थी।

लेकिन उसने अपने आस-पास बैठे लोगों की तरह ही अपरिवर्तनीय और जल्दबाजी से दूर तरीका ही अपनाना पसन्द किया। वह उठा नहीं, खाने की किसी चीज़ की तलाश में वहां से आगे नहीं गया। वह वहीं बैठा रहा और उसने कुर्सी को और ढंग से रखा।

और तभी चायघर के बरामदे से उसने अहाते की चहारदिवारी के ऊपर एक गुलाबी और पारदर्शी वस्तु देखी। यह अत्यधिक फूले हुए डेंडेलियन जैसी दिखाई पड़ती थी। बस अन्तर केवल इतना था कि इसका व्यास छह मीटर था। यह गुलाबी रंग का भारहीन गुब्बारा सा था। उसने अपने जीवन में कभी भी ऐसी गुलाबी और ऐसी विशाल चीज़ नहीं देखी थी।

क्या यह खुमानी का पेड़ हो सकता था?

ओलेग को एक सबक मिला था। जल्दबाजी न करने का उसका यह पुरस्कार था। उसे यह सबक मिला था—अपने चारों ओर देखे बिना आगे अन्धाधुन्ध न दौड़ो।

वह रेलिंग के पास जा खड़ा हुआ और इस स्थान से इस गुलाबी चमत्कार को देखता रहा, देखता रहा।

यह उसका स्वयं अपने लिए उपहार था—उसका सृष्टि के दिन का उपहार।

ऐसा लग रहा था मानो चीड़ के किसी वृक्ष को उत्तर रूस के किसी घर में मोमबत्तियों से सजाकर किसी कमरे में रख दिया गया हो। मिट्टी की दीवारों से घिरे इस अहाते में फूलों से लदा खुमानी का पेड़ ही एकमात्र पेड़ था। इस अहाते में लोग रहते थे, यह एक कमरे की तरह था। पेड़ के नीचे बच्चे घुटनों के बल चल रहे थे और फूलदार काला स्कार्फ अपने सिर पर बांधे एक औरत इसकी जड़ को हेंगी से खोद रही थी।

ओलेग ने इसे बड़े गौर से देखा—गुलाबी रंग! बस यही आभास मिलता था। इस वृक्ष की कलियां मोमबत्तियों जैसी थीं, जहां कलियां खुलती थीं वहां गुलाबी रंग की पंखुड़ियां दिखाई पड़ रही थीं। लेकिन पंखुड़ियां पूरी खुल जाने पर एकदम सफेद हो जाती थीं, सेब या चेरी के फूलों की तरह। इसका परिणाम अविश्वसनीय सीमा तक कोमल गुलाबीपन होता था। ओलेग इस सुन्दरता को अपनी आंखों में समेट लेने का प्रयास कर रहा था। वह बहुत लम्बे अरसे तक इसे याद रखना चाहता था और कादमिन दम्पती को इसके बारे में बताना चाहता था।

वह एक चमत्कार देखना चाहता था और उसे एक चमत्कार देखने को

मिल गया था।

आज इस नवजात संसार में उसके लिए अन्य अनेक सुखद बातें प्रतीक्षा कर रही थीं···चन्द्रमा अब गायब हो गया था।

ओलेग सीढ़ियां उतर कर सड़क पर आ गया। वह अपने नंगे सिर पर धूप की तेजी का अनुभव कर रहा था। उसे चार सौ ग्राम या लगभग इतनी ही काली रोटी खरीद लेनी चाहिए और बिना पानी के ही उसे किसी तरह अपने पेट में भर लेना चाहिए और फिर आगे शहर में जाना चाहिए। शायद उसके असैनिक कपड़े ही उसे इस प्रकार उत्साहित कर रहे थे। उसे मितली का अनुभव नहीं हो रहा था और वह बड़ी आसानी से चल सकता था।

तभी उसने दीवार के बीच एक खाली जगह में एक दुकान देखी, जो दीवार के भीतर खाली जगह में होने के कारण सड़क के किनारे बने मकानों की पंक्ति से बाहर निकली हुई नहीं थी। साये के लिए दो छड़ों के सहारे एक चद्दर सी ऊपर तनी हुई थी। इस चद्दर के नीचे से सलेटी रंग का नीलिमायुक्त धुआं ऊपर उठ रहा था। ओलेग को भीतर जाने के लिए अपना सिर झुकाना पड़ा। वह इसके भीतर झुककर ही खड़ा रहा, क्योंकि सीधा तनकर खड़ा होने की जगह नहीं थी।

इस दुकान के काउंटर की पूरी लम्बाई में लोहे की एक लम्बी सलाख लगी थी। एक जगह दहकते हुए कोयले रखे थे और शेष स्थान पर सफेद राख भरी थी। लोहे की सलाख पर दहकते हुए अंगारों के ऊपर लगभग १५ लम्बी नोकदार अलमुनियम की सीखें रखी थीं, जिनमें गोश्त के टुकड़े पिरोए हुए थे।

ओलेग ने अनुमान लगाया कि यह शाशलिक होना चाहिए। उसके नवजात संसार में एक और अनुसंधान हुआ था—उसने इसके बारे में जेल में लम्बी-लम्बी भोजन सम्बन्धी बहसों में बहुत कुछ सुना था। लेकिन अपने जीवन के समस्त ३४ वर्षों में उसे अपनी आंखों से यह देखने का मौका नहीं मिला था। वह कभी भी काकेशस नहीं गया था और न ही उसने रेस्टोरेंटों में खाना खाया था। युद्ध से पहले की कैन्टीनों में वे बन्दगोभी और जौ की खिचड़ी के अलावा अन्य कुछ नहीं परोसते थे।

शाशलिक !

यह बड़ी मोहक गन्ध थी। धुएं और गोश्त की मिली-जुली गन्ध। सीकों पर लगा गोश्त जला नहीं था। वह गहरे कत्थई रंग का भी नहीं हुआ था। यह कोमल गहरे गुलाबी रंग का गोश्त था, जिसे केवल उतना भूना गया था जितना भूना जाना चाहिए था। दुकानदार, जो मोटा ताजा और गोल-मटोल चेहरे वाला आदमी था, आहिस्ता-आहिस्ता बिना किसी जल्दबाजी के सीकों को उलट-पुलट रहा था। या उन्हें हटा-हटाकर आंच से दूर राख के ऊपर रख रहा था।

"कितना ?" कोस्तोग्लोतोव ने पूछा।

"तीन," दुकानदार ने मानो स्वप्निल अवस्था में कहा।

ओलेग की समझ में यह बात नहीं आई—तीन क्या ? तीन कोपेक बहुत छोटी राशि होती है। तीन रूबल बहुत ऊंचा दाम था। शायद उसका मतलब यह हो कि एक रूबल में तीन सींक ? शिविर से रिहा होने के बाद सब जगह उसे इस कठिनाई का सामना करना पड़ता था : दाम क्या चल रहे हैं, इनका क्या सही पैमाना है, यह बात उसकी समझ में ही नहीं आ रही थी।

"तीन रूबल में कितनी ?" ओलेग ने रास्ता निकालने की कोशिश करते हुए पूछा।

दुकानदार बोलचाल में बहुत सुस्त था। उसने एक सींक एक सिरे से पकड़ कर उठाई और इसे ओलेग के सामने इस तरह घुमाया जैसे किसी बच्चे के सामने घुमा रहा हो और फिर उसे आंच पर वापस रख दिया।

एक सींक तीन रूबल। ओलेग ने अपना सिर हिलाया। यह दाम तो उसकी कल्पना के बाहर थे। उसे अपना जीवन यापन करने के लिए हर रोज पांच रूबल मिलते थे। लेकिन अब उसके मन में इसका स्वाद चखने की इच्छा जाग चुकी थी। उसकी आंखों ने गोश्त के एक-एक टुकड़े को परखा और अपने लिए एक का चुनाव किया। प्रत्येक सींक का अपना विशेष आकर्षण था।

पास खड़े तीन लारी ड्राइवर प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी लारी सड़क पर खड़ी थी। एक औरत दुकान पर आई। लेकिन इस दुकानदार ने उज़बेक भाषा में कुछ कहा और वह नाराज सी वापस लौट गई। तभी अचानक दुकानदार ने ये सींकें एक प्लेट पर रखनी शुरू कर दीं। उसने कुछ कटा हुआ वसन्त ऋतु का प्याज उन पर अपनी अंगुलियों से छिड़का और बोतल से भी कुछ चीज़ ऊपर डाली। ओलेग समझ गया कि लारी ड्राइवर ये सारा शाशलिक अपने लिये ले रहे थे। एक-एक ड्राइवर के लिये पांच-पांच सींकें।

यह सर्वत्र व्याप्त अवर्णनीय और दोहरे स्तर वाला दाम और वेतन का ढांचा था। ओलेग दूसरे स्तर के वेतन-क्रम और दाम की कल्पना भी नहीं कर सकता था, स्वयं उस पर पहुंचने की बात तो दूर। ये लारी ड्राइवर बस जलपान कर रहे थे। प्रत्येक १५-१५ रूबल खर्च कर रहा था। और यह भी सम्भव था कि यह उनका प्रमुख जलपान न हो। कोई भी वेतन ऐसे जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। वेतन-भोगी लोग शाशलिक नहीं खरीद सकते।

"सब खत्म हो गया," दुकानदार ने ओलेग से कहा।

"खत्म ? सब खत्म हो गया ?" ओलेग ने बड़े दुःखी भाव से पूछा। आखिर वह हिचकिचाया क्यों था ? शायद यह उसके जीवन का पहला और अन्तिम अवसर था।

"वे आज और नहीं लाये !" दुकानदार ने अपनी चीजों को साफ करते कहा। ऐसा लग रहा था कि वह फटका गिराने की ही तैयारी कर रहा है।

"अरे, लड़को, एक सींक मुझे दो!" ओलेग ने लारी ड्राइवरों से याचना की। "एक सींक, लड़को!"

उनमें से एक ने, जिसकी चमड़ी धूप से बहुत अधिक लाल हो गई थी और जिसके बालों का रंग हल्का सुनहरा था, उसे इशारे से बुलाया। "ठीक है एक ले लो।" वह बोला।

उन लोगों ने अभी तक दाम नहीं चुकाया था। ओलेग ने एक हरा नोट अपनी जेब से निकाला, जेब के ढक्कन के ऊपर सैफ्टी पिन लगा था। दुकानदार ने यह नोट उठाया तक नहीं। उसने अपने हाथ से धक्का देकर इसे दराज में गिरा दिया। ठीक उसी तरह जैसे कोई व्यक्ति मेज पर गिरे खाने की चीजों के टुकड़े मेज साफ करते हुए नीचे गिरा देता है।

लेकिन अब यह सींक ओलेग की थी! अपना किट बैग धूलभरी जमीन पर रखकर, उसने अलमूनियम की सींक को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। उसने टुकड़ों को गिना—पांच टुकड़े थे, छठा टुकड़ा आधा था। और उसके दांत इन्हें खींच-खींचकर सींक से अलग करने लगे। उसने पूरे का पूरा टुकड़ा एक बार में अपने दांतों से खींचकर अलग नहीं किया, बल्कि उसके छोटे-छोटे ग्रास वह दांतों से कुतर-कुतर कर खाता रहा। वह उसी प्रकार विचारमग्न सा खा रहा था, जिस प्रकार कोई कुत्ता अपने खाने को किसी सुरक्षित कोने में ले जाने के बाद खाता है। उसके मन में यह विचार आया कि मनुष्य की इच्छाओं को भड़काना कितना आसान है और एक बार इन इच्छाओं के भड़क जाने के बाद, उन्हें तृप्त करना कितना कठिन है। वर्षों तक वह काली रोटी के एक बड़े टुकड़े को पृथ्वी का सर्वाधिक मूल्यवान उपहार समझता रहा था। एक क्षण पहले ही वह अपने जलपान के लिए कुछ रोटी खरीदने के लिए तैयार था और तभी सलेटी रंग का नीलिमायुक्त धुआं उसकी नाक तक पहुंचा और भुने कबाब की गन्ध भी। लोगों ने उसे कुतर-कुतर कर खाने के लिये एक सींक कबाब दे दिया था और बस उसके मन में रोटी के प्रति घृणाभाव उत्पन्न होने लगा।

ड्राइवरों ने अपने पांच-पांच सींक कबाब समाप्त कर दिये थे। उन्होंने इंजन स्टार्ट किये और आगे बढ़ गए। पर ओलेग अभी भी अपनी सींक के आखिरी टुकड़े को चाट रहा था। वह प्रत्येक ग्रास को अपने होंठों और जीभ से स्वाद ले लेकर निगलता—वह निरन्तर यह सोचता जा रहा था कि गोश्त के कोमल टुकड़ों में कैसा रस भरा है, इनकी कैसी गन्ध है, इन्हें कितना अच्छा भूना गया है, इन्हें जरा भी अधिक नहीं भूना गया। यह आश्चर्यजनक था कि प्रत्येक ग्रास में उसे आदिम सुख, प्राप्त हो रहा था, जो किसी भी रूप में कम

नहीं हुआ। और वह अपने शाशलिक में जितनी अधिक गहराई से अपने दांत गड़ाता, जितनी अधिक गहराई में उसके बारे में सोचता उसका स्वाद, उसका आनन्द उतना ही अधिक बढ़ जाता। साथ ही उसके मन में यह यथार्थ भाव भी आया कि वह जोया से मिलने नहीं जायेगा। ट्राम उसके घर के सामने से गुजरेगी, लेकिन वह उतरेगा नहीं। धीरे-धीरे शाशलिक की सींक का रसास्वादन करते हुए, अन्तत: उसने यही सोचा।

ट्राम उसी रास्ते से उसे शहर के मध्य भाग में ले गई। अन्तर केवल इतना था कि इस बार वह लोगों से खचाखच भरी थी। ओलेग ने जोया के स्टाप को पहचाना और उसके आगे के दो स्टापों तक बैठ रहा। उसे मालूम नहीं था कि कौन-सा स्टाप सर्वोत्तम होगा। अचानक ट्राम की खिड़की से अखबार बेचने वाली एक औरत दिखाई पड़ी। ओलेग यह अच्छी तरह देखना चाहता था कि हो क्या रहा है? अपने बचपन के बाद उसने सड़कों पर लोगों को अखबार बेचते हुए नहीं देखा था (अंतिम अवसर वह था जब मायाकोवस्की[1] ने स्वयं को गोली मार ली थी और छोटे-छोटे लड़के अखबार का एक विशेष संस्करण बेचने के लिये सड़कों पर दौड़ रहे थे। (लेकिन अब एक वृद्ध रूसी स्त्री अखबार बेच रही थी और तेजी से अखबार बेचने में सफल नहीं हो रही थी। वह जल्दबाजी में भी नहीं थी। वह सही रेजगारी गिनने में पूरा समय लगाती थी। फिर भी उसका काम अच्छा चल रहा था और जैसे ही कोई ट्राम आती वह कुछ प्रतियों से छुटकारा पाने में सफल हो जाती। ओलेग वहां खड़ा हो गया और यह देखता रहा कि उसका काम कैसा चल रहा है।

"क्या पुलिस तुम्हें नहीं भगाती?" उसने पूछा।

"अभी तक उन लोगों ने यह शुरू नहीं किया है," अखबार बेचने वाली औरत ने उत्तर दिया।

लम्बे अरसे से उसने आइने में अपनी शक्ल नहीं देखी थी और वह यह भूल गया था कि उसकी शक्ल कैसी दिखाई पड़ती है। कोई भी पुलिस वाला यदि इन दोनों को देखता तो पहले उसी के कागज पत्र देखने की मांग करता और उस बूढ़ी औरत की फिक्र न करता।

सड़क की बिजली से चलने वाली घड़ी सिर्फ नौ बजा रही थी। लेकिन इतनी गर्मी हो चुकी थी कि ओलेग ने अपने ओवरकोट के ऊपर के बटन खोलने शुरू कर दिये। बहुत धीरे-धीरे, भीड़ को अपने से आगे निकल जाने देकर और भीड़ के धक्के खाता हुआ ओलेग चौक के पास सड़क के धूप वाले हिस्से

---

१. व्लादिमिर मायाकोवस्की महान् फ़्यूचरिस्ट कवि और रूस की क्रांति का समर्थक। उसने १९३० में गोली मार कर आत्महत्या कर ली थी। (अनुवादक की टिप्पणी)

के बराबर चल रहा था। वह अपनी आंखें आधी बन्द करता और सूरज की ओर देखकर मुस्कुराता।

आज उसके लिए और अनेक उल्लासपूर्ण घटनाएं घटने जा रही थीं।

यह वसन्त ऋतु का सूरज था, जिसे देखने को जीवित रहने की उसे आशा नहीं थी। और यद्यपि उसके आस-पास ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो उसके इस पुनर्जन्म पर आनन्द प्रकट करता—वस्तुत: किसी को इस बात की जानकारी भी नहीं थी—फिर भी सूरज यह बात जानता था और ओलेग उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। चाहे एक और वसन्त ऋतु कभी आये न आये चाहे यह आखिरी वसन्त ऋतु हो, फिर भी यह अचानक प्राप्त होने वाला एक उपहार था। और वह इसके लिये आभारी था।

कोई भी राहगीर ओलेग को देखकर विशेष प्रसन्न नहीं था। लेकिन वह उन सबको देखकर बड़ा प्रसन्न था। उसे इस बात की बड़ी खुशी थी कि वह उन लोगों के बीच वापस लौट आया है, सड़कों पर मौजूद प्रत्येक वस्तु के बीच लौट आया है। उसे अपने इस नवजात संसार में ऐसी एक भी चीज दिखाई नहीं पड़ रही थी, जो दिलचस्प न हो। जो बुरी या भद्दी हो। पूरे के पूरे महीने, जीवन के पूरे वर्ष आज की तुलना में नगण्य थे। आज का दिन सर्वोपरि था।

वे लोग कागज के कपों में आइसक्रीम बेच रहे थे। ओलेग को यह याद नहीं आ रहा था कि उसने पिछली बार कब ये छोटे-छोटे कप देखे थे। डेढ़ और रूबल को अलविदा। वह आगे बढ़ गया। उसका जला हुआ और गोलियों से छिद्रित किटबैग उसकी पीठ पर लटक रहा था और उसके हाथ आइसक्रीम के कप की बर्फ से जमी ऊपरी परतों को लकड़ी की छोटी चम्मच से उठा-उठा कर धीरे-धीरे खाने के लिये स्वतंत्र थे।

पहले से भी और आहिस्ता चलते-चलते वह साये में एक फोटोग्राफर की दुकान के पास पहुंच गया। वह लोहे की रेलिंग का सहारा लेकर खड़ा हो गया और कुछ देर तक बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा और शो केस में लगे पवित्र जीवन और आदर्शों से मण्डित चेहरों को देखता रहा, विशेषकर लड़कियों के चेहरों की संख्या अधिक थी। प्रत्येक लड़की ने अपने सर्वोत्तम वस्त्र पहन रखे थे। इसके बाद फोटोग्राफर ने उनका सिर जरा-सा घुमाया होगा और रोशनी को दस बार इधर-उधर रख कर देखा होगा फिर कई तस्वीरें ली होंगी और सर्वोत्तम तस्वीर चुन कर उसे और निखारा होगा और ऐसी दस लड़कियों का एक-एक सर्वोत्तम चित्र चुना होगा। इसी प्रकार इस शो केस का निर्माण हुआ होगा। ओलेग यह जानता था फिर भी उसे इन चित्रों को देखने और यह विश्वास करने में आनन्द आ रहा था कि वस्तुत: जीवन ऐसी ही लड़कियों से बना है, उन वर्षों की कमी को पूरा करने के लिये

जिन्हें वह खो चुका था। उन वर्षों के लिए भी, जिन्हें देखने के लिये वह जीवित नहीं रहेगा और उन सब बातों के लिये जिनसे उसे वंचित कर दिया गया था, वह बड़ी बेशर्मी से घूर-घूर कर देखता रहा, देखता रहा।

आइसक्रीम खत्म हो गई थी और उस छोटे से कप को फेंक देने का समय आ गया था। लेकिन यह कप इतना साफ-सुथरा और चिकना था कि ओलेग के मन में यह बात आई कि रास्ते में पानी पीने में यह काम आ सकता है। तो उसने इसे अपने किट बैग में रख लिया। उसने वह छोटी चम्मच भी रख ली। कभी उसका भी कोई उपयोग हो सकता है।

आगे चलकर उसे एक कैमिस्ट की दुकान दिखाई पड़ी। कैमिस्ट भी अपने आप में एक दिलचस्प संस्था होता है। कोस्तोग्लोतोव तुरन्त भीतर चला गया।

दुकान के काउण्टर बड़े साफ-सुथरे थे, एक समकोण दूसरे समकोण से सटा था। वह पूरा दिन इनकी जांच-पड़ताल में ही बिता सकता था। वहां जो चीजें रखी थीं, वे उसकी शिविर की अभ्यस्त आंखों के लिये बड़ी विचित्र दिखाई पड़ रही थीं। उसने जो दशक दूसरी दुनिया में बिताये थे, उसमें कभी ऐसी चीजें नहीं देखी थीं और एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उसने जो वस्तुएं देखी थीं, उनके नाम बता पाना अब उसके लिये कठिन हो रहा था। उसे यह याद नहीं आ पा रहा था कि वे चीजें किस काम की थीं। एक जंगली आदमी की तरह आतंकित होकर वह निकिल पालिश वाले शीशे और प्लास्टिक की चीजें देख रहा था। छोटे-छोटे पैकेटों में जड़ी-बूटियां भी थीं, जिनके ऊपर उनके गुणों का विवरण लिखा था। ओलेग को जड़ी-बूटियों पर गहरा विश्वास था—लेकिन वह जड़ी कहां थीं, जिसकी उसे तलाश थी?

इसके बाद गोलियों का खासा प्रदर्शन था। इतने नये नामों की गोलियां थी, ऐसे-ऐसे नाम थे, जिन्हें उसने पहले कभी सुना भी नहीं था। खैर, कैमिस्ट की दुकान उसके लिये एक पूरी तरह से नये संसार को उद्घाटित कर रही थी। इसका वह प्रेक्षण कर सकता था, उसके बारे में वह गहरा विचार कर सकता था। लेकिन उसने बस यही किया कि एक काउंटर से दूसरे काउंटर पर जाता रहा। फिर उसने पानी का थर्मामीटर मांगा, कुछ सोडा और कुछ मैंगनेट। कादमिन दम्पती ने उससे यही चीजें मंगवाई थीं। थर्मामीटर और सोडा उपलब्ध नहीं था, लेकिन उन्होंने उसे मैंगनेट के लिये तीन कोपेक चुकाने के लिए खजांची की मेज पर भेजा। इसके बाद कोस्तोग्लोतोव दवाखाने के बाहर लगी पंक्ति में खड़ा हो गया और वहां लगभग बीस मिनट तक खड़ा रहा। उसने अपनी पीठ से किट बैग उतार लिया था। वह अभी भी घुटन की अनुभूति से पीड़ा का अनुभव कर रहा था। वह यह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या उसे दवा लेनी चाहिए? उसने छोटी-सी खिड़की के भीतर उन

तीन नुस्खों में से एक नुस्खा डाला, जो कल वेगा ने उसे दिये थे। उसे आशा थी कि उनके पास यह दवा नहीं होगी और इस स्थिति में कोई समस्या ही नहीं रहेगी। पर उनके पास यह दवा मौजूद थी। खिड़की के दूसरी ओर उन्होंने हिसाब-किताब लगाया और ५८ रूबल और कुछ कोपेक का बिल तैयार कर दिया।

ओलेग ने इतनी राहत का अनुभव किया कि खिड़की से हटते समय वह वस्तुतः हंस पड़ा। बात यह थी कि अपने जीवन के प्रत्येक दौर में '५८' की संख्या[1] उसका पीछा करती रही थी और अब इस संख्या का सामना हो जाने से वह जरा भी आश्चर्यचकित नहीं हुआ था। लेकिन तीन नुस्खों के लिए १७५ रूबल चुकाने की बात—यह सचमुच बहुत बड़ी बात थी। इतने पैसे से वह एक महीने तक अपना पेट पाल सकता था। उसके मन में आया कि इन नुस्खों को फाड़ कर वहीं पीकदान में फेंक दे। लेकिन उसके मन में यह बात भी आई कि वेगा इनके बारे में पूछ सकती है अतः उसने उन्हें अपनी जेब में रख लिया।

वह कैमिस्ट की चमचमाती हुई दुकान से बाहर निकलते हुए खेद का अनुभव कर रहा था। पर दिन काफी गुज़र चुका था और उसे बुला रहा था। यह उसकी प्रसन्नता का दिन था।

आज उसके लिए और अधिक हर्षोल्लास की घटनाएं घटने जा रही थीं।

वह बिना किसी जल्दबाजी के एक दुकान के शो केस से दूसरी दुकान के शो केस पर जाकर खड़ा होता था। वह जो कुछ देखता उसी से चिपक जाता। वह जानता था कि हर कदम पर उसे कुछ न अप्रत्याशित देखने को मिलेगा।

सामने ही एक डाकखाना था और उसकी खिड़की में एक विज्ञापन लगा था : "हमारे फोटो-टेलीग्राफ का इस्तेमाल करें!" अद्भुत! वैज्ञानिक कहानियों में लगभग दस साल पहले लोगों ने ऐसी बातें लिखी थीं और यहाँ राहगीरों को इसका इस्तेमाल करने का निमंत्रण दिया जा रहा था। ओलेग भीतर चला गया। वहां लगभग ३० नगरों की एक सूची लगी थी, जहां फोटो-टेलीग्राम भेजे जा सकते थे। ओलेग ने यह सोचना शुरू कर दिया कि किस नगर में और किस के पास वह तार भेज सकता है। लेकिन संसार के क्षेत्रफल के छटे भाग में फैले इन बड़े-बड़े नगरों में वह एक भी ऐसे आदमी का स्मरण नहीं कर सका, जो उसका लेख देख कर प्रसन्न होता।

वह और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता था, अतः वह खिड़की

---

१. आरम्भ में ओलेग को सोवियत दण्डसंहिता की धारा ५८ के अधीन सजा सुनाई गई थी। (अनुवादक की टिप्पणी)

के पास पहुंचा और उनसे कहा कि वे उसे एक फार्म दें और यह भी बताये कि पत्र कितना लम्बा हो सकता है।

"यह टूट गया है," औरत ने जवाब दिया, "यह काम नहीं करता।"

ओह, तो यह काम नहीं करता। खैर, ये जहन्नुम में जाये। हम इन्हीं बातों के ज्यादा अभ्यस्त हैं। यह बात न जाने क्यों, पर आश्वासनदायक है। वह कुछ और आगे बढ़ा और उसने कुछ इश्तहार पढ़े। एक साईकल का विज्ञापन था और कुछ सिनेमा चल रहे थे। सब सिनेमाघरों में मैटिनी शो हो रहे थे, लेकिन जो दिन उसे दुनिया को देखने के लिए मिला था, उसे वह सिनेमा जैसी किसी चीज़ पर बर्बाद नहीं कर सकता था। हां उसके पास शहर में बिताने के लिये पर्याप्त समय होता, सर्कस जाने से कोई नुकसान नहीं था। आखिरकार वह एक बच्चे की तरह ही था, उसका अभी हाल ही में जन्म हुआ था।

अब वह समय नजदीक आ रहा था, जब उसका वेगा से मिलने जाना उचित होता।

यदि उसने जाने का इरादा कर लिया हो···

पर आखिरकार वह क्यों न जाये? वह उसकी मित्र थी। उसने पूरी ईमानदारी से यह निमंत्रण दिया था। यह निमंत्रण देते समय उसने उलझन तक का अनुभव नहीं किया था। इस नगर में वही एक मात्र ऐसी थी, जो उसके समीप थी तो क्या कारण था कि वह उसके पास न जाये?

उससे चुपचाप मिलने जाना, एक ऐसी वस्तु थी, जो वह सर्वाधिक चाहता था। वह शहर की दुनिया देखने से पहले उससे मिलना चाहता था। लेकिन कोई चीज उसे रोकती रही और विपरीत तर्क पेश करती रही। क्या अभी बहुत जल्दी नहीं है।

हो सकता है कि वह अभी तक वापस न लौटी हो या अभी अपने घर को ठीक से व्यवस्थित करने का समय न मिला हो।

ठीक है, कुछ देर बाद···

सड़क के हर कोने पर वह रुका और उसने सोचा कि गलत मोड़ों पर मुड़ने से कैसे बच सकता है। सर्वोत्तम रास्ता कौन-सा है? उसने किसी से नहीं पूछा बल्कि अपने आप रास्तों का चुनाव करता रहा।

और इस प्रकार वह शराब की एक दुकान के सामने पहुंच गया। यह एक आधुनिक दुकान नहीं थी, जिसमें शराब की बोतलें रखी हुई हों, बल्कि पुराने किस्म की दुकान थी, जिसमें शराब की बड़ी-बड़ी बोतलें रखी थीं। यहाँ आधा अंधियारा, आधी नमी थी, और विचित्र कड़ुवाहट भरा वातावरण था। वे लोग बैरलों से सीधे गिलासों में शराब निकाल रहे थे और सस्ती शराब का एक गिलास दो रूबल में आता था। शाशलिक के बाद यह सचमुच

सस्ता था। कोस्तोग्लोतोव ने अपनी जेब की गहराइयों में से दस रूबल का एक और नोट निकाला और इसे दुकानदार को दे दिया।

शराब का स्वाद कोई खास नहीं था। लेकिन उसका सिर इतना कमजोर था कि गिलास खत्म करते-करते उसका सिर चकराने लगा था। वह दुकान से निकला और आगे बढ़ गया। अब जीवन और बेहतर लग रहा था। यद्यपि सुबह से ही उसके लिए यह अच्छा था। यह इतना आसान और खुशनुमा था कि वह यह अनुभव कर रहा था कि कोई भी वस्तु उसे विचलित नहीं कर सकती, क्योंकि वह जीवन की समस्त बुरी चीजों का अनुभव कर चुका है और उन्हें पीछे छोड़ चुका है। और अब उसके जीवन का बेहतर भाग ही शेष रह गया है।

आज उसे अभी और अधिक खुशी प्राप्त होनी थी।

उदाहरण के लिये, उसे शराब की एक और दुकान दिखाई पड़ सकती है और वह एक गिलास पी सकता है।

लेकिन उसे कोई दुकान दिखाई नहीं पड़ी।

इसके विपरीत उसने देखा कि एक जगह पैदल रास्ते पर बेहद भीड़ जमा है और वहां से गुजरने के लिये सड़क पर उतर कर आगे बढ़ना ही संभव है। ओलेग को यह लगा कि निश्चय ही कोई सड़क दुर्घटना हो गई है। लेकिन वे सब लोग चौड़ी सीढ़ियों और कुछ बड़े-बड़े दरवाजों के सामने खड़े थे और प्रतीक्षा कर रहे थे। कोस्तोग्लोतोव ने अपनी गर्दन ऊपर उठा कर देखा और पढ़ा, 'केन्द्रीय डिपार्टमेंट स्टोर'।

अब बात उसकी समझ में आ गई। वे लोग कोई खास चीज दे रहे होंगे। लेकिन यह चीज क्या थी? उसने एक आदमी से पूछा, फिर एक औरत से, फिर दूसरी औरत से लेकिन इन सब ने कोई स्पष्ट बात नहीं कही। कोई भी उसे स्पष्ट उत्तर नहीं दे सका कि स्टोर जल्दी ही खुलने वाला है। तो ठीक है। यदि यही तरीका है तो···ओलेग भीड़ के भीतर घुस गया।

कुछ मिनट बाद दो आदमियों ने चौड़े दरवाजे खोल दिये। इन लोगों ने घबराहट भरे इशारों से लोगों की पहली पंक्ति को रोकने की कोशिश की। लेकिन फिर कूद कर इस प्रकार एक ओर हट गये मानो किसी घुड़सवार पलटन के धावे से अपनी रक्षा कर रहे हों। सबसे आगे की पंक्तियों में जवान मर्द और औरतें थीं। वे बहुत तेजी से दौड़ते हुए दरवाजों के भीतर घुस गये और फिर सीढ़ियां चढ़ते हुए पहली मंजिल पर जा पहुंचे। वह उसी रफ्तार से दौड़ रहे थे, जिस रफ्तार से इमारत में आग लग जाने की स्थिति में दौड़ते। शेष भीड़ भी भीतर घुसी। प्रत्येक व्यक्ति सीढ़ियों पर उतनी तेजी से चढ़ रहा था, जितनी तेजी से उसकी उम्र या शक्ति अनुमति देती थी। भीड़ की एक धारा नीचे की मंजिल पर ही इधर-उधर फैल गई। लेकिन प्रमुख धारा पहली

मंजिल की ओर ही जा रही थी। इस आक्रामक प्रवाह के एक अंग के रूप में सीढ़ियों पर शांति से चढ़ पाना असम्भव था। गहरे पक्के रंग का अव्यवस्थित सा ओलेग भी उन्हीं के साथ ऊपर की ओर दौड़ने लगा। उसका किट बैग उसकी पीठ पर टंगा था। "कंबख्त सिपाही।" भीड़ उसे गालियाँ देती जा रही थी।

सीढ़ियों के ऊपर पहुंचते ही लोगों की यह बाढ़ कई हिस्सों में बंट गई। लोग तीन अलग-अलग दिशाओं में दौड़ रहे थे। वे फिसलने वाले फर्श पर बड़ी तेजी से मुड़ रहे थे। ओलेग को अपना रास्ता चुनने में एक क्षण लगा, लेकिन वह निर्णय पर कैसे पहुँच सकता था? वह अंधाधुंध दौड़ता रहा, भीड़ के सर्वाधिक कृतसंकल्प हिस्से के साथ दौड़ता रहा।

उसने स्वयं को बुनी हुई चीजों के विभाग के सामने लगी निरन्तर बढ़ती हुई पंक्ति में पाया, पर हल्के नीले रंग की काम की वर्दी पहने विभाग की सहायिकाएं जम्हाई ले रही थीं और शान्ति से एक दूसरे से बात कर रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें इस भगदड़ और आपाधापी का कोई ज्ञान ही न हो। उनके लिये यह एक और ऊबा देने वाला खाली दिन था।

सांस ले लेने के बाद ओलेग ने देखा कि वे लोग औरतों के कार्डिगनों या स्वेटरों के लिये पंक्ति में खड़े हैं। उसने एक भद्दा शब्द कहा और आगे बढ़ गया।

दो अन्य धाराएं कहां बह निकली थीं, उसे पता नहीं चल सका। हर ओर लोग आ जा रहे थे और हर काउंटर पर लोगों की भीड़ लगी थी। एक जगह भीड़ सबसे ज्यादा थी और उसने निश्चय किया कि यहीं सबसे बढ़िया माल होगा। ये लोग सूप की नीले रंग की सस्ती प्लेटों के लिये लाइन लगाये खड़े थे। वे लोग इन प्लेटों के बक्स खोल रहे थे। हां, यह कुछ चीज थी। उशतेरेक में सूप की प्लेटें उपलब्ध नहीं थीं। कादमिन दम्पती जिन प्लेटों का इस्तेमाल करते थे, उनकी परत उखड़ चुकी थी। ऐसी एक दर्जन प्लेट उशतेरेक ले जाना सबसे बड़ी बात होगी। लेकिन वहां तक ले जाने में उसे कभी कामयाबी नहीं मिलेगी और वे रास्ते में ही टूट जायेंगी।

ओलेग डिपार्टमेंट स्टोर की दोनों मंजिलों पर उद्देश्यहीन-सा इधर-उधर घूमता रहा। उसने फोटोग्राफी विभाग देखा। कैमरे जो युद्ध से पहले प्रायः मिलते ही नहीं थे, अलमारियों में भरे पड़े थे और इनके इस्तेमाल की और चीजें भी रखी थीं। वे सब चीजें उसका मज़ाक उड़ा रही थीं और पैसे की मांग कर रही थीं यह उसके बचपन का एक अधूरा सपना था, फोटोग्राफी सीखना।

उसे आदमियों के बरसाती कोट बड़े पसन्द थे। युद्ध के बाद वह यही सपना देखता रहा कि नागरिकों जैसा बरसाती कोट खरीदेगा। उसका विचार

था कि आदमी बरसाती कोट में सबसे अच्छा दिखाई पड़ता है। लेकिन उसे इसके लिए ३५० रूबल चुकाने होंगे, जो एक महीने का वेतन है। वह आगे बढ़ गया।

उसने कहीं भी कुछ नहीं खरीदा। लेकिन आज उसकी जो मन:स्थिति थी, उसमें वह यह अनुभव कर रहा था कि उसका बटुआ पैसे से भरा है और उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। उसके भीतर भरी शराब अपना रंग ला रही थी और उसे और खुश बना रही थी।

ये लोग नकली रेशे की कमीजें भी बेच रहे थे। ओलेग को 'नकली रेशा' शब्द याद था। उशतेरेक की औरतों को जब कभी यह खबर मिलती तो वे सब-की-सब जिले के स्टोर में पहुंच जातीं। ओलेग ने कमीजें देखीं, उन्हें छू-कर देखा और उनके बारे में सोचने लगा। अपने मन में उसने एक कमीज खरीदने का निश्चय कर लिया, सफेद धारियों वाली हरी कमीज। लेकिन इसका दाम ६० रूबल था। वह यह दाम चुकाने की स्थिति में नहीं था।

जब वह कमीजों के बारे में सोच ही रहा था, बढ़िया ओवरकोट पहने एक आदमी काउंटर पर आया। वह इन कमीज़ों को नहीं, बल्कि रेशमी कमीज़ों की तलाश में था। उसने बड़ी नम्रता से सहायक से पूछा, "क्षमा कीजिए क्या आपके पास साइज़ ५० और कालर की माप ३७ का कमीज़ है ?"

ओलेग अवाक् रह गया। उसे ऐसा लगा मानो लोहे की आरियों से उसके शरीर की परतें उतारी जा रही हैं। उसने एकदम चौंककर इस क्लीन शेव आदमी की ओर देखा। उसकी चमड़ी एकदम स्वच्छ थी, उस पर कोई दाग धब्बा नहीं था। उसने फैल्ट का हैट लगा रखा था और उसकी टाई सफेद कमीज पर झूल रही थी। उसने इस तरह उस आदमी की तरफ देखा मानो उसने उसके कान पर घूंसा जमा दिया हो और जल्दी ही इन दोनों की मुठभेड़ होगी और इनमें से एक सीढ़ियों से नीचे लुढ़कता हुआ दिखाई देगा।

यह क्या था ? लोग खन्दकों में सड़ रहे हैं, लोगों को सामूहिक कब्रों में फेंका जा रहा है, कम गहरे गड्ढों में स्थायी बर्फ के जमाव के तले दफनाया जा रहा है, लोगों को पहली, दूसरी और तीसरी बार शिविरों में भेजा जा रहा है, लोग जेल के ट्रकों में एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक धक्के खाते रहते हैं, वे कुदाल का इस्तेमाल करते-करते स्वयं को मारे डाल रहे हैं, वे लोग थेगली लगी रूई की जाकट खरीदने के लिये गुलामों जैसा श्रम करते हैं—और यहां यह साफ-सुथरा छोटे से कद का आदमी था, जिसे केवल अपनी कमीज की माप ही नहीं, बल्कि अपने कालर की माप भी याद थी।

कालर की माप ने सचमुच ओलेग को स्तम्भित कर दिया था। यह बात उसकी कल्पना के बाहर थी कि कालर का भी अपना कोई खास नम्बर हो सकता है। एक आहत कराह को अपने भीतर ही घोंट कर वह कमीजों के

पास से दूर हट गया। कालर के आकार से भी—सचमुच ! इस बढ़िया किस्म के जीवन का क्या लाभ था ? इसमें प्रत्यावर्तन क्यों ? यदि आपको अपने कालर की माप याद रहती है, तो क्या इसका यह अर्थ नहीं होता कि आप निश्चय ही कुछ और भूल जायेंगे, कोई और महत्वपूर्ण बात भूल जायेंगे ?

कालर की इस माप ने उसे कमजोर-स- बना दिया था...

घरेलू इस्तेमाल की चीजों के विभाग में ओलेग को याद आया कि एलेना अलैक्जाद्रोवना एक हल्की इस्तरी खरीदने का किस प्रकार सपना देखती रहती है। यद्यपि उसने ओलेग को यह खरीद कर लाने के लिये नहीं कहा था। उसने यही आशा की कि जिस तरह घरेलू इस्तेमाल की और चीजें उपलब्ध नहीं है, उसी तरह यह इस्तरी भी उपलब्ध नहीं होगी। इस प्रकार उसका अन्तःकरण और उसके कन्धे दोनों ही भार से मुक्त रहेंगे। लेकिन सहायक ने उसे एक ऐसी ही इस्तरी दिखा दी।

"यह इस्तरी, क्यों क्या यह सचमुच हल्की इस्तरी समझी जाती है, मिस ?" कोस्तोग्लोतोव इसे संदेह से भर कर अपने हाथ में तोल रहा था।

"मैं आपसे झूठ क्यों बोलूंगी ?" सहायक ने अपने होंठों को घुमाते हुए कहा। उसकी नजर में एक प्रकार की आध्यात्मिकता थी। वह न जाने किन गहन विचारों में खोई हुई थी। मानो काउंटर के आस-पास खड़े लोग, वास्तविक मनुष्य न हों बल्कि असंसारी छाया भर हों।

"मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम मुझ से झूठ बोलोगी। लेकिन हो सकता है तुमसे गल्ती हो जाये," ओलेग ने सुझाव के स्वर में कहा।

वह सहायक लड़की अनिच्छा से अपने संसारी जीवन में वापस लौट आई थी। एक भौतिक वस्तु को उठाने के असह्य प्रयास का भार अपने ऊपर लेते हुए उसने एक दूसरी इस्तरी उसके सामने रख दी। इसके बाद अब उसमें किसी भी बात का स्पष्टीकरण देने की शक्ति शेष नहीं रह गई थी। एक बार फिर वह अपने आध्यात्मिक संसार में वापस लौट गई थी।

सचमुच तुलना से सत्य उद्घाटित होता है। हल्की इस्तरी सचमुच एक किलो हल्की थी। कर्तव्य का तकाजा था कि वह इसे खरीदे। इस्तरी उठाने के बाद वह सहायक लड़की पूरी तरह पस्त हो गई थी। फिर भी उसकी थकी-हारी अंगुलियों को बिल तैयार करना था, उसके निरन्तर दुर्बल होते जा रहे होंठों को 'नियन्त्रण' शब्द का उच्चारण करना था (यह नियन्त्रण क्या था ? किसे इस बात की जांच करनी थी ? ओलेग पूरी तरह भूल गया था। सचमुच, इस संसार में वापस लौटना बड़ा कठिन था।)

लेकिन क्या यह लड़की का काम नहीं था कि इस हल्की इस्तरी को नियन्त्रण स्थान पर पहुंचा दे। उसके पांव फर्श को मुश्किल से ही छू रहे थे। ओलेग सचमुच इस सहायिका को उसकी ध्यानावस्था से जगाने के लिये स्वयं

को अपराधी अनुभव कर रहा था।

उसने यह इस्तरी अपने किट बैग में रख ली और तुरन्त उसके कन्धे उसका भार महसूस करने लगे। अपने मोटे ओवरकोट में वह पहले ही गर्मी महसूस करने लगा था और उसे घुटन भी महसूस हो रही थी। उसे इस स्टोर से जल्दी से जल्दी बाहर निकल जाना चाहिये।

लेकिन तभी उसने स्वयं को एक विशाल आइने में देखा, जो फर्श से छत तक लगा हुआ था। वह जानता था कि एक आदमी के लिये यह अच्छी बात नहीं होती कि वह शीशे के सामने खड़ा होकर अपनी शक्ल घूरता रहे, लेकिन वास्तविकता यह थी कि पूरे उशतेरेक में ऐसा कोई आइना नहीं था। उसने इतने बड़े आइने में पिछले दस वर्षों से अपनी शक्ल नहीं देखी थी। अतः यह परवाह किये बिना ही कि लोग क्या सोचेंगे, वह वहां खड़ा होकर स्वयं को घूरता रहा। पहले दूर से फिर कुछ पास से और फिर कुछ और पास से।

उस सैनिक का कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ रहा था, जो वह अपने आपको समझता था। उसका ओवरकोट और फौजी जूते मुश्किल से ही एक ओवरकोट और फौजी जूतों जैसे दिखाई पड़ते थे। उसके कन्धे बहुत समय पहले ही झुक गये थे और उसका शरीर अपने आप को सीधा रखने की क्षमता खो चुका था। एक हैट और एक पेटी के बिना, वह एक ऐसा सजायाफ्ता आदमी दिखाई पड़ रहा था, जो भाग निकला हो। अथवा देहात से आया हुआ कोई नौजवान लड़का जो कुछ खरीद फरोख्त के लिये शहर आ गया हो। लेकिन इस कार्य के लिये थोड़ी सी उद्धता की जरूरत होती है और कोस्तोग्लोतोव पस्त, ध्वस्त और भयंकर रूप से उपेक्षित सा दिखाई पड़ रहा था।

यह सचमुच दयनीय बात थी कि उसकी आइने में अपनी शक्ल पर नजर गई थी। उस समय तक वह अपने आपको एक साहसी और सैनिक जैसी आकृति का व्यक्ति समझता था जो पास से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति अथवा किसी स्त्री की ओर समानता के आधार पर नजर उठा सकता था। उसकी पीठ पर लदे इस भयंकर किट बैग ने किसी सैनिक का किट बैग दिखाई देना बहुत पहले ही बन्द कर दिया था। अब यह एक भिखारी के पुलिंदे जैसा दिखाई पड़ रहा था। सचमुच वह सड़क पर बैठ कर यदि हाथ फैला देता तो लोग उसके ऊपर कोपेक फैंक सकते थे।

लेकिन उसे आगे बढ़ना था···

समस्या केवल इतनी थी कि ऐसी शक्ल सूरत लेकर वह उसके सामने कैसे जा सकता है?

वह कुछ और आगे बढ़ा और उपहार की चीजों के विभाग में पहुंच गया। लोग स्त्रियों के नकली गहने बेच रहे थे।

औरतें खिलखिला रही थीं। इन नकली गहनों को पहन-पहन कर देख

रही थीं। कुछ चीजों को अजमा और अस्वीकार कर रही थीं। तभी अपने गाल पर लगे गहरे घाव वाला यह अर्द्ध सैनिक, अर्द्ध भिखारी उनके बीच जा खड़ा हुआ और निरुत्साह से इधर-उधर दौड़ने लगा।

सहायिका मुस्कराई। यह आदमी गांव में प्रतीक्षा कर रही अपनी प्रेमिका के लिये क्या खरीदना चाहता है? पर वह उसके ऊपर नजर भी रख रही थी। कहीं वह कोई चीज़ उड़ा न ले।

लेकिन उसने कुछ भी दिखाने को नहीं कहा, कोई भी चीज़ अपने हाथ में नहीं उठाई। वह वहां खड़ा-खड़ा निरुत्साह से चारों ओर देखता रहा।

सारा विभाग आइनों, कांच की चीज़ों कीमती पत्थरों, धातु की चीज़ों और प्लास्टिक के सामान से जगमगा रहा था। वह वहीं खड़ा रहा और उसने अपना सिर सड़क पर चुंगी की बल्ली के सामने खड़े एक बैल की तरह झुका रखा था। कोस्तोग्लोतोव का सिर इस बाधा को नहीं तोड़ सकता था।

तभी बात उसकी समझ में आ गई। उसे लगा कि किसी औरत के लिए कोई खूबसूरत चीज़ खरीदना, कितनी अद्भुत बात होती है और इस चीज को उसके वक्ष पर लगाना या उसके गले में पहनाना कितना अद्भुत होता है। जब तक वह इस बात को नहीं जानता था, उसे इस बात का स्मरण नहीं था, वह निर्दोष था। लेकिन अब उसे इस बात की जानकारी हो चुकी थी। उसे बड़ी तीक्ष्णता से इसका एहसास हो गया था और अब इस क्षण के बाद वह बिना कोई उपहार लिए वेगा के पास नहीं जा सकता था।

वह कोई भी चीज़ उसे उपहार में नहीं दे सकता था। उसमें यह साहस नहीं था। वह उसे कुछ भी नहीं दे सकता था। कीमती उपहारों को देखने की तुक भी नहीं थी और जहां तक सस्ती चीज़ों का सवाल था, उसे इनकी क्या जानकारी थी? उदाहरण के लिये उन ब्रचों को ही लो नहीं, ब्रच नहीं, पिन लगे सजावटी पेंडेंट विशेषकर कांच के चमकदार टुकड़ों वाला वह षटकोण पेंडेंट? क्या वह अच्छा नहीं था?

लेकिन हो सकता है कि यह भद्दा और भोंडा हो?…सम्भवतः कोई सुरुचिपूर्ण स्त्री ऐसी किसी चीज को अपने हाथ में लेने मात्र से लज्जा का अनुभव करे?…हो सकता है कि बहुत दिन पहले ही उन्होंने यह पहनना छोड़ दिया हो अब इनका फैशन न रहा हो?…वह किस प्रकार यह जान सकता था कि वे आजकल क्या पहनती हैं अथवा क्या नहीं पहनती हैं?

वह यह कैसे कर सकता है—रात बिताने के लिये उसके घर पहुंचे और फिर मूक और शरमाता हुआ उसे एक ब्रूच भेंट करे?

स्कीटल खेल में जिस प्रकार गेंदों की निरन्तर मार होती है, उसी

प्रकार एक के बाद एक विचार उसके मन में उठ रहा था और उसे उलझन में डाल रहा था।

इस दुनिया की भयंकर उलझनें उसकी समझ के बाहर थीं। यह एक ऐसी दुनिया थी, जिसमें व्यक्ति को औरतों के फेशन की जानकारी होनी चाहिए, उसमें औरतों की पसन्द के गहने चुनने की अक्ल होनी चाहिए, उसे ऐसा होना चाहिए कि एक आइने के सामने सम्मानित लगे और उसे अपने कालर का साइज भी मालूम हो……

और वेगा वस्तुतः इस दुनिया में रहती थी, वह इसके बारे में सब कुछ जानती थी और उसे यह अजनबी भी नहीं लगती थी।

उसने बेहद उलझन और निरुत्साह का अनुभव किया। यदि उससे मिलने जाना है तो जाने का उपयुक्त समय यही है।

लेकिन…वह नहीं जा सका।

वह…वह जाने का उत्साह खो चुका था। वह…वह भयभीत था।

उन दोनों के बीच अब यह डिपार्टमेंट स्टोर आ खड़ा हुआ था…

और इस प्रकार ओलेग खड़खड़ाता हुआ उस अभिशप्त मन्दिर से बाहर निकला, जिसके भीतर वह बाजार की मूर्तियों की आज्ञा पालन करता हुआ प्रवेश कर गया था और वह भी इतने भद्दे लालच के साथ। उदासी ने उसे कुचल डाला था। वह इतना पस्त अनुभव कर रहा था, मानो उसने हजारों रूबल खर्च कर डाले हों, मानो उसने स्टोर के प्रत्येक विभाग में कोई न कोई चीज़ अवश्य देखी हो, परखी हो। और अब इन सब चीजों के पुलिंदे उसे बांध कर दे दिए गए हों और वह अपनी पीठ पर डिब्बों और पार्सलों का एक पहाड़ लादे झुका हुआ चल रहा हो।

लेकिन उसके पास केवल एक इस्तरी थी।

वह बेहद थक चुका था। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसने एक के बाद एक निरर्थक वस्तु को खरीदने में घंटों का समय बिताया हो। और उस पवित्र गुलाबी सुबह का क्या हुआ, जिसने उसे पूरी तरह नई और सुन्दर जिन्दगी का वचन दिया था? उन रुई के गालों जैसे बादलों का क्या हुआ, जिनकी सुन्दर रचना में शताब्दियों का समय लगा था? और आकाश के उस अथाह सागर में गोता लगाने वाले उस चन्द्रयान का भी क्या हुआ?

आज सुबह उसकी आत्मा एक थी, वह टुकड़ों में विभाजित नहीं थी। उसने इसे कहां टुकड़े-टुकड़े कर डाला, डिपार्टमेंट स्टोर में नहीं, इससे पहले ही उसने शराब के साथ ही इसको पीकर समाप्त कर दिया था। अथवा इससे पहले ही उसने शाशलिक के साथ इसे अपने पेट में पहुंचा दिया था।

उसे करना यह चाहिए था कि फूलों से लदे खुमानी के पेड़ पर एक नजर डालने के बाद वह सीधा वेगा से मिलने चला जाता।

ओलेग स्वयं को बीमार अनुभव करने लगा, दुकानों के शो केसों और साइनबोर्डों को देखकर ही नहीं, बल्कि चिन्तित अथवा प्रसन्न लोगों की भीड़ से निरन्तर और अधिक खचाखच भरती जा रही सड़कों पर धक्के खा-खा कर चलते हुए भी वह इस बात का अनुभव कर रहा था। वह किसी नदी की धारा के बराबर छाया में लेट जाना चाहता था। वह इस प्रकार लेटकर स्वयं को पवित्र करना चाहता था। शहर में एकमात्र ऐसा स्थान जहां वह जा सकता था चिड़ियाघर ही था। यह वह जगह थी, जहां जाने का अनुरोध द्योमा ने किया था।

ओलेग ने अनुभव किया कि जानवरों की दुनिया में फिर भी कुछ सहृदयता है, वे उसे बेहतर समझ सकतें हैं, वे अधिक उसके स्तर के हैं।

भारी ओवरकोट के कारण बेहद गर्मी अनुभव करने की वजह से भी वह बेहद भार का अनुभव कर रहा था। पर वह ओवरकोट को उतारकर अलग से इसे ढोने के लिए भी तैयार नहीं था। उसने लोगों से पूछना शुरू किया कि चिड़ियाघर को कौन-सा रास्ता जाता है और अनेक अच्छी सड़कों, चौड़ी और शान्त सड़कों को पार करने के बाद चिड़ियाघर था। ये सड़कें बड़े-बड़े पत्थरों से बनी थीं और छायादार वृक्ष भी लगाये गए थे। इन सड़कों पर कोई स्टोर, कोई फोटोग्राफर कोई नाट्यशाला, कोई शराब की दुकान नहीं थी—यहां ऐसी कोई चीज नहीं थी। ट्राम भी कहीं दूर चलती हुई सुनाई पड़ती थी। यहां बस सुन्दर, शांतिपूर्ण और धूपदार दिन ही मौजूद था और पेड़ों के नीचे भी उसे गर्मी प्राप्त हो रही थी। पैदल रास्तों पर छोटी-छोटी लड़कियां रस्सियां कूद रही थीं, खेल खेल रही थीं। गृहस्थ अपने सामने के बगीचों में पौधे बो रहे थे अथवा बेलों को ऊपर चढ़ाने के लिए लकड़ियां लगा रहे थे।

चिड़ियाघर के फाटक के पास सचमुच बच्चों का ही साम्राज्य था। आज स्कूलों की छुट्टी थी। सचमुच कैसा अद्भुत दिन था।

चिड़ियाघर में प्रवेश करने के बाद ओलेग की नज़र सबसे पहले जिस चीज पर पड़ी, वह घुमावदार सींगों वाला मारखोर था। इसके बाड़े में एक ऊंची चट्टान लगी थी, जिसकी चढ़ाई बड़ी खड़ी थी और जिसके आगे गहरा गड्ढा था। इस गहरे गड्ढे के एकदम ऊपर बिल्कुल किनारे पर उसके अगले पांव रखे थे और यह गर्वीला बकरा अपनी मजबूत और दुबली टांगों के ऊपर एकदम स्थिर खड़ा था। और इसके विलक्षण सींग जो लम्बे और मुड़े हुए थे, ऐसे लग रहे थे मानो किसी हड्डी के ऊपर रिबन लपेट-लपेट कर इन्हें बनाया गया हो। इसकी दाढ़ी नहीं थी, बल्कि बहुत शानदार अयाल थी, जो दोनों ओर घुटनों तक लटकी हुई थी जलपरी के बालों की तरह। पर यह बकरा इतनी शान से खड़ा था कि कमजोर अथवा हास्यस्पद नहीं लगता था।

ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को निराशा ही हाथ लगी होगी, जो इस आशा से

मारखोर के बाड़े के पास खड़ा रहा होगा कि उसके स्थिर छोटे-छोटे खुर उस चिकनी चट्टान पर अपनी स्थिति में परिवर्तन करेंगे। वह बहुत देर से एक मूर्ति की तरह जहां-का-तहां खड़ा था। ऐसा लगता था मानो वह उस चट्टान का ही एक अंग हो और जब हवा बन्द होती थी और इसके लम्बे-लम्बे बाल हिलने बन्द हो जाते थे तो यह सिद्ध करना असम्भव था कि वह जीवित है और लोगों को बहकाने के लिये कोई नकली बकरा तो खड़ा नहीं कर दिया गया है।

ओलेग वहां पांच मिनट तक खड़ा रहा और फिर बड़े प्रशंसा के भाव से आगे बढ़ गया। बकरा अपने स्थान से जरा-सा भी नहीं हिला था। जिंदगी काटने के लिये आदमी को ऐसे ही चरित्र की आवश्यतता थी।

वह इस बाड़े से हट कर एक-दूसरे रास्ते पर पहुंच गया और ओलेग ने देखा कि एक पिंजड़े के बाहर उत्साहित भीड़ जमा है, जिसमें अधिकांश बच्चे हैं। इसके भीतर कोई चीज़ अन्धाधुन्ध कूद रही थी, इधर-उधर दौड़ रही थी, लेकिन उसके दौड़ने की जगह में परिवर्तन नहीं होता था। एक पहिए के भीतर एक गिलहरी फंसी हुई थी—यहां सचमुच वह प्रसिद्ध कहावत चरितार्थ हो रही थी। लेकिन अब तक यह कहावत कुछ बासी पड़ चुकी थी और इसकी सच्ची तस्वीर आपकी आंखों के सामने नहीं आ पाती थी। एक गिलहरी ही क्यों? और एक पहिए के भीतर ही क्यों? लेकिन यहां यह गिलहरी इसे चरितार्थ कर रही थी। इसके पिंजड़े के भीतर पेड़ का एक तना भी था और सिरे पर सूखी हुई शाखाएं इधर-उधर फैली हुई थीं। लेकिन किसी ने धोखेबाजी से पेड़ के बराबर एक पहिया टांग दिया था। यह एक ऐसा ढोल था जिसके एक ओर का हिस्सा दर्शकों के देखने के लिये खुला था। इसके भीतरी दायरे में आड़ी-तिरछी लकड़ियां लगी थीं, जिसके कारण यह पूरा गोल चक्कर कभी समाप्त न होने वाली गोलाकार सीढ़ियां बन गया था। और वहां, अपने वृक्ष को प्रायः पूरी तरह से भूलकर और ऊपर की कोमल टहनियों को भी भूलकर गिलहरी पहिए के भीतर फंसी थी, यद्यपि किसी ने उसे वहां जबर्दस्ती नहीं डाला था अथवा कोई खाने की चीज डालकर भी नहीं फंसाया था। वह कृत्रिम गतिविधि और गतिशीलता की भ्रांति से आकर्षित होकर वहां फंस गई थी। सम्भवतः जिज्ञासावश वह उन सीढ़ियों पर आहिस्ता-आहिस्ता चढ़ने लगी हो और उसे उस समय यह मालूम न हो कि ये सीढ़ियां कितनी क्रूर और चक्करदार हैं। (यह पहला मौका नहीं था कि वह इसमें फंसी थी। शायद हजारवीं बार वह इसमें फंसी थी। वह इससे परिचित हो चुकी थी, लेकिन फिर भी कोई अन्तर नहीं पड़ा था।)

पहिया अत्यधिक तेज रफ्तार से घूम रहा था। गिलहरी का कोमल धारीदार शरीर और काले-लाल रंग की पूंछ अन्धाधुन्ध दौड़ के कारण एक

अर्द्धवृत्त का रूप धारण कर चुकी थी। इस पहिए में जो टुकड़े लगे थे वे पहले अलग-अलग दिखाई दे रहे थे, लेकिन रफ्तार बढ़ने के साथ-साथ इनका अलग-अलग दिखाई पड़ना कम होता गया और ये अन्ततः एकाकार लगने लगे। गिलहरी अपनी पूरी ताकत से दौड़ रही थी। इसका दिल बस फटने को ही था, लेकिन फिर भी यह अगली सीढ़ी से आगे अपना पन्जा नहीं उठा पाती थी।

ओलेग से पहले जो लोग वहां खड़े थे, वे उसी तरह गिलहरी को दौड़ते हुए देख रहे थे, जैसे ओलेग ने कुछ मिनटों तक लगातार देखा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया। पिंजड़े में ऐसी कोई बाहरी शक्ति नहीं थी, जो पहिए को रोक सके अथवा गिलहरी को बचा सके। तर्क की ऐसी कोई शक्ति नहीं थी, जो इसे यह समझा सके, "रुक जाओ। दौड़ना निरर्थक है!" नहीं, स्पष्टतया एक ही रास्ता था, गिलहरी की मौत। ओलेग यह नहीं देखना चाहता था। अतः वह आगे बढ़ गया। यहां दो बड़े सार्थक उदाहरण थे। प्रवेश द्वार के दाहिनी और बाईं ओर। ये अस्तित्व की दो समान रूप से संभावित प्रणालियां थीं और चिड़ियाघर बच्चों और बूढ़ों का इन दोनों प्रणालियों के माध्यम से समान रूप से स्वागत करता था।

ओलेग रूपहले फीजेंट? सुनहले फीजेंट और लाल तथा नीले परों वाले फीजेंट के सामने से गुजरा। उसने मोर की अवर्णनीय रंग की गर्दन को प्रशंसा के भाव से देखा, इसकी एक मीटर चौड़ी दुम को और इसके गुलाबी और सुनहरे रंग के बाहरी परों को। अपने रंगहीन निष्कासन और अस्पताल के जीवन के बाद अब उसकी आंखें विविध रंगों को आस्वादन कर रही थीं।

यहां विशेष गर्मी नहीं थी। चिड़ियाघर बहुत लम्बे-चौड़े मैदान में बनाया गया था और पेड़ों से छाया मिलने लगी थी। एक मुर्गीखाने के सामने से गुजरते हुए ओलेग ने यह अनुभव किया कि वह आराम का अनुभव कर रहा है। इस मुर्गीखाने में अन्नदालूसिया मुर्गियां, तोलूज और खोलमोगोरी बत्तखें थीं। इसके बाद वह एक पहाड़ी पर चढ़ गया, जहां सारस, बाज और गिद्ध रखे गये थे। अन्ततः वह एक ऐसी चट्टान पर पहुंचा, जो समस्त चिड़ियाघर से ऊंची थी और जिसके ऊपर तम्बू जैसा एक पिंजड़ा बना था। यहीं सफेद सिर वाले गिद्ध रहते थे। यदि यहां नोटिस न लगा होता, तो इन्हें चील भी समझ लिया जा सकता था। इन्हें यथासम्भव ऊंचे स्थान पर रखा गया था, लेकिन चट्टान के ऊपर पिंजड़े की छत काफी नीची थी और ये विशालकाय और उदास पक्षी बड़े कष्ट में थे। और अपने पंखों को फैला-फैलाकर फड़फड़ा रहे थे, यद्यपि कहीं उड़ निकलने का रास्ता नहीं था।

जब ओलेग ने संकट में पड़े इन पीड़ाग्रस्त गिद्धों को देखा तो उसने अपने कन्धों की हड्डियां इस प्रकार हिलाईं, मानो वह अपने पंख फैलाने जा

रहा हो। (क्या यह कारण था कि इस्तरी उसकी पीठ में जोर से गड़ने लगी थी?)

अपने आस-पास की प्रत्येक चीज को उसने अपने अलग ढंग से समझाया एक पिंजड़े पर लिखा था: "कैद में सफेद उल्लुओं का अच्छा हाल नहीं होता?" तो वे यह जानते थे! और फिर भी इन्हें बन्द कर दिया गया। ऐसे कौन से पतित उल्लू होते हैं, वह सोच रहा था, जिनका कैद में अच्छा हाल होता है।

एक और पिंजड़े पर लिख दिया गया था: "साही रात को निकलने वाला जानवर होता है।" हम इसका अर्थ जानते हैं? वे लोग इसे रात को साढ़े नौ बजे बुलाते हैं और सुबह चार बजे वापस जाने देते हैं।

फिर: "ऊदबिलाव गहरे और जटिल छेदों में रहता है, जो जमीन के नीचे बने होते हैं।" अहा—ठीक हमारी ही तरह! तुम्हारे लिये अच्छा ही है ऊदबिलाव; और कोई इसके अलावा रह भी कैसे सकता है? उसकी थूथन ऐसी धारीदार होती है, जैसे किसी ने सही के निशान लगा दिए हों।

ओलेग का प्रत्येक वस्तु के प्रति ऐसा विकृत दृष्टिकोण था कि उसके लिए यहां आना कोई अच्छी बात नहीं थी, ठीक उसी तरह जैसे उसे डिपार्टमेंट स्टोर के भीतर नहीं जाना चाहिए था।

दिन काफी गुजर चुका था पर जिन हर्षपूर्ण बातों का वचन उसे दिया गया था, वे अभी भी सामने नहीं आई थीं।

ओलेग भालुओं की मांद पर पहुंचा। एक काला भालू जिसकी छाती पर सफेद टाई जैसा निशान बना था, तारों की जालीदार बाड़ में अपनी थूथन फंसाये खड़ा था। अचानक यह ऊपर की ओर कूदा और ऊपर लगे लट्ठे को अपने अगले पंजों से पकड़कर लटक गया। उसकी गर्दन के नीचे छाती के ऊपर जो सफेद निशान था वह उतना सफेद टाई जैसा नहीं था, जितना पादरी की जंजीर जैसा जिससे बन्धा एक क्रास छाती के ऊपर लटक रहा हो। यह कूद कर ऊपर लटक गया था। अपना दुःख और निराशा प्रकट करने के लिये इसके पास और दूसरा तरीका ही क्या था?

बराबर के बाड़े में रीछनी अपने बच्चों के साथ बैठी थी।

इस अगले बाड़े में छोटे बालों वाला रीछ बहुत ही संकटपूर्ण जीवन काट रहा था। यह बड़ी बेचैनी से इधर-उधर चक्कर काट रहा था। इसकी इच्छा अपने बाड़े में ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक चक्कर लगाने की थी। लेकिन जगह केवल इतनी थोड़ी थी कि यह मुश्किल से ही इसके भीतर घुम सकता था, क्योंकि एक दीवार से दूसरी दीवार के बीच की दूरी उसकी अपनी लम्बाई से तीन गुने से अधिक नहीं थी।

तो, एक रीछ के पैमाने के अनुसार, यह उसकी सजा की कोठरी थी।

बच्चे यह देखकर बड़े खुश थे। वे एक-दूसरे से कह रहे थे, "अरे, आओ उसके ऊपर कुछ पत्थर फेंकें। वह समझेगा हम मिठाई फेंक रहे हैं।"

ओलेग ने यह नहीं देखा कि बच्चे उसकी तरफ देख रहे हैं। उनके लिये वह भी एक जानवर था, एक और जानवर, जिसे देखने के लिये उन्हें टिकट नहीं देना पड़ा था। वह स्वयं अपने आपको नहीं देख सकता था।

यह रास्ता नीचे नदी की ओर जाता था, जहां ध्रुव प्रदेश के भालू रखे गए थे। कम-से-कम वहां उन्होंने रीछ और रीछनी को साथ-साथ रख रखा था। पानी की कई नालियां उनके बाड़े के भीतर बने गड्ढे में गिर रही थीं और इस प्रकार उन के लिये एक बर्फानी नाला बन जाता था, जिसमें वे कुछ मिनटों के बाद स्वयं को तरोताजा करने के लिये कूदते रहते थे। इसके बाद वे फिर ऊपर सीमेंट के फर्श पर निकल आते थे। अपनी थूथन को पंजों से दबाकर पानी निकालते थे और पानी के ऊपर बने चबूतरे पर इधर-उधर टहलने लगते थे।

यहां की गर्मी ध्रुव प्रदेशों के इन रीछों को कैसी लगती होगी? तापमान ४० डिग्री सेंटीग्रेड है। ठीक है, इन्हें वैसा ही लगता होगा, जैसा हमें आर्कटिक प्रदेश में लगता था।

इन कैद जानवरों के बारे में सबसे अधिक उलझन भरी बात यह थी कि यदि मान लीजिए ओलेग इनका पक्ष लेता और उसमें शक्ति होती, तो भी वह इनके पिंजड़ों को तोड़कर इन्हें स्वतन्त्र न कर पाता। इसका कारण यह था कि अपने प्राकृतिक और स्वभावजन्य वातावरण से वंचित होकर, ये उचित आजादी का विचार भी खो चुके थे। इन्हें अचानक आजाद कर देना, इनके लिए और अधिक कष्टों की सृष्टि करना था।

इसी विचित्र तरीके से कोस्तोग्लोतोव ने तर्क किया। उसका दिमाग इस कदर उलझ चुका था कि वह चीजों को उनके सीधे-सादे रूप में और भावावेश के बिना नहीं देख पाता था। वह जो कुछ भी अनुभव करता था, वह जो कुछ भी अनुभव करेगा, उसके ऊपर उसके अतीत की यह छाया, यह भयानक भूत और यह जमीन के भीतर की घड़घड़ाहट छाई रहेगी।

दुःखी हाथी जो जगह के अभाव से सबसे अधिक ग्रस्त था, पवित्र भारतीय सांड़ और सुनहरे अगूती खरगोश से आगे बढ़ने के बाद ओलेग एक पहाड़ी के ऊपर चढ़ गया और इस बार बन्दरों के पास जा पहुंचा।

बच्चे और बड़े इनके पिंजड़ों के पास खड़े आनन्द ले रहे थे। बन्दरों को चीजें खिला रहे थे। कोस्तोग्लोतोव मुस्कराये बिना ही इनसे आगे बढ़ गया। ये बन्दर जो प्रायः बालों से वंचित हो चुके थे, मानो इनके बाल मूंड दिये गये हों, अपने सोने के तख्तों पर उदास बैठे हुए, अपनी आदिम चिंताओं और खुशियों में खोये हुए थे। उन्हें देखकर ओलग को अपने अनेक पूर्व परि-चित याद आ गए। वस्तुतः वह इनके बीच ऐसे अनेक व्यक्तियों को पहचान

सकता था जो आज भी कहीं किसी जेल में पड़े होंगे।

एक एकाकी, विचारों में खोया हुआ चिम्पैंजी, जिसकी आंखें सूजी हुई थीं और हाथ घुटनों के बीच लटक रहे थे, ओलेग को शुलुबिन की याद दिला रहा था। शुलुबिन न जाने कितनी बार इसी तरह बैठा करता था।

आज के इस धूप भरे गरम दिन शुलुबिन अपने बिस्तर पर पड़ा जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा होगा।

कोस्तोग्लोतोव की समझ में यह नहीं आया कि वह बन्दरों के इस बाड़े में कोई दिलचस्प चीज़ पा सकता है। वह तेजी से आगे बढ़ने लगा और आगे निकलने ही वाला था कि तभी उसने देखा कि एक दूर के पिंजड़े के पास खड़े कई लोग कोई घोषणा पढ़ रहे थे।

वह वहां गया, पिंजड़ा खाली था। लेकिन इस पर लिखा था "मकाक्वो रीसस बन्दर" बड़ी जल्दबाजी में लिखी गई घोषणा भी प्लाईवुड पर कील से ठोक दी गई थी। इसमें कहा गया था: "उस छोटे से बन्दर की आंखें एक दर्शक की विवेकहीन क्रूरता के कारण जाती रहीं जो यहां रहता था। एक दुष्ट आदमी ने मक्काक्वी रीसस बन्दर की आंखों में तम्बाकू झोंक दिया।"

ओलेग अवाक् रह गया। अब तक वह घूमता रहा था, और बड़ी जानकारी के भाव से मुस्कराता जा रहा था। लेकिन अब उसे लगा कि वह जोर-जोर से चीखे और दहाड़-दहाड़ कर पूरे चिड़ियाघर को कंपा डाले, मानो तम्बाकू उसी की आंखों में झोंक दिया गया हो। "क्यों? इसकी आंखों में तम्बाकू इस तरह क्यों झोंक दिया गया, क्यों? यह विवेकहीन है! क्यों?"

जिस बच्चों जैसी सादगी से यह बात लिखी गई थी, उसने उसके हृदय को बेध डाला था। इस अज्ञात व्यक्ति को, जो पहले ही सुरक्षित भाग निकला था, 'मानव विरोधी,' करार नहीं दिया गया। अथवा उसे 'अमरीकी साम्राज्यवाद का जासूस नहीं बताया गया। बस, इतना भर कह दिया गया कि वह दुष्ट था? बच्चे दुष्ट बनने के लिये बड़े नहीं होते! बच्चे असहाय जीवों को नष्ट नहीं करते!

इस घोषणा को बारम्बार पढ़ा जा रहा था, और बड़े लोग तथा छोटे-छोटे बच्चे खाली पिंजड़े को देखे जा रहे थे।

ओलेग आगे बढ़ गया, और अपने चिकने, जले हुए, गोलियों की मार से छिद्रित किट बैग को, जिसके भीतर इस्तरी रखी थी, अपने साथ घसीटता हुआ सर्पों, सरी सृपों और शिकार करने वाले जानवरों के हिस्से में पहुंच गया।

गिरगिट बालू के ऊपर इस तरह एक-दूसरे के ऊपर झुके हुए पड़े थे। मानो परतदार कंकड़ पड़े हों। इन लोगों ने इधर-उधर आने-जाने की स्वतंत्रता के बदले क्या खोया?

एक विशालकाय चीनी मगर भी वहां पड़ा था, जिसकी थूथन चपटी और ढले हुए लोहे की तरह काली थी। इसके पंजे ऐसा लगता था मानो गलत दिशा में मुड़ गए हों। इसके बाड़े के बाहर लगी तख्ती पर लिखा था कि गर्मियों में यह हर रोज गोश्त नहीं खाता। सम्भवतः यह अपने चिड़ियाघर के सुव्यवस्थित संसार को खूब पसन्द कर रहा होगा जहां उसे सदा तैयार भोजन मिलता था।

एक शक्तिशाली अजगर एक पेड़ से लिपटा हुआ था मानो एक मोटी सूखी हुई शाखा हो। अपनी छोटी तेज लपलपाती जीभ के अलावा यह पूरी तरह से गतिहीन था। एक जहरीला सांप कांच के ढक्कन के नीचे रखा हुआ था। सामान्य सांप भी थे, कई सारे।

लेकिन उसकी इच्छा इन सबको देखने की नहीं थी। वह एक क्षण को भी उस बन्दर को नहीं भुला पा रहा था जिसकी आंखें फोड़ दी गई थीं। वह लगातार उसी बन्दर के चेहरे की कल्पना में खोया हुआ था।

अब वह उस स्थान पर पहुंच गया था, जहां शिकार करने वाले जानवर रखे गये थे। ये जानवर बड़े शानदार थे और अपनी खूबसूरत खालों में एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे। एक लिंक्स (जंगली बिल्ली), बर्फीले इलाके में रहने वाला तेंदुआ, राख के रंग का पूमा नाम का अफ्रीकी शेर और काले चकत्तों वाला जागर तेंदुआ। ये सब कैदी थे, ये सब स्वतन्त्रता के अभाव से पीड़ित थे, लेकिन उन्हें देखकर ओलेग के मन में वही भाव जगा जो शिविर के गुण्डों के प्रति जगता था। आखिरकार यह निष्कर्ष तो निकाला ही जा सकता है। कि संसार में अपराधी कौन हैं। एक तख्ती पर लिखा था कि जागर तेंदुआ २४ घंटों में १४० किलोग्राम गोश्त खाता है। सचमुच यह कल्पनातीत बात थी। उनके शिविर को तो एक सप्ताह में भी इतना गोश्त नहीं दिया जाता था। और जागर तेंदुए को हर २४ घंटों में यह प्राप्त होता था। ओलेग को उन 'ट्रस्टियों' की याद थी जो शिविर के अस्तबलों में काम करते थे। ये लोग घोड़ों को ठगते थे। उनका चारा खा जाते थे और इस प्रकार अपने प्राणों की रक्षा करते थे।

कुछ और आगे जाकर उसने देखा 'श्रीमान शेर'। उसकी मूछें—हां उसकी मूछें ही उसके क्रूर स्वभाव को सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती थीं। और उसकी आंखें पीली थीं···ओलेग के मन में विचित्र विचार आए। वह शेर की ओर नफरत से देखता हुआ खड़ा रहा।

शिविरों में ओलेग की मुलाकात एक वृद्ध राजनीतिक कैदी से हुई थी जो एक बार तुरुखान्स्क[1] में निष्कासित किया गया था। उसने ओलेग को उन

---

१. वह स्थान जहां क्रान्ति से पहले स्तालिन को निष्कासित किया गया था।
(अनुवादक की टिप्पणी)

आंखों के बारे में बताया था—वे मखमल जैसी काली नहीं थीं, वे पीली थीं।

घृणा से पृथ्वी से चिपका हुआ ओलेग शेर के पिंजड़े के सामने खड़ा रहा।

ठीक ऐसा ही है, ठीक ऐसा ही है...लेकिन क्यों ?

उसे मितली आने लगी। वह अब चिड़ियाघर में और अधिक समय नहीं रुका रहना चाहता था। वह यहां से भाग निकलना चाहता था। वह बब्बर शेर देखने नहीं गया। वह बाहर निकलने का रास्ता तलाश करने लगा—कहां था यह रास्ता?

जेबरा उसकी आंखों के सामने से दौड़ा जा रहा था। ओलेग ने उसकी ओर नजर डाली और आगे बढ़ गया।

तभी अचानक...वह एक आश्चर्यजनक एक चमत्कारी वस्तु के सामने निःस्तब्ध खड़ा रह गया।

इस समस्त मांसाहारी कठोरता के बाद यह आध्यात्मिकता का एक चमत्कार ही था : नील गाय। हलके कत्थई रंग की इतनी सुन्दर, हलकी-फुलकी टांगें, पतला दुबला सिर और सतर्क आंखें पर किसी भी रूप में भयभीत नहीं। वह तार की जाली के बराबर खड़ी थी और ओलेग की ओर अपनी बड़ी-बड़ी, विश्वास भरी और...भद्र, हां, भद्र आंखों से देख रही थी।

यह समानता इतनी सच्ची थी कि असह्य हो उठी। वह अपनी सरल शिकायत भरी आंखें उसके ऊपर टिकाए हुए थी। वह उससे पूछ रही थी, "तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आ रहे हो ? आधा दिन गुजर गया है। तुम क्यों नहीं आ रहे हो ?"

यह जादू था, यह आत्माओं का दूसरे शरीर में प्रवेश था, वह स्पष्टतया वहां खड़ी-खड़ी ओलेग की ही प्रतीक्षा कर रही थी। वह मुश्किल से ही उसके पास पहुंच पाया था कि उसने उन शिकायतभरी लेकिन क्षमामयी आंखों से पूछना शुरू कर दिया, "क्या तुम नहीं आ रहे हो ? क्या तुम नहीं आ रहे हो ? मैं प्रतीक्षा कर रही हूं।" हां, वह क्यों नहीं जा रहा है ? वह वहां क्यों नहीं जा रहा है ?

ओलेग ने अपने शरीर को झटका दिया और बाहर निकलने के दरवाजे की ओर बढ़ चला।

वह शायद उसे अभी भी घर मिल जाएगी।

१५. और अन्तिम दिन

वह उसके बारे में लोभ अथवा उग्रवासना से नहीं सोच सकता था। उसे इस बात से अत्यधिक प्रसन्नता मिलती कि उसके पास पहुंच कर एक कुत्ते की तरह उसके पाँवों पर गिर पड़े। सब जगह से दुतकारे, ठुकराये गये कुत्ते की तरह उसके पांवों से लिपट जाये। उसके पांवों के पास फर्श पर पड़ा-पड़ा एक कुत्ते की तरह ही सांस लेता रहे। यह सुख उन सब मस्त सुखों से अधिक होगा जिनकी वह कल्पना कर सकता है।

लेकिन जानवरों जैसी यह सहृदय सादगी—उसके घर पहुच कर उसके पांवों से लिपट जाना—एक ऐसी बात थी जो वह स्वयं नहीं कर सकता था। वह अत्यधिक विनम्र. और क्षमायाचनापूर्ण शब्दों का इस्तेमाल करेगा और उसे भी ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल करना होगा और वह इस कारण से यह आचरण करेगी क्योंकि हजारों वर्षों से संसार का यही जटिल क्रम रहा है।

उस क्षण भी वह उसे उसी रूप में देख पा रहा था जिस रूप में कल देखा था उसका प्रकाशमान व्यक्तित्व, उसके गालों पर वह आकर्षक आभा और उसका यह वाक्य "तुम जानते ही हो, तुम बड़ी आसानी से मेरे यहां आ कर रह सकते हो—बड़ी आसानी से।" लज्जा से रक्तिम हुए उसके मुख और उसकी भावनाओं का सम्मान करना होगा। वह इस लज्जा के भाव को फिर उसके गालों पर छाने नहीं दे सकता, उसे हंसी के साथ इस पर काबू पा लेना चाहिए। वह उसे फिर अपने आपको उलझन में नहीं डालने दे सकता और यही कारण था कि वह उन कुछ वाक्यों की कल्पना कर रहा था जो वह उसके घर पहुंचने पर बोलेगा यह वाक्य पर्याप्त विनम्र और हास्यपूर्ण होने चाहिएं ताकि स्थिति की विलक्षणता को कम किया जा सके। उसका अपने डाक्टर से मिलने जाना, एक ऐसी जवान औरत जो अकेली रहती हो, और वह भी रात भर उसके घर पर रहने के इरादे से—भगवान जाने क्यों लेकिन यह भी हो सकता है कि वह इन वाक्यों के बारे में न सोचे, वह बस दरवाजा खोले, वहां खड़ा-खड़ा उसकी ओर देखता रहे और शुरू से ही उसे वेगा कह कर पुकारे, "वेगा! मैं आ गया हूँ!"

चाहे कुछ भी क्यों न हो उसके साथ कुछ समय रहना अपरिमित सुख की बात होगी, वार्ड में नहीं, डाक्टरों के परामर्श कक्ष में नहीं बल्कि एक

साधारण कमरे में किसी सामान्य विषय की चर्चा करते हुए और यह विषय क्या होगा उसे नहीं मालूम। हो सकता है कि वह कोई भारी भूल कर बैठे, कुछ गलत बातें कह जाए आखिरकार अब वह मनुष्यों के बीच रहने का आदी नहीं रह गया था। लेकिन उसकी आंखें उन शब्दों को अभिव्यक्ति देंगी जो वह कहना चाहता था : "मेरे ऊपर दया करो! कृपया मेरे ऊपर दया करो, मैं तुम्हारे बिना कितना दुखी हूं!"

आखिरकार वह किस प्रकार इतना समय नष्ट कर सका? आखिर वह अब तक वेगा के पास क्यों नहीं गया? बहुत देर पहले ही उसे पहुँच जाना चाहिये था अब वह तेजी से आगे बढ़ रहा था, बिना किसी हिचक के, केवल इसी विचार से भयभीत कि कहीं वह निकल न गई हो। शहर में आधे दिन तक चक्कर लगाने के बाद उसकी समझ में सड़कें आ गयीं थीं और वह रास्ता जान चुका था।

यदि साथ-साथ वह अच्छी तरह से रह सके। यदि एक दूसरे के साथ रहना एक दूसरे से बातें करना सुखद हुआ, यदि इस बात की सम्भावना हुई कि किसी क्षण उसके हाथों को वह अपने हाथों में ले सके उसे अपनी बांहों में समेट सके और बहुत समीप से, कोमलता से उसकी आंखों में देख सके—तो क्या यह पर्याप्त न होगा—और यदि इससे कुछ अधिक सम्भव हो, इससे भी कुछ और अधिक सम्भव हो—तो क्या वह पर्याप्त न होगा?

नहीं जोया के साथ यह पर्याप्त न होता। लेकिन वेगा के साथ? नील गाय के साथ?

उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेने के विचार मात्र ने उसके भीतर, उसके वक्ष के भीतर तनाव उत्पन्न कर दिया। वह उत्तेजित होकर यह सोचने लगा कि क्या होगा?

निश्चय ही यह पर्याप्त होगा?

वह जैसे-जैसे उसके मकान के समीप पहुँचता जा रहा था उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। यह सचमुच भय का भाव था, लेकिन यह भय सुखदायक भय था, यह खुशी से मूर्छित हो जाने जैसी बात थी।

यह भय भी अपने आप में उसे प्रसन्न और सुखी करने के लिये पर्याप्त था।

वह चलता रहा और जल्दी से जल्दी पहुंचने के आवेग में वह केवल सड़कों के नाम ही देख पा रहा था। वह दुकानों, दुकानों के शोकेसों, ट्रामों, और आदमियों की उपेक्षा करता हुआ आगे बढ़ रहा था कि अचानक सड़क के एक कोने पर वह ठिठक गया। वहां एक वृद्ध औरत खड़ी थी। पहले अत्यधिक भीड़ के कारण वह उससे आगे नहीं बढ़ पा रहा था। फिर तभ उसने उसे देखा कि वह छोटे-छोटे नीले फूलों के गुलदस्ते बेच रही थी।

उसकी रिक्त, त्रस्त और विशेष परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्थित स्मृति के किसी गहनतम कोने में भी इस विचार का एक कणमात्र भी शेष नहीं था कि किसी स्त्री से मिलने जाते समय व्यक्ति को उसके लिये फूल ले जाने चाहियें। वह इस परम्परा को उतनी ही गहराई से, उतने ही अन्तिम रूप से भूल चुका था मानो इसका कभी अस्तित्व ही न रहा हो। वह अपने जर्जर, थेगली लगे और भारी किट बैग को अपनी पीठ पर ढोता हुआ चुपचाप चल रहा था, कोई भी संदेह उसके कदमों की दृढ़ता में हिचकिचाहट नहीं भर पा रहा था और अब अचानक उसने कुछ फूल देख लिये थे। किसी कारण से इन फूलों को लोगों को बेचा जा रहा था। वह गुर्राया और एक अस्पष्ट याद उसके मन में उसी प्रकार तैरने लगी जैसे गदले पानी के एक तालाब में डूबा हुआ एक शव। यह ठीक है, यह ठीक है। सुदूर अतीत में, अपनी किशोरावस्था के प्राय: अस्तित्वहीन संसार में उसने स्त्रियों को फूल भेंट करने का रिवाज देखा था?

"ये···ये क्या हैं?" उसने फूल बेचने वाली से शरमा कर पूछा।

"ये वायलट, बैंगनी फूल हैं। ये यही तो हैं," उसने अपमानजनक स्वर में कहा, "एक रूबल का एक।"

बैंगनी फूल? क्या ये वही बैंगनी फूल हैं, वही जिनका उल्लेख उस कविता में हुआ था? पर किसी कारण से वह भिन्न रूप में ही उन्हें याद कर पाता था। इनकी डंठलों को अधिक सुन्दर, लम्बी होना चाहिये था और फूल अधिक घंटी जैसी शक्ल के होने चाहिये थे। पर सम्भवत: उसकी स्मृति सही नहीं थी अथवा यह कोई स्थानीय किस्म का बैंगनी फूल हो। कुछ भी हो पर दूसरे फूल चुनने के लिए मौजूद नहीं थे। अब उसे स्मरण हो आया था, अब जबकि एक बार उसके मन में यह बात ताजा हो गई थी तो फूलों के बिना जाना असम्भव होगा और लज्जाजनक भी।

वह फूलों के बिना इस प्रकार शान्ति से कैसे आगे बढ़ता रहा।

लेकिन उसे कितने खरीदने चाहियें? एक? एक पर्याप्त नहीं लग रहा था।

दो? दो भी घटिया बात होंगे? तीन? चार? ये बहुत महंगा पड़ेगा शिविरों में सीखी हुई बातें उसके मस्तिष्क में कौंध उठीं और वह किसी गणना मशीन की तरह तेजी से जोड़ लगाने लगा। लेकिन यह सम्भव था कि वह डेढ़ रूबल में दो टहनियां या चार रूबल में पांच टहनियां बेचने के लिये उस बुढ़िया को राजी कर सकता था। लेकिन तोड़-जोड़ करने की यह तीव्र प्रवृत्ति ओलेग के चरित्र का सच्चा स्वरूप नहीं थी। उसने दो रूबल निकाले और चुपचाप बुढ़िया के हाथ में थमा दिये।

उसने दो गुच्छे लिए। इनमें खुशबू थी लेकिन इनमें भी वह खुशबू

नहीं थी जो उसके किशोरावस्था के बैंगनी फूलों में होती थी, कवियों के बैंगनी फूलों में होती थी।

वह इन फूलों को अपने हाथ में थामे इन्हें सूंघता हुआ चलता रह सकता था लेकिन फूलोंको इस प्रकार हाथ में लेकर चलना बड़ा हास्यास्पद लगेगा एक बीमार छंटनी में निकाला गया, नंगे सिर वाला सैनिक, पीठ पर किट बैग और हाथ में बैंगनी फूलों के गुच्छे लिये हुये चलता हुआ, अजीब लगेगा। इन्हें रखने का कोई उचित स्थान नहीं था तो सर्वोत्तम तरीका यही था कि वह अपना हाथ अपनी आस्तीन के भीतर खींचे ले और उन्हें इस प्रकार दूसरे लोगों की आंखों से छिपा कर ले चले।

वेगा का घर—हां, यही वह मकान था।

सीधे अहाते के भीतर आ जाना, उसने कहा था। वह अहाते के भीतर चला गया और फिर बायीं ओर मुड़ा।

(उसकी छाती के भीतर कोई चीज़ इधर-उधर हिल रही थी।)

कंक्रीट का एक लम्बा बरामदा था, जिसका इस्तेमाल इस मकान में रहने वाले सब लोग करते थे। यह बरामदा खुला था लेकिन इसके ऊपर लोहे की जाली का एक तिरछा छज्जा भी लगा था। सुखाने के लिये बहुत-सी चीजें रेलिंग पर डाल दी गई थीं, कम्बल, गद्दे, तकिए और दो खम्भों के बीच बंधी डोरी पर कुछ चादरें लटक रही थीं।

कुछ भी हो, यह स्थान वेगा के लिए बेहद अनुपयुक्त था। इसमें प्रवेश के रास्ते में चीजें बिखरी पड़ी थीं और यह रास्ता भद्दा था। खैर, यह उसकी जिम्मेदारी नहीं थी। कुछ और आगे, सुखाने के लिए लटकाये गए सब कपड़ों के पीछे उसके फ्लैट का दरवाजा होगा, और उस दरवाजे के पीछे वेगा का अपना निजी संसार।

वह नीचे झुककर चादरों के नीचे से निकला और दरवाजे की तलाश करने लगा। यह अन्य किसी भी दरवाजे की तरह था। इस पर तेज कत्थई रंग पोता गया था जो जगह-जगह से उखड़ रहा था। इसके ऊपर एक हरा लैटरबाक्स भी लगा था।

ओलेग ने बैंगनी फूलों को अपने ओवरकोट की आस्तीन के भीतर से निकाला। उसने हाथ से अपने बालों को व्यवस्थित करने की कोशिश की। वह व्यग्र और उत्तेजित था और इस मन:स्थिति से प्रसन्न भी। उसने डाक्टर के सफेद कोट के बिना और अपने घर के वातावरण में वेगा की कल्पना शुरू कर दी।

उसके भारी फौजी जूतों ने चिड़ियाघर से इस मकान तक का छोटा फासला ही तय नहीं किया था। उसने दो बार सात-सात वर्ष अपने देश की विस्तीर्ण सड़कों को नापा था। और अब वह यहां इस स्थिति में आ गया था।

छंटनी के बाद निकाला गया श्रोलेग अन्ततः उस दरवाजे के बाहर पहुंच चुका था जिसके पीछे बैठी एक औरत इन बीते हुए चौदह वर्षों तक मूक प्रतीक्षा करती रही थी।

उसने अपनी अनामिका के पिछले हिस्से से दरवाजे को छूआ।

लेकिन उसे खटखटाने का समय नहीं मिला। दरवाजा पहले ही खुलने लगा था। (क्या उसने उसे खिड़की से पहले ही देख लिया था।) दरवाजा खुला और इसके भीतर से एक बम्बा तड़ंगा, चफ्टी थूथन वाला और नीचे को को दबी हुई नाक वाला एक युवक चमचमाती हुई लाल मोटर साइकिल सीधे ओलेग के ऊपर धकेलता हुआ बाहर निकला। इस तंग रास्ते में यह मोटर साइकिल बहुत बड़ी लग रही थी। उसने यह भी नहीं पूछा कि ओलेग वहां क्यों आया है अथवा वह किससे मिलना चाहता है। वह सीधे अपनी मोटर साइकिल आगे धकेलता हुआ बढ़ता रहा मानो ओलेग वहां खड़ा हुआ ही न हो (वह रास्ता छोड़ने का आदी नहीं था) और ओलेग एक ओर को हट गया।

ओलेग स्थिति को समझने का प्रयास करने लगा पर बात उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। यदि वेगा अकेली रहती है तो यह युवक वहां क्या कर रहा था वह उसके फ्लैट से बाहर क्यों निकल रहा था? वह कैसे इस बात को भूल सकता था, चाहे बात बरसों पहले की ही क्यों न थी वे लोग अब अलग नहीं रहते, वे सामूहिक फ्लैटों में रहते हैं। वह यह बात नहीं भूल सकता था। लेकिन ऐसा भी कोई कारण नहीं था कि वह इस बात को निरन्तर याद रखता। श्रम शिविर की बैरक में व्यक्ति बाहरी संसार की एक तस्वीर अपने मन में खींचता है जो बैरक के कमरे से बिल्कुल विपरीत होती है। यह तस्वीर निश्चय ही एक सामूहिक फ्लैट की नहीं होती। उशतेरेक तक में लोग अपने घर में रहते हैं वहां सामूहिक फ्लैट नहीं हैं।

"अर, क्षमा कीजिए..." वह युवक को सम्बोधित करते हुए बोला। लेकिन वह अब तक अपनी मोटर साइकिल बाहर सूख रही चादरों के नीचे से निकाल चुका था और इसे सीढ़ियों से नीचे उतार रहा था। पहिए सीढ़ियों पर खोखली सी आवाज़ कर रहे थे।

लेकिन वह दरवाजा खुला छोड़ गया था। इस गलियारे की अंधियारी गहराई में एक दरवाजा देख सकता था और उसे फिर दूसरा और तीसरा दरवाजा भी दिखाई पड़ा। उसका दरवाजा कौन-सा है। तभी उसे इस आधे अंधियारे में एक औरत दिखाई पड़ी। उसने बत्ती नहीं जलाई।

"तुम किस से मिलना चाहते हो?" उसने बड़ी नाराजी और उद्धत भाव से पूछा।

"वेरा कोर्निल एवना।" ओलेग ने बड़ी शरम से ऐसी आवाज़ में उत्तर

दिया जो उसकी अपनी आवाज़ से कितनी भिन्न थी।

"वह यहां नहीं है," उस औरत ने वेगा के दरवाजे की ओर देखे अथवा उसे खोलने का प्रयास किये बिना ही तीखे और विश्वासपूर्ण शत्रुभाव से जवाब दिया। वह सीधी कोस्तोग्लोतोव की ओर आगे बढ़ी और उसे पीछे की ओर हटने के लिए बाध्य कर दिया। "क्या आप मेहरबानी करके उनका दरवाजा खटखटायेंगी?" कोस्तोग्लोतोव अब अपने आपे में आ गया था। वेगा, उससे मिलने की आशा ने उसे कमजोर बना दिया था। लेकिन वह अभी भी चिल्लाने वाले पड़ौसियों के मुकाबले में उसी तरह चिल्ला सकता था। "वे आज काम पर नहीं गई हैं?" वह बोला।

"मुझे मालूम है। वह यहां नहीं है। वह यहां थी, लेकिन अब बाहर चली गई है।" उस औरत ने ओलेग को नीचे से ऊपर तक देखा। इस औरत का सकरा माथा और गालों की हड्डियां तिरछी थीं।

वह पहले ही बैंगनी फूल देख चुकी थी। अब इन्हें छिपा लेने के लिये बहुत विलम्ब हो चुका था।

यदि उसके हाथ में ये बैंगनी फूल न होते तो वह डटकर मुकाबला कर सकता था। वह खुद दरवाजा खटखटा सकता था, अपनी स्वतन्त्रता प्रकट कर सकता था, यह जोर देकर पूछ सकता था कि वह कितनी देर के लिये बाहर गई है क्या वह जल्दी ही वापस लौटेगी और वह कोई संदेश छोड़ गई है। हो सकता है कि वह सचमुच उसके लिये कोई संदेश छोड़ गई हो।

लेकिन बैंगनी फूलों ने उसे एक याचक, उपहार लाने वाले और प्रेम-ग्रस्त मूर्ख में बदल दिया था...

गालों की तिरछी हड्डियों वाली औरत का हमला इतना प्रबल था कि वह पीछे हटकर बरामदे में आ गया।

उस औरत ने इसे अपने अग्रिम मोर्चे से धकेल दिया था और अब उसके ऊपर कड़ी नजर रखे हुए अभी भी उसका पीछा कर रही थी। इस आवारा के झोले में कोई चीज उभरी हुई भी दिखाई पड़ रही थी। वह कोई चीज उड़ा सकता था। (यहां भी!)

बाहर अहाते में मोटर साइकल ने बार-बार फट-फट की भयंकर आवाज की। इसमें साइलेंसर नहीं लगा था। इंजन बन्द हो गया, फिर भयंकर आवाज से स्टार्ट हुआ फिर बन्द हो गया।

ओलेग हिचकिचाया।

औरत उसकी ओर बड़ी खीझ से देख रही थी।

औरत उसकी ओर बड़ी खीझ से देख रही थी। उसने वायदा किया था

यह कैसे हो सकता था कि वेगा वहां न हो। उसने वायदा किया था लेकिन यदि वह पहले इन्तजार करती रही हो और फिर कहीं चली गई हो? यह भी कैसा विनाश हुआ। यह केवल एक दुर्भाग्य अथवा निराशा भर नहीं

थी। यह तो एक विनाश था।

ओलेग ने बैंगनी फूलों सहित अपना हाथ फिर अपने ओवरकोट की आस्तीन के भीतर खींच लिया। ऐसा लग रहा था मानो उसका एक हाथ कटा हुआ हो।

"क्षमा कीजिए, क्या वे वापस आयेंगी या काम पर चली गई हैं?"

"वह चली गई हैं," औरत ने उसे बीच में ही टोकते हुए कहा।

यह कोई जवाब नहीं था।

उस औरत के सामने खड़े रहकर प्रतीक्षा करना भी किसी प्रकार निरर्थक और मूर्खतापूर्ण होता।

मोटर साइकिल में फिर आवाज़ हुई, फट-फट, इंजन तेज आवाज़ के साथ स्टार्ट हुआ और फिर बन्द हो गया।

रेलिंगों के ऊपर कुछ भारी तकिए, गद्दे और लिफाफे के शक्ल की खोलों के भीतर कम्बल सूख रहे थे। इन्हें सुखाने के लिये धूप में डाला गया था।

"तो तुम यहां किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो नागरिक?" बिस्तर की चीजों के इन विशाल अम्बारों ने ओलेग का दिमाग खाली कर दिया था।

गालों की तिरछी हड्डियों वाली औरत उसकी तरफ घूर रही थी। वह कुछ भी नहीं सोच पा रहा था।

और वह मनहूस मोटर साइकिल उसके चिथड़े उड़ाये डाल रही थी। यह स्टार्ट होने को तैयार नहीं थी।

ओलेग तकियों के अम्बार से पीछे हटा और फिर सीढ़ियों से नीचे उतर कर वहीं वापस लौट गया जहां से आया था। उसे खदेड़ दिया गया था। यदि वह तकिया वहां न होता—जिसका एक कोना बुरी तरह मुड़ा हुआ था दो कोने गाय के थनों की तरह नीचे लटक रहे थे और तीसरा सीधा ऊपर की ओर उठा हुआ था—यदि यह तकिया यहां मौजूद न होता तो वह कुछ सोच सकता था और किसी निर्णय पर पहुंच सकता था। वह अचानक इस तरह वापस न लौट आता। हो सकता है वेगा जल्दी ही वापस आ रही हो। और उसे इस बात का खेद होगा कि वह वापस लौट गया था। उसे इस बात का अफसोस होगा।

लेकिन वह तकिए, गद्दे, कम्बल, लिफाफे की शक्ल के कम्बलों के खोल और झण्डों जैसी चादरें ऐसे स्थायी और अनुभूत अनुभव का संकेत दे रही थीं कि उसमें इसे ठुकरा देने की शक्ति नहीं थी। उसे इसका अधिकार नहीं था।

विशेषकर अब। विशेषकर वह।

एक आदमी उसी समय तक तख्तों के ऊपर सो सकता है जब तक उसके मन में आस्था हो, महत्वाकांक्षा हो। एक कैदी इसलिए नंगे तख्तों पर सोता है क्योंकि उसके सामने और कोई रास्ता नहीं होता। और स्त्री कैदी भी जिसे बलपूर्वक आदमी से अलग कर दिया जाता है। लेकिन जब एक आदमी और एक औरत ने साथ-साथ रहने की बात सोची हो, तो कोमल तकिए बड़े विश्वास

से उसकी प्रतीक्षा करते हैं, जो उन्हें प्राप्त होना चाहिए। वे यह भी जानते हैं कि जो उनका अपना है उससे वंचित नहीं हो सकेंगे।

अतः ओलेग इस अजय दुर्ग से पीछे हट गया, जिसके भीतर वह प्रवेश करने में असफल रहा था और किट बैग में रखी इस्तरी अभी भी उसके कन्धों को झुकाये डाल रही थी वह अपने एक, कटे जैसे हाथ सहित फाटक की ओर बढ़ गया। तकियों के दुर्ग से उसकी पीठ पर बड़ी प्रसन्नता से मशीनगनों की बौछार होती रही।

वह स्टार्ट होने को तैयार नहीं थी, सत्यानाश हो इसका।

फाटक के बाहर मोटर साइकिल की तेज फट् फट् की आवाज़ उतनी तेज सुनाई नहीं पड़ रही थी। ओलेग कुछ और प्रतीक्षा करने के लिये खड़ा हो गया।

उसने अभी तक वेगा की प्रतीक्षा करने का विचार त्यागा नहीं था। यदि वह वापस आयेगी तो उसे निश्चय ही इसी जगह से गुजरना होगा। वे मुस्करायेंगे और एक दूसरे को देखकर कितने प्रसन्न होंगे : "हैलो··· क्या आप यह जानते हैं···?" यह भी अच्छा मजाक रहा···

तो क्या इसके बाद वह अपनी आस्तीन के भीतर से मुसे और मुर्झाये हुए से बैंगनी फूल निकालेगा?

वह उसकी प्रतीक्षा करता रह सकता था और इसके बाद वे दोनों साथ साथ अहाते के भीतर जायेंगे। लेकिन वे उन फूले हुए, आत्मविश्वास से भरे तकियों के दुर्ग से बचकर नहीं निकल सकेंगे।

इस हालत में उन्हें उनके पास से गुजरना होगा।

किसी दिन, यदि आज नहीं, वेगा, हल्के कदमों वाली और चमकदार हल्के कत्थई रंग की आंखों वाली स्वप्निल वेगा, जिसका समस्त अस्तित्व इस पृथ्वी की स्थूलता से बिल्कुल विपरीत है, अपना हवा-सा हल्का कोमल और सुखद बिस्तर इसी बरामदे से बाहर लायेगी। हां, वेगा भी।

कोई भी चिड़िया अपने घोंसले के बिना नहीं रहती, कोई भी औरत अपने बिस्तर के बिना नहीं रहती।

वह चाहे कितनी भी अनश्वर, कितनी भी वायवीय क्यों न हो वह रात्रि के उन आठ अनिवार्य घंटों की उपेक्षा नहीं कर सकती जब वह सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायेगी और फिर जाकर उठ खड़ी होगी।

मोटर साइकिल चली। वह लाल रंग की मोटर साइकिल फाटक से बाहर निकली। यह एक ऐसी मशीनगन की तरह आवाज़ कर रही थी जो कोस्तोग्लोताव पर अन्तिम प्रहार कर रही हो।

चपटी नाक वाला लड़का सड़क पर चलता हुआ एक विजेता के गर्व से भरा हुआ था।

कोस्तोग्लोतोव एकाकी, पराजित-सा आगे बढ़ता रहा।

उसने बैंगनी फूल अपनी आस्तीन से बाहर निकाल लिये। ये अन्तिम

सांस गिन रहे थे। कुछ ही मिनट बाद वे उपहार में देने योग्य नहीं रह जायेंगे।

दो उज़बेक स्कूली लड़कियां जिनकी काले बालों की एक-सी चोटियां थीं और जिन्हें बिजली के तारों से भी अधिक कसकर गूंदा गया था उसकी ओर आ रही थीं। ओलेग ने दोनों हाथों से बैंगनी फूलों के दोनों गुच्छे, इनके आगे कर दिए।

"अरी लड़कियो, इन्हें ले लो।"

वे आश्चर्यचकित थीं। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। उसने उनकी ओर देखा। उन्होंने एक-दूसरे से उजबेक भाषा में कुछ कहा। उन्होंने अनुभव किया कि वह न तो शराब के नशे में धुत्त था और न ही उनसे छेड़खानी करने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने हो सकता है यह भी अनुभव किया हो कि किसी दुर्भाग्य से प्रेरित होकर यह पुराना सैनिक उन्हें फूल दे रहा हो।

एक लड़की ने अपनी ओर का गुच्छा लिया और अभिवादन के रूप में अपना सिर हिला दिया।

दूसरी लड़की ने भी लिया और सिर हिलाया।

इसके बाद वह तेजी से आगे बढ़ गईं। वे एक-दूसरी से अपने कन्धे टकराती हुई और बहुत जोर-जोर से बातें करती हुई आगे बढ़ गईं।

अब उसके पास गन्दे और पसीने से तर किट बैग के अलावा कुछ नहीं रह गया था जो उसके कन्धों पर टंगा था।

वह कहां रात बिता सकता था? उसे एक बार फिर इन सब बातों पर विचार करना था।

वह एक होटल में नहीं ठहर सकता था।

वह जोया के यहां नहीं जा सकता था।

वह वेगा के यहां नहीं जा सकता था।

अथवा वह जा सकता था, वह जा सकता था। और उसे इस बात से प्रसन्नता होती। वह यह नहीं दर्शाती, कभी नहीं दर्शायेगी कि उसे कितनी निराशा हुई थी।

लेकिन यह प्रश्न 'नहीं जा सकता' का नहीं बल्कि 'नहीं जाना चाहिए' का था।

वेगा के बिना यह पूरा का पूरा खूबसूरत शहर अपनी समस्त सम्पदा और लाखों निवासियों सहित उसकी पीठ पर लदे भारी किट बैग की तरह ही लगने लगा। अब यह सोचना बड़ा विचित्र लग रहा था कि आज सुबह ही उसे यह स्थान इतना अच्छा लगा था कि वह यहां कुछ समय और रुका रहना चाहता था।

इससे भी अधिक विचित्र यह था कि आज सुबह इतनी प्रसन्नता क्यों थी, इतना प्रसन्न होने के लिए क्या था? रोग का छुटकारा अब कोई विशेष उपहार दिखाई नहीं पड़ रहा था।

ओलेग मुश्किल से ही मकानों के एक खण्ड से आगे बढ़ा होगा कि

अचानक उसे लगा कि वह बेहद भूखा है, उसके पांव बेहद दर्द कर रहे हैं, शारीरिक दृष्टि से वह किस कदर पस्त हो गया है और अभी उसकी अपराजित रसौली उसके भीतर इधर-उधर चक्कर लगा रही है। बस अब वह यहां से जल्दी-से-जल्दी निकल चलना चाहता था।

लेकिन उशतेरेक वापसी भी, जिसका मार्ग अब प्रशस्त हो चुका था, उसे अब आकर्षित नहीं कर रही थी। ओलेग यह अनुभव कर रहा था कि पूरी तरह डूब जाने तक वह अपनी इस निराशा, इस उदासी में और गहराई से नीचे पहुँचता जायेगा।

इस क्षण वह ऐसी किसी भी जगह की कल्पना नहीं कर पा रहा था, किसी भी ऐसी वस्तु के बारे में नहीं सोच पा रहा था जो उसे प्रसन्नता दे सकती थी।

बस वेगा के पास वापस लौट जाने को छोड़ कर।

उसे उसके पांवों पर गिरना होगा : "मुझे बाहर मत निकालना, मुझे बाहर मत निकालो। यह मेरा कसूर नहीं है।"

लेकिन यह प्रश्न 'नहीं जा सकता' का नहीं बल्कि 'नहीं जाना चाहिए' का था।

उसने किसी राहगीर से समय पूछा। दो बज चुके थे। अब उसे किसी न किसी निर्णय पर पहुंच जाना चाहिये था।

उसे एक ट्राम दिखाई पड़ी। यह उसी नम्बर की ट्राम थी जो उसे एक बार कोमिनदातुरा के दफ्तर में ले गई थी। वह आस-पास किसी स्टाप के लिए नजर दौड़ाने लगा।

लोहे की तेज रगड़ की आवाज़ के साथ विशेषकर मोड़ों पर, मानो वह स्वयं बहुत गम्भीर रूप से बीमार हो, ट्राम पत्थर की सकरी सड़कों के रास्ते से ओलेग को आगे घसीटे लिये जा रही थी। ओलेग ट्राम की छत से लटके हुए चमड़े के हत्थे को पकड़े और ट्राम की खिड़की से बाहर कुछ देखने का प्रयास करने के लिए अपना सिर नीचे को झुकाये चला जा रहा था। लेकिन अब ट्राम शहर के एक ऐसे हिस्से से गुजर रही थी, जहां हरियाली नहीं थी, सड़कों के दोनों ओर पेड़ नहीं लगे थे बस पैदल रास्ते और भद्दे मकान ही थे। वे एक इश्तहार के सामने से तेजी से गुजरे, जिसमें खुली हवा में दोपहर के समय एक सिनेमा शो का विज्ञापन दिया गया था। यह देखना सचमुच बहुत दिलचस्प बात होती कि आखिर दिन के समय खुली जगह में यह होता कैसे है। लेकिन किसी वस्तु ने संसार की विचित्रताओं और नवीनताओं में उसकी दिलचस्पी समाप्त कर दी थी।

वह १४ वर्ष के एकाकी जीवन को सह लेने पर गर्व करती थी। लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि ६ महीने की इसके विपरीत स्थिति उनके लिये कैसी हो सकती थी : साथ-साथ, फिर भी साथ नहीं।

उसने अपना स्टाप पहचाना और नीचे उतर गया। अब उसे एक चौड़ी, और उदास कर देने वाली सड़क पर डेढ़ किलोमीटर का रास्ता पैदल तय करना था। यह सड़क एक कारखाने के बराबर से गुजरती थी। सड़क के दोनों छोरों पर लारियों और ट्रैक्टरों की अटूट कतारें चली जा रही थीं। पैदल रास्ते के बराबर लम्बी पत्थर की दीवार थी और इसके बीच एक स्थान पर कारखाने के भीतर की रेल पटरी और कोयला भरे माल डिब्बों को खड़ा करने का स्थान था यह गड्ढों से भरी एक बंजर जमीन से आगे निकलती थी और फिर कुछ और पटरियों को पार करती थी। इसके बाद एक और दीवार आ जाती थी और अन्त में लकड़ी की एक मंजली बैरकों के खंडों को पार करती थी—ये वही बैरकें थीं, जिन्हें सरकारी फाइलों में 'अस्थायी असैनिक आवास' बताया जाता है लेकिन जो १०, २० अथवा यहां तक कि ३० वर्ष तक उसी प्रकार खड़ी रहती हैं। कम-से-कम इस बार वहां वह कीचड़ तो नहीं था जो जनवरी में वर्षा के समय भरा पड़ा था और जब कोस्तोग्लोतोव पहली बार कोमिनदातुरा दफ्तर की तलाश करता हुआ इधर आया था फिर भी यह उदास कर डालने वाला और लम्बा रास्ता था। इस बात पर मुश्किल से ही विश्वास हो पाता था कि यह सड़क उसी शहर में है, जिसमें दोनों ओर छायादार पेड़ लगी गोलाकार सड़कें हैं, बिशालकाय ओक वृक्ष हैं, उत्साह से भरे लम्बे-लम्बे पोपलार वृक्ष हैं और अद्भुत गुलाबी रंग के खुमानी के पेड़ हैं।

चाहे वह स्वयं को आश्वस्त करने के लिए कितना भी कठोर प्रयास क्यों न करे उसे यही करना होगा, कि वेगा के लिये यही करना उचित था।

इसका यही अर्थ था कि जब सब बातें स्पष्ट हो जायेंगी, पूरी तरह प्रकट हो जायेंगी तो यह घटना और भी अधिक हृदय विदारक होगी।

न जाने किस व्यक्ति ने कोमिनदातुरा के दफ्तर को ऐसी जगह देने की बात सोची होगी, एक ऐसे दफ्तर को जो इस नगर में रहने वाले समस्त निष्कासित लोगों के भाग्य का निपटारा करता है। इस दफ्तर को इतने सुदूर कोने में क्यों डाल देने की बात सोची होगी? लेकिन यह यहीं था, बैरकों के खंडों में और कीचड़ भरे रास्ते के उस पार टूटी हुई खिड़कियों और प्लाइवुड के तख्तों से बन्द की गई खिड़कियों के बीच, कपड़े सुखाने की कभी समाप्त न होने वाली डोरियों के बीच। यहीं वह दफ्तर था।

ओलेग को कमांडेंट के चेहरे का वितृष्णापूर्ण भाव याद था जो काम के घंटों में भी अपने दफ्तर में मौजूद नहीं था। उसे यह भी याद था कि पिछली बार उसका कैसा स्वागत हुआ था। कमांडेंट की बैरक के बरामदे में चलते समय उसने अपने कदमों को धीमा कर लिया और अपने चेहरे पर कठोर और स्वतंत्र भाव उत्पन्न कर लिया। कोस्तोग्लोतोव स्वयं को जेल में डालने वालों की ओर देखकर मुस्कराने को तैयार नहीं था। चाहे जेलर उसकी ओर देख कर क्यों न मुस्कुरायें। वह उन्हें यह स्मरण दिलाना अपना कर्त्तव्य समझता

था कि उसे सब कुछ याद है, वह कुछ भी भूला नहीं है।

उसने दरवाजे पर दस्तक दी और भीतर चला गया। पहले कमरे में कुछ नहीं था। यह खाली था। केवल दो लम्बी, लड़खड़ाने वाली, बिना पीठ की बेंचें थीं और लकड़ी के एक पार्टीशन के पीछे एक मेज लगी थी जहां संभवत: महीने में दो बार वे शहर में रहने वाले निष्कासितों के नाम दर्ज करने का पवित्र क्रिया कलाप करते थे।

इस समय वहां कोई नहीं था। लेकिन सामने कुछ आगे की ओर एक बिल्कुल खुला दरवाजा था, जिसके ऊपर लिखा था 'कमांडेंट'।

ओलेग और आगे बढ़ गया ताकि वह दरवाजे के भीतर घुस सके "क्या मैं भीतर आ सकता हूँ ?" उसने व्यग्रता से कहा।

"ज़रूर, ज़रूर !" एक सुखद और स्वागत भरी आवाज़ ने उसे भीतर आने का निमंत्रण दिया।

अविश्वसनीय ! ओलेग ने एन०के०वी०डी० के किसी भी आदमी को कभी भी इस स्वर का इस्तेमाल करते हुए नहीं सुना था। वह भीतर चला गया। कमांडेंट के अलावा कमरे में और कोई नहीं था। वह अपनी मेज पर बैठा था। लेकिन वह पुराना कमांडेंट नहीं था। वह पहले जैसा मूर्ख नहीं था जो बुद्धिमान दिखाई पड़ने का प्रयास कर रहा हो। वह आर्मीनिया का निवासी था। उसका कोमल मुख एक प्रशिक्षित व्यक्ति जैसा दिखाई पड़ रहा था। उसमें जरा भी घमंड नहीं था और उसने वर्दी के स्थान पर एक अच्छा सूट पहन रखा था, जो इस बैरक के वातावरण में विचित्र दिखाई पड़ रहा था। इस आर्मीनियावासी ने उसकी ओर प्रसन्नता से देखा मानो उसका काम थियेटर के टिकट बेचना हो और उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई हो कि ओलेग बड़ी संख्या में टिकट खरीदने के लिये आया है।

शिविरों में इतने वर्ष गुजारने के बाद आर्मीनिया के लोगों के प्रति ओलेग के मन में बहुत अच्छा भाव होना संभव नहीं था। इन लोगों की संख्या कम थी और ये एक दूसरे की देखभाल बड़ी तत्परता से करते थे और हमेशा सर्वोत्तम काम अपने लिये ही चुन लेते थे—गोदाम के कमरे में या रोटी के कमरे में, या उस स्थान पर जहां मक्खन भी उनके हाथ लग सकता था। पर इंसाफ तो यही था कि ओलेग केवल इसी आधार पर आपत्ति नहीं उठा सकता था। उन लोगों ने शिविरों की इजाद नहीं की थी, उन लोगों ने साइबेरिया की भी इजाद नहीं की थी। आखिरकार ऐसा कौन-सा ऊंचा आदर्श था जो उन्हें एक दूसरे की मदद करने और एक दूसरे को बचाने से दूर रहने का आदेश देता हो ? वे लोग व्यापार का काम क्यों छोड़ें और जमीन को कुदालों से खोदने लगें ?

अपनी सरकारी मेज के पीछे बैठे हुए प्रसन्न बदन और मित्रतापूर्ण आर्मीनियावासी को देख कर ओलेग के मन में बड़े उत्साह से यह विचार

आया कि अनौपचारिकता और व्यावासायिकता आर्मीनिया के लोगों के विशेष गुण होने चाहिएं।

ओलेग ने उसे अपना नाम बताया और यह भी कहा कि अस्थायी रजिस्ट्रेशन के आधार पर वह यहां रह रहा था। कमांडेंट बड़ी तत्परता से और सहजता से उठा यद्यपि वह बड़ा भारी भरकम आदमी था और एक फाइल में लगे कार्डों को उलटने लगा। इसके साथ ही मानो वह ओलेग के मनोरंजन की भी व्यवस्था करता जा रहा हो वह निरन्तर बोलता रहा: कभी-कभी व्यर्थ की बातें करता। लेकिन कभी-कभी कार्डों पर लिखे लोगों के नाम भी पढ़ता जाता जो अत्यधिक कठोर निर्देशों के विपरीत बात थी।

"हां, ठीक है। अब यह देखिए···कालीफोताइद···कन्सतेंनाइद। हां, क्या आप मेहरबानी करके बैठ जायेंगे···कुलाएव···कारामूरीएव। अरे, मैंने तो कोना ही फाड़ डाला···काजमागोमाएव···कोस्तोग्लोतोव!"

और फिर एन०के०वी०डी० के नियमों की भयंकर उपेक्षा करते हुए उसने ओलेग का अपना नाम और पारिवारिक नाम नहीं पूछा बल्कि स्वयं उसे बताया "ओलेग फिलिमोनोविच?"

"हां,"

"ठीक है आपका २३ जनवरी से कैंसर अस्पताल में इलाज होता रहा है···और उसने अपनी तेज और सहृदय आंखें कागज से ऊपर उठाईं। "अच्छा तो इलाज कैसा रहा? क्या तुम पहले से बेहतर हो?"

सचमुच इन बातों ने ओलेग का हृदय छू लिया था। इतना ही नहीं उसका गला भी भावावेश से रुंध गया था। कितने कम की जरूरत होती है। बस इन बुरी मेजों के पीछे मानवीय दृष्टिकोण रखने वाले लोगों को बैठा दो और जीवन बिल्कुल भिन्न हो जाता है। अब वह तनाव का अनुभव नहीं कर रहा था उसने सरलता से उत्तर दिया। "पता नहीं यह कैसे समझाऊँ···एक दृष्टि से बेहतर···' दूसरी दृष्टि से बदतर···" (बदतर? आदमी कितना कृतघ्न जीव है। वह अस्पताल के फर्श पर पड़ा पड़ा जब मृत्यु की कामना कर रहा था उस स्थिति से वह कैसे बदतर हो सकता था?) "मेरा अभिप्राय है कि कुल मिलाकर मैं बेहतर ही हूं।"

"ठीक है बड़ी अच्छी बात है," कमाडेंट ने प्रसन्नता से कहा। "आप तशरीफ क्यों नहीं रखते।"

थियेटर के टिकटों पर भी नम्बर डालने में कुछ समय लगता है। आपको मोहर लगानी पड़ती है और रोशनाई से तारीख लिखनी पड़ती है। इसके बाद एक मोटीकिताब में उसकी नकल उतारनी पड़ती है और दूसरे किताब से इसे काट डालना पड़ता है। यह काम उस आर्मीनियावासी ने बड़ी खुशी से और बिना कोई नाराजगी प्रगट किये करे। उसने यात्रा की अनुमति सहित ओलेग का प्रमाणपत्र फाइल से निकाला और ओलेग की ओर बढ़ा

दिया। ये शब्द कहते समय उसकी नजर अभिव्यक्तिपूर्ण, उसका स्वर गैर सरकारी और पहले से भी अधिक शांत था, "कृपया…इन बातों से निराश न हों, जल्दी यह स्थिति समाप्त हो जायेगी।"

"क्या समाप्त हो जायेगा।" ओलेग ने आश्चर्य से पूछा।

"क्या मतलब ? यह रजिस्ट्रेशन वगैरा यही तो। आपका निष्कासन कमांडेंट भी।" उसने उनमुक्त मुस्कुराहट के साथ कहा।

स्पष्ट था कि कोई और बेहतर पद उसकी मुट्ठी में था।

"क्या ? पहले ही…कोई निर्देश आ चुका हैं ?" ओलेग अधिकतम जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यग्रता से बोला।

"निर्देश तो नहीं।" कमांडेंट ने आह भरी। "लेकिन कुछ लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं। मैं आपको स्पष्ट रूप से बता देना चाहता हूँ यह होगा। अपना सिर ऊपर उठाये रखो, स्वस्थ हो जाओ और तुम जल्दी ही इस दुनिया में आगे बढ़ोगे।

ओलेग विद्रूपपूर्ण हंसी हंसा। "मैं तो इस संसार से प्रायः बाहर ही निकल चुका हूँ।" वह बोला।

"आपका पेशा क्या है ?"

"कुछ भी नहीं।"

"क्या आप विवाहित हैं ?"

"नहीं।"

"यह अच्छा है," कमांडेंट ने विश्वासपूर्वक कहा। "जो लोग निष्कासन में विवाह करते हैं उन सबको आगे चल कर तलाक का सामना करना पड़ता है और यह बड़ा भयानक काम होता हे। लेकिन तुम रिहा हो सकते हो, उसी इलाके में लौट सकते हो, जहां के रहने वाले हो और विवाह कर सकते हो।

विवाह कर सकते हो…

"ठीक है इस सब के लिये आपको धन्यवाद।" ओलेग चलने के लिये उठ खड़ा हुआ।

कमांडेंट ने मित्रतापूर्ण ढंग से अपना सिर हिलाया। लेकिन अभी उसने अपना हाथ ओलेग की ओर नहीं बढ़ाया था।

इन दो कमरों से बाहर निकलते समय ओलेग कमांडेंट के बारे में ही सोचता जा रहा था। क्या वह सदा ऐसा ही था अथवा यह बदलते हुए समय का लक्षण है ? वह स्थायी है अथवा अस्थायी ? अथवा उन लोगों ने ऐसे लोगों को विशेष रूप से नियुक्त करना शुरू कर दिया है ? ये सब बातें जानना बड़ा महत्व-पूर्ण था लेकिन अब यह वापस नहीं जा सकता था।

फिर उसने बैरकों को पार किया, रेल पटरियों को पार किया, कोयले को पार किया और कारखानों से भरी सड़क पर वह तेज रफ्तार से आगे बढ़ता रहा। उसके कदम तेज थे, और तेज। जल्दी ही गर्मी के मारे उसे अपना

ओवर कोट उतारना पड़ा और धीरे-धीरे प्रसन्नता का वह भाव जो कमांडेंट ने उसके भीतर भर दिया था धीरे-धीरे उसके समस्त शरीर में फैलने लगा। धीरे-धीरे ही उसकी समझ में इन बातों का पूरा अर्थ आया।

धीरे-धीरे इसलिये क्योंकि ओलेग उन लोगों पर विश्वास खो चुका था जो इन मेजों के पीछे बैठते थे। वह उन झूठी बातों को कैसे भूल सकता था, जिन्हें अफसरों, कैप्टनों और मेजरों ने युद्ध के बाद के वर्षों में निरन्तर फैलाया था कि किस प्रकार सब राजनीतिक कैदियों को क्षमादान देने की तैयारियां हो रही हैं। कैदियों ने उनके ऊपर पूरा विश्वास कर लिया था : "स्वयं कैप्टन ने मुझे यह बताया है। लेकिन अफसरों को यह आदश दिया गया था कि वे कैदियों का मनोबल ऊंचा करें। उन्हें अपने काम का निर्धारित कोटा पूरा करने के लिये उत्साहित करें, उन्हें कोई ऐसी बात बतायें जो वे अपने सामने जीवन के लक्ष्य के रूप में रख सकते हों।

लेकिन जहां तक इस आर्मीनियावासी का सवाल था तो यदि सन्देह की कोई बात थी तो यह कि वह आवश्यकता से अधिक जानता था, अपने पद के अनुरूप नहीं बल्कि उससे बहुत अधिक जानता था। लेकिन क्या स्वयं ओलेग ने भी अखबारों में पढ़े कुछ समाचारों के आधार पर यही आशा नहीं की थी ?

सचमुच अब समय आ गया है ? बहुत समय पहले ही यह हो जाना चाहिए था अन्यथा हो ही कैसे सकता था ? एक आदमी रसौली से मरता है, तो कोई देश, श्रम शिविरों और इतनी बड़ी संख्या में निष्कासित व्यक्तियों के रहते कैसे जीवित रह सकता है !

ओलेग फिर प्रसन्न हो उठा था ? आखिरकार वह मरा नहीं था और वह जल्दी ही लेनिनग्राद के लिये अपना टिकट खरीद सकेगा, लेनिनग्राद ! क्या वह सचमुच वहां वापस लौट सकेगा और सेंट आइजक के किसी स्तम्भ को छू सकेगा ! उसका हृदय फट जायेगा।

लेकिन सेंट आइजक का क्या महत्व था अब उसके और वेगा के बीच हर चीज बदल रही थी। यह उसका सिर चकरा देने के लिये पर्याप्त थी। यदि वह वस्तुतः···यदि वह गम्भीरतापूर्वक नहीं···अब यह कल्पना का विषय नहीं रह गया था। वह वहां उसके साथ रह सकेगा।

वेगा के साथ रहना ! साथ-साथ ! इसकी कल्पनामात्र उसे विह्वल कर देने के लिये पर्याप्त थी।

यदि वह उसके पास जाकर उसे यह खबर सुनाये तो वह कितनी प्रसन्न होगी। उसे यह बात वेगा को क्यों नहीं बतानी चाहिये ? उसे क्यों नहीं जाना चाहिये। यदि वह उसे नहीं बतायेगा तो कौन बतायेगा ? उसकी स्वतन्त्रता में अन्य किसकी दिलचस्पी थी ?

वह ट्राम के स्टाप पर पहुंच चुका था। उसे यह चुनाव करना था कि कौन-सी ट्राम ले—स्टेशन जाने वाली अथवा वेगा के घर जाने वाली ? और

उसे जल्दी पहुंचना होगा क्योंकि वह बाहर निकल सकती है । आकाश में सूरज काफी नीचे तक ढल गया था ।

एक बार फिर वह स्वयं को उद्विग्न अनुभव करने लगा और उसे यह लगने लगा कि वह वेगा की ओर खिंचा चला जा रहा है । कमांडेंट के दफ्तर पहुंचने के दौरान उसने जो जबर्दस्त तर्क किये थे वे अब अन्तर्धान हो चुके थे ।

वह अपराधी नहीं था, उसके ऊपर कोई कलंक नहीं था । तो वह उससे क्यों बचे ? वह जानती थी कि वह क्या कर रही है, क्यों नहीं क्या उसका इलाज करते समय वह यह जानती थी ? क्या वह बिल्कुल मौन हो गई थी । क्या वह उस समय उसकी आंखों के सामने से नहीं हट गई थी जब वह उससे तर्क कर रहा था उससे इलाज बन्द कर देने की याचना कर रहा था ?

वह क्यों न जाये ? वे लोग सामान्य स्तर से ऊपर उठने की कोशिश क्यों न करें । वे ऊंचा लक्ष्य अपने सामने क्यों न रखें ? क्या वे मनुष्य नहीं थे ? कम-से-कम वेगा थी ।

वह ट्राम में सवार होने के लिये भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था । स्टाप पर बहुत-से लोग प्रतीक्षा कर रहे थे । वे सब अपनी वांछित ट्राम पकड़ने के लिये धक्कम-धक्का कर रहे थे । सब उसी की दिशा में यात्रा कर रहे थे । ओलेग ने एक हाथ में अपना ओवरकोट और दूसरे में किट बैग सम्भाल रखा था । अतः वह ट्राम की रेलिंग नहीं पकड़ सका । उसे धक्के लगे, वह इधर-उधर घूमता गया और अन्ततः भीड़ के साथ ट्राम के प्लेटफार्म पर पहुंच गया और फिर ट्राम के भीतर । लोग सब ओर से बड़े जंगलीपन से उसके ऊपर गिरे जा रहे थे । उसने स्वयं को दो लड़कियों के बीच पाया जो छात्राओं जैसी दिखाई पड़ रही थीं । एक बहुत गोरे रंग की थी और दूसरी कुछ सांवले रंग की थी । वे उसके इतने समीप थीं कि वह उसकी सांस का अनुभव कर पा रही होंगी । उसकी बांहें दोनों ओर फैली हुई थीं और अलग-अलग इस तरह फंसी हुई थी कि वह क्रुद्ध औरत कंडक्टर को पैसा चुकाने की स्थति में नहीं था । वस्तुतः वह हिल-डुल भी नहीं सकता था । उसकी बाईं बांह, जिस पर कोट लटका हुआ था सांवले रंग की लड़की को समेटे हुए लगती थी जबकि उसका पूरा शरीर गोरी लड़की से सटा हुआ था । वह उसके स्पर्श का अनुभव कर रहा था । उसके सारे शरीर के स्पर्श का घुटने से लेकर ठोडी तक पूरे शरीर का स्पर्श अनुभव कर रहा था और सम्भवतः वह भी स्पर्श के इस अनुभव से बच नहीं सकती थी । संसार का उग्रतम आवेग भी उन्हें इस प्रकार एक दूसरे से सटा नहीं सकता था, एक दूसरे से इस प्रकार नहीं जोड़ सकता था जिस प्रकार उस भीड़ ने उन्हें जोड़ दिया था । उसकी गर्दन, उसके कान और उसके बालों के छोटे-छोटे घुंघराले गुच्छे उसके इतने समीप थे कि वह इस समीपता की कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था । अपने घिसे हुए पुराने कपड़ों को बेध कर आने वाली उसकी शरीर की उष्मा को, उसकी कोमलता को और उसके यौवन को वह आत्मसात

कर रहा था। सांवली लड़की अभी भी अपनी सहेली से कालेज के बारे में बात करती जा रही थी। गोरी लड़की ने उसे उत्तर देना बन्द कर दिया था।

उशतेरेक में ट्राम नहीं थी। केवल खंदकों में ही वह लोगों के इतना समीप रहा था लेकिन वहां सदा औरतें नहीं होती थीं। और अब वह उस अनुभूति का अनुभव कर रहा था जिसका उसने अनुभव नहीं किया था, अनेक दशकों से जिसकी पुष्टि नहीं हुई थी। इस कारण से यह और भी अधिक आदिम थी, और भी अधिक सशक्त थी।

यह प्रसन्नता भी थी और उदासीनता भी। इस अनुभूति की एक ऐसी सीमा बंधी थी जिसे वह पार नहीं कर सकता था। चाहे उसकी अन्तःप्रेरणा कुछ भी क्यों न कह रही हो।

उन लोगों ने उसे चेतावनी दी थी, दी थी न ? इच्छा रहती है, कामेच्छा रहती है अन्य कुछ नहीं···

वे इसी तरह दो और स्टाप तक चलते रहे। इसके बाद भी बेहद भीड़ थी। लेकिन अब इतने अधिक लोग पीछे से नहीं धकेल रहे थे। ओलेग कुछ पीछे हट सकता था लेकिन वह हटा नहीं। उसमें इस आनन्दपूर्ण यातना को समाप्त कर देने की इच्छा शेष नहीं रह गई थी। इस क्षण वह जिस स्थिति में खड़ा था उसी-उसी स्थिति में कुछ और देर खड़े रहने के अलावा वह अन्य कुछ नहीं चाहता था। चाहे यह ट्राम उसे फिर वापस पुराने शहर में ही क्यों न पहुंचा दे। चाहे यह ट्राम पागल क्यों न हो उठे और रात होने तक लगातार चक्कर काटती हुई क्यों न घूमती रहे। चाहे यह ट्राम संसार की परिक्रमा ही करने क्यों न निकल पड़े ओलेग में अब स्वयं अलग हट जाने की इच्छा शक्ति शेष नहीं रह गई थी। अपने सुख को और आगे बढ़ाते हुए, जो ऐसा सबसे बड़ा सुख था जिसकी वह कामना कर सकता था, वह सांवली लड़की की गर्दन पर लटके घुंघराले बालों के छोटे-छोटे गुच्छों का बड़े आभार से स्मरण कर रहा था। उसके चेहरे पर उसकी एक नज़र तक नहीं पड़ी थी।

वह उसके पास से हट गई और आगे बढ़ने लगी।

और जैसे ही ओलेग ने अपने मुड़े कमजोर घुटनों को सीधा किया उसे लगा कि वेगा से मिलने जाने की उसकी यात्रा यातना और वंचना में समाप्त होगी।

इसका यह अर्थ होगा कि वह वेगा से उससे भी अधिक मांग करे जितनी वह स्वयं अपने आपसे कर सकता है।

वह इस उच्च विचारों पर आधारित सहमति पर पहुँच चुके थे कि आध्यात्मिक सम्पर्क अन्य किसी भी वस्तु से अधिक मूल्यवान है। लेकिन अपने हाथ से यह लम्बा पुल बनाने के बाद अब वह देख रहा था कि उसके अपने हाथ कमजोर पड़ते जा रहे हैं। वह अब इसलिए वहां जा रहा था कि उसे बड़े साहस से एक ऐसी बात के लिए राजी करेगा जबकि भयंकर पीड़ा से वह निरन्तर दूसरी बात ही सोचता रहेगा। और जब वह चली जाएगी और वह उसके

कमरे में अकेला रह जायेगा तो उसके वस्त्रों के ऊपर, उसकी प्रत्येक छोटी-छोटी चीज़ के ऊपर, उसके सुगन्धित रूमाल के ऊपर वह मंडराता रहेगा।

नहीं, उसे किसी किशोरी से अधिक विवेक से काम लेना चाहिए। उसे रेलवे स्टेशन जाना चाहिए।

वह भीड़ को चीरता हुआ पिछले प्लेटफार्म पर चला गया—वह आगे की ओर नहीं गया। वह उन छात्राओं से आगे नहीं बढ़ा—और चलती ट्राम से नीचे कूद पड़ा। कूदते समय किसी ने उसे गाली दी।

ट्राम के स्टाप के पास ही कोई और भी बैंगनी फूल बेच रहा था···

सूरज बहुत ढल चुका था। ओलेग ने अपना ओवरकोट पहन लिया और स्टेशन जाने वाली ट्राम पकड़ ली। इस बार ट्राम में उतनी भीड़ नहीं थी।

वह स्टेशन के विशाल कक्ष में इधर-उधर घूमता रहा। लोगों से सवाल पूछता रहा और उसे सदा गलत उत्तर मिलते रहे। अन्तत: एक ऐसे मण्डप में पहुंचा, जो बाजार जैसा दिखाई पड़ता था। जहां वह लम्बे सफर की रेलगाड़ियों के टिकट बेच रहे थे।

चार खिड़कियों पर टिकट दिये जा रहे थे। प्रत्येक खिड़की के सामने डेढ़ सौ दो सौ आदमियों तक की कतार थी। और इन कतारों में कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो उस क्षण वहां खड़े नहीं थे। किसी काम से कुछ देर के लिए चले गए थे।

रेलवे स्टेशन पर अनेक दिनों तक लगातार लगी कतारों की तस्वीर ओलेग के मन में बिलकुल साफ हो गई मानो वह सदा से इनसे परिचित रहा हो। संसार में बहुत कुछ बदल चुका था: फैशन, सड़कों पर लगे बिजली के लैम्प, युवक युवतियों की आदतें, लेकिन जहां तक उसे स्मरण आता था, ये कतारें स्थायी थीं। यही हाल १९४६ में था यही १९३९ में और १९३४ में और १९३० में भी। नई आर्थिक नीति[1] के जमाने में खाने की चीजों से भरे दुकानों के शोकेसों की भी उसे याद थी। लेकिन उसे रेलवे स्टेशन के ऐसे किसी टिकट घर की याद नहीं थी जहां आसानी से पहुँचा जा सकता हो। यात्रा की कठिनाईयों से केवल वह ही लोग परिचित थे जिनके पास विशेष कार्ड अथवा सरकारी वाउचर होते थे।

और इस समय उसके पास भी एक वाउचर था। यह बहुत प्रभावशाली वाउचर नहीं था लेकिन फिर भी इस मौके पर काम आ सकता था।

बड़ी घुटन थी और उसे पसीना आ रहा था। लेकिन उसने अपने किट बैग से फर का एक टोप निकाला जो बड़ा तग था और उसने उसी तरह इस हैटको अपने सिर पर चढ़ा लिया जिस तरह टोप बनाने वाला फर्मे पर टोप को कसता है। उसने किट बैग को एक कंधे पर टांग लिया और एक ऐसे आदमी

---

१. नई आर्थिक नीति, सीमित निजी व्यापार की वह नीति थी, जिसे लेनिन ने १९२१ में शुरू किया था। (अनुवादक की टिप्पणी)

का स्वांग रचने लगा जो दो सप्ताह से कम समय पहले ही लेव लियोनिदोविच के नश्तर के नीचे आपरेशन की मेज पर पड़ा था। अत्यधिक कमजोरी और थकान की इस झूठी मुद्रा में, अपनी आंखों से भी कमजोरी प्रगट करते हुए वह कतारों के बीच से स्वयं को घसीटता हुआ टिकट घर की खिड़की पर पहुंच गया। यहां केवल इसीलिए लड़ाई नहीं हो रही थी क्योंकि पास में ही एक पुलिस वाला खड़ा था।

हर आदमी की आंखों के सामने ओलेग ने बेहद कमजोरी के भाव से अपने ओवर कोट के भीतर की तिरछी जेब से वाउचर निकालने का प्रयास किया। वाउचर निकालकर उसने बड़े विश्वास से उसे 'कामरेड मलीशियामैन' के हाथों में सौंप दिया।

यह पुलिसमैन बहुत खूबसूरत उजबेक जवान था और उसकी मूछें किसी युवक जनरल जैसी दिखाई पड़ती थीं। उसने बड़ी शान से इसे पढ़ा और कतार में सबसे आगे खड़े लोगों को घोषणा के स्वर में बताया, "इस आदमी को आगे जाने दो इसका हाल में ही आपरेशन हुआ है।"

उसने इशारे से ओलेग को कतार में तीसरे स्थान पर खड़े हो जाने को कहा।

ओलेग ने बेहद थकान और कमजोरी के भाव से कतार में खड़े अपने नए पड़ौसियों पर नजर डाली। उसने कतार के भीतर घुसने की भी कोशिश नहीं की। वह सिर झुकाए कतार के बराबर ही खड़ा रहा। एक मोटे बड़ी उम्र के उजबेक ने, जिसका चेहरा कत्थई रंग के थाली जैसे चौड़े छज्जे वाली मखमली टोपी के नीचे कांसे के रंग जैसा दिखाई पड़ रहा था उसकी बांह पकड़ कर उसे कतार में घसीट लिया।

खिड़की के पास खड़े होकर उसे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। वह टिकट बांट रही लड़की की अंगुलियां देख पा रहा था, यात्रियों की मुट्ठी में कसे पसीने से शराबोर नोट भी उसे दिखाई पड़ रहे थे। टिकट के लिए आवश्यक या उससे कुछ अधिक नोट इन लोगों ने अपनी मुट्ठियों में कस रखे थे और इन नोटों को इन लोगों ने अपनी सिली हुई जेबों अथवा पेटियों के भीतर से निकाला था। वह यह सुन पा रहा था कि यात्री लड़की से कुछ घबराहट के स्वर में प्रार्थना कर रहें हैं और वह बड़ी निष्ठुरता से उनकी प्रार्थनाओं को ठुकराती जा रही है और यह स्पष्ट था कि काम हो रहा था, और तेजी से।

अब खिड़की के सामने झुकने की ओलेग की बारी थी।

"क्या तुम मेहरबानी करके मुझे खानतो के लिए साधारण हार्ड क्लास का टिकट दोगी," वह बोला।

"कहां का ?" लड़की ने पूछा।

"खान-तो,"

"इसका नाम तो कभी नहीं सुना।" उसने अपने कंधों को झटका दिया और एक विशाल डाइरेक्टरी के पन्ने उलटने लगी।

"तुम एक साधारण टिकट क्यों ले रहे हो उसके पीछे खड़ी एक स्त्री ने सहानुभूति से पूछा ।" आपरेशन के बाद एक साधारण टिकट ? ऊपर की सीट तक चढ़ने में तुम अपने टांके ही तोड़ डालोगे । तुमको तो स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए था ।"

"मेरे पास पैसा नहीं है," ओलेग ने आह भरी ।

"यह सच्चाई थी ।"

"ऐसा कोई स्टेशन नहीं है ।" खिड़की के पीछे बैठी लड़की ने खटाक से डाइरेक्टरी बन्द करते हुए चिल्ला कर कहा । "किसी और स्टेशन का टिकट ले लो ।"

"स्टेशन होना ही चाहिए ।" औलेग ने कमजोरी के भाव से मुस्कराते हुए कहा । "इस स्टेशन को बने पूरा एक साल हो गया है । मैं स्वयं उसी स्टेशन से आया हूं । अगर मुझे यह बात मालूम होती तो मैं तुम्हारे दिखाने के लिए अपने पास वह टिकट रख लेता ।

"मुझे इस बात की कोई जानकारी नहीं है । यदि इस स्टेशन का नाम इस डाइरेक्टरी में नहीं है तो इसका साफ मतलब है कि यह स्टेशन नहीं है ।"

"वहां रेलगाड़ियां रुकती हैं । सचमुच रुकती हैं ।" अब ओलेग ने एक ऐसे आदमी की अपेक्षा कहीं अधिक गुस्से से तर्क करना शुरू कर दिया था जिसका अभी हाल में आपरेशन हुआ हो । "स्टेशन पर टिकट घर भी है ।"

"यदि तुम्हें टिकट नहीं चाहिए तो आगे बढ़ जाओ, नागरिक । अगला आदमी ।"

"यह बात ठीक है । वह हमें क्यों देर करा रहा है ?" पीछे से शिकायत भरी फुसफुसाहट सुनाई पड़ी । "जिस स्टेशन का वे टिकट दे रहे हैं । ले लो । हाल ही में उसका आपरेशन हुआ है । ठीक है । लेकिन वह अपनी इतनी मर्जी क्यों चला रहा है ?"

मेरे भगवान, ओलेग सचमुच इन लोगों को यह बता सकता था कि बहस क्या होती है ? उसके मन में यह तीव्र लालसा जग रही थी कि वह यात्री सेवा डाइरैक्टरी स्वयं देखने की मांग करे और स्टेशन मास्टर से भी मिले । उसे इन मोटी अक्ल के आदमियों को सही बात समझाने और न्याय प्राप्त करने में कितना आनन्द आता । चाहे यह नगण्य न्याय ही क्यों न होता ? वह जब तक इसके लिए संघर्ष करता स्वयं को एक मनुष्य अनुभव करता ।

लेकिन पूर्ति और मांग का नियम लोहे का नियम है और इसी प्रकार परिवहन आयोजन का नियम भी । उसके पीछे जो सहृदय स्त्री खड़ी थी, और जिसने उसे अपनी सीट सुरक्षित कराने को राजी करने का प्रयास किया था, अब तक अपने टिकट का पैसा उसके कन्धे के ऊपर से आगे बढ़ा चुकी थी । वह पुलिसमैन जिसने उसे कतार से आगे खड़ा करवा दिया था उसे एक ओर हटा ले जाने के लिए अपना हाथ उठाने लगा था ।

"मैं जिस स्टेशन का टिकट मांग रहा हूं वह उस जगह से ३० किलो-मीटर दूर है, जहां मैं रहता हूं और दूसरा स्टेशन ७० किलोमीटर दूर है।" ओलेग खिड़की के भीतर अपनी शिकायत पहुंचाता रहा। लेकिन उसके शब्द, शिविर की भाषा में, पेट को पीड़ा पहुंचाने वाली मार भर रह गए थे अब वह टिकट देने वाली लड़की से सहमत हो जाने को उत्सुक था। "ठीक है, मुझे चू स्टेशन का ही टिकट दे दो।"

"लड़की ने इस स्टेशन को तुरन्त पहचान लिया और उसे मालूम था कि इसका टिकट कितना है और एक टिकट बचा हुआ भी था। इस स्थिति में ओलेग को अपनी खुशकिस्मती को ही दुआएं देना था। वह खिड़की से थोड़ा-सा अलग हटा, रोशनी में टिकट पर पंच के छेदों को देखा, डिब्बे का नम्बर देखा, दाम देखा, वापस मिले पैसों को देखा और धीरे-धीरे आगे बढ़ गया।

जैसे-जैसे वह उन लोगों से दूर हटता गया, जो उसे हाल में आपरेशन वाला मरीज़ समझते थे वह उतना ही और अधिक सीधा होकर चलने लगा। उसने अपना वह तंग और भद्दा टोप उतार लिया था और इसे फिर अपने किट बैग में रख दिया था। रेलगाड़ी छूटने में अभी दो घंटे का समय था और टिकट अपनी जेब में रख कर यह समय बिताना सचमुच अद्भुत बात थी। अब वह सचमुच आनन्द मना सकता था : वह आईसक्रीम खा सकता था (उशतेरेक में आइसक्रीम नहीं मिलती थी) क्वास[1] का एक गिलास पी सकता था (वहां क्वास भी नहीं मिलता था) और यात्रा के लिए कुछ काली रोटी खरीद सकता था। उसे चीनी खरीदनी भी नहीं भूलनी चाहिए थी। उसे बड़े सब्र से एक कतार में खड़ा होना होगा और एक बोतल में उबला हुआ पानी भरना होगा। (सचमुच अपने पास अपना पानी होना एक बहुत बड़ी बात थी।) जहां तक नमकीन हेरिंग मछलियों का सवाल था वह जानता था कि उसे ये नहीं खरीदनी चाहिएं। मालगाड़ी के डिब्बों में कैदी के रूप में यात्रा की तुलना में यह सफर कितना स्वतन्त्र और कितना आसान था। गाड़ी में सवार होने से पहले उसकी तलाशी नहीं ली जायेगी। वे उसे ब्लैक मारिया में स्टेशन नहीं ले जायेंगे। वे उसे संतरियों के पहरे में जमीन पर नहीं बिठायेंगे और प्यास से तड़पते हुए ४८ घंटे का समय काटने के लिये बाध्य नहीं करेंगे। अगर वह दो सीटों के ऊपर बने सामान रखने के रैक पर पहुंचने में कामयाब हुआ तो वह अपने पांव पसार कर लेट सकेगा। इस बार इस सामान के रैक में दो या तीन आदमी नहीं होंगे, केवल एक आदमी होगा। वह लेट जायेगा और उसे अपनी रसौली में दर्द महसूस नहीं होगा। यह सुख था! वह सुखी आदमी था। शिकायत करने को अब क्या बचा था?

उस कमांडेंट ने क्षमादान के बारे में भी कुछ बातें कही थीं... वह यहीं

---

१. रूस का एक राष्ट्रीय पेय। इसे रोटी में खमीर उठाकर तैयार किया जाता है।

(अनुवादक की टिप्पणी)

था, उसका चिर प्रतीक्षित सुख, वह यहीं था। लेकिन किसी कारण से ग्रोलेग ने उसे पहचाना नहीं था।

ग्राखिरकार उसने वेगा को सर्जन को 'लेव' कहकर पुकारते हुए सुना था। उससे बड़ी घनिष्ठता से बातें करते हुए सुना था। यदि वह नहीं तो कोई ग्रौर हो सकता था। बहुत-सी सम्भावनाएं हैं जब एक ग्रादमी दूसरे व्यक्ति के जीवन में प्रवेश करता है तो एक विस्फोट जैसी घटना घटती है।

जब ग्राज सुबह उसने चन्द्रमा देखा था उसका विश्वास कायम था। लेकिन चन्द्रमा घट रहा था...

ग्रब उसे प्लेटफार्म पर पहुँच जाना चाहिए। उससे काफी समय पहले ही जब वह यात्रियों को प्लेटफार्म पर जाने की इजाजत देते हैं। जब खाली रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर ग्रायेगी उसे ग्रपने डिब्बे पर नजर रखनी होगी, दौड़कर उसके पास पहुंचना होगा ग्रौर कतार में सबसे ग्रागे पहुंच जाना पड़ेगा।

ग्रोलेग टाइम टेबल देखने गया। विपरीत दिशा में ७५ नम्बर की रेलगाड़ी जल्दी ही छूटने वाली थी। इसके यात्री प्लेटफार्म पर पहुंचने की तैयारी कर रहे होंगे। बड़ी कठिनाई से सांस लेने का नाटक करते हुए वह बड़ी तेजी से दरवाजे की ग्रोर बढ़ा ग्रौर जो कोई भी उसे मिलता, ग्रौर जिसमें टिकट क्लैक्टर भी शामिल था, ग्रपने टिकट की ग्रपनी ग्रंगुलियों में ग्राधा छिपाए हुए यही पूछा, "७५ नम्बर, क्या यही है? क्या यही है?"

वह ७५ नम्बर की गाड़ी के लिये बहुत देर से पहुँचने के कारण बेहद भयभीत होने का स्वांग रच रहा था। टिकट क्लैक्टर ने उसका टिकट जांचने की चिन्ता नहीं की ग्रौर उसे ग्रागे प्लेटफार्म पर धकेल दिया ग्रौर उसकी पीठ पर लदे भारी किट बैग पर धौल जमाया।

ग्रोलेग प्लेटफार्म पर शांति से ऊपर नीचे टहलने लगा। इसके बाद वह रुक गया ग्रौर उसने पत्थर की एक बेंच पर ग्रपना किट बैग फेंक दिया। उसे सन् १९३९ में स्तालिनग्राद में ग्रपनी स्वतन्त्रता के ग्रन्तिम दिनों में एक ऐसे ही मजाकिया मौके की याद हो ग्राई। रिबनट्राप से संधि पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद लेकिन मोलोतोव के भाषण ग्रौर १९ वर्ष के लड़कों को सेना में भर्ती करने के हुक्म से पहले की यह घटना थी।

उसने ग्रौर उसके मित्र ने नाव से वोलगा नदी के प्रवाह के साथ-साथ यात्रा करने में गर्मियां बिताई थीं। स्तालिनग्राद में उन्होंने एक नौका बेच दी ग्रौर जहाँ वे पढ़ रहे थे उन्हें रेलगाड़ी से वापस लौटना था। लेकिन नाव की यात्रा के बाद उनके पास काफी सामान बचा हुग्रा था। यह सामान इतना ग्रधिक था कि वे ग्रपने हाथों में इसे नहीं ले जा सकते थे। इतना ही नहीं ग्रोलेग के मित्र ने किसी दूर दराज गांव के स्टोर से एक लाउड स्पीकर भी खरीद लिया था। उस समय यह लाउड स्पीकर लेनिनग्राद में उपलब्ध नहीं थे।

ये लाउडस्पीकर बड़ा गोल नोकदार शक्ल का था ग्रौर इसका डिब्बा

उन्हें नहीं मिला था। उसके मित्र को इस बात का बड़ा भय था कि रेलगाड़ी में सवार होते वक्त लाउडस्पीकर भीड़ में कुचल जायेगा। वे लोग स्तालिनग्राद में स्टेशन में घुसे और उन्होंने देखा कि वे एक बड़ी लम्बी और जबर्दस्त कतार के आखिर में खड़े हैं जो स्टेशन के पूरे कक्ष में फैली हुई थी और यात्रियों के लकड़ी के सन्दूक, थैले और बक्स भरे पड़े थे। अपनी रेलगाड़ी के प्लेटफार्म पर पहुंचने से पहले वहां पहुंच पाना प्रायः असम्भव लग रहा था और यह दिखाई पड़ रहा था कि उन्हें सोने की किसी जगह के बिना ही दो रात बितानी होंगी। इसके अलावा इस बात पर भी कड़ी नजर रखी जा रही थी कि वे प्लेटफार्म पर न पहुंच जायें।

अचानक ओलेग के मन में एक विचार आया! "इन चीजों को डिब्बे के दरवाजे तक पहुंचाने का प्रयास करो। चाहे वहां पहुंचने वाले तुम आखिरी ही आदमी क्यों न होओ। उसने लाउडस्पीकर लिया और कर्मचारियों के दरवाजे पर जा पहुंचा, जो बन्द था। उसने ड्यूटी पर तैनात एक लड़की की तरफ इस लाउडस्पीकर को बड़े महत्वपूर्ण ढंग से घुमाया। उसने दरवाजा खोल दिया। "बस यही लाउडस्पीकर लगाना है और इसके बाद मेरा काम पूरा हो जायेगा," ओलेग ने कहा। उस लड़की ने यह बात समझते हुए इस तरह सिर हिलाया मानो ओलेग दिन भर लाउडस्पीकर लेकर इधर-उधर घूमता रहा हो। तभी रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर आई और अन्य सब लोगों से पहले वह डिब्बे में घुस गया और सामान रखने के दो रैकों पर कब्जा कर लिया।

यह सोलह साल पहले हुआ था और किसी भी बात में कोई परिवर्तन नहीं आया था।

ओलेग ने प्लेटफार्म पर घूमते समय यह देखा कि उसी की तरह चालाक दूसरे लोग भी प्लेटफार्म पर पहुंच चुके थे। वे लोग भी ऐसी रेलगाड़ी का बहाना बनाकर प्लेटफार्म पर आ पहुँचे थे जो उनकी नहीं थी और अपना सामान लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। उन लोगों की तादाद काफी थी लेकिन स्टेशन के विशाल कक्ष और उसके सामने के बगीचे में जो भीड़ की धक्कम-धक्का थी वह प्लेटफार्म पर नहीं थी। रेलगाड़ी नम्बर ७५ के कुछ लोग प्लेटफार्म पर ऊपर नीचे चक्कर लगा रहे थे। अच्छे कपड़ोंवाले इन लोगों को कोई चिन्ता नहीं थी। इनके स्थानों पर नम्बर पड़े थे और उन्हें कोई नहीं छीन सकता था। औरतें थीं, जिनके हाथों में उपहार में मिले गुलदस्ते थे। आदमियों के पास बीयर की बोतलें थीं और कोई फोटो ले रहा था। यह एक ऐसा जीवन था जो ओलेग की प्रायः पहुंच के बाहर था। वह मुश्किल से ही इसे समझ पाता था। बसन्त ऋतु की गर्म शाम और छज्जे के नीचे बना प्लेटफार्म उसे दक्षिण के किसी ऐसे स्थान की याद दिला रहा था जिसे उसने बचपन में देखा था, शायद मिनरल नियेवोदी।

तभी ओलेग की नजर एक डाकखाने पर पड़ी, जिसका दरवाजा प्लेट-

फार्म पर था। प्लेट फार्म के ऊपर तिरछी चौहरी मेज भी लगी थी, जिस पर खड़े होकर लोग पत्र लिख सकते थे।

अचानक उसने सोचा। उसे पत्र लिखना चाहिये और उसे आज की अनुभूतियां अस्पष्ट और अन्तर्धान होने से पहले पत्र लिख देना चाहिए।

उसने अपने बैग में हाथ डाला और दो लिफाफे खरीदे। नहीं, दो लिफाफे और कागज के दो टुकड़े—हां और एक पोस्टकार्ड भी। इसके बाद वह फिर प्लेट फार्म पर लौट आया। इस्तरी और काली रोटी भरे अपने किट बैग को अपने दोनों पांवों के बीच रख लिया, ढलवा मेज के ऊपर झुककर खड़ा हो गया और पहले सबसे आसान पत्र यानी पोस्टकार्ड लिखने लगा।

"हैलो, द्योमा! मैं चिड़ियाघर गया था। सचमुच बड़ी जबर्दस्त जगह है। मैंने कभी भी ऐसी जगह नहीं देखी। तुम्हें अवश्य जाना चाहिये। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि वहां सफेद भालू हैं? मगर, शेर, बब्बर शेर, एक पूरे दिन का वक्त रखना और चिड़ियाघर देखना। वे वहां खाने की चीजें भी हैं। घुमावदार सींगों वाले मारखोर को देखना न भूलना। जल्दबाजी न करना। एक जगह खड़े होकर इसे देखना—और सोचना। और अगर तुम्हें नीलगाय दिखाई पड़े तो यही करना। वहां बहुत से बन्दर हैं—उन्हें देखकर तुम्हें हंसी आयेगी। लेकिन एक बन्दर कम हो गया है। एक दुष्ट आदमी ने इस बन्दर की आंखों में तम्बाकू फेंक दिया था। बस वैसे ही, कोई कारण नहीं था। और यह बन्दर अंधा हो गया।

रेलगाड़ी आ रही है और मुझे उसमें सवार होने के लिए तुरन्त चल निकलना चाहिए।

जल्दी अच्छे हो जाओ और अपने विचारों के अनुसार आगे बढ़ो। मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा है।

अलेक्सेई फिलीपोविच को मेरी ओर से शुभकामनाएं देना। मैं आशा करता हूं कि वे बेहतर रह रहे होंगे।

"शुभकामनाओं सहित, ओलेग।"

वह बड़ी सहजता से लिख रहा था। बस दिक्कत यह थी कि यह पैन बड़ी रोशनाई छोड़ता था। वहां रखे सब पैनों के निब टूटे-फूटे थे, यह कागज फाड़ देते थे और इनमें कुदाल की तरह घुस जाते थे और दवात कागज के टुकड़ों का गोदाम बनी हुई थी। उसके हर सम्भव प्रयास के बावजूद पत्र अन्त में बड़ा भयानक दिखाई पड़ रहा था:

"जोयेंका, मेरे छोटे से भालू, मैं इस बात के लिए तुम्हारा बेहद आभारी हूं कि तुमने मेरे होठों को सच्चे जीवन का आस्वादन करने दिया। इन कुछ रातों के अभाव में मैं स्वयं को पूरी तरह, हां पूरी तरह ठगा हुआ, लुटा हुआ पाता। तुम मुझसे अधिक समझदार थीं और अब मैं बिना किसी शिकायत के यहाँ से जा सकता हूं। तुमने मुझसे अपने घर मिलने आने को

कहा था लेकिन मैं नहीं आया ।

उसके लिए धन्यवाद ! तुम जानती ही हो, मैंने सोचा—हमारे पास जो कुछ है हमें उसी से चिपका रहना चाहिये। हमें उसे बर्बाद नहीं करना चाहिए । मैं सदा तुम्हारे बारे में हर बात का स्मरण कृतज्ञता से करूंगा ।

मैं ईमानदारी से और सच्चे दिल से तुम्हारा अधिक से अधिक सुखी विवाह चाहता हूं !

ओलेग !"

एन०के०वी०डी० की रिमांड जेल में भी ऐसा ही होता था । जो दिन शिकायतें लिखने के लिए निर्धारित था उस दिन ऐसी ही कूड़ा कर्कट भरी दवात दी जाती थी, ऐसा ही कलम होता था और जो कागज दिया जाता था वह एक पोस्ट कार्ड से भी छोटा होता था । कागज पर रोशनाई फैल जाती थी और कागज के दूसरी ओर तक धब्बा पड़ जाता था । इस हालत में आप चाहे किसी को शिकायत भेजते, जिस किसी के बारे में चाहे लिखते, क्या फर्क पड़ता था ।

ओलेग ने पत्र पढ़ा, इसकी तह की और लिफाफे में रख दिया । वह लिफाफे को चिपकाना चाहता था—उसने बचपन में एक जासूसी कहानी पढ़ी थी, जिसमें सारी गड़बड़ इस कारण से हुई थी कि पत्रों के लिफाफे बदल गए थे—लेकिन यह इतना आसान नहीं था । लिफाफे के चिपकाने वाले हिस्से पर एक गहरे रंग की लाईन खिंची हुई थी, जहां अखिल संघ नियमों के अनुसार गोंद होनी चाहिए थी । लेकिन नहीं थी ।

ओलेग ने यह निर्धारित किया कि तीनों कलमों में से किस का निब सबसे अच्छा है उसे पोंछ कर साफ किया और अपने अन्तिम पत्र में वह जो कुछ लिखने जा रहा था उसके बारे सोचा । अब तक वह वहां पर्याप्त दृढ़ता से खड़ा था, यहां तक कि मुस्करा भी रहा था लेकिन अब प्रत्येक वस्तु अस्थिर हो गई उसे इस बात का निश्चय था कि वह लिखेगा, 'वेरा कोर्निल एवना' लेकिन इसके स्थान पर उसने लिखा;"

"प्रियतमे वेगा (मैं हर वक्त तुम्हें इसी नाम से पुकारने के लिये तड़पता रहा । अतः मैं अब यह लिख रहा हूं, बस एक बार), मैं तुम्हें बड़े स्पष्ट रूप से उससे भी अधिक स्पष्ट रूप से लिखना चाहता हूँ, जितनी स्पष्टता से हमने कभी आपस में बातचीत नहीं की । लेकिन हमने इसके बारे में सोचा, क्या नहीं सोचा ? आखिरकार वह एक साधारण रोगी नहीं होता, जिसे डाक्टर अपना कमरा और अपना बिस्तर देने का प्रस्ताव करती है ?"

"आज कई बार मैं तुम्हारे घर की ओर बढ़ा । एक बार तो मैं वहां सचमुच पहुंच भी गया । मैं सोलह साल के एक ऐसे किशोर की तरह उत्तेजित था जो एक ऐसे आदमी के लिए अभद्र बात थी जिसका जीवन मेरे जैसा रहा हो । मैं उत्तेजित था, उलझन में था, सुखी था और आतंकित भी । अनेक

वर्षों तक धक्के खाने के बाद ही इन शब्दों का अर्थ समझ में आता है ? ईश्वर ने तुम्हें मेरे पास भेजा।"

"तुम जानती हो, वेगा, यदि तुम मुझे वहां मिल पातीं तो हमारे बीच कुछ मिथ्या और कुछ ऊपर से थोपी गई बातें होतीं। लेकिन हमारे बीच जो कुछ शुरू होने जा रहा था हम किसी के भी समक्ष उसकी स्वीकारोक्ति नहीं कर सकते थे। तुम और मैं और, हमारे बीच यह वस्तु ऐसा स्याह, निन्दनीय लेकिन फिर भी निरन्तर बढ़ता हुआ सर्प।

मेरी उम्र तुमसे अधिक है, मेरा अभिप्राय अधिक वर्षों से नहीं है बल्कि जीवन के अनुभव से है। तो मेरा विश्वास करो तुम सही हो, हर बात में सही, अपने अतीत में सही और अपने वर्तमान में सही। केवल तुम्हारा भविष्य ही एक ऐसी वस्तु है, जिसका पूर्वानुमान लगाने की शक्ति तुम में नहीं है। तुम असहमत हो सकती हो लेकिन मुझे एक भविष्यवाणी करनी है : वृद्धावस्था की उदासीनता में पहुंचने से पहले ही तुम इस दिन का धन्यवाद करोगी, तुम इस दिन का धन्यवाद करोगी, जब तुमने मेरे जीवन में हिस्सा बटाने का वचन नहीं दिया। (मैं केवल अपने निष्कासन की ही बात नहीं कह रहा हूं। इस बारे में तो यहां तक अफवाहें हैं कि जल्दी ही यह समाप्त हो जायेगा।) तुमने अपने जीवन के पहले आधे हिस्से को एक मेमने की तरह जिबह कर डाला है। कृपा करके दूसरे हिस्से को बख्श दो।

अब जबकि मैं जा ही रहा हूं (यदि वे मेरा निष्कासन समाप्त कर देते हैं तो मैं तुम्हारे पास स्वास्थ्य की जांच या इलाज के लिये वापस नहीं आऊंगा, जिसका अर्थ यह होता है कि हमें एक-दूसरे को अलविदा कह देना चाहिए, मैं तुमसे बड़ी स्पष्टता से कह सकता हूं : जब हम लोग सर्वाधिक बौद्धिक चर्चा भी किया करते थे और मैं जो कुछ कहता था उसके बारे में पूरी ईमानदारी से सोचता और विश्वास करता था। फिर भी मैं लगातार, निरन्तर यही चाहता रहता था कि तुम्हें अपनी बांहों में ऊपर उठा लूं और तुम्हारे होंठों पर चुम्बन अंकित कर दूं।

तो यह सोचने की कोशिश करना।

"और अब, तुम्हारी अनुमति के बिना ही, मैं उनका चुम्बन करता हूं।"

दूसरे लिफाफे का भी वही हाल था : काली लाईन पर गोंद नदारद। ओलेग सदा यह सन्देह करता था कि जान-बूझकर किसी खास कारण से यह किया जाता है।

इस बीच उसकी पीठ के पीछे—और उसकी सारी योजनाओं और चालाकियों का यही परिणाम होना था रेलगाड़ी प्लेट फार्म पर पहुंच गई थी और यात्री उसकी ओर दौड़ रहे थे। उसने अपना किट बैग उठाया, लिफाफों को दबोचा और लोगों को धकेलता हुआ डाकखाने के भीतर घुस गया। "गोंद

कहां है ? मिस, क्या आपके पास गोंद है ? गोंद !"

"लोग हमेशा गोंद उठा ले जाते हैं।" स्पष्टीकरण के रूप में वह लड़की चिल्लाई। उसने ओलेग की ओर देखा और फिर हिचकिचाहट से उसे गोंद-दानी दे दी।

"ये लो, इस पर मेरी आंखों के सामने ही गोंद लगाओ। इसे लेकर मत जाओ।"

गाढ़ी काली गोंद में किसी छोटे से स्कूली बच्चे का गोंद का ब्रश डूबा हुआ था। इसके ऊपर गोंद के ताजा और सूखे टुकड़े चिपके हुए थे। इसे पकड़ना प्राय: असम्भव था और गोंद फैलाने के लिये उसे पूरे के पूरे ब्रश को इस्तेमाल करना पड़ा। इसे लिफाफे को चिपकाने वाले हिस्से पर आरी की तरह फेरना पड़ा। फालतू गोंद को अपनी अंगुलियों से पोंछना पड़ा और फिर इसे चिपकाया। दबाने से जो फालतू गोंद बाहर निकल आया था उसे फिर अपनी अंगुलियों से पोंछना पड़ा।

इस पूरे समय में लोग दौड़ रहे थे।

अब उसने गोंद लड़की को वापस लौटाया, किट बैग उठाया (उसने इसे चोरी से बचाने के लिये अपनी टांगों के बीच रख रखा था), पत्रों को लेटर बॉक्स में डाला और दौड़ा।

हो सकता है कि वह एक ऐसा कैदी हो, जो अपने जीवन के अन्तिम दौर से गुजर रहा हो, बेहद दुर्बल हो चुका हो लेकिन फिर भी क्या खूब, वह कैसा दौड़ा !

वह उन लोगों को धकेलता हुआ आगे बढ़ा, जो मुख्य द्वार से अपने भारी सामान को घसीटते हुए प्लेटफार्म पर ले आये थे। इन लोगों की भीड़ पार कर वह दूसरे प्लेटफार्म पर पहुंचा। अन्तत: वह अपने डिब्बे के सामने जा पहुंचा और कतार में खड़ा हो गया। कतार में उसका लगभग २०वां नम्बर था। लेकिन उसके सामने खड़े लोगों के साथ उनके दोस्त और रिश्तेदार आ मिले और उसका नम्बर तीसवां पहुंच गया। अब उसे सबसे ऊपर की सीट नहीं मिलेगी। लेकिन उसकी टांगें इतनी लम्बी थीं कि उसे सचमुच इस ऊपर की बर्थ की जरूरत नहीं थी।[1] पर उसे सामान रखने का रैक कब्जाने में जरूर कामयाबी मिल जानी चाहिये। वे लोग रैक के ऊपर टोकरियां फैंकेंगे। ठीक है वे उन्हें एक ओर धकेल देगा।

वे सब एक ही किस्म की टोकरियां और बालटियां ले जा रहे थे। हो

---

१. सोवियत हार्ड क्लास रेलगाड़ियों में सबसे ऊपर की बर्थ लगभग सर की ऊंचाई पर होती है। इस स्थिति में ओलेग की लम्बी टांगें बर्थ से बाहर आने- जाने के रास्ते में निकली रहतीं और इससे लोगों को असुविधा होती।

(अनुवादक की टिप्पणी)

सकता है कि इनमें बसन्त ऋतु में मिलने वाली हरी सब्जियां भरी हों ? क्या ये लोग करागन्दा जा रहे थे, जैसा कि चाली ने बताया था, सप्लाई व्यवस्था की गलतियों को सुधारने के लिये ?

डिब्बे की निगरानी के लिये नियुक्त सफेद बालों वाला वृद्ध सहायक सब लोगों को कतार में खड़े रहने के लिये चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था और बता रहा था कि डिब्बे में सब लोगों के लिये काफी जगह है। लेकिन उसकी आखरी बात से ज्यादा आत्म विश्वास नहीं टपकता था—ओलेग के पीछे कतार अभी भी लम्बी होती जा रही थी। तभी ओलेग ने वह देखा जिसकी उसे आशका थी। कतार तोड़ने की कोशिश। जिस व्यक्ति ने सबसे पहले यह कोशिश की वह जंगली-सा, पागल-सा आदमी था। सीधा-सादा आदमी उसे सचमुच पागल मान बैठता और उसे सबसे आगे कतार में पहुंच जाने देता। लेकिन ओलेग ने उसे तुरन्त पहचान लिया कि वह किसी शिविर का गुण्डा है। वह लोगों को डराने की कोशिश कर रहा था जैसी उसके जैसे गुण्डे हमेशा कोशिश करते हैं। इस शोर मचाने वाले आदमी के पीछे कुछ साधारण लोग भी थे, यदि उसे आगे जाने दिया जाता है तो हमें क्यों नहीं ? सचमुच यह एक ऐसा झांसा था जो ओलेग भी दे सकता था और अपने लिये एक अच्छी बर्थ तलाश कर लेता। लेकिन उसकी जिन्दगी के पिछले वर्षों ने उसे ऐसी बातों से उबा दिया था। वह चाहता था कि हर काम ईमानदारी से और सही तरीके से किया जाये। जैसे कि डिब्बे का वृद्ध सहायक चाह रहा था।

वृद्ध सहायक अभी भी उस पागल को भीतर नहीं जाने दे रहा था और यह पागल उसे छाती से पीछे धकेल रहा था और भद्दी गालियां दे रहा था। वह इस तरह ये गालियां बक रहा था मानो यह संसार के सबसे साधारण शब्द हों। कतार में खड़े लोग सहानुभूति से गुदगुदा रहे थे, "अरे उसे भीतर जाने दो, वह बीमार आदमी है !"

ओलेग फुर्ती से आगे झपटा। कुछ लम्बे-लम्बे डग भरकर वह पागल के बराबर जा पहुंचा। और फिर ठीक उसके कान के बराबर अपना मुंह ले जाकर जोर से चिल्लाया और इस चिल्लाने ने उसके कान के पर्दों की भी कोई चिंता नहीं की, 'ए ! सुन ! मैं भी' वहीं का "हूं !"

पागल अपना कान मलता हुआ पीछे हट गया। "वहीं कहां है ?" वह बोला।

ओलेग जानता था कि वह लड़ने के लिए बेहद कमजोर है और वह अपनी अन्तिम शक्ति का इस्तेमाल कर रहा है। लेकिन कम-से-कम उसके दोनों हाथ स्वतन्त्र थे और पागल के हाथ में एक टोकरी थी। पागल के ऊपर अपना सिर उठाकर उसने बड़ी शांति से नपे-तुले शब्दों में कहा : 'वह जगह जहां' ९९ आदमी रोते हैं और एक हंसता है।

कतार में खड़े लोगों की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि अचानक इस पागल का पागलपन कैसे उतर गया। उन्होंने उसे ठण्डा होते, आंख मारते और ओवरकोट वाले लम्बे आदमी से यह कहते सुना, "मैं तो कुछ भी नहीं कह रहा हूं, मुझे कोई एतराज नहीं है, ठीक है, यदि चाहो तो तुम पहले चढ़ जाओ।" लेकिन ओलेग वहीं उस पागल और डिब्बे के सहायक के बराबर खड़ा रहा। यदि बुरे से बुरा हुआ तो यही होगा कि वह यहीं से डिब्बे में चढेगा। लेकिन जो लोग कतार तोड़कर आगे धक्का-मुक्की करने लगे थे वे अब वापस अपनी जगहों को लौटने लगे।

"मुझे कोई ऐतराज नहीं है," पागल ने शिकायत भरे व्यंग्य से कहा। "मुझे इन्तजार करने में कोई एतराज नहीं है।"

वे लोग अपनी टोकरियां और बालटियां लेकर डिब्बे में चढ़ते रहे। एक बोरी के टुकड़े के नीचे यदा-कदा हलके गुलाबी रंग की लम्बी मूली की झलक दिखाई पड़ जाती थी। तीन यात्रियों में से दो करागन्दा के टिकट दिखा रहे थे। तो यही वे लोग हैं, जिनके लिये ओलेग ने कतार व्यवस्था की है। सामान्य यात्री भी डिब्बे में चढ़ रहे थे, जिनमें नीले कोट वाली एक सम्मानित दिखाई पड़ने वाली स्त्री भी शामिल थी। ओलेग डिब्बे में सवार हुआ और पागल बड़े आत्मविश्वास से उसके पीछे-पीछे चढ़ गया। ओलेग बड़ी तेजी से डिब्बे के भीतर आगे बढ़ा। उसने सामान रखने के एक रैक पर नजर डाली, खिड़कियों के बराबर के तकलीफदेह रैक पर नहीं, जो इस समय भी प्राय: पूरी तरह खाली था।

"ठीक है," उसने घोषणा की। "हमें वह टोकरी हटानी पड़ेगी।"

"कहां ? यह क्या हो रहा है ?" एक आदमी ने घबराते हुए कहा। वह लंगड़ा था लेकिन हट्टा-कट्टा था।

"बस यही हो रहा है," ओलेग ने उत्तर दिया वह रैक पर चढ़ चुका था "लोगों के लिये लेटने तक की जगह नहीं है।"

वह रैक पर लम्बा लेट गया। तकिए की तरह अपना किट बैग उसने अपने सिर के नीचे रख लिया। लेकिन इस्तरी निकालने के बाद ही। उसने अपना ओवरकोट उतारा और इसे फैला दिया। उसने अपनी सेना की जाकट भी उतार दी। वहां ऊपर आदमी जो चाहे कर सकता था। फिर वह लेटकर सुस्ताने लगा। उसके पांव और ४४ नम्बर के बूट आने-जाने के रास्ते के ऊपर लटक रहे थे। वे पिंडलियों तक बाहर निकले हुए थे। लेकिन वे इतनी ऊंचाई पर थे कि किसी को दिक्कत नहीं हो सकती थी। नीचे भी लोग व्यवस्थित हो रहे थे, सुस्ता रहे थे और एक दूसरे से जान पहचान बढ़ा रहे थे।

वह लंगड़ा आदमी बड़ा मिलनसार दिखाई पड़ता था। वह बता रहा था कि एक समय वह जानवरों के डाक्टर के सहायक के रूप में काम करता था। "तुमने यह काम क्यों छोड़ दिया ?" उन लोगों ने बड़े अचरज से पूछा।

"आप कहना क्या चाहते हैं ? मैं हर मरने वाली भेड़ के लिए बुरा भला क्यों सुनूं ? मैं तो एक अपाहिज की पेन्शन पाते हुए सब्जियां इधर-उधर पहुंचा कर ही बहुत खुश हूं," उसने ऊंचे स्वर में अपनी बात समझाई।

"हां, इसमें बुरा ही क्या है ?" नीले कोट वाली औरत बोली।

"बेरिया के जमाने में ही वे लोग फलों और सब्जियों के लिये लोगों को गिरफ्तार कर लेते थे। अब केवल घरेलू सामान के लिए ही ये गिरफ्तारियां की जाती हैं।

यदि वे स्टेशन के भीतर न छिपे होते तो सूरज की अन्तिम किरणें उनके ऊपर चमक रही होतीं।

नीचे अभी भी पर्याप्त प्रकाश था, लेकिन ओलेग जहां था वहां गोधूली के प्रकाश जैसी स्थिति थी। प्लेटफॉर्म पर साफ्ट और हार्ड क्लास के सोने के डिब्बों वाले यात्री अभी भी चहल कदमी कर रहे थे। लेकिन यहां लोग अपनी-अपनी जगहों पर डटे बैठे थे, जिन पर कब्जा करने में उन्हें कामयाबी मिल गई थी और अपनी चीजों को व्यवस्थित कर रहे थे। ओलेग अपने पांव पसारे लेटा हुआ था। यह अच्छा है ! कैदियों को ढोने में इस्तेमाल होने वाले उन माल डिब्बों में अपनी टांगों को अपने नीचे समेट कर बैठे-बैठे ४८ घंटे की यात्रा भयावह थी। एक ऐसे ही डिब्बे में १९ आदमियों का होना भयावह बात होती। २३ तो और भी बुरे होते।

अन्य जीवित नहीं बचे थे। लेकिन वह बच गया था। वह कैन्सर में भी नहीं मरा था और अब उसका निष्कासन भी समाप्त होने जा रहा था।

उसे याद आया कि कमांडेंट उसे विवाह करने की सलाह दे रहा था। जल्दी ही वे सब उसे ऐसी ही सलाह दे रहे होंगे।

लेटे रहना अच्छा था। बहुत अच्छा था।

रेलगाड़ी थरथराई और आगे बढ़ चली। केवल तभी उसने अपने हृदय में, अपनी आत्मा के भीतर अपनी छाती की गहराई में, अपनी भावनाओं के गहनतम केन्द्र बिन्दु में अचानक पीड़ा का अनुभव किया। उसने अपने शरीर को घुमाया और अपना मुंह अपने ओवरकोट में गड़ा दिया, अपनी आंखें बन्द कर लीं और किट बैग में चेहरा छिपा लिया, जो रोटी के टुकड़ों के कारण ऊबड़-खाबड़ हो रहा था।

रेलगाड़ी आगे बढ़ती रही और कोस्तोग्लोतोव के फौजी बूट आने जाने के रास्ते पर एक मृतक के जूतों की तरह उल्टे लटक रहे थे।

एक दुष्ट आदमी ने बन्दर की आंखों में तम्बाकू झोंक दिया था।

ठीक इसी तरह...